PUNCHDASHI.

श्रीः।

पंचदशी भाषावार्ता.

श्रीस्वामिआत्मस्वरूपविरचित

श्रीमदुदासीनपरमहंसमहंतश्रीआत्मारामप्रेरित

श्रीपण्डित गण्डारामाज्ञानुसार

श्रीकृष्णदासात्मज गङ्गाविष्णु और खेमराज

इन्होंनें

स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापखानेमें

छापकर प्रसिद्ध किया

बम्बई

शके १८१० संवत् १९४५

अथ पंचदशीप्रकरणानुक्रमः

इतिपंचदशप्रकरणानि।

अस्माकं मुद्रणालये श्रीमद्भागवतवाल्मीकीयरामायण
योगवासिष्ठादीनि संस्कृतपुस्तकानिरामायणादीनि
हिन्दीभाषापुस्तकानि च मिलिष्यन्ति ।

पुस्तकमिलनेका ठिकाणा

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास-
"श्रीवेंकटेश्वर" छापखाना
(मुंबई.)

और विशेष पुस्तकका नाम और भाव तपास करना होय तो
आधाआनेका टिकट भेजनेसे सूचीपत्र भेजदिया जायगा.

श्रीः

पञ्चदशी भाषा.

प्रत्यक्तत्त्वविवेक प्रकरणम् १

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॐश्रीसद्गुरुप्रसादः ॥

श्रीमत्‌गंगारामगुरु, चरणकमलकीसेव॥
संसयतिमरमिटाइकै, दरस्योआतमदेव ॥१॥
श्रीगुरुनानकचरणरज, भजमनवारंवार ॥
जासभजनकरजानीए, अद्वयब्रह्मअपार ॥२॥

इस पंचदशीके पंदराँ ग्रंथ हैं पंचविवेक पंचदीप पंचआनंद, तिन्नापंचांविवेकां विचों पहिले विवेकका नाम प्रत्यक्‌तत्वविवेक है, तिसके आदि विषे टीकाकारका मंगलाचरण है।श्रीभारतीतीरथमुनीश्वर अर विद्यारण्य मुनीश्वर एन्नादुहांकों नमस्कार करके प्रत्यक्‌तत्वविवेकनाम ग्रंथका अर्थ प्रकाश कर्ते हैं। यह जो पंचदशीनाम ग्रंथ है तिसदी निर्विघ्न समापति अर आदरसें तिसदा सभना देशांविषे जिज्ञासीआंने विचार करणा। एन्नादुहां फलांवासते गुरांकों नमस्काररूप मंगलाचरण विद्यारण्यमुनीश्वर कर्ते भए हैं, यह उत्तमोंकी मर्यादा है, जो ग्रंथके आरंभविषे मंगलाचरण करणा।तांते इष्टदेवता जो हैं गुरु तिनकों नमस्काररूप मंगलाचरण अर वेदांतोंके अनुबंध वरणन कर्ते हैं। श्रीशंकरानंद नाम जो गुरु हैं तिनके चरणकमलांकों नमस्कार है। कैसेभी तिन के चरणकमल हैं। अज्ञान अर अज्ञानका कार्य जो जन्ममरण है सोई भया एक ग्राह, जैसे ग्राह आपने वश जो प्राणी है तिसकों अतिशय करके दुःखका कारण होता है तैसे अज्ञान अर अज्ञान-

का कार्य जो जन्म मरण है सोभी आपने वश जो प्राणी है तिसकों अतिशय करके दुःखका कारण होता है। ग्राहका अर्थ तंदूआ तिसके दूर करणेकों जो समर्थ हैं श्रीशंकरानंदगुरुके चरणकमल तिनकों नमस्कार है। सो श्रीशंकरानंदगुरू कैसे हैं आपने भक्तजनांकों चारे पदार्थ देणेकों समर्थ हैं। चार पदार्थ। धर्म, अर्थ, काम अर मोक्ष। फेर गुरु कैसे हैं अणिमा महिमा आदिक शक्तीआं करके संपन्न है ॥ अथ अनुबंधचतुष्टय स्वरूप वर्णनं ॥ अधिकारी १ विपय २ संबंध ३ प्रयोजन ४। साधन चतुष्टयसंपन्न जीव अधिकारी। साधनचतुष्टयस्वरूपवर्णनं। विवेक १ वैराग्य २ षट्संपति ३ मोक्षेच्छा ४। विवेक कहीए नित्यकी है अर अनित्य की है। जो कर्मउपासनाका फल है, धन पुत्र स्त्री स्वर्ग ब्रह्मलोकपर्य्यंत सो संपूर्ण अनित्य है अर्थ एह नाशवंत है। अर जो कर्म अर उपासनाका फल नही सो नित्यहै १॥ अर वैराग्य कहीए जो नाशी वस्तु है, धन पुत्र स्त्री आदिक तिसका त्याग करणा २॥ अर षट्संपति कहीए, शम १ दम २ उपरति ३ तितिक्षा ४ श्रधा ५ समाधानता ६। मनकीआँ वासनाकों दूर करणा इसका नाम शम है १। अर इंद्रियांको जीतना इसका नाम दम है २। अर सर्व लौकिक कर्म अर वैदिक कर्मौंका त्याग करणा, वैदिककर्म अग्निहोत्रादि कर्म तिसका त्याग करणा इसका नाम उपरति है ३। अर शीत उष्ण मान अपमान आदिक दुःखोंका सहारणा धीर्यकरके इसकानाम तितिक्षा है ४। अर गुरुवचना विपे अर वेदांत वचनांविपे विश्वास करणा अर्थ एह जो गुरु वेदांत कहते हैं सो यथार्थ है इसका नाम श्रधा है ५। अर गुरु वेदांतवाक्यके श्रवणविपे आलसते रहित होकर चित्तकों एकाग्र क-

रणा इसका नाम समाधानता है ६ । ३ ॥ अर एह परमेश्वरके आगे प्रार्थना करणी जो, मेरा जन्ममरणदुःख कब दूर होवेगा? यह जो इच्छा है इसका नाम मोक्ष इछा है ४॥ एह जो साधनचतुष्ट हैं तिन्ना करके संपन्न जो जीव है सो अधिकारी है एह प्रथम अनुबंध है ॥ अर दूसरा अनुबंध विषय है, सो वेदांतोंका विषय जीव ब्रह्मकी एकता है । जो जिस करके जांणीए सो तिसका विषय है जैसे नेत्रांकर रूप जाणीता है सो रूप नेत्रांका विषय है। अर जैसे करणोंकर शब्द जाणीता है सो करणोंका विषय है।तैसे जीव अर ब्रह्मकी एकता वेदांतों कर जाणीती है सो वेदांतोंका विषय है यह दूसरा अनुबंध है॥अर प्रतिपाद्य प्रतिपादक भावसंबंध तीसरा अनुबंध है, वेदांत प्रतिपादक है अर जीवब्रह्मकी एकता प्रतिपाद्य है ॥ अर चौथा अनुबंध प्रयोजन है सो प्रयोजन वेदांतोंका दो प्रकारका है। एक परमानंदकी प्राप्ति और दूसरा सर्व दुःखोंका नाश ॥ १ ॥ गुरांके चरणकमलोंकी सेवा करके शुद्ध भयाहै चित्त जिनोंका अर्थ एह रागद्वेष ईर्षा दंभरूप मलतें रहित भया है चित्त जिनोंका तिन्ना पुरुषांकों सुखैनही ब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिवासते प्रत्यक्‌तत्वका विचार करते हैं। प्रत्यक् कहीए साक्षी चैतन्य जो संपूर्ण अंतःकरणकीआं वृतीआंको प्रकाशता है अथवा असत् जडदुःखरूप जो जगत् हैं तिसतें विपरीत सच्चिदानंद रूपता करके जो प्रकाशे सो कहीए प्रत्यक् तिसदा जो तत्त्व है वास्तव शुद्ध अद्वैत रूप तिसदा जो विवेक है मिथ्याभूत पंचाकोशांते भिन्न करणा तिसकों निरूपण करते हैं।ईहां पर्यंत मंगलाचरण अर प्रत्यक्‌तत्वविवेक देकरणदी प्रतिज्ञा पूर्ण भयी ॥ २ ॥ अथ जीवब्रह्मकी एकतारूप जो वेदांतोंका विषय है तिसकी सं-

भावनावासते जीवकी सच्चिदानंदरूपता वर्णन कर्ते हैं ॥ जीवकी औं जाग्रत् स्वप्न सुपुप्तिरूप तिन्न अवस्था हैं। तिन्नह तिन्नाविषे चैतन्यकी एकता वर्णन कर्ते हैं। चैतन्य कहीए जो घट पट आदिक पदार्थोंकी प्रकाशनेवाली अनुभवसत्ता है, सो अनुभवसत्ता एकरूप है। जैसे जाग्रत् अवस्था विषे घट पट आदिकांका भेद है। परस्पर विलक्षण धर्माकर संयुक्त होणेतें घट जलधारण धर्मवालाहै अर पट शीत उष्ण निवारण करणे धर्मवाला है तांते दोनो भिन्नभिन्न हैं। अर तिन्नाका अनुभव जोहै सो एकरूपहै भिन्न नहि। अर अनुभवविषे जो भेद प्रतीति होती है एह घट अनुभव है एह पट अनुभव है सो अनुभव विषे भेदप्रतीति उपाधि घटपट के भेदकर होती है।जैसे घटाकाश मठाकाश एह जो आकाशविषे भेदप्रतीति होती है सो उपाधि घटमठके भेदकर होती है, वास्तव आकाशविषे भेद नही। घटमठरूप उपाधिके त्यागेतें आकाश आकाश ऐसे एकरूप आकाशकी प्रतीति होती है, तैसे घट पटरूप उपाधिके त्यागेतें अनुभव अनुभव ऐसे एकरूप अनुभव की प्रतीति होती है, तांतें जो अनुभव घटका है सो अनुभव पटका है। इसप्रकार जाग्रत्‌विषे अनुभव एकरूप है ॥ ३ ॥ तैसे स्वप्नेविषे जो अनुभव होता है सोभी एक रूप है अर स्वप्नविषे पदार्थोंका भेद है परस्पर, अर अनुभवका भेद नही.

शंका— जैसे जाग्रत्‌विषे पदार्थोंका भेद है अर अनुभवकी एकता हैं तैसेहि तुम कहितेहो, स्वप्नेविषे पदार्थोंका भेद है अर अनुभवको एकता है तउ जाग्रत अर स्वप्नका भेदना भया।

उत्तर—स्वप्नेके पदार्थ स्थित नहि उनकों संकल्पमात्र रू-

प होणेतें अर जाग्रत्‌विषे जो पदार्थ हैं सो स्थित हैं। काहेतें, जो
चर्पांपर्यंत ओहि पदार्थ देखीते हैं इसीकरके जाग्रत्‌ अर स्वप्नका
भेद है अर जाग्रत्‌ अर स्वप्नका जो अनुभव है तिसका भेद न-
हि ॥ ४ ॥ तैसे सुषुप्तिविषे जो अनुभव है तिस अनुभवका जा-
ग्रत्‌ अर स्वप्नके अनुभव सें भेदनहि।

शंका—सुषुप्तिविषे तां अनुभव नहि होता।जिसतें सभी लो-
क कहते हैं जो ऐसा, मै सुता मुझको कुछ खबर नारहि, तांतें जा-
ग्रत्‌ अर स्वप्नके अनुभव साथ सुषुप्तिके अनुभवका अभेद कैसे
कहिते हो

उत्तर— जिसतें सभी लोक कहिते हैं ऐसा, मै सुता जो मेरे-
कों कुछ खबर नारहि।एह जेडा कहिणा है सो सुषुप्ति विषे अज्ञान-
के अनुभवतें विना नहि बनता। जैसें गंगाजीके बडे गंभीर जल
विषे कोई डुबी मारकरके तिसकेनीचे बडी शीतलताका अनुभव
करके जलते बाहर निकसकरके एह कहिता है जो, मैनें जलविषे
बडी शीतलताका अनुभव कीआ है । जेकर डोहशीतलताका
अनुभव न कर्ता तौ जलतें बाहर निकसकर कैसे कहिता? जो, मैं
शीतलातका अनुभव कीआ है। तैसे जेकरके सुषुप्तिविषे न जा-
णनेका अनुभव न कर्तातां उठकर ऐसे न कहता जो, मैं सुषुप्ति-
विषे कुछ नजाणता भया।तांतें एह जानाता है जो सुषुप्ति अवस्था
विषे तां इसने बेखबरीका अनुभव कीआ है सो बेखबरी नाम
अज्ञान का है।

शंका— सुषुप्तिविषेतां इसने बेखबरीका अनुभव कुछ
नही कीया उठकरके इसने बेखबरीका अनुभव कीआ है

तांते वैखवरीका जो कहणा है सो स्मृतिज्ञान करके नहि ।

उत्तर— सुषुप्तितें उठकर वैखवरीका अनुभव नहि बनता॥ काहेते, जो प्रत्यक्षकर जिस वस्तुका अनुभव करीता है उस वस्तु के साथ इंद्रियांका संबंध तिस वस्तुके अनुभवका कारण है। जैसे घटके साथ नेत्र आदिकांका संबंध घटकी प्रत्यक्षताका कारण है तैसे सुषुप्तिकालके अज्ञानके साथ जेकर इंद्रियांका संबंध होवे तब सुषुप्तिकालके अज्ञानका अनुभव होवे।सो तौ जागेते सुषुप्ति कालका अज्ञाननाश होजाता है तांते तिसके साथ संबंध कैसे होवे! अर नष्टके साथभी जेकर इंद्रियांका संबंध होवे, तां मृत होए पिताकाभी दसाँ पंजाँवरसाँतें पीछेभी नेत्रांके साथ संबंधकर तिसकी प्रत्यक्षताहोवे सो तौ मृत होए पिताकी प्रत्यक्षता नहि होती, तांते प्रत्यक्ष अनुभवका विषे अज्ञान नहि होता अर अनुमितिरूप अनुभवकाभीविषे सुषुप्तिकालका अज्ञान नहि होत।काहेतें जो अनुमिति व्याप्ति अर लिंगके अधीन होती है। लिंगनाम हेतुका है। जैसे कोई कहे जो, पर्वत अग्निवाला है धूंए रूप लिंगतें भोजन वाले स्थानकी न्याई ।ईंहा जो अग्निकी अनुमिति है सो धूम अर अग्निकी व्याप्तिके अधीन है। जिथे धूम है उथे अग्नि है। एह जो धूम अर अग्निका नेमकर अकठा रहिना है तिसका नाम व्याप्ति है। सो धूमरूप लिंगके अधीन है अग्निकी अनुमिति। अनुमानते जो अनुभव होवै सो अनुमिति कहीए।तैसे जेकर ईंहां सुषुप्ति कालके अज्ञानकी अनुमिति होती तब कोई हेतुभी होता अर तिस हेतुकी व्याप्ति भी होती।सोतां ईंहां कोई हेतुभी है नहि अर व्याप्तिभी है नही तांते उठकरके सुषुप्तीके अज्ञानका अनुमितिरूप अनुभवनही होता।इसते जानीता है जो उठ करके अज्ञा

नका स्मरण कर्ता है तिस स्मरणका कारण जो अनुभव है सो सुषुप्तिविषे सिद्ध भया ॥ ५॥ सो अनुभव आपनाविषे जो है अज्ञान, तिसते भिन्न है। अर जाग्रत् अर स्वप्नके अनुभवते भिन्न नहि। इसतरां एक दिनविषे जो होतीआंहैं तिन्न अवस्था जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति। तिन्ना अवस्थांविषे अनुभव एक है जैसे, तैसे दूसरे दिनाविषे जो अनुभव होता है सो प्रथमदिनाविषे जो अनुभवसी तिस अनुभवते अभिन्न है ॥ ६ ॥ इसीतरां पहिले महिने विषे जो अनुभवसी सो अगले महिनेके अनुभवते भिन्न नहि। इसीतरां प्रथम वरसाविषे जो अनुभवसी उस अनुभवका दूसरे बरसके अनुभवते भेद नहि। इसीतरां जो सतयुगविषे अनुभवसी सोई त्रेता द्वापर कलियुगविषे अनुभव है। इसीतरां ब्रह्मकल्पविषे जो अनुभवसी सोई वराह आदिक कल्पांविषे अनुभव है। तांते अनुभव न उत्पन्न होता है न नाश होता है तांते अनुभव नित्य है।

शंका—एह सभी लोक कहते हैं जो घटका अनुभव नाश भया अर पटका अनुभव उत्पन्न भया तांते कैसे कहिते हौ जो-अनुभव नित्य है।

उत्तर—हम पूछते हैं। अनुभवकी उत्पत्ति अर विनाशका कोई साक्षी है के नहि। जेकर कहो साक्षी कोई नहि तां साक्षीसे विना अनुभवकी उत्पत्ति अर विनाश कैसे सिद्ध होवे? अर जे कर कहें अनुभवकी उत्पत्ति अर विनाशका साक्षी है तब बहुसाक्षी कौन है? अनुभवही साक्षी है वा अनुभवकाविषे घटपट आदिक ही साक्षी हैं? जेकर कहैं अनुभव साक्षी है तब जिस अनुभवकी उत्पत्तिविनाश ग्रहण करणा है सोई अनुभव साक्षी है वा उस अ

नुभवने भिन्न जो अनुभव है सो साक्षी है?जेकर कहीऐ सोई अनु भव साक्षी है सोतो बात नहि बनती। तिस अनुभवका नाश हो जाणेते आपने नाशका आप साक्षी कोई नहि होता। नाशका साक्षी कौन होता है जो, नाशते पिछे रहिता है अर दूसरा अनुभ- वतो है नही।तांते वहु प्रथम अनुभवके नाशका साक्षी कैसे हो- वे अर अनुभवकाविषे जो घट पट आदिक हैं सो अनुभवके ना- श अर उत्पतिके साक्षी नहि जड होणेते। तांते अनुभव उत्पत्ति अर विनाशते रहित है अर स्वयंप्रकाश है । आपने प्रकाशने वि- पे होरकी इछा नहि कर्ता। जैसे सूर्य आपने प्रकाशनेविषे दीप कोंकी इछा नहि कर्ता।तांते अनुभव स्वयंप्रकाश है अर नित्य है। नित्य कहिए सत्य है।और अनुभव कहिए चैतन्यहै॥७॥सो सत्य अनुभव आत्मरूप है सो आत्मा परमानंदस्वरूप है । जिसतें आत्माविपे परम प्रेम है, कदीभी मेरा असत्व मत होवे, सदा ही मेरा सत्व होवे इसप्रकार आत्माविषे प्रेम देखीता है इसते आ- त्मा परमानंदस्वरूप है ॥ ८ ॥ होरणा पदार्थांविषे जो प्रेम हो- ता है सो आत्माके संवंधकर होता है। जैसे चावल जो मिठ होते हें सो मिठा जो है गुड तिसके संवंध करके होते हैं स्वरूपकर तो चावल मिठ नहि।तैसे पुत्र आदिकां विपे जो प्रेम होता है सो आ त्माके संवंध कर होता है स्वरूपते पुत्र आदिकांविषे प्रेम नहि। तांते जिस आत्माके संवंधकरके पुत्र आदिकांविषे प्रेम है सो आत्मा परम प्रेमका आश्रय है तांते परमानंद रूप है॥९॥इस प्र कार आत्माकी सच्चिदानंदरूपता युक्तीयों करके निरनेकीती है अर ब्रह्मकी सच्चिदानंदरूपता उपनिषदों विपे वर्णनकीतीहै। अ- र ब्रह्म अर जीवकी एकताभी उपनिषदोंविषे वर्णनकीति है॥१०

शंका—जो तुम कहिते हो आत्मा परमानंदरूप है सोतौ नहि बनता। काहिते जो हम पूछते हैं आत्माकी परमानंदरूपता भासती है अथवा नहि भासती। जे कहो भासती है तौ विषयों-विषे इछा न होई चाहीए। किउं जो परमानंदके प्राप्त होआं तुच्छ विषयोंविषे प्रीत नहि बणती। जैसे अमृत करके जो तृप्तभया है तिसकों कुतेकी जूठी खल खाणेकी इछा नहि होती। अर जे कर कहो आत्माकी परमानंदरूपता नहि भासती इस करके विषयोंकी इछा होती है। जैसे किसीके घरमँह बहुता धन दबिआ होया होवे अर तिसकी तिसकों खबर न होवे तब वहु कौडीकौडी वासते दीन होता है। तैसे आत्माकी परमानंदरूपता तौ है पर, इसकों भासती नहि तांते तुच्छ विषयोंविषे दीन होता है, तौ आत्माविषे प्रेम न होना चाहिए। किउं जो प्रेम तौ वस्तुकी सुंदरता प्रथम जानिए। तांपाछे तिसविषे प्रेम होता है। सो तौ आत्माकी परमानंदरूपता जानी नही तौ आत्माविषे प्रेम कैसे होवे? आत्माविषे जेकर प्रेमहि न भया तद परमप्रेम कैसे होवे? तांते आत्मा परमानंदरूप नहि ॥

उत्तर—आत्माकी परमानंदरूपता समानते भासती है अर विशेषते नहि भासती। जिसतें विशेषते नहि भासती, इसतें विषयोंविषे इच्छा होती है। अर जिसतें समानकरके आत्माकी परमानंदरूपता भासती है तिसतें आत्माविषे परम प्रेम है। तांते आत्माकी परमानंदरूपता भासतीभी हैं अर नहिभी भासती। एहं दोनो बाता बनगेआं ॥ ११ ॥

शंका—एक वस्तुका भासना अर नभासना एह तां दोनो एक कालविषे नहि बनते ।

उत्तर—जैसे बहुतिआं बालकांके साथ मिलकरके किसीका पुत्र वेद पडता है शालाविषे, तिस शालाते बाहिर खडोता है जो तिसदा पिता तिसकों पुत्रके पडनेका शब्द समानते सुनीता है जिसकालविषे,तिसीकालविषे पुत्रका शब्द नहि सुनीता विशेष करके। तैसे आत्माकी आनंदरूपता भासती है समानते अर नहि भासती विशेपते। तांते समानते भासियांभी प्रतिबंधकरके विशेपते भान नहि होता ॥ १२ ॥ सो प्रतिबंध किसकों कहीता है ऐसे पुछे तां श्रवण कर। जो वस्तु देखनेके लाइक होवे अर देखी न जाये तां तिसवस्तुदे नदेखनेका जो कारण है सो प्रतिबंध कहीता है ॥ १३ ॥ तैसे पुत्रके शब्दके विशेपकरण सुणनेविषे प्रतिबंधका कारण होरणां बालकांके साथ मिल करके पडता है। जेकर ओह बालक अकला पडता होवे तब उसके पिताकों तिसके पडनेका शब्द विशेपकरके सुनया जाये,तांते जिसते ओह बालक होरणा बालकांके साथ मिलकर पढता है तिसते तिस बालकके पडनेका सब्द विशेपकरके नहि सुणीता।तांते तिस बालकके शब्द कान विशेपकरके सुणनेविषे प्रतिबंधका कारण होरणा बालकांके साथ मिलकरके पडना है। तैसे आत्माकी आनंदरूपताके विशेपकरके न जाणनेविषे प्रतिबंधका कारण अविद्या है।तिस अविद्याने विपरीत ज्ञान कर छोडया है।विपरीत ज्ञान कहीए दुःखरूप विपयोंकी सुखरूपता प्रतीत होणी अर सुखरूप आत्माकी प्रतीत न होणी ॥ १४ ॥ प्रतिबंधका कारण जो

अविद्या है तिसका किया रूप है, ऐसे पूछें तो श्रवण कर । सच्चिदानंदरूप जो ब्रह्म है तिसके प्रतिबिंबकरके सहित जो प्रकृति है सो सत्व रज तम एन्ना तिन्नागुणावाली है।सो प्रकृति,माया अर अविद्या दो रूपांकों प्राप्त होती है । जैसे कणक एकही आटा अर छाण दो रूपांकों प्राप्त होती है । सारप्रधान कणक आटा होती है अर असारप्रधान छाण होती है ॥ १५ ॥ तैसे सत्वप्रधान प्रकृति मायारूप होती है अर रजतमप्रधान प्रकृति अविद्यारूप होती है। मायाविषे जो चैतन्यका प्रतिबिंब है सो सर्वज्ञ ईश्वर है। काहेते जो माया ईश्वरके अधीन है ॥ १६ ॥ अर अविद्याविषे जो चैतन्यका प्रतिबिंब है सो जीव है सो जीव अल्पज्ञ है। काहेतें जो अविद्याके अधीन है सो अविद्या कारण शरीर है अर तिसकारण शरीर अविद्याविषे अभिमान करके प्राज्ञनामकों जीव प्राप्त होता है ॥ १७ ॥ दूसरा सूक्ष्मशरीर है, सो सूक्ष्मशरीर सतरां तत्वांका है। सतरां तत्व कहीए पंच ज्ञानींद्रियां, अर पंचकर्मेन्द्रियां, पंच प्राण,एकमन, एक बुद्धि। ज्ञानींद्रियां पंच कहीए श्रोत्र,त्वचा,नेत्र,रसना,घ्राण।कर्मेंद्रियां वाणी,हथ, चरण, उपस्थ, गुदा।प्राणपंच कहीए प्राण,अपान,व्यान,समान, उदान। एन्ना सतरां तत्वांकी उत्पति अपंचीकृत पंचमहाभूतां तें होती है। सो पंचमहाभूत कहीए आकाश,पवन,तेज,जल,पृथिवी। एन्नां पंजां महाभूतांकी उत्पति ईश्वरकी आज्ञाकरके तमोगुणप्रधान प्रकृतितें होती है। जीवांकों सुखदुःखके अनुभववास्ते पंचाँ भूतांके सतोगुणअंशतें ज्ञानइंद्रियां उत्पन्न होतीयां हैं। पंचआकाशके सतोगुण अंशते श्रोत्र इंद्रिय उत्पन्न होता है। पवनके सतोगुणअंशतें त्वचा इंद्रिय उत्पन्न होता है। तेजके सतो गुण-

अंशतें नेत्र इंद्रिय उत्पन्न होता है।जलके सतोगुणअंशतें रसना इंद्रिय उत्पन्न होता है।पृथिवीके सतोगुणअंशतें घ्राण इंद्रिय उत्पन्न होता है। अर पंचांही भूतांके मिलेहोए सतोगुणअंशतें अंतःकरण उत्पन्न होता है। सो अंतःकरण संकल्पविकल्परूप वृत्तिकरके मन कहीता है। अर निश्चयरूप वृत्तिकरके बुद्धि कहीतीहै। अर पंचांभूतांके रजोगुणअंशतें पंच कर्मइंद्रियां उत्पन्न होतीयां हैं। आकाशके रजोगुणअंशतें वाणी इंद्रिय उत्पन्न होता है।अर पवनके रजोगुणअंशतें हथ इंद्रिय उत्पन्न होता है।तेजके रजोगुणअंशतें चरण इंद्रिय उत्पन्न होता है । अर जलके रजोगुणअंशतें शिश्न इंद्रिय उत्पन्न होता है।अर पृथिवीके रजोगुणअंशतें गुदा इंद्रिय उत्पन्न होता है । अर पंचां भूतांके मिले होए रजोगुणअंशतें पचंप्राण उत्पन्न होते हैं॥२३॥जो एह सतरां तत्वांका सूक्ष्म शरीर वर्णन कीया है सो दो प्रकारका है ।एक समष्टि है अर दूसरा व्यष्टि है। समष्टि सूक्ष्मशरीरविषे अभिमान करके ईश्वर हिरण्यगर्भ रूपताकों प्राप्त होता है। अर व्यष्टि सूक्ष्मशरीरविषे अभिमानकरके प्राज्ञनामा जीव तैजसनामकों प्राप्त होता है ॥ २४ ॥ समष्टि जोहै तिसकों सर्वविषे आत्मतादात्म्य अभिमान होता है।अरव्यष्टि जोहै तिसकों सर्वविषे आत्मतादात्म्य अभिमान नहि होता।इसीकारणतें व्यष्टिअर समष्टिकाभेदहै॥२५॥इस प्रकार लिंगशरीरके उत्पन्न होयांहोयांभी जीवांको सुखदुःखका अनुभवरूप जो भोग है सो स्थूलशरीर अर स्थूलपदार्थांविना सिद्ध न होताभया । इसवास्ते परमेश्वर अपंचीकृतभूतांका पंचीकरण कर्त्ता भया ॥ २६ ॥ पंचीकरण कहीये एकएकभूतकों पंचांपंचां भूतांकरके सहित कर्ता भया। सो किसप्रकार कर्ता भया ऐसा

पूछें तौ श्रवण कर । एक पृथिवीकों प्रथम दो भाग कर्ता भया । ओन्ना दुहांविचों एक भागकों चार भाग कर्ता भया। इसी तरां जलकोंभी दो भाग कर्ता भया। अर ओन्ना दुहां भागांविचों एक भागके चार भाग कर्ता भया । इसी तरां तेज अर पवन अर आकाशके दोदो भाग कर्ता भया । अर तिन्ना दुहां भागांविच्चों एकएक भागेके चारचार भाग कर्ता भया । फेर पाछे पृथवीअर्धके जो चार भाग से तिन्ना चँवां भागांविच्चों एकएक भागकों जल आदिक चँवांका जो आधाआधा भाग सी तिसविषे मेल देता भया । इसी तरां जल आदिकोंके जो अर्धअर्धके चार भाग से तिनकोंभी पृथिवी आदिकोंके अर्धअर्ध भागविषे मेल देता भया। तव पृथिवीविषे जलादिक चँवां भूतांका भाग प्राप्त भया। उसके प्राप्त होणेतें पृथिवी पंचीकरणताकों प्राप्त भयी । इसी प्रकार जलआदिकभी चारोंभूत पंचीकरणताकों प्राप्त भये ॥ २७॥ पाछे तिन्ना पंचीकृत पंचां भूतांतें ब्रह्मांड उत्पन्न होता भया । अर तिस ब्रह्मांडविषे चौदां लोक उत्पन्न होते भये । अतल,वितल,सुतल,रसातल,तलातल,महातल, पाताल ,भूः,भुवः,स्वाहः,महर, जन,तप,सत्य। अर तिन्ना लोकांविषे तिसतिस लोकविषे जोजो उचित शरीर से सोसो परमेश्वरकी आज्ञाकरके पंचीकृतभूतांतें उत्पन्न होते भये । अर तिन्ना लोकांविषे निवास करणेवाले जो जीव से तिन्नाके भोगनेयोग्य अन्न आदिक उत्पन्न होते भये। इस प्रकार उत्पन्न भया जो शरीर है सो समष्टि व्यष्टिभेदकरके दोप्रकारका है। समष्टि स्थूलशरीरविषे तादात्म्याभिमानकरके हिरण्यगर्भ विराटरूपताकों प्राप्त होता भया ॥ २८ ॥ अर व्यष्टिरूप स्थूलशरीरविषे तादात्म्याभिमान

करके तैजसनाम जो जीव सी सो विश्वनामकों प्राप्त भया। सो विश्वनाम जीव देवता, मनुष, पशु, पक्षीआदिक अनेकरूपताकों प्राप्त भया। सो विश्वनाम जीव शरीरविषे तादात्म्याभिमानकरके आत्मज्ञानतें रहित होते भये। अर बाहिर जो शब्दादिक पंच विषे हैं तिन्नाविषे परचजाते भये ॥ २९ ॥ सो सुखके वास्ते बहुत प्रकारके कर्मांकों कर्ते भये। अर कर्मांके करणेवास्ते सुखांकों भोगते भये। इस प्रकार कर्म कर्तेहोये जीव जन्मांतें जन्मांतरांकों प्राप्त होते भये अर सुखकों न प्राप्त होते भये। जैसे नदीके प्रवाहविषे प्राप्त होये कीडे लहिरोंविषे वारंवार गोते खाते हैं। एक लहिरतें निकसकर दूसरीलहिरविषे गोते खाते हैं। दूसरी लहिरतें निकसकर तीसरी लहिरविषे गोते खाते हैं। इसीतरां उनके दुःखोंका अंत नहि आवता। तैसे जीवांको चौरासी लक्ष योनांविषें दुःख प्राप्त होते हैं तिनका अंत नहि आवता ॥ ३० ॥ इस प्रकार अविद्या करके आत्माकी जो परमानंदरूपता है तिसके विशेषकरके नभासणेते जन्मांकी अर दुःखांकी प्राप्ति वर्णन कीती। अब आगे जन्मां अर दुःखांके दूर करणेका उपाय वर्णन कर्ते हैं। जैसे नदीके प्रवाहविषे गोते खाते जो जीव हैं, तिनके उत्तम कर्मांके प्राप्त होयां किसी दयावानकी दृष्टिविषे ओह आवते हैं तब उनको दुःखकों देखकर उसका मन द्रवीभूतहोता है। तब वहु दयावान् प्रवाहस्यों निकास लेता है। तब वहु नदीके प्रवाहते बाहिर निकासे होये नदीके कनारे जो वृक्ष है तिसकी छायाकों प्राप्त होयकरके सुखकों प्राप्त होते हैं ॥ ३१ ॥ तैसे जन्मांते जन्मांतरांविषे दुःखी जो एह जीव हैं। जब एन्नांके पुण्यकर्म प्रकट होते हैं तब ज्ञान वान् जो गुरु हैं परम दयावान, तिसकी दृष्टिविषे प्राप्त होते हैं। तब गुरु

कृपाकरके इसकों उपदेश कर्ते हैं तूं पंचांकोशांतें भिन्न हैं। तब एह जीव पंचां कोशांते विवेककरके परमानंदकों प्राप्त होता है ॥ ३२ ॥ सो पंचकोश कवन हैं असे पूछें तां श्रवण कर। अन्नमय,प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय,आनंदमय,एह पंचकोश हैं।तिन्ना करके आत्मा परमानंदरूप आछादियाहोया आपणे परमानंदरूपकों भुलायकरके जन्ममरणरूप दुःखांकों प्राप्त होता है। जब पंचांकोशांका विवेक करता है तब परमानंदस्वरूप आत्माको जानकरके जन्म मरण आदिक दुःखांते रहित होजाता है ॥ ३३ ॥ सो पंच कोश तिन्ना शरीरांके अंतर्गत हैं। अन्नमयकोशरूप स्थूलशरीर है। सो स्थूलशरीर पंचीकृतपंचां भूतांते उत्पन्न भया है।अर सूक्ष्म शरीर तिन्ना कोशांका नाम है। प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, प्राणमयकोश पंचप्राण अर पंच कर्म इंद्रियां है।सोएह प्राणमय कोश अपंचीकृत पंचांभूतांके रजोगुणअंशतें उत्पन्न होया है ॥ ३४ ॥ पंचज्ञान इंद्रियां अर मन इसका नाम मनोमय कोश है सो अपंचीकृत पंचांभूतांके सात्विक अंशते उत्पन्न भया है। अर पंच ज्ञान इंद्रियां अर बुद्धि एह विज्ञानमय कोश है। सो विज्ञानमय कोशभी पंचा भूतांके सात्विकअंशते उत्पन्न भया है ॥ ३५ ॥ अर कारणशरीरका नाम आनंदमय कोश है। सो आनंदमय कोश प्रिय, मोद, प्रमोदवृत्तीयांसहित मलन सत्वप्रधान अविद्याका नाम है। प्रियवृत्ति कहीए इष्टपदार्थके दर्शनदे होयां जो है सुख। अर मोदवृत्ति कहीए इष्ट पदार्थके प्राप्त भयां जो है सुख। प्रमोदवृत्ति कहीए इष्ट पदार्थके खानेपाहिरनेते भया जो है सुख। एन्ना पंचां कोशांके साथ मिलकरके आत्मा पंचकोशरूप होजाता है। जैसे जल लाल अर काले चिटे हरे पीले पदार्थके साथ

मिलकरके लाल काला चिटा हरिया पीला होजाता है ॥ ३६ ॥

प्रश्न—पंचां कोशांके साथ मिलकरके पंचकोशरूप होयां जो आत्मा है तिसका पंचां कोशांतें न्यारा करणा कैसे होवे। जैसे जल कसुंभा सुरमा दुध धेरक हलधीके साथ मिलकरके लाल कालाचिटाहरिया पीला होयाहोया तिन्नाते न्यारा करणा कठणहै

उत्तर—जैसे गेरी आदिकांके साथ मिलकरके लाल होया होया जो है जल तिसकों निर्मली बूटीके संबंधकरके शुद्ध करीता है, तैसे पंचां कोशांके साथ मिलकरके पंच कोशरूपताकों प्राप्त होयाहोया जो आत्मा है सो विवेक करके शुद्धब्रह्मरूपताकों प्राप्त होता है॥ ३७॥ सो ओह विवेक कोन है! ऐसे पूछें तां श्रवण करा।जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति एन्ना तिन्ना अवस्थांविषे आत्माका अन्वय है अर एन्ना तिन्ना अवस्थांका परस्पर व्यतिरेकहै।एह जो विचार है तिसका नाम विवेक है।एह जो स्थूल शरीर है अन्नमय कोश, जाग्रत् अवस्था विषे भासता तिसकी स्वप्न अवस्थाविषे प्रतीति नही होती। काहेते जो स्थूलशरीर पर्य्यंकपर पडा रहता है। अर जाग्रत् अवस्थाविषे जो होर पुरुष हैं तिसके पास सो तिसके शरीरकों देखते हें अर आत्मा सोई स्वप्ने विषे है। जो जाग्रत् अवस्थाविषे सी, तांते आत्माका स्वप्ने विषे अन्वय भया अर स्थूल शरीरका स्वप्ने विषे व्यतिरेक भया ॥ ३८ ॥ इसीतरां स्वप्नेविषे जो है लिंगशरीर तिसका सुषुप्तिविषे स्वभाव होता है अर स्वप्ने विषे जो आत्मा स्वप्नेकों प्रकाशता सी, सोई सुषुप्तिविषे सुषुप्तिकों प्रकाशता है। अर जेकर सुषुप्तिकों आत्मा न प्रकाशे तौ सुषुप्तिका नाम जगत्विषे कैसे प्रसिद्ध होवे? तांतें सुषुप्तिविषे

आत्माका अन्वय है अर सूक्ष्मशरीरका सुषुप्तिमें व्यतिरेक है ॥

शंका—पंचां कोशांके विवेकको तुमने प्रतिज्ञा करीसी तिसकों छोडकरके तिन्ना शरीरांका विवेक करणा प्रसंगसें असंगत है

उत्तर—प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय,एन्ना तिन्ना कोशांका नाम सूक्ष्मशरीर है, तिस सूक्ष्मशरीरके विवेक करणेसे तिन्ना कोशांका विवेक सिद्ध होता है, तिसतें सूक्ष्मशरीरका विवेक करणा प्रसंगमे असंगत नहि। गुणांकी सात्विकी राजसी अवस्थाभेदकरके एक सूक्ष्मशरीरविषे तिन्ना कोशांका वर्णन किया है। भेदकरके वास्तवते तिन्नो कोश सूक्ष्मशरीररूप हैं ॥ ४० ॥ जैसे सुषुप्तिविषे आत्माका अन्वय है अर सूक्ष्मशरीरका व्यतिरेक है तैसेहि समाधि अवस्था विषे आत्माका अन्वय है अर कारण शरीर जो है आनंदमय कोश, तिसका समाधिअवस्थाविषे व्यतिरेक है। इसप्रकार अन्नमयआदि कोशपंचरूप जो शरीर तिन्न है तिन्नातें आत्मा भिन्न है। पंचां कोशांके मध्यविषे अनुसूत होणेतें जैसे अनेक मणकियांके मध्यविषे अनुसूत जो है धागा, सो मणकियांतें भिन्न है अर पंच कोश मिथ्या हैं। एक अधिष्ठान विषे कदाचित् प्रतीत होणेते अर कदाचित न प्रतीत होणेते, जैसे एक अधिष्ठान रसोविषे कदाचित् प्रतीत होणेवाले अर कदाचित् न प्रतीत होणे वाले सर्प माला धारा आदिक मिथ्या है। अर आत्मा सत्य है कल्पितांदीप्रतीतिसमेविषेभी एकरसताकरके प्रतीत होणेते जैसे सर्पमालाधाराआदिकांकी प्रतीतिसमेविषे एकरस होकरके प्रतीत होती रसीकी इदंता सत्य है॥ ४१ ॥ इसप्रकार अन्वयव्यतिरेककरके पंचाकोशांसे भिन्न कीयाहूया

आत्मा परब्रह्मरूपताकों प्राप्त होता है । जैसे मुंजते युक्तिकरके तीली न्यारीकरलईती है तैसे धीर्यवान् ब्रह्मचर्य्यादिक साधनाकरके संपन्न जो जिज्ञासी जन हैं तिन्नाने पंचांकोशाँसे आत्माकों भिन्न करीता है । पंचांकोशाँते भिन्न जो आत्माहै सो ब्रह्मरूप है काहेते जो ब्रह्मका लक्षण सच्चिदानंदरूप है सोई सच्चिदानंदलक्षण आत्माका है तांते आत्मा अर ब्रह्मकी एकता है भेदनहि॥४१॥ इसप्रकार जिज्ञासीजनांकेतांई गुरांने जीवब्रह्मकी एकताभी युक्तीआंकर संभावना करवाई सो जीवब्रह्मकी एकता तत्वमस्यादिवाक्यने भागत्यागलक्षणाकरके जणाईती है जैसे काशीमें देख्या जो है पुरुष प्रथम तव माघका महीना सी,अर पाछे तिसकों कुरुक्षेत्रविषे देख्या तव विशाखका महीनासी,तवतिसकों देखकर कहीताहै"सोयंपुरुषः"इसवाक्यविषे संशब्दका अर्थ जोहै काशीदेश अर माघके महीनेविशिष्टपुरुष अर अयंशब्दकाअर्थ जोहै कुरुक्षेत्र देश अर विशाखके महीनेविशिष्ट पुरुष तिसके बीचसें एक भाग जो है काशीदेश अर माघका महीना अर कुरुक्षेत्रदेश अर विशाखका महीना तिसका त्यागकरके एकभाग जो है पुरुष तिसकी एकता भागत्यागलक्षणाकरके जाणीती है ॥ ४३ ॥ तैसे तत्पदका अर्थ जो है जगतदा अभिन्न निमित्त उपादानकारण ब्रह्म सो किसप्रकार अभिन्ननिमित उपादान कारण है, ऐसे पुछेंतां श्रवणकर। तमोगुणप्रधान जो माया है तिसके साथ मिलकरके ब्रह्म जगतरूपताकों प्राप्त होताहै अर शुद्धसत्वरूप मायाकेसाथ मिलकरके जगत्का कर्ता होता है अर्थ एहजो निमित्तकारण होता है जैसे एकही ऊर्णनाभीनाम जीव आपणे मुखसें निकासी जो तंतु है तिसका आपही उपादानकारण अर निमित्तकारण

होताहै सो ततपदका वाच्यअर्थ है॥ ४४॥ अर जब कामकर्म आदिकांकरके दूषित मलिन सत्वप्रधान जो माया है, अविद्या जिसका दूसरा नाम है तिस अविद्यारूप उपाधिकों ग्रहण कर्ता है तब परब्रह्म जीवनामको प्राप्त होता है अर्थ एह जो त्वंपदका वाच्यअर्थहोताहै॥४५॥एह जो उपाधिहै,परस्पर विलक्षण अर परस्पर विरोधवाली तिन्नप्रकारकी माया, तमोगुणप्रधान १अर शुद्धसत्त्वप्रधान २ अर मलिनसत्वप्रधान ३ तिसकों त्यागकर अखंड सच्चिदानंदपरब्रह्म एक तिसउपाधिका आश्रय लखीता है॥४६॥ जैसे सोयंपुरुष इसवाक्यविषे उपाधि जो है देशकाल तिसकों त्यागकरके तिसउपाधिका आश्रय एकपुरुष लखीता है ॥४७॥ तैसे जीवईश्वरकी उपाधि जो है माया अर अविद्या तिसकों त्यागकरके अखंडसच्चिदानंद लखीता है॥ ४८ ॥

शंका—महावाक्यकरके लखीता जो है अखंडसच्चिदानंद ब्रह्म सो सविकल्प है के निर्विकल्प है? आदिला पक्ष नहि बनता। काहेतें,जो सविकल्पवस्तु होती है सो मिथ्या होती है।अर निर्विकल्पकोंभी लक्ष्यतां नहि बनती, काहेतें जो लक्ष्यता धर्मवाला है तिसकों निर्विकल्पता नहि अर जेकर कहो तिसविषे लक्षतारूप धर्म नहि तौलक्षतारूप धर्मते रहित जो है सो लक्षलोकविषे नहि देखीता । अर युक्तिकरकेभी लक्षकों निर्विकल्पता नहि बनती काहेते, जो लक्षता धर्मवालेकों निर्विकल्प कहिणा तौ ऐसा है जैसे कोई कहे मेरी माता वंध्या है काहेते जो माता तेरी वंध्या होती तबतूं जन्मकों कैसे प्राप्तहोता! तेराजन्मही ऐसे जनावता है जो, तेरी माता वंध्या नहि तैसे लक्षताधर्मवालेकों ता सविकल्पताहोती है अर निर्विकल्पता नहि होती॥ ४९ ॥

उत्तर– तैने जो एह प्रश्नकीया जो लक्ष कवनहै सविकल्पहै अथवा निर्विकल्प है एहजो तेराविकल्पहै सो निर्विकल्पविषेहै के सविकल्पविषेहै जेकरकहै निर्विकल्पविषे विकल्पहै तव तेरेकरके कहियाजो दोषहै सो तेरेकोंही प्राप्तहोताहै जैसे कोईकहेनिर्धनके पास धन है इसकहिणेमैं जैसे वदतोव्याघात है तैसे निर्विकल्प विषे विकल्प है। इसकहिणेमैंभी वदतोव्याघात है अर जेकरके है सविकल्पविषे मेरा विकल्पहै तद आत्मआश्रयअर अन्योन्याश्रय अर चक्रिका अर अनवस्थारूप दोषकीप्राप्ति होती है।कैसे जो सविकल्पनामहै विकल्पवालेका तां एह सिद्ध भया, विकल्पवाले विषे विकल्पहै । जोविकल्पवालेविषे रहेगा सो विकल्पविषेभी रहेगा जैसे कलीचेवाले स्थानपरजो बैठाहै सो कलीचेपरभी बैठा है ऐसे होयाँसें विकल्पविषे रहियाजो है विकल्प सो आधाररूप विकल्पसें भिन्न है के आधाररूप विकल्पसें अभिन्नहै? जेकरकहो अभिन्न है तव आत्माश्रय दोष भया।काहेतें जो आपही विकल्प आधारभया अर आपही तिसके आश्रय रहिनेवाला भया, सो तौ वात जगत्मैं नहिदेखीती।जैसे अपने मोढेपर आप नहि चडसकीता।अर जेकरकहो आधारभूत विकल्पसें तिसविषे रहिणेवाले विकल्पका भेदहै तव आधारभूतजो विकल्पहै सोभी निर्विकल्पविषे रहिताहै के सविकल्पविषे रहिताहै? जेकहें निर्विकल्पविषे रहिता है तव वदतो व्याघातदोष होवेगा।अर जेकर कँहें आधारभूत विकल्पभी सविकल्पविषे रहिता है तव तिसके आश्रयकों सविकल्प किसने कीया? प्रथमविकल्पने कीया अथवा तीसरे विकल्पने कीया? जेकर कँहं प्रथमविकल्पने आधाररूप विकल्पके आश्रयकों सविकल्प कीया तव आधाररूप विकल्प प्रथमवि-

कल्पके आश्रय भया । इसप्रकार अन्योन्यआश्रयदोषभया। अर जेकर कहें तीसरे विकल्पने दूसरे विकल्पके आश्रयकों सविकल्प कीया तब तीसरे विकल्पनेभी सविकल्पके आश्रय रहिणा है, तब तीसरे विकल्पके आश्रयनूं सविकल्प किसने कीया? प्रथमविकल्पने तिसके आश्रयकों सविकल्प कीया अथवा दूसरे विकल्पने तीसरेविकल्पके आश्रयकों सविकल्प कीया अथवा चौथेविकल्पने तीसरे विकल्पके आश्रयकों सविकल्प कीया? जेकर कहें प्रथमविकल्पने तीसरे विकल्पके आश्रयकों सविकल्पकीया, तब चक्रिकादोषकी प्राप्तिहोई। काहेते जो प्रथमविकल्पके आश्रयकों सविकल्पकीता सोदुसरे विकल्पने अर दुसरेविकल्पके आश्रयकों सविकल्प कीया सो तीसरे विकल्पने अर तीसरे विकल्प के आश्रयकों सविकल्पकीता प्रथमविकल्पने इसप्रकार चक्रिका प्राप्त भयी।अर जेकर कहें तीसरे विकल्पके आश्रयकों सविकल्प दुसरे विकल्पने कीयाहै तब अन्योन्याश्रयदोष होताहै।काहेते जो दुसरे विकल्पके आश्रयकों सविकल्पकीया तीसरे विकल्पने अर तीसरे विकल्पके आश्रयकों सविकल्पकीया दुसरे विकल्पने अर जेकर कहें तीसरे विकल्पके आश्रयकों सविकल्प कीता है, चौथे विकल्पने तब चौथे विकल्पनेभी सविकल्पके आश्रय रहिणाहै,तब चौथे विकल्पके आश्रयकों सविकल्प करणेवाला पंचवां विकल्प होवेगा । इसीतरां पंचवें विकल्पके आश्रयकों सविकल्प करणेवाला छिवाँ विकल्प होवेगा । इसीतरां आगेआगे एकएक वधता जाएगा इसका नाम अनवस्थादोष है ॥ ५० ॥ जेते दोषांकी प्राप्ति निर्विकल्पविषे विकल्प है के सविकल्पविषे विकल्प है। इसविचारमैं होती है तेते दोषांकी प्राप्ति एना पंचां स्थानांविषे

होती है। सो पंचस्थान कवन हैं ऐसा पुच्छैंतां श्रवण कर, एकतौ एहजो रूप रूपवालेविषे रहिता है केरूपते रहितविषे रहिता है। अर दूसरा एहजो क्रियाक्रियावाले विषे रहिती है केअक्रियविषे रहितीहै। अर तीसरा एहजो गोत्वरूप जाति गौविषे रहितीहै केगौते भिन्नविषे रहिती हैं। अर चोथा एहजो घटघटवालेविषे रहिता है, केघटतें रहितविषे रहिताहे। पंचवां एह घटका संबंध घटके संबंधवाले विषेहै केघटके संबंधतें जोरहितहै। तिसविषहै। तां इसतरांतें तरकां कीत्यांहोयां किसीपदार्थकी सिद्धिनहिहोती सभना पदार्थांकी अनिर्वचनीयता सिद्ध होतीहै। अर्थ एहजो सर्वव्यवहारकी निवृतीरूपमौनता प्राप्त होतीहे । तांते गुरुशिष्य उपदेशआदिकांके अभावकीप्राप्ति होतीहै। तांते उपदेशआदिकांके वासते तत्ववेतत्यांने संज्ञा कल्पीयांहैं। तांते संपूर्णसंज्ञा अखंड सच्चिदानंद परब्रह्मविषे कल्पित हैं सो अखंड सचिदानंद परब्रह्मकैसाहै। विकल्पका तिसविषेअभाव है। अर तैसे तिसविषे विकल्पके अभावकाभी अभावहै । अर लक्षताकाभी तैसे तिसविषे अभावहै। अर लक्षताके अभावकाभी तिसविषे अभावहै। तांते जैसे तिसविषे विकल्पआदिकोंका कल्पित व्यवहार होताहै। तैसे तिसविषे लक्ष एहभी कल्पित व्यवहार होताहै। तांते अखंड सच्चिदानंद परब्रह्म तत्त्वमसि महावाक्यकरके लक्षीताहै एहजो ब्रह्मवेता कहितेहैं,सो कल्पकरके कहितेहैं।जांतें संपूर्ण व्यवहार तिसविषे कल्पिया होयाहै। तांते लक्षताभी तिसविषे कल्पितहै,तांतें एह शंका न कीती चाहीए।जोलक्षसविकल्पहै,वानिर्विकल्पहै, काहेतेजोलक्षविषे सविकल्पता अर निर्विकल्पता दोनोकल्पितहैं ॥५२॥ इतने ग्रंथ करके क्यासिद्धभया । श्रवण अर

मनन होसिद्धभए श्रवणनाम किसकाहै,महावाक्यकाअर्थ जो है, जीवब्रह्मकी एकता तिसका गुरांके मुखसें बुद्धिपूर्वक सुणना अर मनननाम किसकाहै? जो गुरांकेमुखते श्रवणकरीसी जीवब्रह्मकीएकता तिसको बुद्धिकेसाथ अनेक युक्तियांकरके विचारकरणा। अर बुद्धिविषे उसकीश्रद्धा दृढहोणी जोगुरुकहितेहैं जीवब्रह्मकी एकता सो यथार्थ है॥५३॥अब आगे निदिध्यासनका रूपवर्णन करतेहैं श्रवण मननकरजो जानयाहै अखंडसच्चिदानंद परब्रह्म संशयते रहित तिसविषे चित्तकीवृत्ति प्रवाहाकार होजानी इसकानाम निदिध्यासन है ॥ ५४ ॥ सो एह निदिध्यासन जब अतिहीदृढताकों प्राप्तहोता है। तब समाधिहोतीहै, समाधि अर निदिध्यासनका भेदक्याहै ऐसे पुछेंतां श्रवणकर । निदिध्यासन अवस्थाविषे ध्याताध्यानध्येय एह त्रिपुटी भासतीहै जो मैं सच्चिदानंद परब्रह्मका ध्यानकर्ताहां, अर समाधिअवस्था विषे अभ्यासकरके त्रिपुटीतें रहित होजाताहै। अर्थ एहजोमैं अखंडसच्चिदानंदपरब्रह्महां एह वृत्तिभी उदयनहिहोती । काहेते जो अहंभावकाभी अभाव होजाताहै । चित्तजोहै सो परब्रह्मविषे लगाहूया परब्रह्मरूप होजाताहै । चित्ततोहै सो आपने चितभावकों त्यागकरके पवनते रहित स्थानविषे स्थितदीपककी न्यांई अचल प्रकाशरूप होजाताहै। इसकानाम समाधिवर्णन करते हैं ज्ञानवान् ॥ ५५ ॥

प्रश्न—तुसीकहितेहो समाधीविषे त्रिपुटी नहिहोती काहेते जो सभना वृत्तियांका अभाव होजाताहै । तांते अखंड ब्रह्माकार वृत्तिभी नहिरहिती तांते एह कैसेकहा जो समाधिविषे अखंडाकार वृत्ति होतीहै । काहेतें जो अखंडाकारवृत्ति भी तौवृत्ति है ।

तां तिसअखंडाकार वृतिके होयांहोयां सर्ववृति यांकाअभावन सिद्धभया ॥

उत्तर—अखंडाकारवृतितां समाधिविषे रहितीहै । काहेते जोसमाधिते उठकरके तिसअखंडानंदकों यादकर्ता है। तांते एह जो यादगीरीहै ।अखंडानंदकी सो समाधिकालविषे अखंडानंदके अनुभवकों जनावतीहै । तांते अखंडानंदका अनुभव समाधि अवस्थांविषेभया तांते अखंडाकारवृति समाधिविषे सिद्ध भई। तांते समाधिविषे वृतीयांनहि इसका क्याअर्थ सिद्धभया समाधिविषे अखंडाकारवृतितौ रहितीहै ।परवृतिका वृतिभाव नहिरहिता जैसे जलविषे लूणअभेद होजाताहै तैसे वृतिअखंड परब्रह्मविषे अभेद होजाती है। जैसे लूणजलविषे नेत्रांकर नहि देखी तापर रसनाकरके जान लईता है । तैसे अखंडब्रह्माकार वृतिभी स्थूलदृष्टिकर नहिप्रतीत होती परसूक्ष्म दृष्टिकर जानीती है। जो अखंडाकारवृति समाधिविषे रहिती है ॥ ५६ ॥

शंका—समाधिविषे जो अखंडाकारवृति रहिती है, सो समाधिकालविषे उत्पन्न होतीहै । अथवाजाग्रत्कालविषे उत्पन्न होई जो वृतिहै सो समाधिकालविषे रहितीहै प्रथमपक्षतौनहिबनता काहेते जो समाधिकालविषे वृतिकी उत्पतिकाकारण प्रयत्न नहिहोता अर जाग्रत्कालविषे उत्पन्नहोई जो अखंडाकार वृतिहै सोभी समाधिविषे नहिरहिती काहेते जोवृति क्षणक्षणविषे नाश होजातीहै तांते दूसरा पक्षभी नहिबनता। दुहांप्रकारांकरके समाधिविषे अखंडाकारवृति नहिबनती, तुमकैसे कहितेहो जो समाधिविषे अखंडाकारवृति रहितीहै ।

उत्तर—समाधिविषे अखंडाकारवृत्ति रहितीहै, सोवृत्ति समाधिकालमें उत्पन्न होतीहै। समाधिकालते प्रथम जो कीतार्सी अखंडाकारवृत्तिका प्रयत्न तिसप्रयत्नते समाधिविषे अखंडाकारवृत्ति होतीहै। सो समाधिते प्रथमकालका प्रयत्न कैसाहै । दो तिसके सहाइकहैं, एकतौ निःकामपुण्य अर दूसरा वारंवार समाधिके अभ्यासकरके उत्पन्न भया जो संस्कारसोहै ॥ ५७ ॥ एह समाधिकाउपदेश श्रीकृष्णभगवान्जीने गीताके छिंवें अध्यायविषे अर्जुनकेतांई कीयाहै । हे अर्जुन जैसे पवनतेरहित स्थानविषे दीपक स्थितहोया डोलतानहि अचल होजाताहै। तैसे समाधिकालविषे आत्मअभ्यासके करणेवाला जो जिज्ञासीहै तिसकाचित ब्रह्माकार अचल होजाताहै । तांते अजकलके जो जिज्ञासीहैं, तिनकोंभी समाधिका अभ्यासकीया चाहीताहै॥५८

प्रश्न—समाधिका क्रियाफलहै । विना फलजानेते समाधिका अभ्यास नहि होसक्ता।तांते समाधिकाफल कृपाकरके कहो जो उसफलकी प्राप्तिवास्ते मैंभी समाधिके अभ्यासका यत्नकरों.

उत्तर—समाधिके दोफलहैं, एक अवांतरफलहै। अर दूसरा परमफलहै। जैसेकिसीने गंगास्नान करणेजाना होताहै, तां तिसके तुरनेरूप प्रयत्नका गंगास्नान परमफल है। अर पहोये कुरुक्षेत्रका स्नान उसका अवांतरफलहै। तैसे समाधिका अवांतरफल दोप्रकारका है । एकतां अनंतजन्मांविषे संचितकीये जो पुण्य पाप रूप कर्मसे करोडां सो नाश होजातेहैं । अर दूसरा अविद्या अर अविद्याके कार्यका नाश करणेवाला जो है ब्रह्मसाक्षात्कार तिसकासाधन जो निःकाम धर्म है। सो वधताजाता है॥

॥ ५९ ॥ इसीकारणते ब्रह्मज्ञानी इस निर्विकल्प समाधिकों धर्म मेघ कहिते हैं। जैसेमेघ हजारों जलकीयां धारांकरके वर्षाकर्ता है। तैसे निर्विकल्प समाधिभी ब्रह्मसाक्षात्कारका कारण जो धर्म है, सोईभया एकअमृत तिसकीयां हजारों धारांकरके वर्षाकर्ता है। इसते इसनिर्विकल्प समाधिकों धर्ममेघ कहिते है, एक क्षणमात्रभी जो निर्विकल्प समाधि है, सो इतने पुण्यकों उत्पन्न कर्ता है। सौ अश्वमेधयज्ञ करणेते जो पुण्य उत्पन्नहोवे ॥ ६० ॥ अब आगेसमाधिका परम प्रयोजन वर्णन कर्ते हैं, सो श्रवणकर। इस निर्विकल्प समाधिकरके ज्ञानका प्रतिबंधक जो अहंकार अर ममता तिसके संस्कार नष्ट होजातेहैं। अर अहंकारके नाश होणेते पुण्य पाप रूपकर्मोंका जो समूह है सोसंचित्त सोभी नाशहोजाता है जैसे वृक्षके नाशहोयां तिसवृक्षकी छायाभी नाशहोजाती है। तैसे समाधि विषे अहंकारके नाशहोनेते अहंकारके आश्रयजो संचित पुण्यपाप रूपकर्मसे सोभी नाशहोजाते हैं। तांते वासना अर अहंता अर ममता अर पुण्यपाप रूपकर्म सो सभी नाशहोजातेहैं। तांते वासना अर अहंता अर ममता अर पुण्यपाप रूपकर्म एहजो ब्रह्मसाक्षात्कारके प्रतिबंधकसे पंचतिन्नाके नाश होयांहोयां ॥ ६१ ॥ महावाक्य प्रतिबंधतें रहित होया होया जीवब्रह्मकी अभेदतानूं अपरोक्षकरके दिखलाय देता है। जैसे हथकेउतेजो विल्वका फल है, तिसकोंनेत्र अपरोक्षकरके दिखायदेते हैं अर समाधिते प्रथम महावाक्यप्रति बद्ध हूयाहूया परोक्षज्ञानकों उत्पन्न कर्ता है। प्रतिबंधकाकारण अहंता आदिक पंच हैं, जैसे मणिमंत्र आदिकांकरके प्रतिबद्ध होईहोई अग्नि दाहकों नहिकर्ती अर स्वरूपकरके परीनजर आवती है। जब

अग्निका प्रतिबंध दूरकरीता है तब अग्निदाह कर्ता है। तैसे अहंता अर ममता अर वासना अर सकामपुण्य अर पापएन्हा पंचां करके प्रतिबद्ध होयाहोया महावाक्य अपरोक्षज्ञानकों उत्पन्न नहिकरसक्ता। समाधिकरके अहंताआदिक प्रतिबंधके नाश होयांहोयां महावाक्य अपरोक्षज्ञानकों उत्पन्न कर्ता है। तांते एह सिद्धभया। अपरोक्षज्ञानकी प्राप्तिवासते समाधिका अभ्यासकरणा जिज्ञासीयांने ॥ ६२ ॥

प्रश्न—परोक्षज्ञानका क्याफल है, अर अपरोक्षज्ञानका क्याफल है।

उत्तर—श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठ गुरुके मुखते श्रवणकीया जोहैमहावाक्य जिसदिन तिसदिनतें लेकरके आगे पापकर्मका स्पर्शनहि होता। अर्थ एहजो आगे संपूर्णपापकर्म नाशहोजातेहैं, काहेतें जो ज्ञान आभ्यासविपे लगाहूया जिज्ञासीहै तिसकी पापकर्मों विपे रुची नहिरहिती। अकसमात्रते जोकोई मार्गमें चलतियांहोयां चरणाके तले कीट पतंग मर्जाताहै। तिसकापाप तिसजिज्ञासीकों स्पर्श नहिकर्ता ज्ञान अभ्यासके बलतें जैसे किसोपुरुपने मोमजांमा डोढाहै तांइसपुरुपकों मंदमंद बूंदांकास्पर्श नहिहोता मोमजांमें केप्रभावते ॥ ६३॥ अब अपरोक्षज्ञानका फल कथन कर्तेहैं सो श्रवणकर। अपरोक्षज्ञान जन्ममरणका कारण जोअज्ञानसी तिसकों नाश करदेताहै। जैसे मध्याह्नकासूर्य अंधकारकों नाश करदेताहै ॥ ६४ ॥ एह प्रत्यकूतत्वविवेक नाम जो ग्रंथहै तिसविपे प्रत्यकतत्वविवेक कथन कीयाहै। तिसके विचारका जोअभ्यास कर्ताहै। अर्थ एहजो वारंवार विचारकर्ता है, तिस

विचारकरणेवालेकों जोफल प्राप्त होताहै सो श्रवणकर। इसप्रकार पंचांकोशाँ भिन्न आपने आपकों जानकरके जन्ममरणरूप बंधनते रहित होयाहोया मानुप इसीजन्मविपे शीघ्रही सच्चिदानंद परब्रह्मरूप होजाताहै । तांते प्रत्यक्तत्वविवेकदा विचार वारंवार करणा ॥ ६५ ॥

इति श्रीविद्यारण्यमुनीश्वरविरचितः

प्रत्यक्तत्त्वविवेकः समाप्तः

श्रीः ।

पञ्चदशी भाषा.

महाभूतविवेकप्रकरणम् २

॥ ॐ सतगुरुप्रसाद ॥ ॥ अथ दुसरे विवेकका आरंभ कर्तें हैं । पंचभूत विवेक दुसरे विवेकका नाम है । सत्यरूप अद्वितीय एकब्रह्म जगत्का कारण है सो ब्रह्ममन वाणीते परे है इसीते मनवाणी करके जानिया नहिजाता इसते ब्रह्मके ज्ञानवासते ब्रह्मकाकार्य जो पंचभूतहैं, तिनका विवेक कर्ते हैं॥ १॥आकाश पवन तेज जल पृथिवी एह पंचभूतहैं शव्दस्पर्श रसरूप गंध एह पंच भूतांके गुण हैं तिन्ना गुणाद्वारा पंचांभूताँका विवेक करणा । अर्थ एह जो पंचांभूतांकों भिन्नभिन्न जानना सो किसप्रकार जानना ऐसापूछेंतां श्रवणकर । आकाश विषे एकशव्द गुणरहिता है।पवन विषे शव्दस्पर्श दो गुणरहितेहैं तेज विषे शव्दस्पर्श रूप तिन्न गुण रहितेहैं जल विषे शव्दस्पर्श रूप रस चार गुण रहिते हैं पृथिवीविषे शव्दस्पर्श रूप रसगंध पंचगुण रहितें हैं॥ २॥आकाशविषे जो शव्दगुण है सो ध्वनीरूप है अर वायुविषे जो शव्द है सो वीसी रूप है अर वायुविषे जो स्पर्श है सो अनुष्णा शीत रूप है अर्थ एह पवनविषे जो स्पर्श है सो न उष्ण है न शीत है अर पवनविषे जो शीतलता प्रतीत होतीहै सो जलके संवंधकरके होती है अर पवनविषे जो उष्णनता प्रतीत होती है सो तेजके संवंधकरके प्रतीत होती है वास्तवते पवनविषे न शीतलता है न उष्णता है अर अग्निविषे भुगुभुगु शव्द है ॥ ३ ॥ अर अग्निविषे उष्णस्पर्श है अग्निविषे शुक्ल रूप है अर जलविषे चुलचुल शव्द

है अर शीतस्पर्श है अर शुक्ल रूप है जलका जो शुक्ल रूप है सो परके प्रकाशनेकों समर्थ नहि अर तेजका जो शुक्ल रूप है सो परके प्रकाशनेकों समर्थ है। तातेजल अर तेजके शुक्ल रूपका भेद है मिठा जलका रस है ॥ ४ ॥ अर पृथिवीविषे कडकड शब्द है अर कठनता स्पर्श है अर लाल काला आदिक अनेक प्रकारका रूप है अर खठा मिठा आदिक अनेक प्रकारका रस है ॥ ५ ॥ अर सुगंध अर दुर्गंध दो प्रकारकी गंध है पवन अर जलविषे जो गंधकी प्रतीति होती है सो पृथिवीके संबंध करके होती है वास्तवते जल अर पवनविषे गंधनहि इसप्रकार पंचां भूतांविषे गुणांका विवेक करणा।अर्थ एह जो पंचां भूतांविषे गुण भिन्नभिन्न जानने अर गुणांद्वारा पंचां भूतांकों भिन्नभिन्न जानना जैसे गुणांद्वारा पंजोभूत भिन्नभिन्न जानीते हैं तैसे कार्यद्वारा भी पंजोभूत भिन्नभिन्न जानीते हैं इसवासते पंचांभूतांका कार्य पंचज्ञान इंद्रियां प्रथम कथन कर्ते हैं श्रोत्रइंद्रिय आकाशते उत्पन्नहोता है श्रोत्रइंद्रियकन्नारूप स्थानविषे रहिताहै शब्दविषेकों ग्रहण कर्ताहै बाहर धावनकरणा बहुत करके इसका स्वभाव है अंतरभी धावनकर्ता है अर्थ एह जो कबीशरीरके अंतर जो शब्द होता है तिसकोंभी श्रोत्रग्रहण कर्ता है

प्रश्न—शरीरके अंतरशब्द होता है सो कैसे जानीए अर श्रोत्रइंद्रिय तिसकों कैसे ग्रहण कर्ता है.

उत्तर—प्राणपवनकरके उदरविषे गुडगुड जो शब्द होता है सो शरीरके अंतर होताहै अर जठराग्निविषे जो शब्द होता है शरीरके अंतर तिसकों, अहित शब्द कहीता है तिसकों योगीजन

सुनते हैं कन्नाकों मूंदकरके सो श्रोत्रइंद्रिय इंद्रियांकरनहिजानि-
या जाता शब्दकी प्रतीति होती है तिसद्वारा श्रोत्रका अनुमान
करीताहै अर त्वचा इंद्रिय पवनते उत्पन्न होता है अर स्पर्शविषे-
कों ग्रहण कर्ता है अर त्वचाइंद्रिय सारे शरीरविषे रहिता है व्या-
पकरके इसी कारणते सारे शरीरविषे सीत उष्णकी प्रतीति हो-
ती है सो तुचा इंद्रिय वहुतकरके वाहरले स्पर्शकों ग्रहण कर्ता है
अर कदीक अंतरभी सीतल जलके पील्यां होयां छाती ठरजाती
है तिस छातीदी सीतलताको त्वचाइंद्रिय ग्रहण कर्ता है अर त्व-
चाइंद्रिय प्रत्यक्ष नहि अर शीत उष्णके स्पर्शद्वारा त्वचाइंद्रिय-
का अनुमान करीताहै अर तेज ते नेत्र उत्पन्न होताहैं सो नेत्र धी-
रीके अग्रभागविषे रहिते हैं अर रूपकों ग्रहण कर्ते है अर वहुत-
करके वाहरकों धावनकर्ते हैं कदीक पलकानूं मीट्यां होयां अं-
तरके अंधकारकोंभी ग्रहणकर्ते हैं सो एह नेत्र इंद्रिय प्रत्यक्षन-
हि रूपकीप्रतीतिद्वाराइसका अनुमान करीता है अर रसनाइं-
द्रिय जलते उत्पन्नहोता है । अर जिव्हाके अग्रभागविषे रहिता
है सो रसकों ग्रहण कर्ता है; अर वहुतकरके वाहर धावन कर्ता
है अर कदीक डकारके आयांहोयां रसनाइंद्रिय अंतरके रसकों
ग्रहण कर्ता है सो रसनाइंद्रिय प्रत्यक्ष नहि रसकी प्रतीतिद्वारा
तिसका अनुमान करीता है अर घ्राणइंद्रिय पृथिवीते उत्पन्न
होताहै अर गंधकों ग्रहणकर्ता है अर नासिकाके अग्रभागविषे र-
हिताहै अर वहुतकरके वाहरको धावन कर्ता है अर कदीक डका-
रके आयांहोयां अंतरके गंधकोंभी घ्राणइंद्रिय ग्रहण कर्ता है सो
घ्राण प्रत्यक्ष नहि गंधकी प्रतीतिद्वारा इसका अनुमान करीता है
इसप्रकार पंचज्ञान इंद्रियांकरके पंचभूत भिन्नाभिन्न जानीते है

॥७॥ अर पंचांकर्म इंद्रियां द्वाराभी पंचोभूत भिन्नभिन्न जानीते हैं सो पंचकर्मेंद्रियां कवन हैं ऐसा पुछेंतां श्रवणकर वाक् हथ चरण उपस्थ गुदा सो एह पांचोइंद्रिय प्रत्यक्षनहि अनुमानद्वारा जानीते हैं सो अनुमान करके कैसे जानीते हैं ऐसा पूछेंतां श्रवणकर पंचप्रकारकी क्रिया प्रत्यक्ष नजर आवती है एक शब्दका कथन करणा अर दूसरा किसीते कोईवस्तु लैनी अर किसी कोकोई वस्तु देनी अर तीसरा तुरणा फिरणा अर चौथा स्त्रीका आनंद लैना अर मूत्रका त्यागकरणा अर पंचवां मलका त्यागना एन्ना पंचाक्रियाते होर कोई भिन्न क्रिया नहि होर जेतीयां क्रियाहैं क्षेतीदा करणा वणजदा करणा युधदाकरणा स्नान करणा दानकरणा होमकरणा किसीकी सेवाकरणी इसते लेकरके जेतीयां क्रियाहैं तिन्नाका एन्ना पंचांविषे ही अंतरभाव होता है तांते एन्ना पंचांद्वाराही पंचांकर्मेंद्रियांका अनुमान करीता है सो पंचोंकर्मेंद्रियां मुखआदिक स्थानांविषे रहितीयां हैं ॥११॥ अर मन जोहै सो दशांइंद्रियांका प्रेरक है अर हार्देरूप स्थानविषे रहिता है अर तिसका नाम अंतःकरण है काहेते जो ज्ञानइंद्रियां अर कर्मइंद्रियांते विना वाहरले किसी पदार्थकों जानने अर किसी क्रियाके करणेकों समर्थ नहि॥१२॥ अर विषयांविषे गुण अर दोषके विचारकों करणेवाला है अर्थ एह जो पंचांइंद्रियांके विषयांकों चंगा अर मंदा जानने वालाहै नेत्रआदिक इंद्रियां जो हैं सो रूपआदिक विषयांकों चंगा मंदा नहि जनावतीयां अर आत्मा सभना इंद्रियांके विषयांकों प्रकाशता है अर किसीके गुणदोषकों नहि जनावता अर गुणदोषकी प्रतीति तौ प्रत्यक्ष होती है तांते विषयांविषे गुणदोषकी प्रतीतिका कारण मन है सो

मन सत्व, रज, तम, एन्ना तिन्नां गुणाकरके अनेक प्रकारके वि-
कारांको प्राप्त होता है ॥ १३ ॥ जब मनविषे सत्वगुण प्रगट
होता है तब वैराग्य क्षिमा उदारता मैत्री दया गंभीरता परमेश्व-
रभजन इसते आदिलेकरके गुण प्रगट होते हैं। अर जब मनविषे
रजोगुण प्रगट होता है तब काम क्रोध लोभ यत्न दंभ ईर्षाते आ-
दिलेकरके दोष प्रगट होते हैं ॥ १४ ॥ अर जब मनविषे तमोगु-
ण प्रगट होता है तब आलस भ्रम तंद्रा निद्रा आदिक दोष प्रग-
ट होते हैं। सत्वगुणका कार्य जो वैराग्य आदिक गुण हैं तिन्नाते
पुण्य उत्पन्न होता है। रजोगुणका कार्य जो काम क्रोध आदिक हैं
तिन्नाकरके पाप उत्पन्न होता है ॥ १५ ॥ अर तमोगुणका कार्य
जो आलस तंद्रा निद्रा आदिक हैं तिन्नाकरके न पाप उत्पन्न हो-
ता है न पुण्य उत्पन्न होता है, केवल आर्बला व्यर्थ चली जाती है।
संपूर्ण कर्मेंद्रियां अर ज्ञान इंद्रियां अर मन अर शरीर एन्नाविषे
अभिमान करणेवाला जो है सो अहंकार है सो कर्ता है ॥ १६ ॥
जितना एह कार्य प्रतीत होता है जगत्, सो आकाशआदि पंच-
भूतरूप है जांते पंचांभूतांते विना आदिअंतविषे कुछ प्रतीत न-
हिं होता, तांते जो वस्तु प्रतीत होती है पंचागुणासहित सो पृ-
थिवी रूप है। अर जो वस्तु चारगुणासहित प्रतीत होती है सो ज-
लरूप है। अर जो वस्तु तिन्नागुणासहित प्रतीत होती है सो तेज
रूप है। अर जो वस्तु दुहांगुणासहित प्रतीत होती है सो पवनरू-
प है। अर जो एक शब्दगुणसहित है सो आकाशरूप है। इसप्र-
कारजो दृष्ट आवते हैं प्रत्यक्षपदार्थ सो पंचभूतरूप हैं एह सिद्ध
भया॥अर जो दृष्ट नहि आवते नेत्रआदिक तिन्नाकोभी युक्तिकरके
भूतकार्यता निश्चय करीती है, सोयुक्ति श्रवणकर। नेत्रजो हैं सो

तेजरूप हैं, काहेते जो पंचांविषयां विचों एक रूपकी प्रगटताका कारण हैं।जो रूपकी प्रगटताका कारण होता है सो तेजरूप होता है,जैसे दीपक ।तांते जानीता है इस युक्तिते जो नेत्र एक तेजभूतका कार्य हैं। इसीतरां रसनाइंद्रियकों जलका कार्य जानना॥इसीतरां सर्वइंद्रियांकों भूतकार्य जानना। अर मन जो है सो पंचांभूतांका कार्य है,काहेते जो पंचांहि विषयांविषे गुणदोषकी कल्पनाकों कर्ता है।जेकर मन पंचांभूतांका कार्य न होता तब पंचांभूतांके जो गुण हैं पंचतिन्नाकेसाथ संबंधवाला कैसेहोता?सगोंपंचांभूतांके पंचांगुणाँकिसाथ संबंधते रहित होता । जैसे एकभूतते उत्पन्नहोए जो नेत्र हैं, सो पंचांभूतांके पंचांगुणांकों नहि ग्रहण कर्ते,किंतु एकरूपकोहि ग्रहण कर्ते हैं। तांते नेत्र एकभूतका कार्य हैं जांते एकगुणकों ग्रहण कर्ते हैं। तांते मनभी जेकर एकभूतकाकार्य होता तब एकहि विषेकों ग्रहण कर्ता सो ऐसेतौ नहि अनुभवकरके जानीता है।जो मन पंचांहि विषयांकों कल्पता है तांते जानीता है जो मन पंचांभूतांका कार्य है। अर वेदभी इंद्रियां अर मनको भूतकार्यता कथन कर्ता है ॥१७॥ तांते इतनेकरके क्या सिद्ध भया, जो इंद्रियांकरके प्रतीत होता है अर जो मनकरके प्रतीत होता है अर जो अनुमानकरके प्रतीत होता है अर जो शास्त्रकरके प्रतीत होता है सो संपूर्ण पंचभूतात्मक जगत् है ॥ १८ ॥ सो जेता जगत् है,सो आपनी उत्पत्तिते प्रथम सत्रूप ब्रह्म होताभया॥ सो ऐसे।उदालक मुनीश्वर आपने पुत्र श्वेतकेतुकेतांई कथन कर्ता भया है छांदोग्य उपनिषदविषे। सो सत्ब्रह्म कैसा है। सजातीय विजातीय स्वगतभेदते रहित है अर नामरूप उत्पतिते प्रथम न होतेभये॥ १९ ॥

प्रश्न—स्वगत सजातीय विजातीय भेदका क्या स्वरूप है अर सो तिन्नप्रकारका भेद किथे रहिता है अर ब्रह्मविषे कैसे नहि-रहिता.

उत्तर—स्वगतभेद कहीता है। जो आपनेविषे प्राप्त होवे भेद अर्थ एह जो वस्तुकी एकरूपताविषे प्राप्त होवे भेद सो कहीताहै स्वगतभेद जैसे एकवृक्षविषे फल पुष्प पत्र आदिकांक-रके भेद होता है।अर सजातीय भेद कहीए आपने जैसेते भेद जै-से एकवृक्षते दूसरेवृक्षका भेद होता है।वृक्षरूपताकरके तांदोंवें ए-कजैसे हैं तांते दोवेंवृक्ष सजातीय कहीते हैं। तिन्नां दुहांवृक्षांका जो आपसमें भेद है सो सजातीय भेद है। अर विजातीय भेद क-हीता है। जो आपनेते विलक्षतणते भेद है, जैसे शिलाते वृक्ष-का भेद है ॥ २० ॥ एह त्रैभेद अविवेककरके मूढपुरुष ब्रह्मविषे कल्पते हैं। क्या कहते हैं मूढपुरुष! जो पदार्थ है, सो तिन्ना भेदां-वाला है। जैसे वृक्ष घटपटआदि पदार्थ है तांते ब्रह्म तिन्ना भेदां-वाला है एह जो मूड अज्ञानीयांका कथन है सो मिथ्या है, काहे-ते जो भेद तिन्न अनात्मपदार्थविषे रहिते हैं अर ब्रह्मपदार्थविषे कोई भेद नहि॥ २१॥सो ब्रह्मविषे किस प्रकार भेद तिन्न नहि ऐ-सा पुच्छें तां श्रवण कर। ब्रह्मविषे स्वगतभेद नहि जांते ब्रह्म निराकार है।स्वगतभेद साकारवस्तुविषे होता है, जैसे वृक्षआदि-कांविषे स्वगतभेद होता है।

शंका—नाम अर रूप सत्‌रूपब्रह्मके अंश हैं, तिन्नाकरके ब्रह्मविषे स्वगतभेद होवे। तुम कैसे कहिते हो जो ब्रह्मविषे स्व-गतभेद नहि।

उत्तर—सृष्टिकी उत्पतिसें पूर्व विद्यमान जो ब्रह्म है, तिसका नामरूप अंश कैसे होवे? काहेते जो नामरूपतां सृष्टिकी उत्पत्तिसें पूर्व है नहि ॥ २२ ॥ जिस कारणते नामरूपकी प्रगटताहि सृष्टि है, तांते सृष्टिकी उत्पत्तिते पूर्व नामरूप कैसे होवे? जेकर सृष्टिकी उत्पत्तिते पूर्व नामरूप नही भया तौ नामरूपकों सतब्रह्मकी अवयवता कैसेहोवे?तांते एह सिद्ध भया जो,ब्रह्मस्वगतभेदते रहित है निराकार होनेते, आकाशकी न्यांई ॥ २३ ॥

शंका—जेकरके ब्रह्मविषे स्वगतभेद नहि वनता तौ न बने, पर सजातीयभेद तौ वनता है। तांते कैसे कहिते हो जो ब्रह्मसजातीयभेदते रहित है ।

उत्तर—ब्रह्मकों सजातीयभेदते रहित इसते कहिते हैं जो, ब्रह्म जैसा दूसरा कोई ब्रह्म नहि। एकजैसा दूसरा जिसकेपास होता है, तिसका सजातीयभेद होता है । जैसे एक वृक्षकेपास दूसरा वृक्ष ऐसाही होता है तव एकवृक्षविषे दूसरेवृक्षका सजातीयभेद होता है, तांते एकब्रह्मकेपास दूसरा ब्रह्म जेकर न होया तौ एकब्रह्मविषे सजातीयभेद कैसे वने।

शंका—सच्चिदानंदरूप ब्रह्म तुम कहिते हो सो सतादातां भेद देखीता है, घटसता पटसताते भिन्न है। अर ज्ञानकाभी भेद देखीता है, घटज्ञानते पटज्ञान भिन्न है । अर आनंदकाभी भेद देखीता है, पुष्पके सूंघणेते जो आनंद होता है, तिसते वस्त्रका आनंद भिन्न है । तांते सताका अर चेतनताका अर आनंदका तौ भेद प्रत्यक्ष सिद्ध है। अर सत्ता चेतनता आनंदरूपहि ब्रह्म है,

तांते ब्रह्मविषे सजातीयभेद प्रत्यक्ष रहिया। तुम कैसे कहिते हो? जो ब्रह्मविषे सजातीयभेद नहि।

उत्तर—सत्ता अर चेतनता अर आनंद एन्नाविषे जो भेद प्रतीत होता है, सो नामरूप उपाधिके भेदकरके भेद प्रतीत होता है। नामरूप उपाधिके भेदविना सताचेतनता आनंदविषे भेद कोई नहि प्रती तहोता॥जिस समेका हम विचार कर्ते हैं तिस समेविषे नामरूपलक्षण उपाधितौं कोई उत्पन्न नहि सी भई। तांते जो उपाधिकरके भेद प्रतीत होताहै,सोभेद वासतव नहि।जैसे घटमठ उपाधिकरके जो आकाशविषे घटाकाश मठाकाश एह भेद प्रतीतहोताहै सोभेदवासतवनहि।अर घटामठ उपाधिके त्यागेते आकाशआकाश ऐसे एकरूप आकाश प्रतीत होता है, तैसे सताचेतनता आनंद एन्नाविषे जो भेद प्रतीत होता है, घटसतातें पटसता भिन्न है,अर घटज्ञानते पटज्ञान भिन्न है,अर पुष्पके आनंदते वस्त्रका आनंद भिन्न है सो भेदप्रतीति उपाधिकरके होतीहै। घट पट अर पुष्प वस्त्ररूपउपाधिके त्याग कीत्यांहोयां सता चेतनता अर आनंदविषे कोई भेद नहि प्रतीत होता, तांते सच्चिदानंदरूप जो ब्रह्म है तिसविषे सजातीयभेद नहि ॥ २४ ॥ अर तिस ब्रह्मविषे विजातीयभेदभी नहि काहेतें जो सत्‌रूप ब्रह्मका विजातीय असत् है, सोतौं स्वरूपते कुछ हैनहि जेडा होयाहि न तिसते भेद कैसे होवे ॥२५॥ तांते एह सिद्ध भया। जगत्‌की उत्पत्तिते प्रथम स्वगत सजातीय विजातीय भेदसे रहित एक ब्रह्म है,तिस ब्रह्मविषे स्थितितें रहित जो अज्ञानी हैं, सो व्याकुल होयहोय जगतकी उत्पत्तिते प्रथम असत् होता भया, ऐसा कथन कर्ते हैं॥ २६ ॥ अज्ञानी तिसविषे स्थितिते रहित

होएहोए कैसे व्याकुलताको प्राप्त होते हैं, जैसे कोई पुरुष समुद्रविषे डुबी लगावे तां तिसके मन इंद्रियां व्याकुलताकों प्राप्त होते हैं। तैसे अखंड एकरस ब्रह्मविषे समाधिअवस्थाविषे अज्ञानीयांकी बुद्धि व्याकुलताकों प्राप्त होजाती है ॥ २७॥ इस वार्ताकों गौडाचार्य हमारे वडे कथन कर्ते भये हैं । साकार ब्रह्मविषे है स्थिति जिनकी ऐसे जो अज्ञानी योगी हैं तिन्नाको निर्विकल्प समाधिविषे अत्यंत भय प्राप्त होता है ॥ २८ ॥ इसीकारणतें तिन्नाकों निर्विकल्प समाधिकीप्राप्ति नहि होती,निर्विकल्पसमाधिते तिन्नाको ऐसे भय प्राप्त होता है । जैसे बालकांको निर्जन स्थानविषे भय होता है। सो बालकांकी मूर्खता है। काहेते जो निर्जनस्थान तौ निर्भयताका कारण है। काहेते जो चोरआदिक कोई है नहि पर दूसरेके अभावते भयकों प्राप्त होते हैं मूर्खबालकातैसे निर्विकल्प समाधिविषे अहंकार अर दृश्यप्रपंचका अभाव होता है। दृश्यप्रपंच अर अहंकारही भयका कारण है, तांते निर्विकल्पसमाधिभयते रहित है,पर मूर्ख अज्ञानी तिस निर्विकल्प समाधिविषे भयकों प्राप्त होते हैं। काहेते जो तिन्ना अज्ञानीयांका अहंकार अर दृश्य प्रपंचकेसाथ पर्चा बनया हूया है।अहंकार अर दृश्यप्रपंचते रहित निर्विकल्प जो समाधि है तिसविषे तिन्नाकी रुचि नहि होती तांते निर्विकल्प समाधि तिनकों नहि प्राप्त होती, जिसते निर्विकल्पसमाधिकी प्राप्ति नहिहोती इसीते तिनकों सच्चिदानंदरूप ब्रह्मका साक्षात्कार नहि होता,तिसकारणते अज्ञानी कहिते हैं, जगत्की उत्पतिते प्रथम असत् होता भया ॥ ॥ २९ ॥ अर भगवान् शंकराचार्य्यभी ऐसे कहते भये,हैं जो चित्तकी चित्तवनीकेबीच नहि आवता सत्यरूप परमात्मा तिस-

विषे अपरोक्ष ज्ञानते रहित जो मूर्ख हैं अज्ञानी खोटोयां तर्कोके करणेवाले सो भ्रमकों प्राप्त होते हैं। कैसेभी शंकराचार्य्य हैं? जिज्ञासीजनाकरके पूजनेयोग्य हैं चरण जिनके ॥ ३० ॥ अज्ञानकरके आवरे होए जो बोध हैं सो मूर्खताकरके श्रुतिकों आश्रय नहि कर्ते अर कहिते हैं, सृष्टिकी उत्पत्तिसें पूर्व असत् होताभया। ऐसा तिन्नाके कहिनेका कारण कौन है ऐसा पूछें तां श्रवणकर। ओह जो बुधके शिष्य हैं सो अज्ञानरूप नेत्रांकरके युक्त हैं, अर श्रुतिरूप नेत्रांते रहित हैं, इसीकरके सत्रूप ब्रह्मकों नहि जान सकते। जैसे मोतीयांबिंदवाले नेत्रांकर युक्त जो पुरुष हैं सो पदार्थकों यथार्थ नहि जानते, तैसे बुधके शिष्यभी यथार्थ जगत्के कारणकों नहि जानते ॥ ३१ ॥ अर एह जो कहिते हैं मूर्ख, जगत्की उत्पत्तिसें पूर्व असत् होताभया तिसविषे हम पूछते हैं। असत्कों सताका संबंध है के असत् सत्रूप है, सो दोनोवार्ता नहि बनतीयां ॥ ३२ ॥ जैसे सूर्य अंधकारयुक्त अर अंधकाररूप नहि होता, काहेते जो सूर्य अर अंधकारका परस्पर विरोध है, तैसे सत् अर असत्का विरोध है। तांते असत् सतासंयुक्त कैसे होवे अर असत् सत्रूप कैसे होवे? तांते जगत्की उत्पत्तिसें प्रथम असत् नहि बनता ॥ ३२ ॥

शंका—जैसे असत्कों सतासंबंध नहि बनता, तैसे निर्विकल्प ब्रह्मविषे आकाश आदिक प्रपंचकाभी संबंध नहि बनता।

उत्तर—मायाने सत्रूप ब्रह्मविषे आकाशादिकांके नामरूप कल्पे हैं, वास्तव आकाशादिकांका सत्रूप ब्रह्मविषे संबंध नहि। कल्पितपदार्थांका अधिष्ठानविषे संबंध नहि, जैसे कल्पित

रुप्येका अधिष्ठान जो सिपी है तिसविषे कल्पित रुप्येका संबंध नहि, तैसे कल्पित आकाशादिकां का वासतव सत्‌रूप ब्रह्म- केसाथ संबंध नहि ।

शंका—जैसे आकाशादिकांके नामरूप सत्‌रूप ब्रह्मविषे कल्पित हैं, अर अधिष्ठानब्रह्मकी सताकरके आकाशादिकांके नामरूप सत प्रतीत होते हैं, तैसे सत्‌रूप ब्रह्मविषे असत्‌के ना- मरूप कल्पित हैं, तांते अधिष्ठानरूप ब्रह्मकी सताकरके क- ल्पित असत्‌भी सत्‌रूप होकरके प्रतीत होते हैं।

उत्तर—असत्‌को सत्‌रूप अधिष्ठानविषे कल्पित मानंयाहो- यां हमारा सिद्धांत सिद्ध होता है, तांते कल्पित असत्‌जगत्‌का कारण नहि बनता॥जिससत्‌विषे असतके नामरूप कल्पितहैं सो सत्‌ही जगत्‌का कारण है, तांते सत्‌विषे असत्‌के नामरूप क- ल्पित हैं ऐसे कहिनेवाला जो तूं हैं, उसतै तूं अशीर्वाद कर्ते हैं। चिरकालप्रयंत जीवता रहु ॥ ३४ ॥

शंका—जैसे असतके नामरूप कल्पित हैं, तैसे सत्‌केभी नामरूप कल्पित चाहिए। काहेते जो वास्तव नामरूपका तुसाडे मतविषे अभाव है।

उत्तर—सत्‌के नामरूप कल्पित हैं एह कहिना अयुक्त है। काहेते जो हम पुछते हैं सत्‌के नामरूप सत्‌विषे कल्पित हैं के असत्‌विषे कल्पित हैं अथवा जगत्‌विषे कल्पित हैं? जेकर कहें सत्‌के नामरूप सत्‌विषे कल्पित हैं, एह वार्ता तौ नहि बनती। काहेते जो आपने नामरूप आपनेविषे कल्पित नहि होते,होरके

नामरूप हीरविषे कल्पित होते हैं। जैसे रुप्येके नामरूप सिपी-
विषे कल्पित होते हैं, अर रुप्येके नामरूप रुप्येविषे कल्पित न-
हि होते, तैसे सत्के नामरूप सत्विषे कल्पित नहि होते। अर
सत्के नामरूप असत्विषे कल्पित हैं, एहभी वार्ता नहिबनती।
काहेते जो असत् आपही कुछ है नहि, तांते सत्के नामरूपकी
कल्पनाका अधिष्ठान असत् कैसे होवे! जैसे वंध्याका पुत्र किसी-
की कल्पनाका अधिष्ठान नहि होता, काहेतें जो वंध्याके पुत्रका
स्वरूपहि हैनहि। तैसे असत्भी सत्के नामरूपकी कल्पनाका
अधिष्ठान नहि बनता, काहेते जो स्वरूपते कुछ हैनहि। अर ज-
गत्भी सत्के नामरूपकी कल्पनाका अधिष्ठान नहि बनता, का-
हेते जो जगत् सत्यते उत्पन्न भया है,सो जगत् सत्के नामरूपकी
कल्पनाका अधिष्ठान नहि, जैसे पुत्र पिताके नामरूपकी कल्प-
नाका अधिष्ठान नहि होता।

शंका—मत होवे कोईभी सत्के नामरूपकी कल्पनाका अ-
धिष्ठान, तौभी सत्के नामरूप कल्पित कउँन होवें।

उत्तर—अधिष्ठानते विना किसीकी कल्पना नहि बनती,
तांते सत्के नामरूप कल्पित नहि ॥ ३५ ॥

शंका—जैसे असत् जगत्की उत्पतितें प्रथम होताभया एह
वार्ता नहि बनती, तैसे सत्जगत्की उत्पत्तितें प्रथम होताभया
एह वार्ता नहि बनती। काहेते जो सत् अर होताभया एन्ना दुहांव-
चनाका जेकर अर्थभेद कहो तब सता दो सिद्ध भईयां। अर जे
सत् अर होताभया एन्ना दुहांशब्दाँका एक अर्थ कहो, तब पुनरु-
क्तिदोष होता है। काहेते जो सत्शब्दका अर्थ है सोई होताभया इ-

स शब्दका अर्थ है,जैसे घटशब्द अर कुंभशब्दका एक अर्थ है।तांते जगत्की उत्पतिते प्रथम सत् होता भया एह वार्ता अयथार्थ है।

उत्तर—सत् अर होताभया एन्हा दुहांशब्दांका अर्थ एक है, अैसेयां वचनांविषे पुनरुक्तिदोष नहि होता ॥ ३६॥ काहेते जो लोकांविषे अैसा कथन करते हैं, कँमनूंकर्ता है,इसविषे पुनरुक्तिदोष नहि।जो अर्थ कँमका है सोई अर्थ करणेका है।लोकांका स्वभाव अैसे कथनकाहि है। अर वचनकों कथन कर्ता है इसविषेभी जो अर्थ वचनका है सोई कथनकरणेका है, पर इसविषे पुनरुक्ति दोष नहि, काहेते जो लोकांका स्वभावही अैसा है। अर धारणके लाइककों धारण कर्ता है, इसविषेभी पुनरुक्ति नहि अर्थ धारणेलाइक अर धारणेका एकही है इसते आदिलेकरके व्यवहारविषे पुनरुक्ति नहि होती जैसे, तैसे जगत्की उत्पतिते प्रथम सत् होताभया तिसविषेभी पुनरुक्तिदोष नहि होता,काहेते जो पुनरुक्तिदोषके अभावके संस्कारदृढ हैं ॥ ३७॥

शंका—सत्रूप अद्वितीय ब्रह्मविषे पूर्वकालका अभाव है, तांते प्रथम जगत्की उत्पतिसेंसत् होताभया एहवार्ता नहिबनती।

उत्तर—सत्रूप अद्वितीय ब्रह्मविषे पूर्वकालतौ हैनहि। अर कालकी वासनावाला जो शिष्य है,तिसने जब एह प्रश्नकीया जो, जगत्की उत्पतिसें प्रथम क्या होताभया? तब तिस शिष्यकेतांई एह उत्तर दीया, जगत्की उत्पत्तिते प्रथम सत् होता भया।

शंका—जगत्की उत्पतिते पूर्व सत् होवे, पर तिस सत्की अद्वैतता नहि बनती। काहेते जो जगत्की उत्पत्तिसें प्रथम जगतका अभाव दूसरा है।

उत्तर—श्रोताके बोधवास्ते वेदका कथन है। अर श्रोताकों द्वैतवासना दृढ हो रहीयां है, तांते बहुतीयां शंका नहि कीतीयां चाहिदीयां ॥ ३८॥ कथन जो करीता है सो कुछक द्वैतकों लेकरके करीता है। अद्वैत दृष्टिविषे प्रश्न उत्तर नहि बनता ॥ ३९ ॥ वास्तवतें जगत्‌की उत्पत्तिते पूर्व द्वैत हैनहि, इसी पर श्रीवासिष्ठजी श्री रामजीकेतांई कहिया है उत्पति प्रकरणविषे। हेरामजी, जगत्‌की उत्पत्तिते प्रथम जो सत्‌रूप ब्रह्म होताभया सो ब्रह्मवाणीकरके नहि कियाजाता, काहेते जो नामते रहित है । अर नेत्रांकरभी नहि देख्याजाता, काहेते जो निराकार है। अर मनकरभी नहि जानता जाता, काहेते जो मनते परे है, न तम है, न तेज है, न शून्य है अर निश्चल है अर्थ एह जो क्रियाते रहित है अर व्यापक है, किसीप्रकार इदंताकरके किया नहि जाता ॥ ४० ॥

शंका—जगत्‌की उत्पतिसें पूर्व सत् होताभया अर और कुछ न होताभया सो वार्ता नहि बनती। काहेते जो,आकाशभी जगत्‌की उत्पत्तिते पूर्व होताभया है,आकाशकी असत्यताकों तुमारी बुद्धी कैसे आश्रय कर्ती है!असत् सो होता है, जो उत्पत्तिवाला अर नाशवाला होता है, जैसे पृथिवी आदिक उत्पति अर नाशवाले हैं। काहेते जो सावयव हैं अर क्रियावाले हैं इसते उत्पत्ति अर विनाशवाले हैं।अर आकाश निराकार है अर क्रियाते रहित है इसते उत्पत्ति अर विनाशवाला नहि ॥ ४१ ॥

उत्तर—जैसे आकाश जगत्‌ते रहित तेरी बुद्धिविषे निश्चय हुया है, तैसे आकाशते रहित सत्‌वस्तुकों तेरी बुद्धि किउँ नहि निश्चय कर्ती ॥ ४२ ॥

शंका—जगत्सें रहित आकाश देखीता है,इसीतें मेरी बुद्धि निश्चय कर्ती है। अर आकाशते रहित सत् नहि देखीता इसते मेरी बुद्धि आकाशते रहित सत्कों निश्चय नहि कर्ती।

उत्तर—जगत्‌ते रहित आकाश देखीता है एह कहना मिथ्या है, काहेते जो जदजद आकाश देखीता है, तदतद प्रकाशसहित अथवा अंधकारसहित देखीता है, कदी किदरेभी प्रकाश अथवा अंधकारविना आकाश नहि देखीता, अर वास्तवते तेरे मतविषे आकाश देखनेविषे नहि आवता। काहेते जो आकाश रूपते रहित है अर रूपवाली वस्तु देखनेमें आवती है, तांते एह जो तेरा कहिना है जगत्‌ते रहित आकाश देखीता है सो मिथ्या है॥ ४३॥

शंका—जैसे आकाश नहि देखनेमें आवता जगतसें रहित, तैसे सत्वस्तुभी जगत्सें रहित देखनेमें नहि आवती।

उत्तर—निर्विकल्प समाधिविषे जगतसें रहितकेवल शुद्ध सत्वस्तु असां देखीती है।

शंका—निर्विकल्प समाधिविषे तौ शून्यताही होती है, काहेते जो होर किसीवस्तुका अनुभव नहि होता।

उत्तर—एह तैने कैसे जानया? जो निर्विकल्प समाधिविषे शून्यता होती है, निर्विकल्प समाधिविषे शून्यताका अनुभवतां नहि होता। जिथे शून्यताका अनुभव है तिथे निर्विकल्पसमाधि नहि होती, काहेते जो निर्विकल्प समाधिनाम तौ सर्व वृतीयाँकेआभावका है। शून्यताका अनुभव तां होवे, जब शून्याकार वृति होवे। शून्याकारवृतिके होयां निर्विकल्प समाधि नहि होती॥ ४४॥

शंका—एहजो तुमकहितेहो जो समाधिविषे सत्वस्तुका अनुभव करीता है, सोतौ नहि बनता ।काहेते जो समाधिविषे सत्के आकारवृत्ति नहि होती, अर जेकर सत्के आकार वृत्ति कहो तौ फेर समाधि न सिद्ध होवेगी, काहेते जो समाधिनाम तौ सर्ववृत्तीयांके अभावका है ।

उत्तर—समाधिविषे सत्वस्तु भासती है अर समाधिविषे सत्वस्तुके आकारवृत्ति नहि होती, वृत्तिसें विनाहि सत्वस्तु भासती है, काहेते जो सत्वस्तु स्वप्रकाश है । जो परप्रकाश वस्तु होती है, तिसीकों आपने भासने वासते वृत्तिकी लोड होती है ।अर जेकर समाधिविषे आत्मा न प्रकाशे तौ समाधिविषे मनके अभावकों कौन जाने अर समाधिकों कौन जाने?अर जानीता है मनके अभावकों अर समाधिकों, तांते समाधिविषे आत्माकारवृत्तिते विना सत्रूप आत्मा स्वप्रकाशताकरके भासता है ॥ ९५ ॥ जैसे समाधिविषे मन अर मनका विस्ताररूप जो हैं वृत्तीयां तिन्नाके अभाव होयांभी आत्मा प्रकाशता है, तैसे जगत्की उत्पत्तितें प्रथम मायादे विस्तारदे अभाव होयांहोयांभी सत्रूप आत्मा विद्यमान है ॥ ९६ ॥ मायाका क्या लक्षण है ऐसा पुछें तां श्रवणकर। माया परमात्माते भिन्नसताते रहित है अर आकाशआदि कार्यद्वारा जानीती है। सो माया परमात्माकी शक्ति है जैसे अग्निकी शक्ति अग्निते भिन्न सताते रहित है अर छाले आदिकरूप कार्य कर जानीती है।जैसे छालेआदिक कार्यते पहिलां अग्निकी शक्तिकिदरभी किसीने नहिजानीती तैसे आकाश आदिक कार्यते पहिलां परमात्माकी शक्ति माया किसीने

किदरेभी नहि जानीती अर आकाश आदि कार्यद्वारा जानीती है ॥४७॥ सो शक्ति सतूरूपभी नहि अर असतूरूपभी नहि। काहेते जेकर सतूरूप होवे तांसतूकी शक्ति न होवे,जैसे अग्नि अग्निकी शक्ति नहि होती।अर जेकर असत् होवे तव सहेके सिंगाके तुल भई,तौ उसकों आकाश आदिक कार्यकी कारणता नहोई चाहीए ॥४८॥अर जेकर शून्यरूप कहें तां एह बातभी नहि बनती। काहेते जो शून्यता मायाशक्तिका कार्य है, तांते एह सिद्धभया जो मायाशक्ति अनिर्वचनी है अर्थ एह जो न सत् है न असत् है ॥ ४९ ॥ अर वेदवाक्यभी ऐसे कहिता है। जैसे घटआदिक पदार्थांका आवरण करणेवाला अंधकार होता हैं तैसे परमात्माके आवरणकरणेवाली मायाशक्ति है,सो माया न सत् है न असत् है

शंका—जेकर माया सत् नहि तां आकाश आदि प्रपंचका कारण कैसे है।

उत्तर—स्वतंत्रमायाकी सता नहि, सतरूप परमात्माकी सताकों पाइकरके आकाशादिक प्रपंचकों उत्पन्न कर्ती है ॥५० ॥

शंका—एह जो तुम कहिते हो जगत्की उत्पत्तिते प्रथम परमात्मा अद्वितीय है, अर नाले कहिते हो मायाशक्ति है, तांते द्वैत होया।

उत्तर—शक्तिकरके द्वैत नहि होता,जसै शून्यकरके द्वैत नहि बनता। लोकविषे पुरुषका शक्तिकरके द्वैत नहि होता, जैसे पुरुष अर पुरुपका जीवना दो नहि होते ॥ ५१ ॥

शंका—शक्तिके अधिक होयां जीवना अधिक होता है तांते भिन्न है शक्ति पुरुषतें।

उत्तर—शक्तिनाम बलका है, सो शक्ति बहुत जीवनेका कारण नहि । जिस पुरुषके बल अधिक होता है सो अधिक युद्ध क्षेती आदिक करता है। अर जिसके थोडीशक्ति होती है सो थोडा युद्ध क्षेती आदिक कर्ता है। अर जेकर शक्ति बहुत जीवनेका कारणहोती, तौ बहुते बलवाले पुरुष शिताबी न मर्ते अर थोडे बलवाले बहुत जीवते न, सो ऐसातां जगत्विषे नहि देखीता, काहेते जो बडेबडे बलवाले पुरुष पलकलमै मर्जाते हैं अर निर्बल बहुत जीवते रहिते हैं, तांते शक्ति बहुत जीवनेका कारण-नहि ॥ ५२ ॥ सर्वप्रकार करकरके शक्ति शक्तिवालेते भिन्न नहि गिणिती,तांते एह सिद्ध भया जो,शक्ति करके द्वैत नहि बनता।जगत्की उत्पतिते प्रथम शक्तिका कार्य जगत्तां है नहिसी इसीते जगत्की उत्पतिते प्रथम अद्वैत परमात्मा सिद्ध भया ॥ ५३ ॥

शंका—सत्परमात्माकी जो शक्ति है, सो परमात्माविषे सारे रहिता है के परमत्माके एक अंशविषे रहिती है! जेकर सारे रहिती है तब विदेहमुक्तोंकरके प्राप्त होनेके योग्य शुद्धब्रह्मका अभावप्रसंग भया, अर एकदेशविषे रहिती है शक्ति इसपक्षविषे ब्रह्मकी निराकारता न सिद्ध भई।

उत्तर—संपूर्णब्रह्मविषे मायाशक्ति नहि रहिती, ब्रह्मके एकदेशविषे रहिती है। जैसे पृथिवीका एकदेश जो है चीकनी मिटी तिसविषे घटशक्ति रहिती है ॥ ५४ ॥ इसी अर्थकों वेदभी कथन

कर्ता है।परमात्माके तिन्न पाद जो हैं सो आपने शुद्ध स्वयंप्रकाश रूपविषे स्थित हैं अर परमात्माके एकपादविषे सर्वभूतरूप जगत स्थित है ॥५५॥ अर भगवान्नेभी दशवें अध्यायांविषे अर्जुनकेतांई एह कथन कीया है। हे अर्जुन संपूर्ण जगत्कों एकअंशकर मैं धारीया होया है, तांते मुक्तांकर प्राप्त होवनेयोग्य शुद्धब्रह्म है॥५६॥इसी वार्ताकों व्यासजीने सूत्रोंविषे कथन कीया है। ब्रह्म जगतका आश्रयभी है अर शुद्धभी है, काहेते जो ब्रह्म संपूर्णजगतकों आपनी सताकरके सत्यकर रहिया है अर फेरभी दशअंगलां वध रहिया है ॥ ५७॥ अर निराकारताभी ब्रह्मकी ज्यों कीत्यों है बनी होई,काहेते जो तिस ब्रह्मविषे कल्पकरके अंश कथन करीता है जिज्ञासीके बोधवास्ते, सो जैसे है तैसे श्रवणकर। जब जिज्ञासीने ऐसा प्रश्न कीया, संपूर्ण ब्रह्मविषे जगत् है के ब्रह्मके एक अंशविषे जगत् है?तब तिस जिज्ञासीके प्रश्नके अनुसार निरंशब्रह्मविषेभी अंशकों कल्पकरके एह उत्तर कहिया जो, ब्रह्मके एकदेशाविषे जगत् है ॥ ५८ ॥ तांते ब्रह्मविषे अनिर्वचनीय मायाशक्ति है, सो मायाशक्ति सत्ब्रह्मविषे अनेक विकारांकों कल्पिती है । जैसे नील पीत आदिक रंग कंधके आश्रय होकरके कंधविषे अनेक प्रकारां कीयां मूर्तांकों कल्पिते हैं ॥ ५९ ॥ जेडे मायाने विकार कल्पिते हैं तिन्ना विकारांविच्चो पहिला विकार आकाश है, तिस आकाशका स्वरूप अवकाश है अर आकाशविषे ब्रह्मकी सताभी प्राप्त होती है ॥ ६० ॥ तांते आकाश दुहां स्वभावांवाला है, एक सता दूसरा अवकाश। अर सत्वस्तुविषे अवकाश नहि, तांते सत्वस्तु एक सतास्वभावही है। तांते आकाश अर सता भिन्नभिन्न हैं ॥ ६१ ॥ अथवा आकाश श-

शब्दगुणवाला है अर सत्तावालाभी है. सतवस्तुविषे शब्दगुण नहि ताते आकाश अर सत्वस्तु भिन्नभिन्न हैं ॥ ६२ ॥

शंका—आकाश जेकर सतते उत्पन्न होया होवे तव आकाशकी सता है एह प्रतीति न होवे, अर सताका आकाश है एह प्रतीति होवे। जैसे मृतिकाते उत्पन्न भया जो घट है तिसविषे मृतिकाका घट है एह प्रतीति होती है अर घटकी मृतिका है एह प्रतीति नहि होती।

उत्तर—जिस मायाशक्तिने सत्वस्तुविषे आकाश कल्प्या है तिसमायाशक्तिने आकाश अर सत्वस्तुका अभेद कर दिता है प्रथम,अर पाछे धर्मधर्मीभावकों विपरीतकर दिता है। अर्थ एह-जो आकाशरूप धर्मकों धर्मीकरके दिखलाइ दिता है अर सतारूप धर्मीकों धर्मकरके दिखलाइ दिता है,इस कारणतें आकाशकी सता है ऐसे प्रतीति होती है अर सताका आकाश है एह प्रतीति नहि होती। अर वासतव दृष्टिकरके विचार कीत्यां होयां सताका आकाश है,आकाशकी सता नहि ॥ ६३ ॥ पर अज्ञानीजन अर नैयायिक आदिक आकाशकी सता है, एह भ्रमकरके जानते हैं ॥ ६४ ॥

प्रश्न—मायाने उलटा पुलटा कउँ दसदीया।

उत्तर—उलटा पुलटा दस नामा याका स्वभाव है, जैसे जलका स्वभाव है नीचे स्थानकों चलना अर यथावत् पदार्थकों दिखावना एह ज्ञानका स्वभाव है. एह युक्ति सर्व लोकोंके अनुभव सिद्ध है। जैसे मदारीकी खेडविषे जेडे पदार्थ नहि अग्निविषे

जलते सो जलते प्रतीत होते हैं। तांते मानुषकी माया होरकी होर प्रतीति करवाइ देती है, जेकर तौ परमेश्वरकी मायाने होरकी होर प्रतीति उलटी पुलटी करवाइ दिती तां इसमैं क्या आश्चर्य्य है ॥ ६५ ॥ अर विचार करके असत् वस्तुकी असत्यता प्रतीत होती है, जब श्रुतीयांका विचार करता है जिज्ञासी जन, तब विचारते प्रथम जो सत्रूप होकरके प्रतीत होता सी आकाश, सो असत्रूपताकों प्राप्त होजाता है, तांते तूंभी आकाशका विचार कर ॥ ६६ ॥ विचारका स्वरूप की है ऐसा पुछें तां श्रवणकर। आकाश अर सत् भिन्नभिन्न हैं। काहेते जो भिन्नभिन्न नामवाले हैं, जैसे जल अर दुग्ध भिन्नभिन्न हैं तैसे आकाश अर सत् भिन्नभिन्न हैं। काहेते जो सत् सभना वस्तूआँ पवन आदिकांविषे व्यापक है, अर आकाश सभना वस्तूआँ पवन आदिकांविषे नहि व्यापक। इसप्रकार आकाश अर सत्वस्तुका भेद जानना ॥ ६७ ॥ पाछेते एह विचार करणा सत्वस्तु धर्मी है, आकाश तिसका धर्म है, काहेते जो सत्वस्तु व्यापक है। अर्थ एह जो सता सभना पदार्थांके साथ मिली होइ है, अर आकास सभना पदार्थांके साथ मिलया होया नहि। काहेते जो पर्वत आकाश ऐसे प्रतीति नहि होती। इसते आकाश सर्व पदार्थांके साथ मिलया होया नहि, अर पर्वत सत् है एह प्रतीति होती है तांते सत् सभना पदार्थांकेविषे व्यापक है, जैसे धागा जो है सो मालाके सभना मणक्यांविषे व्यापक है सो धागा जैसे मणक्यांते भिन्न होता है, तैसे सता सभना पदार्थांविषे व्यापक है,सो सभना पदार्थांते भिन्न है। तांते बुद्धिकरके आकाशते सतादे भिन्न कीत्यां होयांहोयां कहु आकाशका क्या रूप है ॥ ६८ ॥ वादी पुलाडरूप

आकाशका है। सिद्धांतीहोंवें पुल्लाइरूप आकाशपर आकाश अ-सत है एह मन में निश्चय कर। काहेते जो तूं कहिता हैं सत्ते भि-न्न हैं आकाश. अर फेर तिसकों असत् निश्चय नहि कर्ता एह तो बडा आश्चर्य है ॥ ६९ ॥

शंका—आकाश जेकर असत् होवे तां भासे नहि, अर भा-सता है प्रत्यक्ष। तांते मेरीबुद्धि तिसकों असत् निश्चय नहि कर्ती।

उत्तर—आकाश भासता है तांभासोपर सत् नहि,जैसे स्वप्ने-का हाथी सत् नहि अर भासता है; तांते जो वस्तु असत् होवे अर भासे सो मिथ्या होती है । तांते आकाशका भासता गुण है दोप नहि, स्वप्नेके हाथीकी न्याई ॥ ७० ॥

शंका—आकाश अर सत्का जेकर भेद होवे तव सताते वि-नाभी कदीक आकाशकी प्रतीति होवे। जैसे गौ अर घोडेका भे-द है, तां गौ घोडेते विनाभी प्रतीत होती है। तांते आकाश अर सताका भेद है नहि,

उत्तर—जैसे नीलरूप अर घट अकठे प्रतीत होते हैं। काहेते जो रूपते विना कोई किसीने घट देख्या नहि। पर नी लरूप घटते भिन्न है। काहेते जो घटके विद्यमान होयांहोयां भी नीलरूपका नाश होजाता है अर लालरूप उत्पन्न होई आ-वता है। तैसे आकाश अर सत् अकठे प्रतीत होतेभी हैं पर भिन्नभिन्न हैं इसविषे तेरेतांई क्या आश्चर्य है। अर जैसे जीव अर शरीर अकठे प्रतीत होते हैं, अर भिन्नभिन्न हैं, तैसे आ-काश अर सत् अकठे भासते हैं, पर भिन्नभिन्न हैं, इसविषे तै-तूं क्या आश्चर्य्य है ॥ ७१ ॥

शंका—जानियां है मैंने आकाश अर सत्का भेद। पर मेरे चित्तविषे दृढताको नहि प्राप्ति होती।

उत्तर—दृढताके नहोनेविषे दोकारण हैं। एक संशय दूसरा विक्षेप ॥ ७२ ॥ जेकर तेरेताईं संशय है तव प्रमाणां करके अर युक्तियां करके वारंवार विचार कर। अर जेकर चित्तके विक्षेप करके आकाश अर सत्का भेदप्रतीति नहि होती तव ध्यान कर तिसकरके तेरे चित्तविषे आकाश अर सत्काभेद दृढ होजावेगा ॥ ७३ ॥ ध्यान जो है, चित्का नदीधारावत प्रवाहरूपता तिसकरके अर प्रमाणांकरके अर युक्तियां करके जव आकाश अर सत्वस्तुका भेद चित्तविषे दृढतानूं प्राप्त होवेगा तव आकाश कहीभी सत् न भासेगा,सदाही आकाश मिथ्या भासेगा। अर सत्वस्तु छिद्रते रहित भासती है ॥ ७४ ॥ ज्ञानवान् जो पुरुष है, तिसकों सताते रहित आकाश भासता है सदाही। अर सत्वस्तु छिद्रते रहित भासती है ॥ ७५ ॥ आकाश अर सत्वस्तुका भेद जव चितविषे अत्यंत दृढ होता है। तव आकाशकी सत्तावालेकों देखकरके हसता है। ज्ञानवान् अर सतामात्रदे अज्ञानवालेकों देखकरके ज्ञानवान् वडे आश्चर्य्यकों प्राप्त होता है। तांते जितना कालपर्य्यंत सत्वस्तु अर आकाशका भेद चित्तविषे अत्यंत दृढ न होवे, तितना कालपर्य्यंत विचार करणा जिज्ञासोने ॥ ७६ ॥ जव आकाशकी मिथ्या रूपता अर सत्वस्तुकी सत्रूपता चित्तविषे अत्यंत दृढ वसजाए तव इसीप्रकार वायु अर सत्वस्तुका विवेक करणा ॥ ७७ ॥

शंका—आकाशते सत्वस्तुका विवेक करणा तौ यथार्थ है।

काहेतें जो आकाश सत्वस्तुका कार्य है, अर कार्य कारणका तादात्म्य होता है। अर पवन अर सत्वस्तुका विवेक करणा अयुक्त है। काहेते जो सत्वस्तु अर पवनकी कार्यकारणता नहि, इसी कारणतें पवन अर सत्वस्तुका तातात्म्य नहि तादात्म्य न भया तब विवेक करणा कैसे होवे।

उत्तर—सत्वस्तु अर पवनका परंपरासंबंध है, इसते सत्वस्तु अर पवनका विवेक कीता चाहीताहै पवन अर सत्वस्तुका परंपरासंबंध कोन है ऐसा पुछें तां श्रवण कर सत्वस्तुके एकदेशविषे स्थित है माया, अर मायाके एकदेशविषे आकाश स्थित है, अर आकाशके एकदेशविषे पवन है सो पवन कल्पित है। इस प्रकार परंपराकरके सत्वस्तु अर पवनका संबंध है । तांते सत्वस्तुका पवनते विवेक कीया चाहीता है ॥ ७८ ॥ सो विवेक किसप्रकार करणा, पवनविषे चार धर्म आपने हैं एक सुकावना दूसरा वेग तीसरा चलना चौथा स्पर्श, अर तिन्न धर्म पवनविषे सत् अर माया अर आकाश एन्नातिन्नाते प्राप्त भए हैं ॥ ७९ ॥ पवनविषे सत्यता सत्वस्तुते प्राप्त भई है अर सत्वस्तुते पवनके भेद कीत्यां होया पवनविषे जो असाररूपता है, सो मायाते प्राप्त भई है, अर पवनविषे जो शब्द है सो आकाशते प्राप्त भया है ॥ ८० ॥

शंका—आकाशके विवेकप्रसंगविषे तुसां एह कथन कीया सी सत्की प्राप्ति सभना पदार्थांविषे है, अर आकाशकी प्राप्ति सभना पदार्थांविषे नहि, अर अब कहिते हो जो आकाशकी

प्राप्ति पवनविषे है । तांते पहिले वाक्यका अर इस वाक्यका विरोध है ॥ ८१ ॥

उत्तर—पहिले वाक्यका अर इस वाक्यका विरोध नहि । काहेते जो पहिले वाक्यविषे असांने एह कथन कीया सी आकाशका स्वरूप जो है पुलाड सो सभना पदार्थांविषे प्राप्त नहि होता । अर अब असांने कथन कीया है आकाशका धर्म जो है शब्द तिसकी प्राप्ति पवनविषे है ॥ ८२ ॥

शंका—सत्‌वस्तुते भिन्न होनेसें जेकर पवनकों मायामयता है । अर्थ एह पवन मिथ्या है, तब अप्रगट मायाते भिन्न होनेसें पवन सत् कउँन होवे ॥ ८३ ॥

उत्तर—अप्रगटता जिसकी होती है सो वस्तु मिथ्या होती- है एह वार्ता सत् नहि जो सत्यते भिन्न है सो मिथ्या है । तांते जैसे सत्‌सें भिन्न माया मिथ्या है तैसे सत्‌तें भिन्न पवनभी मिथ्या है ॥ ८४ ॥

शंका—जेकर पवन अर माया होवें एक जैसे हैं, तब पवनकी स्पर्शकरके प्रगटता अर मायाकी अप्रगटता कउँकर है ।

उत्तर—सत् अर असत्‌का विवेक तेरा असाडा चल्या होया है । तांते तिसीका विचार कीया चाहीता है, असत्‌के अवांतर भेद जो हैं प्रगट अर अप्रगट ओन्नाके विचारका कुच्छ प्रयोजन नहि । काहेते जो असत्‌विषे अवांतर भेदतां बहुते हैं, तिन्नाके विचारविषे व्यर्थ आरवला जाती है ॥ ८५ ॥ तांते सत्‌वस्तुते भिन्न जो पवन है सो मिथ्या है जैसे सत्‌ते भिन्न आकाश मि-

भ्या है । चिरकाल पर्यंत विचार करके पवनकों मिथ्या दृढ जानकरके पवन सत् है इस बुद्धिकों त्याग करे जिज्ञासी॥८६॥ आगे अग्निका विचार करे, सो अग्नि पवनके दशवें हिसेविषे रहिंदी है। एह जो पंचांभूतांकी नूनता अर अधिकता है, सो ब्रह्मांडके आवरणाविषे जाननी ॥ ८७ ॥ दशदशहिसे पंचोभूत नून अर अधिक हैं। अर्थ एह जो आकाशते दश हिसे पवन नून है अर पवनते दश हिसे अग्नि नून है, अर अग्निते दश हिसे जल नून है, अर जलते दश हिसे पृथिवी नून है, एह पंचांभूतांकी अधिकता अर नूनता पुराणांविषे कथन कीती है। तांते अग्नि पवनके दशवें हिसेविषे है ॥ ८८ ॥ सो अग्नि उष्ण है, अर प्रकाशरूप है, अर सत् अर माया अर आकाश अर पवन एन्ना चारांके धर्मभी अग्नि विषे प्राप्त होते हैं। सता अग्नि विषे सत्ब्रह्मते प्राप्त भई है। अर सताते भिन्न कीत्याँ होयां अग्निविषे जो असता है सो मायाते प्राप्त भई है। अर अग्नि विषे शब्द आकाशते प्राप्त भया है, अग्निविषे स्पर्श पवनते प्राप्त भया है॥ ८९ ॥ अर आपना अग्निका रूप गुण है। तिन्ना संपूर्ण धर्मांविच्चों सताकों भिन्न कर लैना। अर्थ एह जो सताते रहित सभी मिथ्या हैं एह विचार कर बुद्धिस्यों जानना ॥ ९० ॥ इसप्रकार अग्निकों मिथ्या निश्चय करके जलका विचार करणा । सो जल अग्निते दशवां हिसा नून है अर जल अग्निविषे कल्पित है ॥ ९१ ॥ जलविषे सता सत्रूप ब्रह्मते प्राप्त होती है। अर सताके भिन्न कीत्यां होयां जलविषे जो असारता है, सो मायाते प्राप्त होती है, अर शब्द स्पर्श रूप एह तीनो धर्म आकाश अर पवन अर तेजते प्राप्त होते हैं जलविषे अर आपना धर्म जलका रस है ॥ ९२ ॥

सतासें जलके विवेक कीत्यां होयां जल मिथ्या है । अर्थ एह जो सतते भिन्न जल असत् है, इस प्रकार जलका विचार करके मिथ्या दृष्टिके दृढ होयांहोयां फेर पृथिवीका विचार करणा सो पृथिवी जलतें दशवें हिसे नून है, अर जलविषे कलिपत है। ऐसा विचार करणा ॥ १३ ॥ पृथिवी विषे सता सत्रूप ब्रह्मते प्राप्त भई है, अर पृथिवीविषे असारता मायाते प्राप्त भई है, अर पृथिवीविषे शब्द स्पर्श रूप रस एह चारो आकाश पवन तेज जल एन्ना चँवांते प्राप्त भए हैं, अर गंध पृथिवीका आपणा गुण है ॥ ॥ १४ ॥ सताके भिन्न कीत्यां होयां सभना धर्मांसहित पृथिवी मिथ्या है । पृथिवीकी असत्य दृष्टिके दृढ होयांहोयां हृदेविषे फेर ब्रह्मांडका विचार करणा। ब्रह्मांड पृथिवीतें दशहिसे नून है अर पृथिवीके मध्यविषे स्थित है ॥ १५ ॥ ब्रह्मांडविषे चौदा लोक हैं, अर चौदां लोकांविषे प्राणी रहित हैं, जैसाजैसा जिसलोकविषे शरीर चाहीता है तैसेतैसे शरीर धार करके ॥ १६ ॥ ब्रह्मांड अर चौदांलोक अर संपूर्ण शरीर तिन्नाविषे जो ब्रह्मसता है, तिसके भिन्न कीत्यां होयां ब्रह्मांड अर लोक अर शरीर असत् हूएहूए भासते हैं। ओन्नादे भास्यांहोयां भी कुछ हानि नहि ॥ १७ ॥ जो पंचोभूत हैं अर पंचांभूतांका कार्य शरीर अर लोक अर ब्रह्मांड है अर पंचांभूतांका कारण जो माया है। एन्ना संपूर्णांविषे मिथ्या दृष्टिके दृढ होयां हृदेविषे सत्वस्तु अद्वैत है, एह दृष्टि कदीभी विपर्योंको नहि प्राप्त होती ॥ १८ ॥

शंका—पृथिवीआदिक संपूर्णांके मिथ्या होयांहोयां ज्ञानवान्का सर्व व्यवहार लोप हूया चाहीए ।

उत्तर—मिथ्या दृष्टीके होयां व्यवहार लोप नहि होता। काहेते जो पृथिवी आदिकोंका स्वरूप तौ नहि दूरकरीता ज्ञानवान्ने जैसे खंडका जो हाथी है तिसकों मिथ्या जानियां होयां तिसविषे हाथी व्यवहार नहि लोप होता। तांते सत्‌रूप अद्वैतते भिन्न जो पृथिवी आदिक द्वैत है। तिसविषे आपोआपने कार्य करणेका जो धर्म है सो तैसेही रहो॥ ९९॥ सांख्य अर नैयायिक अर बोध आदिकांने पदार्थोंका भेद जैसेजैसे कल्प्या है, अनेक युक्तीओंकरके सो तैसेतैसे होवे तिसके खंडन करणेविषे कुछ प्रयोजन नहि। काहेते जो व्यावहारिक भेद असीभी अंगीकार कर्ते हैं, अर भेदकी सतताका हम खंडन कर्ते हैं॥१००॥ अर सांख्य आदिकांने सत् अद्वैतका खंडन कीया है निःशंकहोकरके। इसीतरां सांख्य आदिकांके द्वैतका हमभी खंडन कर्ते हैं निःशंक होकरके तिसविषे हमारी कुछ हानि नहि॥ १०१॥

शंका—सांख्य आदिकांके द्वैत खंडन करणेविषे लाभभी तौ कुछ नहि।

उत्तर—सांख्य आदिकांके द्वैतके खंडन करणेविषे लाभ है। काहेते जो द्वैतके वारंवार खंडन करणेकरके अद्वैतबुद्धि दृढ हो जाती है। अर अद्वैतबुद्धिके दृढ होया पुरुष जीवन्मुक्त होता हैं, अर विदेहमुक्तिकीभी प्राप्ति होती है॥१०२॥इसी वार्ताकों भगवान् गीताके दूसरे अध्यायविषे अर्जुनकेतांई कहा है। हे अर्जुन! एह जो ब्रह्मस्थिति मैंने तेरेतांई कही है। तिसकों प्राप्त होकरके पुरुष सोकमोहको नहि प्राप्त होता इस ब्रह्मरूप स्थितिविषे अंतकालमैंभी स्थित होयाहोया निर्वाणरूप ब्रह्मकों प्राप्त होता है॥

॥ ३ ॥ अंतकालका अर्थ श्रवणकर सत्‌रूप ब्रह्म जो अद्वैत है, अर मिथ्यारूप जो द्वैतहै,एन्ना दुहांका जो अन्योन्य अध्यासरूप ऐक्यभ्रम है तिसभ्रमका जो अंतकाल है, सो एह है जो सत्‌वस्तु ब्रह्मकों अद्वैत जानना अर द्वैतरूप जगत्‌कों मिथ्या जानना ॥ ॥ ४ ॥ अथवा वर्तमान शरीर अर प्राणांका जो वियोगहै तिसका नाम अंतकाल है। काहेते जो सभीलोक अंतकाल शरीर अर प्राणांके वियोगकों कहिते हैं, मरणकालमैंभी जगत्‌विषे मिथ्या बुद्धिके प्राप्त होयांहोयां फेर जन्मकी प्राप्ति नहि होती, जिसकारणते ज्ञानकी उत्पतिमात्रते पुरुष कृतकृत होता है ॥ ५ ॥ तिसी कारणते ज्ञानवान् भावें किसीप्रकार शरीरका त्यागकरे तिसकों जन्मकी प्राप्ति नहि होती। भावें तां ज्ञानवान् संपूर्णरोगांते रहित सावधान पदमआसन लगाइकरके शरीरकात्यागकरे, भावें रोगांकरके ग्रसया होयां पृथिवीविषे लेटतालेटता शरीरका त्याग करे, भावें मूर्छाकों प्राप्त होयाहोया शरीरका त्याग करे, किसी प्रकारकरके तिसकों हानलाभ नहि। काहेते जो संपूर्ण जगत्‌कों मिथ्या जाननेते तिसका भ्रम मिटगिया है॥ ६ ॥ प्राणांके वियोगसमे मूर्छा आदिकां करके ज्ञान नाश नहि होता, इसविषे दृष्टांत श्रवण कर । जैसे पहिले दिनका जो पडिया होया है सो सुषुप्ति अर स्वप्नेविषे याद नहि होता पर अगलेदिन अन पडियातां नहि होजाता। तैसे मूर्छा आदिकांविषे ज्ञानकी स्मृति न होयां भी अज्ञानीतां नहि होजाता ॥ ७ ॥ प्रमाणांते उत्पन्न होई जो ब्रह्मविद्या है सो प्रवल प्रमाणते विना नाश नहि होती। अर वेदांतांते प्रवल प्रमाणतां कोई नहि ॥ ८ ॥ तिसकारणते वेदांत प्रमाण करके जानिया जो है सत्यरूप अद्वैत ब्रह्म तिसका अज्ञान कदी-

भी नहि होता ।तांते मरणसमेभी पंचांभूतांके मिथ्या जानयां होयां मोक्षकी प्राप्ति होती है।फेर जन्मकी प्राप्ति नहि होती॥१०९॥

इति श्रीविद्यारण्यमुनीश्वरविरचित

पंचभूतविवेकः समाप्तः

इति पंचभूतविवेकःसमाप्तः

श्रीः

पञ्चदशी भाषा

अथ पंचकोशविवेकप्रकरणम्

॥ ॐ सतगुरुप्रसाद ॥ ॥ अथ पंचकोशविवेकनाम ग्रंथका आरंभ कर्ते हैं। सो एह पंचदशीका तीसरा ग्रंथहै । किसवास्ते पंचकोशविवेकनाम ग्रंथका आरंभ कर्ते है, ऐसा पुछें तां श्रवण कर। पंचकोशरूप जो गुफा है तिसविषे स्थित जो सच्चिदानंद ब्रह्म है, तिसकों पंचांकोशांके विवेकद्वारा जान सकीता है इसकारणते पंचांकोशांका विवेक कीया चाहीता है । पंचकोश कवन हैं ऐसा पुछें तां श्रवण कर एक स्थूलदेहरूप अन्नमय कोश है, अर देहके अंतर जो प्राणहैं सो प्राण मय कोश है; अर प्राणके अंतर जो मन है सो मनोमय कोश है, अर मनके अंतर जो वुद्धि है सो विज्ञानमय कोश है अर बुद्धिके अंतर आनंदमय कोश है ।एन्ना पंचांकोशांकी परंपरारूप गुफाविषे आत्मा स्थित है। प्रथमकोश जो है अन्नमय तिसका स्वरूप श्रवण कर। मातापिताने जो भक्षण कीयाहै अन्न तिस अन्नते उत्पन्न भया जो रक्त अर वीर्य तिस रक्त अर वीर्यते उत्पन्न भया जो शरीर है, अर उत्पतिते पिछे जो दुगध होता है माताके स्तनोविषे तिस दुग्धपानतें, अर अन्नके भक्षण करणेतें वधया जो शरीर है सो अन्नमय कोश है। अर्थ एह जो शरीर अन्नका विकार है,सो शरीर आत्मा नहि। काहेते जो जन्मतें प्रथम तौ शरीरका अभाव है, अर मरणतें पिछेभी शरीरका अभाव है, तांते एह सिद्ध भया।

शरीर आत्मा नहि कार्य होनेते घट आदिकांकी न्यांई अर जेकर शरीरकों आत्मा मन्ये तब कीतेहोए जो इस शरीरविषे पुण्यपाप हैं, तिनका फल भोगतें विना नाश होया चाहिए। अर इसशरीरविषे भोगीते हैं सुखदुःख तिनका कारण कर्म इस शरीरकरकेतां कीता नहि, अर इस शरीरकी उत्पतितें प्रथम आत्माकी विद्यमानतातां तूं मानता नहि, अर इस शरीरका जन्म प्रत्यक्ष सिद्ध है। तांते अकृताभ्यागम दोष प्राप्त भया। अर्थ एह जो कर्म कीते विनाही फल भोगना पडा, तैसेही कीते होए कर्मका फल भोगे विनाही नाश भया। काहेते जो फलभोक्ता देहतें विना आत्मा तूं नहि मानता।तांते ईहां कीतेहूए पुण्यपापकर्मकी व्यर्थता प्राप्त भई इसते आत्मा देहतें भिन्न है। एह अंगिकार कीता चाहिए, अर देह अनात्मा है एह अंगिकार कीता चाहिए। अब प्राणमयकोशका स्वरूप श्रवण कर, देहविषे मस्तकतें लेकर चरणापर्यंत पूर्ण जो पवन है अर संपूर्ण इंद्रियांकों अर शरीरकों जो पवन समर्थ देकर प्रवृत करावता है, ऐसा जो पवन है सो प्राणमय कोश है, सो प्राणमय कोश आत्मा नहि काहेते जो चेतनताते रहित है घट आदिकांकी न्याई। अब मनोमय कोशका स्वरूप श्रवण कर। देहविषे जो अहंकार कर्ता है, अर घर आदिकांविषे जो ममता कर्ता है, अर काम क्रोध आदिकांकरके जेडा भ्रमकों प्राप्त होता है, सो मनोमय कोश है सो मनोमय कोश आत्मा नहि काहेते जो एकरस स्वभाववाला नहि, काम क्रोध आदिक अनेक विकारांवाला है। तांते एह सिद्ध भया मनोमय कोश आत्मा नहि विकारोंवाला होनेते, शरीरकी न्यांई। अब विज्ञानमय कोशका स्वरूप श्रवण कर। चैतन्यके प्रतिबिंब सहित

जो बुद्धि है, सो सुषुप्तिकालके अज्ञानविषे लीन होजाती है, अर जाग्रत् अवस्थाविषे सारे शरीरविषे व्याप करके रहिती है, ऐसी जो बुद्धि है सो विज्ञानमय कोश है, सो विज्ञानमय कोश आत्मा नहि, लयादिक स्वभाववाला होनेते घट आदिकांकी न्यांई ।

शंका—एकही अंतःकरण मन अर बुद्धिरूपकों प्राप्त होता है। तांते एकही अंतःकरण विज्ञानमय कोश अर मनोमय कोश दोरूपांकों कैसे प्राप्त होवे।

उत्तर—एकही अंतःकरण कर्तारूप होनेकरके विज्ञानमय कोश कहीता है। अर करणरूप होनेकरके मनोमय कोश कहीता है, सो विज्ञानमय कोश अंतर है, अर मनोमय कोश बाहिर है। जैसे एकही पुरुष प्रजाके अनुभवकरके हाकम होता है, अर राजाके अनुभवकरके नौकर होता है, तैसे एकही अंतःकरण मनोमय कोश अर विज्ञानमय कोश दोरूपांकों प्राप्त होता है। अब आनंदमय कोशका स्वरूप श्रवण कर । पुण्यरूप कर्मांका फल जो सुख है तिस सुखके अनुभवसमे अंतर सुख होईहोई जो मनकी कोईक वृत्ति है, सो मनकी वृत्ति आनंदरूप आत्माके प्रतिबिंबकों ग्रहण कर्ती है, सो वृत्ति भोगके समाप्त होयांहोयां निद्रारूपकर लीन होजाती है। ऐसी जो वृत्ति है सो आनंदमय कोश है, सो आनंदमय कोश आत्मा नहि, कदीक होनेतें, बिजली आदिकांकी न्यांई ।

शंका—प्रतीत होते जो हैं आनंदमयादि पंचकोश तिन्नांकों आत्मरूपताके निषेध कीत्यां होयांहोयां शून्यवाद प्राप्त होवेगा

उत्तर—शून्यवाद नहि प्राप्त होता। काहेते जो सुखाकार वृत्तिविषे जिसका प्रतिबिंब पडता है, सो बिंबरूप आत्मा है। काहेते जो सदा एकरस सुभावकरके स्थित है तांते एह सिद्ध भया। अंतःकरणविषे जिसका प्रतिबिंब पडता है, सो बिंबरूप आत्मा है, नित्य होनेते जो आत्मा नहि होता सो नित्यभी नहि होता। जैसे शरीर आदिक आत्मा नहि सो नित्यभी नहि अर आकाश आदिकभी उत्पति विनाशवाले होनेकरके अनित्य हैं।

शंका—शरीरतें आदि लेकरके निद्रासमे प्रतीत होता जो आनंद है, ईहांपर्यंत जो प्रतीत होते हैं पंचकोश। तिन्नाकों तुसां कथन कीत्यां जो युक्तीयां हैं। तिन्ना युक्तीयांकरके आत्मरूपता जेकर नहि बनती तौ मत बने।पर एन्नाते भिन्नतां आत्मा नहि प्रतीत होता। तांते निरात्मतावाद प्राप्त भया। काहेते जो एन्नाते भिन्न कोई जेकर आत्मा होता तद प्रतीत होता।

उत्तर—शरीरतें आदि लेकरके निद्रा आनंदपर्यंत पंचकोश प्रतीत होते हैं, अर एन्नाते भिन्न आत्मा नहि प्रतीत होता। एह जो तैंने कथन किया है सो यथार्थ है। पर तौभी एन्ना पंचांकोशांते भिन्न आत्मा है। काहेते जो आत्मा एन्ना पंचांकोशांते भिन्न जेकर न होवे तद एन्ना पंचांकोशांकों कौन जाने। तांते जो एन्ना पंचांकोशांकों जाननेवाला है सो आत्मा है, तिसकों किउँ नहि अंगीकार कर्ता।

शंका—एन्ना पंचांकोशांते भिन्न जेकर आत्मा होवे तद प्रतीत होवे। अर पंचांकोशांते भिन्न आत्मा प्रतीत तां नहि होता, तांते आत्मा है नहि।

उत्तर—आनंदमयादिक पंचांकोशांका साक्षी जो आत्मा है सो अनुभवरूप है, तांते अनुभवका विषा नहि होता।

शंका—अनुभवरूप आत्माभी अनुभवका विषा किउँन होवे।

उत्तर—अनुभवरूप आत्मा अनुभवका विषे नहि होता। काहेते जो अनुभवकाविषा होता है सो अनुभवरूप नहि होता। अर जो अनुभवका विषे होता है सो अनुभव करणेवालेतें भिन्न होता है, अर आत्मातां अनुभवरूप है, अर सभसके अनुभव करणेवाला है तांते अनुभवका विषे कैसे होवे।

शंका—आत्मा अनुभवका विषे नहि होता एह बात तुमभी मानते हो, अर मैंभी मानता हां। इसविषे विवाद कुछ नहि, पर आत्माके अभावकरके आत्माका अनुभव नहि होता, के आत्मासें भिन्न अनुभवके अभावकरके आत्माका अनुभव नहि होता। अथवा आत्मातें भिन्न अनुभव करणेवालेके अभावतें आत्माका अनुभव नहि होता। इसविवादके दूर करणेवाली युक्ति मेरेतांई कहो।

उत्तर—आत्मातां सदा विद्यमान है, पर आत्माके अनुभव करणेवाला होर कोई नहि, आत्माते भिन्न अनुभवभी नहि इसते आत्मा नहि प्रतीत होता,अर आत्माके अभावते आत्मा नहि प्रतीत होता एह वार्ता नहि। काहेते जेकर आत्माका अभाव होवे, तां अनात्म पदार्थांकी सिद्धि किसकर होवे। तांते संपूर्ण पदार्थांकी साधकतारूपकरके आत्मा सदा विद्यमान है। अनुभवरूप आत्माका अनुभव नहि होता इसपर दृष्टांत सुन, जैसे मधुर स्व

भाववाले जो गुड आदि हैं. तिनकों मधुर करणेवालेकी लोड नहि। जो असानूं कोइक आनकर मधुर करे. अर ऐसा कोई पदार्थभी जगतविषे है नहि। जो गुडनूं आनके मधुर करे, अर गुड सर्व चने चावलआदिक पदार्थोंकों मधुर कर्ता है। अर गुडके मधुर करणेवाला जगत्‌विषे कोई पदार्थ नहि तौभी गुड मधुरस्वभाव है। तैसे अनुभवरूप आत्माकों आपने अनुभव करणेवालेकी लोड नहि, अर जगत्‌विषे ऐसा पदार्थभी कोई नहि जो आत्माकों अनुभव करसके, अर आत्मा सभसकों अनुभव कर्ता है आत्माकों अनुभव करणेवालेके अभाव होयांहोयांभी आत्माकी अनुभवरूपता सदा वनी है, इस अर्थविषे वेदवाक्यभी प्रमाण है। स्वप्नअवस्थाविषे आत्मा आपने प्रकाश करके प्रकाशता है। काहेते जो जाग्रत् अवस्थाविषे सूर्यआदिक प्रकाश करणेवाले हैं। स्वप्नविषे तिनका अभाव है। अर आत्मा संपूर्ण जो प्रकाशक हैं तिनते प्रथम प्रकाशता है आपने प्रकाश करके। अर आत्माके प्रकाशनेतें पश्चात् सूर्यादि प्रकाशते हैं संपूर्ण, सो सूर्यादिकांविषे आपना प्रकाश नहि, सभ आत्माके प्रकाशकर प्रकाशते हैं जैसे घोडियांके चलनेकरके रथ चलता है। अर रथविषे चलनेकी आपनी समर्थता नहि, अर जिसकरके संपूर्णकों जानीता है, तिसनूं होर अन्य किसकरके जाने। जो सभके जाननेवाला है तिसनूं किसकरके जाने एहवाक्य दोवेदके इसविषे प्रमाण हैं. जिस साक्षी चैतन्यरूप आत्माकरके संपूर्ण दृश्यमात्र नूं जानते हैं जीव। तिस साक्षीरूप आत्मानूं किस साक्ष्यरूप जडवस्तु करके जाने पुरुष।

शंका—मनकरके जानेंगे तिसकों ॥

उत्तर—मन दृश्यवस्तुके ज्ञानका साधन है। अर ज्ञानता जो आत्मा है तिसके जाननेका साधन नहि, इसी अर्थकों वेदभी कथन कर्ता है। आत्मा वाणीकरकेभी नहि जानया जाता अर मनकरकेभी नहि जानया जाता,अर आत्मा जे मनकरके जानयाजाए, तब तिसदे जानिनेवाला कोंन है। जेकर कहें आत्माही जाननेवाला है। तब आपही द्रष्टा अर आपही दृश्य भया, एह वार्ता तौ विरुद्ध है। जैसे कहीए अग्नि अग्निकों प्रकाशती है अर अग्नि अग्निकों दाह कर्ती है, एह वार्त्ता विरुद्ध है । अर आत्मादी स्वप्रकाशताविषे दो वेदवाक्य होरभी प्रमाण हैं, एकतौ एह है । आत्मादे जाननेवाला कोई नहि, अर दूसरा वाक्य एह है। जो वस्तु जानीती है अर जो नही जानीती तिन्ना दोनोते आत्मा भिन्न है, जोजो वस्तु जानीती है। तिन्ना संपूर्ण वस्तुआंके जाननेवाला आत्मा है, अर आत्मा बोधस्वरूप है, सो आत्मा ज्ञानदा जो विषेवस्तु है, अर अज्ञानकर आछादित जो वस्तु है, तिन्ना दोनोसें भिन्न है। जिसतें बोधस्वरूप है ।

शंका—ज्ञात अर अज्ञातसें भिन्न बोधका अनुभव तौ नहि होता।

उत्तर—ज्ञात अर अज्ञातसें भिन्न जेकर बोधका अनुभव न होवे, तौ ज्ञातवस्तुकाभी अनुभव न होवे। काहेते जो ज्ञातनाम उसदा है जो ज्ञानदा विषे होवे । तांते ज्ञान जो है सो पहिलां प्रकाशता है,अर विषे पिछों प्रकाशता है। तांते प्रथम प्रकाशमान जो ज्ञान है, सोई बोध है। तांते बोधका अनुभव अवश्य अंगीकार कीया चाहिऐ, अर जिस मूढकों ऐसे प्रथम प्रकाशमान जो

बोध है, तिसका अनुभव नहि होता, सो पुरुष मनुष्यके आकार-वाला तो है पर मृतिका दीढांम है, तिस जडकों शास्त्र कैसे उपदेश करेगा बोध नहि जानीता ऐसा जो कथन है सो हासीके योग्य है। काहेते जो बोधविना एह कथनहि नहि बनदा, इसविषे दृष्टांत सुन। जैसे कोई सभाविषे आदिके एह प्रश्न करे, मेरे मुखमें जिव्हा है अथवा नहि। इस प्रश्नकों सुनकर बुद्धिमान हसते हैं। काहेते जो जिव्हाविना एहप्रश्न करणाही नहि बनदा।तांते एह प्रश्न मूढतादे जनावनेवाला है,बुद्धिमताके जनावनेवाला नहि। अर्थ एह जो प्रश्न करणेवालेदी बुद्धिदी स्तुतिदे करावनेवाला एह प्रश्न नहि, तैसे मैंने बोध नहि जानीदा अर इसते आगे मेरेकों बोध जाननेयोग्य है, एह जेडा कथन है सो हासीके योग्य है। काहेते जो बोधसें विना एह कथन नहि बनता।

शंका—होवो बोध सभतें प्रथम प्रकाशमान, पर प्रसंग जो है ब्रह्मबोधका तिसमैं क्या सिद्ध भया।

उत्तर—ब्रह्मबोधविषे एह सिद्ध भया। जिसजिस वस्तुका बोध होता है जगत्‌विषे, तिसतिस संपूर्ण वस्तुके त्याग कीत्यां होयांहोयां, सभना वस्तूयांका प्रकाशक जो बोध है, सो ब्रह्म है। ऐसी जो बुद्धि है तिसका नाम ब्रह्म निश्चय है। अर्थ एह जो बोधमात्र वस्तु है, सो ब्रह्म है। इस बुद्धिका नाम ब्रह्मज्ञान है।

शंका—जेकर घटादिक पदार्थोंके त्याग करके घटादिक पदार्थांका प्रकाशक अनुभवनूं ब्रह्मरूप जानीता है, तद पंचांकोशांदा विवेक व्यर्थ भया। काहेते जो ब्रह्मज्ञान जिज्ञासीकों चाहीदासी, सोतो घटादिकांदा प्रकाशक जो अनुभव है सो ब्र-

त्म है ऐसे सिद्ध भया। तौ पंचांकोशांदे विवेकसाथ प्रयोजन कुछ न रहा।

उत्तर—ब्रह्मदी आत्मरूपता जिचरतोडी प्रतीत न होवे, तिचरतोडी जन्ममरणदी निवृत्ति नहि होती। ब्रह्मदी आत्मरूपता प्रतीतिका कारण पंचांकोशांदा विवेक है। तांते पंचांकोशांदा विवेक व्यर्थ नहि। काहेते जो पंचांकोशांदे विवेककों ब्रह्मकी आत्मरूपता प्रतीतिविषे कारणता है। तांते पंचांकोशांदी अनात्मतादे निश्चय कीत्यां होयांहोयां बुद्धिकरके पंचांकोशांदा साक्षीरूप जो बोध है, सोई मेरा वास्तव स्वरूप ब्रह्म है।

शंका—अन्नमयादिक जो पंचकोश हैं अनुभव करके सिद्ध। तिन्नाके त्याग कीत्यां होयांहोयां, शून्यता बाकी शेष रहिती है।

उत्तर—पंचांकोशांदे त्याग कीत्यांहोयां पंचांकोशांदे साक्षीकों शून्यता नहि बनदी। तिसविषे युक्ति श्रवण कर। पंचांकोशांदे त्याग करणेवाला जो साक्षी चैतन्य है, सो कैसे शून्य होवे। काहेते जो तिस साक्षी चैतन्यसें विना शून्यकी सिद्धिभी नहि होती। मैंहां इस प्रतीतिदा विषे जो है सो आत्मा है, ऐसा सभी शास्त्रांवालेभी मानते हैं, अर लोकभी मानते हैं। इसविषे विवाद किसीका नहि, अर इसविषे जेकर विवाद होवे तौ इसविषे विवाद करणेवाला वादी कौन है, सोतौ वादी कोई नहि। काहेते जो ऐसा जगत्‌विषे कोई नहि कँहदा जो मैं नहि, भ्रमसें विना आपनी असता किसी अवस्थाविषे किसीने अंगीकार नहि करीती। काहेते जो आपनी असतादी किसीकों रुचिही नहि इसी कारणते श्रुति असत्‌वादीदे बाधनूं कहती है, जो पुरुष ब्रह्मनूं

असत जानता है। सो पुरुष आपही ब्रह्मके असत जाननेते असत होजाता है। काहेते जो ब्रह्म आपना आप है इतने करके जो सिद्ध भया सो श्रवण कर। ब्रह्मकों अनुभवविषयता मत होवे, पर ब्रह्मकी सत्ता अंगीकार कीती चाहिए।

प्रश्न—जेकर आत्मा जो है ब्रह्म सो अनुभवका विषे नहि, तो तिसदा कैसा स्वरूप है। जेकर किसी प्रकारका आत्माका स्वरूप कहोगे, तौ तिसी स्वरूपकर आत्माकों अनुभवविषयता होजावेगी। अर जेकर कहो किसी प्रकारका आत्माका स्वरूप है नहि, तद शून्यता प्राप्त होवेगी।

उत्तर—कैसा कहना अर तैसा कहना आत्माविषे बनता नहि। काहेते जो कैसा कहना अर तैसा कहना तौ आनात्माविषे बनता है। तांते कैसा कहनेतें अर तैसा कहनेतें जो रहित है सो आत्मा है, ऐसे निश्चय कर। कैसा कहना अर तैसा कहना आत्माविषे किउँकर नहि बनता, जे ऐसा पुछें तां श्रवण कर। ऐसा कहना तिसविषे होता है जो इंद्रियांदा विषे होता है, अर आत्मा तो इंद्रियांदा विषे नहि। काहेते जो सभनाकों विषे करणेवाला है, अर तैसा कहना उसविषे होता है जो परोक्ष होता है, अर आत्माता परोक्ष नहि। काहेते जो आत्मानाम आपने आपका है आपना आप कबी परोक्ष नहि होता, अर आत्मा शून्यभी नहि, जिसकारणते ज्ञानदा न विषे होयांहोयांभी सदा अपरोक्ष है, तांते एह सिद्ध भया। आत्मा स्वप्रकाश है, अनुभवदा न विषे होईकरके अपरोक्ष होनेतें, जो स्वप्रकाश नहि होता सो अनुभवका विषे होइकर अपरोक्ष होता है, जैसे घटादिक पदार्थ अर

आत्मातां स्वप्रकाश है, इसते अनुभवका विषे न होइकरके अपरोक्ष है।

शंका—होवे आत्मादी स्वप्रकाशता, पर तिसकों ब्रह्मरूपता कैसे है। काहेते जो ब्रह्मका लक्षण कोई है नहि।

उत्तर—ब्रह्मका लक्षण जो है, सत्यचित्‌अनंतरूप, वेदने कथन कीया, सो आत्माविषे देखीता है । तांते आत्मा ब्रह्मरूप है। आत्मादी सत्यरूपता कैसे है ऐसे पुछें तां श्रवण कर। सत्यनाम उसदा है जिसदा कदीभी अभाव न होवे, सो आत्माका कदीभी अभाव नहि होता । जिसकारणते आत्मा सर्व जगत्‌के अभावका साक्षी है। स्थूल सूक्ष्म शरीरादिरूप जगत्‌दा अभाव सुपुप्ति मूर्छा समाधिविषे होता है। तिसदा साक्षीरूपता करके विद्यमान जो आत्मा है, तिसका अभाव कदी नहि होता। तांते आत्मा सत्य है, अर जेडा कोई कहे आत्माका अभाव होता है। तां असी तिसतें पुछते हैं। आत्मादे अभावका कोई साक्षी है के नहि जेकर कँहे कोई साक्षी नहि, तौ आत्माका अभाव न सिद्ध होया काहेते जो साक्षीते विना किसीकी सिद्धि नहि होती, अर जेकर कँहे साक्षीसें विनाभी आत्माके अभावकी सिद्धि होती है, तद वंध्याके पुत्र अर सहेके सिंग अर आकाशके पुष्पभी सिद्ध होवें, सो तौ नहि सिद्ध होते। तांते साक्षीसें बिना आत्माका अभावभी नहि सिद्ध होता । अर जेकर कँहे आत्माके अभावका कोई साक्षी है, तौ ओह साक्षी आत्मा है के अनात्मा है, अनात्मा तौ आत्माके अभावका साक्षी नहि हो इसक्ता जड होनेते, साक्षी होना तौ चेतनका स्वभाव है, अर

आत्माभी आत्माके अभावका साक्षी नहि बनता। काहेते जो अभावका साक्षी सो होता है, जो अभावके पाछे रहिता है। तांते आत्माका जेकर अभाव होवे तो आत्मातां पाछे शेष न रहिया, इसते आत्मा आत्माके अभावका साक्षी कैसे होवे। तांते सर्वके बाध कीत्यां होयां जो पाछे शेष रहिता है, सोई आत्मा है जैसे घरविच्चों संपूर्ण हथकरके पकडने लाइक पदार्थांदे बाहिर निकास्यां होयांहोयां, जो पाछे शेष रहिया है न हथनाल पकडके बाहिर निकासनेके लाइक सो आकाश है।

शंका—प्रतीत होता जोजो पदार्थ है तिस संपूर्णके बाध कीत्यां होयां बाकी तां कुछ नहि शेष रहिता इसतें तुसी कैसे कहिते हो सर्वके बाध कीत्यां होयां पाछे जो शेष है, सो आत्माका स्वरूप है।

उत्तर—सर्वके बाध कीत्यां होयां पाछे कुछ नहि शेष रहिता, इसका तेरेकों अनुभव होया के नहि होया। जेकर कहें तिसका अनुभव नहि होया तो तिसका कथन करणा कैसे बने, अर जेकँहे तिसका अनुभव होया है। तां जो सर्वके अभावका अनुभव करणेवाला है, सो आत्मा तेरा स्वरूप है। तांते जो सर्वके अभावका साक्षी है, तिसका नाम तूं पाछे कुछ नहि राखता हैं, अर हम तिसका नाम आत्मा राखते हैं। तांते नाममात्र विषे भेद भया, वस्तुविषे भेद न भया। जैसे एकपदार्थका नाम किसीने कनक किहा किसीने गेउँ किहा, तां नाममात्रमें भेद है वस्तुमें भेद कुछ नहि। जिसकारणतें सर्वके बाधका साक्षी चैतन्य अबाधरूप विद्यमान है, इसी कारणतें इह आत्मा स्थूलभी न-

हि अर सूक्ष्मभी नहि। इस प्रकार स्थूल सूक्ष्म संपूर्ण अनात्म पदार्थांके निषेध करके साक्षी चैतन्यकों आत्मता प्रतिपादन करे है वेदकी श्रुतिभी। इदंता करके प्रतीत होती जो संपूर्ण वस्तु है, सो त्यागनेके लाइक है, अर जो इदंता करके नहि प्रतीत होता सो नहि त्यागनेके लाइक काहेतें जो त्याग करणेवालेके स्वरूपका त्याग नहि बनता। सोई आत्मा है जो त्यागने लाइक नहि। तांते ब्रह्मलक्षणविषे जो सत्यता सी सो आत्माविषे सिद्ध भई अर ज्ञानरूपता आत्माकी प्रथमहि कथन कीती है आत्मा आपही अनुभवरूप है अनुभवका विषे नहि होता इत्यादिक वचना करके अब आत्माकी अनंतता जिस प्रकार है सो प्रकार श्रवण कर अनंत कहीता है जो अंतसें रहित होवे सो अंत तिन्न प्रकारदा है अंत नाम है अभावका जिस वस्तुका किसी इक देशमैं अभाव होवे सो देशकर अंत कहीता है तिस वस्तुका सो परिछिन्न पदार्थांका होता है जैसे घटादिकांका अर ब्रह्मकों सर्व देशांविषे व्यापक होनेते तिसका देश करके अंत नहि अर कालकर अंत तिसका होता है जो उत्पत्तिविनाशवाला होता है जैसे घटादिकांका ब्रह्मतां उत्पत्ति विनाशसें रहिता है तांते तिसका कालकरके अंत नहि अर वस्तुतें अंत तिसका होता है जो वस्तु दूसरी वस्तुके रूपकों नहि प्राप्त होती जैसे घट पटरूपकों नहि प्राप्त होता तां तिसका पटसें अंत है अर ब्रह्मतां सर्व रूप है तांते ब्रह्मका वस्तुसें अंत नहि तांते देश अर काल अर अन्य वस्तु एन्ना तिन्नाकों माया करके कल्पित होनेते तिन्नाकरके ब्रह्मका देशकरके अंत अर

कालकरके अंत अर वस्तुकरके अंत नहि बनता तांते ब्रह्मकी अनंतता अति प्रगट है।

शंका—जडजगत्कों ब्रह्मविषे मायाकरके कल्पित होनेते मत होवे ब्रह्मका जडजगत् करके अंत पर चेतनरूप जो हैं जीव अर ईश्वर तिन्नाकों मायाकरके कल्पितताता है नहि तांते जीवईश्वरकरके ब्रह्मका अंत होवे ।

उत्तर—सत्य अर ज्ञान अर अनंतरूप जो ब्रह्म है सोई वास्तव है उपाधीयां दोनोंकरके ब्रह्मकोंही जीवरूपता अर ईश्वररूपता प्राप्त होती है कल्पित सो उपाधीयां दोनों कौन हैं जे ऐसा पुछें तां श्रवण कर अनिर्वचनीय मायाशक्ति ईश्वररूपतादी उपाधि है तिस मायारूप उपाधिने संपूर्ण पदार्थांदी व्यवस्था स्थापन कीती होई है। तांते आनंदमय कोशसें लेकरके संपूर्ण पदार्थांविषे गुप्त होकरके रहिती है इसते नही प्रतीत होती अर जेकर मायाशक्ति संपूर्ण पदार्थांदी व्यवस्था करणेवाली न होवे तद संपूर्ण पदार्थांके धर्म परस्पर मिल जावें।अर्थ एह जलका धर्म शीतता अग्निविषे प्राप्त होजावे अर अग्निका धर्म प्रकाशकता जलांविषे प्राप्त होजावे।तांते जगत्विषे अव्यवस्थित व्यवहार हो जावे तांते जगत्विषे व्यवस्थित व्यवहारका कारण मायाशक्तिहै।

शंका—जड मायाशक्तिकों जगत्के व्यवस्थित व्यवहारमें कारणता नहि बनती। काहेते जो व्यवस्थित व्यवहारमें कारण होना चेतनका धर्म है।

उत्तर मायाशक्ति चेतनके प्रतिबिंबका आश्रय है इसते

चेतनताकों प्राप्त होएकी न्यांई होती है । तांते जगत्‌की व्यवस्थाका कारण है तिस माया रूप शक्तिके संबंधतें ब्रह्मही ईश्वर रूपताकों प्राप्त होता है अर पंचकोश रूप उपाधिके संबंध करके ब्रह्मही जीव रूपतानूं प्राप्त होता है।

शंका—एक ब्रह्म आपनी ब्रह्मरूपतानूं न त्यागकरके परस्पर विरुद्ध जीवरूपता अर ईश्वररूपतानूं एककालविषे कैसे प्राप्त होता है अैसा तौ जगत्‌विषे कोई पदार्थ नहो देखीता जो आपनी एकरूपतानूं न त्याग करके विरुद्ध दो धर्मांकों प्राप्त हो जाते।

उत्तर—जैसे एकमनुष आपनी मनुपरूपतानूं न त्यागकरके एक कालविषेही पुत्र पौत्रा रूपनूं प्राप्त होजाता है जिस कालविषे पितादी दृष्टिविषे ओह पुत्र तिसी कालविषेदा देदी दृष्टिविषे ओह पौत्रा है अर तिसी कालविषे ओह मनुषका मनुषभी आप वनया है। तैसे एक ब्रह्म आपनी ब्रह्मरूपतानूं न त्यागकरके जीव ईश्वर परस्पर विरुद्धरूपताकों प्राप्त होता है । जैसे पितादा देवलन दृटि करीए तां पुरुष मनुषका मनुष है न पुत्र है न पौत्रा है तैसे शक्ति अर कोशरूप उपाधिवलन दृष्टि करीए तां न जीव है न ईश्वर है केवल शुद्ध ब्रह्मका ब्रह्मही है इस प्रकार ब्रह्मविषे जीव ईश्वर कल्पित हैं तांते जीव ईश्वर करकेभी ब्रह्मका परिछेद नहि होता अैसा जो देश काल वस्तु परिछेदसें रहित ब्रह्म है सो आत्मरूप है इस प्रकार जो पुरुष जानता है ब्रह्मकों सो आपही ब्रह्मरूप होजाता है अर ब्रह्मका जन्ममरण नहि तांते ओह पुरुष जन्ममरणतें रहित हो जाता है ।

इतिश्रीपंचकोशविवेकःसमाप्तः ॥ ३ ॥

श्रीः

पञ्चदशी भाषा

अथ द्वैतविवेकप्रकरणम्

॥ ओंसत्गुरुप्रसाद ॥ ॥ अथ चतुर्थ ग्रंथ द्वैतविवेक लिख्यते॥
अब चौथा जो विवेक है द्वैतविवेकनाम ग्रंथ तिसका प्रारंभ कर्ते हैं। तिसविषे ईश्वर करके रचया होया जो द्वैत है अर जीवकरके रचया होया जो द्वैत है तिसको भिन्नभिन्न निरूपण करेंगे। काहेते जो जीव अर ईश्वर करके रचे होए द्वैतको भिन्नभिन्न करके जानया होयां जीवकों बंधका कारण जो द्वैत है सो प्रगट प्रतीत होवेगे तिस बंधकारण द्वैतके त्यागिया होयां जीवकों मोक्षकी प्राप्ति होवेगी तांते द्वैतका विवेक करणा निष्फल नहि काकके मुखविषे दंदांदी परिक्ष्याकी न्याई।

शंका—पुण्यपापरूप कर्मांकरके जीवही जगत्कों रचिते हैं ऐसे वादी शास्त्रांवाले कोईक कथन कर्ते हैं तांते ईश्वरकरके रचिया होया द्वैत कोई नहि।

उत्तर—बहुतीयां श्रुतीयांविषे ईश्वरकरके रचियां होया द्वैत कथन कीता है तांते एह शंका करणी योग्य नहि उह कौन बहुत श्रुतीयां हैं ऐसा पुछें तां श्रवण कर। एकतां प्रथम श्वेताश्वतर उपनिषदकी श्रुति है सो कहती है मायांनूं जगत्का उपादान कारण जानो अर मायावाला जो ईश्वर है तिसनूं महेश्वर जानों। सो मायावाला ईश्वर जगत्नूं रचिता है अर दू-

सरी अैतरेय उपनिषदकी श्रुति है सो कहती है एह जगत्
उत्पतितें पूर्व आत्मरूप होता भया सो आत्मा इच्छा कर्ता भ-
या मैं इस जगतनूं रचां सो आत्मा संकल्प करके एनां संपूर्ण
लोकांनूं रचिता भया तीसरी तैतरीय उपनिषदकी श्रुति है तिस-
विषे तितरिनाम मुनि एह कहता है तिस ब्रह्मरूप आत्माते
आकाश पवन अग्नि जल पृथिवी औषधीयां अन्न अर प्राण-
धारीयांके शरीर उत्पन्न होते भए सो आत्मा इच्छा कर्त्ता भया
मैं एकतें बहुतरूप होवा अर प्रजारूपकरके उत्पन्न होवां सो
आत्मा विचारता भया इस इस प्रकारकरके यहयह वस्तु उत्प-
न्न होवेगी अैसे विचार कर संपूर्ण जगत्कों रचिता भया। जो
कुछ देखनेमैं आवता है अर चौथी छांदोग उपनिषदकी श्रुति है
तिसविषे एह कथन कीया है एह संपूर्ण जगत् उत्पत्तिसैं पूर्व
सत्रूप होता भया। सो सत् ब्रह्म कैसा है सजातीय विजातीय
स्वगत भेदतें रहित है सोसत्इच्छा कर्ता भया मैं एकतें बहुतरूप
होवां तांते प्रजारूपकरके उत्पन्न होवां इस प्रकार इच्छाकरके
तेज जल पृथिवी तिन्ना भूतांकों रचिता भया अर अंडज जेरज
उतभिज्ज तिन्न प्रकारके शरीरांकों रचिता भया अर पंचवीं मुंड
क उपनिषदकीश्रुति है तिसविषे एह कथन कीया है जैसे प्रचंड
अग्नितें अनेक प्रकार कियां चिंनगां उत्पन्न होतीयां हैं तैसे व्याप-
क परमात्मातें अनेक प्रकारके जड अर चिदाभाससहित चेतन
पदार्थ उत्पन्न होते हैं अर छिंवीं बृहदारण्य उपनिषदकी श्रुति है
सो कहती है एह जगत् संपूर्ण उत्पतितें पूर्व अव्याकृतरूप होता
भया तिस अव्याकृत ब्रह्मतें नामरूपलक्षण दृश्यप्रपंच होता
भया सो नामरूप विराट् आदिकांविषे प्रगट नजर आवते हैं वि-

राट् अर मनु अर मनुष अर गौयां अर गधे अर घोडे अर बकरीयां अर भेडां अर कीडीयांसे आदि लेकरके संपूर्ण स्त्रीपुरुषलक्षण दोनो तिस अव्याकृतब्रह्मते उत्पन्न होते भए इस प्रकार अनेक श्रुतीयां ईश्वरकों जगत्का कारण कथन करतीयां हैं अर ईश्वरका जीवरूपकरके शरीरांविषे प्रवेशभी कथन करतीयां हैं सो जीवरूप निर्विकार ब्रह्मतें भिन्न है। काहेते जो विकारी है तिस परमात्माकों प्राणांके धारणेतें जीवरूपता प्राप्त भई है प्राणेके धारणेका अर्थ एह जो प्राणांका स्वामी होके प्राणांकों प्रेरणां प्राणांका अर्थ संपूर्ण इंद्रियां अर प्राण अर शरीर जीव किसकों कहते हैं ऐसे पूछें तां श्रवण कर तिन्ना वस्तूंयांके मिलनेका नाम जीव है एक लिंगशरीरका अधिष्ठान कूटस्थ चैतन्य दुसरा लिंगशरीर तीसरा लिंगशरीरविषे चैतन्यका प्रतिबिंब।

शंका—जेकर ईश्वरने हीजीवरूपताकरके प्रवेश कीता है तद जीवनूं अज्ञान अर दुःखादिक न होए चाहीए काहेते जो ईश्वर विषे अज्ञान अर दुःखादिक हैनहि ।

उत्तर—ईश्वरकी जो माया शक्ती है तिसविषे जगत्के उत्पन्न करणेकी जैसे शक्ति है तैसे मोहशक्तिभी है सो मोहशक्ति जीवकों मोह करदेती है। अर्थ एह जो आपने चैतन्य अर आनंदस्वरूपके ज्ञानतें रहित करदेती है तिस मोहते शरीरविषे तादात्म्याभिमानकों प्राप्त हूयाहूया आपनी ईश्वररूपतानूं भुल जाता है अर अनीश्वररूपतानूं प्राप्त होजाता है । अर्थ एह जो इष्टकी प्राप्ति अर अनिष्टके दूर करणेविषे असमर्थ होजाता है तिसकर आपकों दुःखी अर अज्ञानी मानता है इसी अर्थकों श्रु-

तिन्नी कथन कर्ता है शरीर तौ एक जैसा है जैसे दोपक्षीयांका स्थान वृक्ष तो एक जैसा है पर तिस शरीरविषे जिसकों तादात्म्याभिमान है सो पुरुप आपने स्वरूपसों भुला होयाहोया सुखदी प्राप्ति अर दुःखदे दूर करणेविषे असमर्थ होइकरके शोककों प्राप्त होता है अर जिसकों शरीरविषे तादात्म्याभिमान नहि सो शोकसें रहित होता है इतनेकरके ईश्वरने रचिया होया जो द्वैत है सो संक्षेपसें कथन कीता अब जीवकरके रचे होए द्वैतकों श्रवण कर सप्तअन्नब्राह्मणनाम् जो बृहदारण्य उपनिषदका ग्रंथ है तिसविषे जीवकरके रचिया होया द्वैत कथन कीया है विस्तारकरके आपने कर्मांद्वारा जगत्कों उत्पन्न करके संपूर्ण लोकांदे शरीरदी पालना करणेवाला जो जीव है सो ज्ञानकरके अर कर्मांकरके सतां अन्नानूं रचिता है किसवास्ते सतां अन्नानूं जीव रचिता भया अर ओह सत्त अन्न कौन हैं ऐसा पुछें तां श्रवण कर एक अन्नकों मनुषांवास्ते रचियां सो चावलघों आदिरूप है जो मनुषांने भक्षन करीता है अर दोअन्न देवतयांवास्ते रचिता भया सो दर्शपौर्णमास यज्ञरूप हैं तिन्नाकरके देवता तृप्त होते हैं अर चौथा अन्न पशुंयांवास्ते रचिता भया सो दुग्धरूप है अर अन्न तिन्न आपनेवास्ते रचिता भया सो इक मन अर दूसरी वाणी अर तीसरे प्राण ।

शंका—एह सप्त अन्न तां ईश्वरकरके रचेहोए हैं कैसे तुसी कहते हो जीवकरके रचेहोए हैं ।

उत्तर—स्वरूपकरके तां ईश्वरनेही रचे हैं एह सप्त अन्न तौ भी जीवने एनां सतांविषे भोग्यता रची है ज्ञान अर कर्मांकरके

जैसे एकही पिता करके तां उत्पन्न होती है अर भर्ताकरके भो-ग्य होती है तैसे सत अन्न ईश्वरकरके उत्पन्न होते हैं अर जीवने तिन्नाकों भोगीता है ताते सत अन्न जीव ईश्वर दोनोके संबंध-वाले हैं जीव किस साधन करके जगत्कों रचिता है अर ईश्वर किस साधन करजगत्कों रचिता है ऐसा पुछें तां श्रवण कर मायादी वृत्तिरूप संकलपकरके ईश्वर जगत्नूं रचिता है मनदी वृत्तिरूप संकलपकरके जीव जगत्कों भोक्ता है ।

शंका—ईश्वरने रचेहोए जो पदार्थ हैं तिनके स्वरूपतें भि-न्न जीवकरके रचियां होया कोई भोग्यका स्वरूप नहि न जर आवता।

उत्तर—ईश्वरकरके रचिया होया जो मणिआदिरूप एक पदार्थ है तिसविषे भोक्तियां जीवांकी बुद्धिके भेदकरके अनेक प्रकारका भोग देखीता है सो अनेक प्रकारका भोग तदबने जे कर विषाभी अनेक प्रकारका होवे एक प्रकारके विषेविच्च अने-क प्रकारका भोग नहि बनता जैसे एक प्रकारकी जो अग्नि है सो किसीकों शीत उपजावे किसीकों उष्ण उपजावे ऐसा भोग-भेद नहि देखीता अर मणिविषे तां भोगभेद देखीता है ताते भोगभेददा कारण विषेदा भेद अवश्य मनया चाहीए अर जेकर ऐसा पुछें जो कौन है मणिविषे भोगभेद तां श्रवण कर एकही मणि किसी पुरुषकों लभी होई होई हर्षका कारण होती है अर ओही मणि दूसरे पुरुषकों शोकका कारण होती है अर तीसरा जो विरक्त पुरुष है तिसकों हर्ष शोक दोनोका कारण नहि होती ताते एकही मणिविषे तिन्न प्रकारका भोग देखीता है हर्ष अर

शोक अर उदासीनता रूप तांते तिस भोगका कारण तिन्न प्र-
कारकाविषे अवश्य मनना चाहीए ईश्वररचित मणिके स्वरूपसें
भिन्न ईश्वररचित मणितां हर्ष अर शोक अर उदासीनतादा कार-
ण नहि जेकर ईश्वररचित मणि हर्षका कारण होती तां सभनां-
कों हर्ष देती अर जे शोकका कारण होती तां सभनांकों शोक
देती अर जे उदासीनताका कारण होती तां सभनांकों उदासी-
नता देती ऐसेतौ नहि देखीता तांते जिसकों मणिविषे हर्ष भ-
या है तिसने ईश्वररचित मणिविषे प्रेयता रची है अर जिसकों
मणि शोक देती है तिसने तिसी मणिविषे अप्रेयता रची है अर
जिसकों मणि उदासीनता देती है तिसने तिसी मणिविषे उपे-
क्षा रची है। तांते ईश्वररचित मणि हर्षका कारण नहि मणि-
विषे जीव रचित प्रेयता हर्षका कारण है अर मणि शोककाभी
कारण नहि जिस पुरुषने तिसविषे अप्रेयता रचीहै तिसको मणि
विषे जीवरचित अप्रेयता शोकका कारण है ईश्वर रचित मणि
उदासीनताका कारणभी नहि तिस मणिविषे जिस पुरुषने उ
पेक्षा रची है तिस पुरुषकों जीवरचित उपेक्षा उदासीनताका
कारण है ईश्वररचित द्वैतते भिन्न जीवरचित द्वैतविषे होरभी
दृष्टांत है जैसे एक स्त्रीदा शरीर ईश्वररचित है तिसविषे किसी-
कों घरवाली प्रतीत होती है किसीकों नूंह प्रतीत होती है किसी
कों माता प्रतीत होती है किसीकों मासी प्रतीत होती है कि-
सीकों नानी प्रतीत होती है किसीकों मामी प्रतीत होती है
किसीकों भूया प्रतीत होती है किसीकों साली प्रतीत होती है
किसीकों भैन प्रतीत होती है किसीकों सस प्रतीत होती है
किसीकों दराणी प्रतीत होती हैं किसीकों जिठानी प्रतीत होती है

किसीकों भरजाई प्रतीत होती है किसीकों ननान प्रतीत होती है सो यह सभी भेद जीवोंके रचे होए हैं जिस जिस जीवने जैसा रूप रचिया है तिस तिस जीवकों तैसा तैसा रूप प्रतीत होता है अर शरीरमात्र तौ तिसका एकजैसा है ।

शंका—स्त्रीविषे माता ताई चाची ज्ञानही भिन्न हैं अर ज्ञानांदा विषा जो स्त्रीका स्वरूप है तिसविषे तां भेद नहि देखीता तांते तुसी कैसे कहतेहो जीवां करके रचित ताई चाची आदिक आकारांका भेद स्त्रीके शरीरविषे ।

उत्तर—ज्ञानका भेद तौ ज्ञेयके भेदसें विना नहि बनता जैसे घटज्ञान अर पटज्ञानका भेद घटपटरूप ज्ञेयके भेदसें है अर जेकर ज्ञेयके भेदसें विना ज्ञानका भेद होवे तौ एक घटरूप ज्ञेयविषे जैसे घटज्ञानकों यथार्थता है तैसे उसी घटविषे हाथी घोडा बकरी भेड एन्नां ज्ञानांकोंभी यथार्थता होई चाहीए सो तौ यथार्थता नहि होती अर ईश्वर रचित मांसअस्थिरुधररूप स्त्रीके शरीरविषे पुत्रांकों जो माता ज्ञान होता है अर भनेवेंकों जो मासी ज्ञान होता है अर भधीजेकों भूपां ज्ञान होता है इसते आदि लैके जो ज्ञान होते हैं सो सभी यथार्थ हैं। काहेते जो व्यवहारदशाविषे तिन्नाका बाधा नहि होता तांते ईश्वररचित एक स्त्रीके शरीरविषे जो अनेक ज्ञान हैं तिन्नाका विषाभी भिन्नभिन्न चाहीए पुत्रनूं जो माता ज्ञान है तिसका विषा माता है अर भनेवेंनूं जो मासी ज्ञान है तिस ज्ञानका विषा मासी है सो मासी मातातें भिन्न भनेवेंकरके रचित है अर पुत्रकों जो माता ज्ञान हूया है तिस ज्ञानका विषा माता पुत्ररचित है सो माता मासी-

के स्वरूपतें भिन्न है अर अधीजेकों जो भूपा ज्ञान हुवा है तिस ज्ञानका विषा भूपाका स्वरूप माता अर मासीतें भिन्न है सो भूपाका स्वरूप अधीजेकरके रचिया होया है।

शंका—भ्रम अर स्वप्न अर मनोराज अर स्मृति एन्नां चौस्थानोंविषे मनरचित पदार्थ होते हैं काहेते जो बाहिरलया पदार्थांका अभाव है अर जाग्रत्‌विषे जो पदार्थ प्रतीत होते हैं सो तौ प्रमाणांकरके प्रतीत होते हैं तांते तिन्ना पदार्थांकों मनरचित कैसे कँहते हो तांते जाग्रत् अवस्थाविषे प्रत्यक्ष आदिक प्रमाणांकरके जो भान होते हैं माता अर मासी अर भूपा आदिक पदार्थ सो जीवरचित कैसे कँहते हो।

उत्तर—प्रमाणस्थानविषे विषेकी सता होती है एह तेरा कथन यथार्थ है।

शंका—जेकर प्रमाणस्थानविषे विषेको सता है तौ तिस प्रमाणदे विषेकों मनरचित कैसे कँहते हो।

उत्तर—प्रमाणदा जद विषेके साथ संबंध होता है तब प्रमाण विषयाकार होजाता है तांते पुत्रके नेत्र जद माताके साथ संबंधको प्राप्त होते हैं, तब माताके आकारकों प्राप्त होजाते हैं। तांते मातारूप विषा अवश्य मनयां चाहीए सो मातारूप विषा पुत्रकरके रचिया होया है अर साक्षीकरके भासता है अर नेत्रांकरके नहि भासता जेकर नेत्रांकरके मातारूप विषा भासता तां सभनां नेत्रांवालयाकों माता प्रतीति होती एक जैसी जैसे नेत्रांदाविषे अस्थिमांसरुधररूप शरीर एक जैसा सर्व

नेत्रांवाल्यांकों प्रतीत होता है मातारूप विषातौ सर्व नेत्रांवाल्यांकों एक जैसा नहि प्रतीत होता अर पुत्रके नेत्र जाइके माता रूपतानूं प्राप्त भए हैं तांते पुत्रके नेत्र माताकों ग्रहण नहि कर्ते जैसे घटरूपतानूं प्राप्त भई जो मृतिका है तांते मृतिकाकरके घटग्रहण नहि होता अर नेत्रांकरके घटग्रहण होता है तैसे नेत्र मातारूपतानूं प्राप्त भए हैं सो नेत्र माताकों ग्रहण नहि कर्ते साक्षीकरके मातादा ग्रहण होता है अर एह जो पुत्र कँहता है जो मैं माताकों नेत्रांकरके देखता हां सो पुत्रकी प्रतीति भ्रमरूप है जैसे भ्रमवाला पुरुष कहता है जो मैं इस स्थानविषे रुप्पेकों नेत्रांसाथ देख्या है पर नेत्रांसाथ रुपातौ देख्या नहि नेत्रांकरके तौ सिपि देखी है रुपेका अधिष्ठान तैसे पुत्रनेभी माता कल्पनाका अधिष्ठान ईश्वररचित शरीर नेत्रांकरके देख्या है अर माता नेत्रांकरके नहि देखी सो माता साक्षीकरके देखीती है इसीकरके माता पुत्रकरके रचित है अर माताका शरीर ईश्वरकरके रचित है इसीतरां मासी आदिक भनेवें आदिकांकरके रचित हैं प्रमाणविषेनूं प्राप्त होकै विषेके आकारकों प्राप्त होजाता है एह वार्त्ता उपदेशसहस्त्रीविषे भाष्यकारांनेभी कथन करी है जैसे ढल्या होयाहोया तांवा जिसतरांदे सच्चेविषे पाइए सो तिसतरांदे आकारकों प्राप्त होजादा है जेकर सच्चा गणेशका होता है तां तांवा गणेशके आकारकों प्राप्त होजांदा है जेकर सच्चा चतुर्भुज विष्णुका होवे तौ तांवां चतुर्भुजविष्णुके आकारकों प्राप्त होजादां है तैसे रूपादिकांकों प्राप्त होयाहोया चित्त रूपादिकांके आकारकों प्राप्त होजांदा है।

शंका—तांवा तां साकार पदार्थ है अग्निआदिकांकरके ढ-

लया होया सचेविषे पाया होया सचेके आकारकों प्राप्त होवे पर बुद्धितौ निराकार है अर किसीकरके ढलदीभी नहि सो कैसे रूपादिकांके आकारकों प्राप्त होवे।

उत्तर—जैसे निराकार सूर्यदा प्रकाश घटादिकांदा प्रकाशक घटादिक पदार्थांनूं प्राप्त होईके घटादिकांदे आकारकों प्राप्त होजांदा है तैसे सर्व पदर्थांदा प्रकाशक निराकार बुद्धिभी सर्व पदार्थांके आकारकों प्राप्त होजांदी है अर वार्तककार सुरेश्वराचार्य्यजीनेभी एह अर्थ कथन किया है प्रमाता जो है अधिष्ठान कूटस्थ चैतन्यसहित अंतःकरणविषे चिदाभासरूप तिससें चिदाभाससहित बुद्धिकी वृत्तिरूप प्रमाणकी उत्पत्ति होती है प्रमातातै उत्पन्न हूयाहूया जो प्रमाण है सो घटादि विषेरूप प्रमेयकों प्राप्त होता है अर प्रमेयकों प्राप्त होयाहोया सो प्रमेयके आकारकों प्राप्त होजाता है।

शंका—होवे भाष्यकार अर वार्तककारका ऐसा कथन पर प्रसंगविषे किया आया।

उत्तर—प्रसंगविषे एह आया विषे घटादिपदार्थ दो प्रकारका है, एक मृत्तिकाकरके रचियाहोया घट है दूसरा मनकरके रचियाहोया घट है जो मृतिकाकरके रचिया होयां घट है सो नेत्रांकरके नजर आवता है सो ईश्वरकी सृष्टि है अर जो मन करके रचियाहोया घट है सो साक्षीकरके नजर आवता है अर जीवकी सृष्टि है।

शंका—होवे जीवकरके रचीहोई अर ईश्वरकरके रचीहो-

ई श्वरकारकी सृष्टि पर जीवकों बंधनका कारण कौन सृष्टि है जीवसृष्टि है के ईश्वरसृष्टि है एह निर्णय जैसे होवे सो प्रगट करके कहो।

उत्तर जीवकरके रचीहोई सृष्टि जीवकों बंधनका कारण है अन्वयव्यतिरेक प्रमाणकरके अन्वय कहीता है जिसके होयांहोयां जो होवे जैसे मृत्तिकाके होयांहोयां घट होता है तैसे जीवसृष्टिके होयांहोयां जीवकों सुखदुःख होता है अर व्यतिरेक तिसकों कहीता है जिसके न होयांहोयां जो नहोवे जैसे मृत्तिकाके न होयांहोयां घट नहि होता तैसे जीवसृष्ट द्वैतके न होयांहोयां जीवकों सुखदुःख नहि होता तांते एह सिद्ध भया जैसे अन्वयव्यतिरेककरके मृत्तिका घटका कारण है तैसे अन्वय व्यतिरेककरके जीवसृष्ट द्वैत जीवकों बंधनका कारण है।

शंका—एह जो अन्वयव्यतिरेक हैं सो ईश्वरसृष्टिकेही जीवकों बंधनका कारण किउँ न होवें।

उत्तर—स्वप्नविषे ईश्वरसृष्टिके अभाव होयांहोयांभी जीवकों सुखदुःखकी प्राप्ति स्वप्नविषे देखीती है, सो सुखदुःख जीवद्वैतसेंही जीवकों प्राप्त भए हैं । अर समाधि अर सुषुप्ति अर मूर्छा एनांविषे ईश्वरद्वैत तां बनया रहिता है पर सुखदुःखकी प्राप्ति नहि होती जीवकों। काहेते जो समाधि आदिक अवस्थाविषे जीवके द्वैतका अभाव है, तांते अन्वयव्यतिरेककरके जीवद्वैतही सुखदुःखका कारण है ईश्वरद्वैत अन्वयव्यतिरेककरके सुखदुःखका कारण नहि जीवद्वैतही सुखदुःखका कारण है। इसविषे होर दृष्टांतभी श्रवण कर किसीका पुत्र दूरदेशविषे

गियाहोया सुखसाथ वसता है अर किसी झूट बोलनेवाले पुरुषने तिसके पितांनूं तिसदे घरविषे कहा जो तेरा पुत्र परदेशविषे मरगिया है। तां तिसदा वाक्य सुनकर बडे शोककों प्राप्त होता है तिस शोकका कारण ईश्वररचित पुत्रका मरणतौ है नहि काहेते जो ईश्वररचित पुत्रतां मोया नहि सुखसाथ परदेशविषे बैठा है अर परदेशविषे पुत्रके मोयांहोयांभी घरविषे पिता आदिक हर्षसहित हसते हैं, तांते एह सिद्ध भया। सभनां जीवांकों आपोआप ना रचियांहोया जगत् बंधनका कारण है ।

शंका—मनकरके रचेहोए जगतको बंधनका कारण मानयां होयांहोयां विज्ञानवादकी प्राप्ति होवेगी बाहरले ईश्वररचित जगत्के निषेध करणेतें।

उत्तर—मनोरचित जगतकों बंधनकारणतादे होयाहोयांभी ईश्वररचित जगत् तिसदा अधिष्ठान अंगीकार करणेतें विज्ञानवादकी प्राप्ति नहि होती जैसे मनरचित रुप्पेकी कल्पनाका अधिष्ठान सिपी होती है ईश्वररचित। तैसे मनरचित जगत्की कल्पनाका अधिष्ठान शरीर है ईश्वररचित ।

शंका—जैसे ईश्वररचित जगत् बंधनका कारण नहि जीवकों तैसे ईश्वररचित जगत् जीवरचित जगत्की कल्पनाका अधिष्ठानभी मत होवे जीवरचित प्रथमप्रथम जगत् उत्तरउत्तर जीवरचित जगत्की कल्पनाका अधिष्ठान किउं न होवे, तांते ईश्वररचित जगत् व्यर्थ भया।

उत्तर—ईश्वररचित जगत् व्यर्थ होता है तां धिया व्यर्थ होवे।

शंका—जे ईश्वररचित जगत् व्यर्थ भया तो विज्ञानवादीके मतविषे अर तुमारे मतविषे किया भेद होया ।

उत्तर—विज्ञानवादी वाहिरपदार्थांका अभाव कहिता है ते असी वाहिरले पदार्थांका अभाव नहि कहिते पर बाहरले पदार्थांकी व्यर्थता कहिते हैं तांते विज्ञानवादीके मतकोंते हमारे मतका वडा भेद है ।

शंका—जेकर ईश्वररचित जगत् सुखदुःखका कारण नहि व्यर्थ है तो ईश्वररचित जगत् काहेकों अंगीकार करणा ।

उत्तर—प्रमाणवस्तुकी सिद्धिका कारण होते हैं अर प्रमाण वस्तुदी सफलता अर निष्फलतादा कारण नहि होते एह सर्व शास्त्रकारांका सिद्धांत है ।

शंका—मनकरके रचित जगत्ही जेकर बंधका कारण है तद मनदा निरोधरूप योगकरके मनरचित जगत्का अभाव होजाएगा । तांते योगअभ्यासही मेरेतांई कीता चाहीदा है ब्रह्मज्ञानसें मेरा प्रयोजन कुछ नहि इस प्रश्नका उत्तर कहो ।

उत्तर—योगकरके जगत्का अभाव तितना काल होता है जितना काल योगअभ्यासविषे स्थित रहिता है मन अर जद योगअभ्याससें उत्थान होता है तब जगत् जिउँकातिउँ प्रतीत होता है तांते भावी जन्मका अभाव ब्रह्मज्ञानसें विना नहि होता इसतें ब्रह्मज्ञान अवश्य चाहीता है ऐसे अनेक श्रुतीयांभी कथन कर्तीयां है, एक श्रुति तो एह कहती है। देव जो है स्वप्रकाश परमात्मा तिसदे जाननेकरके अविद्यासें आदिलेकर सं-

पूर्ण क्लेशांका अभाव होजाता हैं अर दूसरी श्रुति एह कहती है शिव परमात्माके जानयां होयांहोयां अत्यंत शांतिकी प्राप्ति होती है। अर्थ एह जो जन्ममरण आदिक संपूर्ण दुःखांकी निवृत्ती होती है अर तीसरी श्रुति एह कहती है जद कोई पुरुप मृगचर्मकी नियांई आकाशकों लपेट लएगा तद ब्रह्मकों जानेसें विनाभी दुःख निवृत्त होजावेंगे तात्पर्य एह जैसे मृगचर्मकी नियांई आकाशका लपेटना कदीभी नहि होता तैसे ब्रह्मज्ञानसें विना दुःखांकी निवृत्तिभी कदी नहि होती तांते अन्वयव्यतिरेककरके ब्रह्मज्ञानतें दुखांकी निवृत्ति होती है एह वेदांतोका ढंढोरा है।

शंका—बाहरले द्वैतदे न निवारण कीतयां होयांहोयां अद्वैतब्रह्म ज्ञान नहि उदे होता तांते बाहरला द्वैतभी निवृत्त कीता चाहिए।

उत्तर—स्वरूपकरके बाहरले द्वैतदे न निवारण कीतियां होयांभी तिस बाहरले द्वैतदे मिथ्यारूपतादे जाननेकरके अद्वैतब्रह्मज्ञान होजाता है तांते बाहरले द्वैतदा निवारण निष्प्रयोजन है काहेतें महाप्रलयविषे बाहरले द्वैतके अभाव होयांहोयांभी अद्वैतब्रह्म नहि जान सकीदा गुरुशास्त्र आदिकांदे अभाव होयांहोयां तांते बाहरले द्वैतका निवारण निष्प्रयोजन है

शंका—बाहिरले द्वैतके विद्यमान होयांहोयां अद्वैतज्ञान नहि होता जैसे रात्रिके विद्यमान होयांहोयां सूर्य नहि होता।

उत्तर—ईश्वररचित द्वैत ब्रह्मज्ञानका बाधक नहि तिसदी मिथ्यारूपतादे जाननेते ब्रह्मज्ञान हो जाता है सगों ईश्वररचित-

द्वैत गुरु शास्त्रादिरूप ब्रह्मज्ञानका सहायक है ब्रह्मज्ञानका साधन होनेतें अर जीवकरके निवारणभी नहि होइ सकता ईश्वरकरके रचियां होया द्वैत तांते जैसा ईश्वरकरके रचियां होयां है द्वैत तैसा बनियां रहो स्वरूपकरके तिस मिथ्या जाननेकरके अर जीवद्वैतदे निवारणकरके बंधकी निवृत्ति होती हैं सो जीव द्वैत दोप्रकारका है एक शास्त्रीय है एक अशास्त्रीयहै शास्त्रीयद्वैतकों जिज्ञासीने ग्रहण करणा ब्रह्मज्ञानपर्य्यंत अशास्त्रीयद्वैतदे त्याग वासते जैसे चरणविषे जो लगा होया कंडा है तिसदे निकासने वासते दूजा कंडा ग्रहण करीता है अर तत्त्वज्ञानके होयांहोयां शास्त्रीयद्वैतकाभी त्याग करणा जैसे चरणके कंडेदे निकास्यां होयांहोयां दूसरा कंडाभी त्यागदेवीता है सो शास्त्रीय द्वैत कौन है ऐसा पुछें तां श्रवण कर आत्मा अर ब्रह्मदा विचार जो है सो शास्त्रीयद्वैत है।

शंका—एह जो तुसां कथन कीया जो शास्त्रीयद्वैतदा त्याग करणा ब्रह्म ज्ञानसें पिछे सो वार्ता अयुक्त है काहेते जो श्रुति कहती है मरणेपर्य्यंत अर सौने पर्य्यंत वेदांतांका विचार करे।

उत्तर तत्त्वज्ञानदे होयांहोयां वेदांतशास्त्रके त्यागकों श्रुतीयां कथन कर्तीयां हैं जितना काल पर्य्यंत रतीभरभी काम क्रोधादिक उदय होते हैं तितना कालपर्य्यंत वेदांतोंका विचार करणा काम क्रोधादिकांके दूर करणे वासते सो काम क्रोधादिकांका दूर करणा ब्रह्मज्ञानका साधन है। तांते जिज्ञासीने सौने पर्य्यंत अर मरणेपर्य्यंत वेदांतोंका विचार करणा अर तत्त्ववेत्ताने ब्रह्मतत्त्वकों ज्ञानकरके शास्त्रांका त्याग कर देना ऐसे अने-

क श्रुतीयां उपदेश कर्तीयां है एक श्रुति ऐसे कथन कर्ती है शा-
स्त्रांनूं पडकरके जिज्ञासी धारणावाली बुद्धिवाला तिन्ना शास्त्रां-
दा वारंवार अभ्यास करे तिसकरके परब्रह्मनूं जानकरके तिन्ना
शास्त्रांदा त्याग कर देवे जैसे भोजनअर्थी भोजनकरके चुआ ती-
यांदा त्याग करदेता है और श्रुति कहती है धारणावाली बुद्धिवा-
ला जो जिज्ञासी है सो ग्रंथांदे अभ्यासनूं करके ज्ञान अर विज्ञा-
नदे तत्त्वनूं यथावत् जानकरके धाईयां दीपरालीदो न्यांई ग्रंथादा
त्याग कर देवे जैसे क्षेतीवाला पकेहोए धाईयांकों ग्रहण करके
परालीकों त्याग देता है और श्रुति कहती है ब्रह्मचर्य आदिक
साधनाकरके संपन्न जो जिज्ञासी है धीर्यवान् सो तिस परब्रह्म
आत्मानूं जानकरके ब्रह्म होनेदी कामनावाला ब्रह्माकर चित
वृत्तिनूं करे अर वहुते शब्दांत ध्यान न करे अर उच्चारणभी न
करे काहेते जो वहुते शब्दांदे ध्यानकर मन थकता है अर वहुते
शब्दांदें उच्चारण करके वाणी थेकती है जे मन थकियां तां मनकों
शांति नहि प्राप्त होती अर जेवाणी थकीतां इंद्रियांका दमन नहि
होता अर जे मन शांत न भया अर इंद्रियां दमन न भैयां तां सु-
ख कहां हें होर श्रुति कहती है तिस इक आत्मानूं जानो अर होर-
णां वाणीयांदा त्याग करो एक आत्मादा ज्ञानही मोक्षदी प्राप्तिदा
कारण है जैसे वडेवेगवाली नदीके पारका कारण पुल होता है
और श्रुति कहती है वाणीनूं मनविषे लय करे अर मननूं बुद्धिवि-
षे लय करे अर बुद्धिनूं समान अहंकारविषे लय करे अर समा-
न अहंकारनूं शांतआत्माविषे लय करे इसतें आदि लेकरके अ-
नेक श्रुतीयां ब्रह्मज्ञानतें उपरांत शास्त्रांका त्याग स्पष्ट कहतीयां
हैं तांते ब्रह्मज्ञानसें उपरंत शास्त्रीय द्वैतका त्याग करणा अर अ-

शास्त्रीय जो द्वैत है सो भीदोप्रकारकी है तीव्र अर मंद काम क्रोधादिक तीव्र अशास्त्रीय द्वैत है अर मनोराजरूप मंद अशास्त्रीय द्वैतहै सो दोप्रकारकी अशास्त्रीय द्वैत तत्त्वज्ञानसें प्रथम त्यागनी काहेते जोतत्त्वज्ञानके साधनांविषे शम अर समाहितता श्रवण करीती है सो काम क्रोधाधिकांकरके अर मनोराजकरके शम अर समाहितता सिद्ध नहि होती इसते काम क्रोधादिक अर मनोराजरूप अशास्त्रीय द्वैत तत्त्वज्ञानसें प्रथम त्यागनी अर तत्त्वज्ञानसें पश्चातभी त्यागनी जीवनमुक्तिकी प्राप्तिवास्ते काहेते जो काम क्रोधदी रूप द्वैत करके बद्ध होएकों जीवनमुक्तिकी प्राप्ति नही होती।

शंका—जन्ममरणरूप संसारदुःखकर दुःखीएकों जन्ममरणदुःख दूर करणेवाले ब्रह्मज्ञानकरकेही कृतार्थता है जीवनमुक्ति न भई तां न होवे।

उत्तर—इस लोकदे भोगत्यागनेदे भयकरके जेकर तूं जीवनमुक्ति वासते काम क्रोधादिकांदा त्याग न करेंगा तद स्वर्ग ब्रह्मलोकांदिकांदे सुखांनूं सुनकरके तूं चाहेंगा मेरा जन्मभी होवे स्वर्ग ब्रह्मलोकादिकांविषे विदेहमुक्तिसें मैने किया लैना है।

शंका—स्वर्ग ब्रह्म लोकादिकांके सुखांकी मैनूं इच्छा नहि काहेते जो नाश अर अतिशयता दोषोंवाला होनेते।

उत्तर—दोषयुक्त होनेते जेकर स्वर्गादिक त्यागनेयोग हैं तद संपूर्ण सुखांदा नाश करणेवाले जो काम क्रोधादिक हैं अर संपूर्ण दुःखांके देनेवाले तिन्नाका त्याग तौ अवश्य चाहीता है

तुझको ब्रह्मतत्त्वको जानकरकेभी ब्रह्मज्ञानदे अभिमान करके विधिनिषेधशास्त्रनं उल्लंघ करके काम क्रोधादिकांके अधीन होकरके जेकर तूं वर्तेंगा तद तैनूं यथेष्टाचरण प्राप्त होवेगा तां यथेष्टाचरणदे होयांहोयां कुतियांदी तुलता तैनूं प्राप्त होवेगी जैसे कुते काम क्रोधआदिकांकरके युक्त होएहोए अपवित्र पदार्थांको भक्षण कर्ते हैं तैसे तूंभी अपवित्र पदार्थांको भक्षण करेंगा तांते अद्वैतब्रह्मज्ञानी जो तूं हैं तुझको किया वडियाई प्राप्त भई ।

शंका—(मूर्खदी) जे काम क्रोधाकांदे न त्याग कीत्यां होयां मैनूं कुत्यांदी तुलता होवेगी तां होवे किया दोष है कुतेभी मेरा आत्मा है।

उत्तर—(मूर्खकोंहासी सहिता) तेरे ज्ञानदा वडा प्रताप है तिसदी महिमा कुंछ कही नहि जांदी काहेते जो संपूर्ण लोक तेरी निंदा पडे कर्ते हैं ज्ञानकी प्राप्तिते पहिलां तां तैनूं काम क्रोधादिकांदाही दुःखसी अर अव इक लोकांकी निंदाकादुःख होर तुझकों अधिक भया तांते ते ज्ञानका महात्म वडा है कुछ कहिया नही जांदा जैसे कोई धनकी प्राप्ति वासते धनीयांके पास नौकर जाई रहे अर तिनका धन वुराईके उलटाओथों नाक कानभी भढाईके घर आवे सो अवस्था तेरे ना लभई तांते जैसे तिसदी वुद्धिदी चतुराईदा अंत नहि तैसे तेरे ज्ञानदाभी अंत नाहि ।

प्रश्न—(नम्रतासहित)ब्रह्मज्ञानको प्राप्त होके की कीता चाहिए मैनूं।

उत्तर—विष्टादे भक्षण करणवाले सूअरादिकांदी तुलता न

कीतां चाहीए काम क्रोधादिकांकरके सर्वते उत्तमतादा कारण जो ज्ञान है तिस ज्ञाननूं प्राप्त होइके तूं संपूर्ण मनदे दोष काम क्रोधादिक त्यागके नारायणकी नियांई पूज हो लोकांकरके एह कीता चाहीए तुझकों।

प्रश्न—काम क्रोधादिकांदे त्यागदा साधन कहो कृपा करके।

उत्तर—रागद्वेषका आश्रय जो विषे हैं तिन्ना विषयांविषे दोषांदे देखनेकरके राग द्वेष दूर होजाताते हैं । अर्थ एह जो काम क्रोधादिक दूर होजाते हैं रागनाम कामका है अर द्वेषनाम क्रोधका है सो जिन्ना दोषांदे देखनेकरके रागद्वेष दूर होजाते हैं सो दोष दोप्रकारके हैं एक दोष तौ सभनां विषयांविषे नाशरूप है तांते जो विषा नाशरूप है तिसदे विषे राग कीत्यां होयां अर तिसदे नाश होयांहोयां इकदिन दुःख अवश्य प्राप्त होवेगा तांते सुखदी इछावाले पुरुषनूं विषयांदी कामना न कीती चाहीए अर दूसरा दोष विषयांविषे अतिशयता है । अर्थ एह जो एकते एक विषा अतिसुंदर है तांते विषयांदी चाहवाले पुरुषकों आपने विषे नालो होर पुरुषदा अधिक सुंदर विषा देखकरके चित्तविषे ताप उपजता है एह दोष मोक्षशास्त्रांविषे प्रसिद्ध हैं तिन्ना दोषानूं सूक्ष्म बुद्धि नाल विचार करके कामक्रोधनूं त्याग करके सुखी हो।

शंका—काम क्रोधादिकांदा त्याग वनो ता यदा कारण होनेते पर मनोराजदे करणेविषे तां दोष कोई नहि तांते मनोराजांदा त्याग करणा किउँ कहते हो।

उत्तर—मनोराज साक्षात् अनर्थदा हेतु नहिभी पर परंपरा

करके अनर्थांदा हेतु है इसते त्याग्या चाहिता है संपूर्ण अनर्थोंदा कारण मनोराजही है तांते मनोराजदे करणेसें परमार्थदा नाश होजाता है इसी अर्थकों गीताके दूसरे अध्यायविषे भगवान अर्जुनकों कहते भए हैं हे अर्जुन! मनोराज विषयांका करणेवाला जो पुरुष है तिसकों विषयांविषे राग उत्पन्न होता हैं रागसें कामना उत्पन्न होतीयां हैं कामनाविषे विघ्न उत्पन्न होयाहोयां क्रोध उत्पन्न होता है इस प्रकार संपूर्ण अनर्थांका कारण मनोराज है सो मनोराज निर्विकल्प समाधि करके जित्या जाता है अर निर्विकल्प समाधि होलीहोली सविकल्प समाधिके अभ्यासकरके सिद्ध होती है।

शंका—अष्टांगयोगवाले पुरुषकों सविकल्प समाधिदे अभ्यासद्वारा निर्विकल्प समाधि करके मनोराजांदा जितना होवे पर अष्टांगयोगरहित पुरुषकों मनोराजांके जितनेका जो उपाय है सो कहो।

उत्तर—अष्टांगयोगसें रहित जो पुरुष है ज्ञानवान् अर संपूर्ण कामक्रोधादिकांसें रहित है बुद्धि जिसकी सो एकांत देशविषे बैठकरके दीर्घप्रणवनूं उच्चार्ण कर्ता हूयाहूया मनोराजांकों जित लेता है दीर्घ प्रणव कहीए षट्मात्रा द्वादशमात्रा सहित प्रणव अर मनोराजांदे जित्यां होयांहोयां संपूर्ण वृत्तीयांसें रहित मन गुंगे पुरुषकी न्यांई स्थिररूप होजाता है एह अर्थ वसिष्ठजीने रामजीके तांई बहुत प्रकारकरके कथन कीता है हेरामजी! एह जो दृश्य जगत् है सो कदाचित्भी उत्पन्न नहि भया वंध्याके पुत्रकी न्यांई ऐसे जान करके मनते जब दृश्यकी सत्तारूप मै-

त्दका मार्जना सिद्ध होवेगा तद परम निर्वाण रूप सुखकी प्राप्ति होवेगी हरामजी! चिरकालपर्य्यंत शास्त्र मैंने विचारे हैं अर गुरु जो ब्रह्मा आदिक हैं तिनके पासतेभी मैंने श्रवण कीया है अर शिष्यांको अनेक प्रकारां करके शास्त्रांका उपदेशवी कीया है तिस करके एह निश्चय किया है भलीप्रकार वासनाके त्यागरूप मौनते विना उत्तमपदकी प्राप्ति नहि होती।

प्रश्न—सर्व वृत्तीयांसें रहित जो चित है तिसकों प्रारब्धकर्मकरके किसी प्रकार विक्षेपदे होयांहोवां तिस विक्षेपदे दूर करणे दा उपाय मुझकों कहो कृपा करके।

उत्तर—तिसदा उपाय अभ्यासदी दृढता है अभ्यासदी दृढता करके शीघ्रही चित्त विक्षेपते रहित होजाता है जिसका चित्त कदाचित्भी विक्षेपकों नहि प्राप्त होता तिसकों ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मवेत्ता नहि कहते किंतु ओह आप ब्रह्मस्वरूप है ऐसे वेदांतवेत्ता मुनीश्वर कथन कर्ते हैं इस अर्थविषेभी वसिष्ठजीके तांई शिवजीका वाक्य प्रमाण है देवअर्चनाके प्रसंगविषे वसिष्ठजीके तांई शिवजीने कथन कीया है हे ब्राह्मण! जो पुरुष मैं ब्रह्मकों जानताहूं अर मैं ब्रह्मकों नहि जानता एनां दोनों व्यवहारांकों त्याग करके आप अद्वय चैतन्यमात्ररूप होकरके स्थित होता है सो ब्रह्मज्ञानी नहि किंतु आप ब्रह्मस्वरूप है इस प्रकार इस ग्रंथविषे ईश्वरद्वैतते भिन्न जीवद्वैत वर्णन कीया तिस जीवद्वैतके त्यागनेते जीवनमुक्तिकी जो परम औधि है सप्तम भूमका ज्ञानकी तिसकी प्राप्ति होती है।

इति श्रीद्वैतविवेकः समाप्तः

श्रीः

पञ्चदशी भाषा

अथ महावाक्य विवेकप्रकरणम्

॥ ॐ सतगुरुप्रसाद ॥ ॥ अथ पंचमविवेकका प्रारंभ कर्ते हैं तिस पंचम विवेका नाम महावाक्यविदेक है तिसविषे प्रसिद्ध जो हैं चार महावाक्य तिनका अर्थ वर्णन करेंगें मुमुक्षुकों जो मोक्षका साधन जीवब्रह्मका अभेदज्ञान है तिसकी प्राप्ति वासते तिन्ना चँवाँ महावाकांविच्चों प्रथम महावाक्य ऋग्वेदकी ऐतरेय उपनिषदविषे कथन कीया है तिसके अर्थकों श्रवण कर जिस चैतन्यकरके शब्द स्पर्श रूप रस गंध एनां पंचां विषयाँनूं श्रोत्र त्वचा नेत्र रसना घ्राणद्वारा जानता है अर जिस चैतन्यकरके अनेक प्रकारके शब्दांनूं कथन कर्त्ता है अर जिस चैतन्य करके ग्रहण त्याग गमनआदि संपूर्ण व्यापारांकों कर्त्ता है अर जिस चैतन्यकरके अंतःकरणदीयां जो वृत्तीयाँ है संकल्प निश्चयआदि तिन्नानूं जानता है तिस चैतन्यका नाम ब्रह्मवेता प्रज्ञान कहते हैं सोई चैतन्य ब्रह्माके रूपकों धारकरके स्थित हूया है सोई चैतन्य इंद्रादिक देवतीयांके रूपकों धारकरके स्थित हूया है सोई चैतन्य मनुपरूपनूं धारकरके स्थित हूया है सोई चैतन्य गोंघोडसें आदि लेकर रूपांको धारकरके स्थित हूया है सोई चैतन्य कों आकाशआदिक पंचभूतांकी कारणरूपताकरके आकाशादिकांविषे स्थित है ऐसा जो एकरूप चैतन्य है सर्वविषे सो ब्रह्म है जिस कारणते सभनाविषे चैतन्य ब्रह्मस्थित है तिस कारणते

मेरेविषे भी चैतन्यब्रह्म स्थित है अब दूसरा महावाक्य जो है यजुर्वेदका बृहदारण्यक उपनिषद्विषे स्थित तिसका अर्थ श्रवणकर जो परमात्मा परिपूर्णस्वभावकही देशकालवस्तुके परिछेदसें रहित है सोई परमात्मा ब्रह्मविद्यादा अधिकारी शमदमआदि साधनसंपन्न जो जिज्ञासी है तिसदे शरीरविषे स्थित है मन बुद्धिआदिक संपूर्णांका साक्षी विकारकों न प्राप्त होईके संपूर्णांका प्रकाशक सो अहंशब्दका अर्थ है जो स्वभावकरके देशकालवस्तुपरिछेदसें रहित है सो इस महावाक्यविषे ब्रह्मशब्दका अर्थ है अहंशब्द अर ब्रह्मशब्द एनांदी समानाधिकरणताकरके जो बोध है जीवब्रह्मकी एकताका तिसकों अस्मि ए शब्द जनावता है जिस कारणतें ब्रह्म देशकालवस्तुपरिछेदसें रहित है तिस कारणकरके मैं ब्रह्महां अब तीसरा महावाक्य जो है सामवेदका छांदोग्योपनिषद्विषे स्थित तिसका अर्थ श्रवण कर जगत्की उत्पत्तिसें प्रथम नामरूपसें रहित जो एक अद्वितीय ब्रह्म होता भया सो ब्रह्म जिउँका तिउँ जैसेकातैसा सजातीय विजातीय स्वगतभेदसें रहित स्थित है आजपर्यंत एकरस सो तत्शब्दका अर्थ है जो जिज्ञासी गुरुदे पास आया है ब्रह्मविद्यादे उपदेशवासते तिस जिज्ञासीकों गुरु कहते हैं जो तेरा स्वरूप है जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति एनां तिन्ना अवस्थांका प्रकाशक अर एनां तिन्ना अवस्थासें विलक्षण सो ब्रह्म है जगत्दी उत्पत्ति स्थिति लयका कारण अर सजातीय विजातीय स्वगतभेदसें रहित सदा निर्विकार एकरस तांते तिस ब्रह्मके साथ आपनी अभेदतादा अनुभव कर। अथ चौथा महावाक्य जो है अथर्वणवेदका मांडूक्योपनिषद्विषे स्थित तिसका अर्थ श्रवण

कर स्वप्रकाश अपरोक्ष है एह आत्मा अहंकारसें आदि लेकरके देहपर्य्यंत संपूर्णांका साक्षी अर अहंकारादिक संपूर्णांते भिन्न अर अहंकारादिक संपूर्णांते परे सो आत्मा मिथ्यारूप आकाशादि संपूर्ण जगत्की कल्पनाका अधिष्ठान है सो आकाशादि संपूर्ण जगत्के बाध होयांहोयां पाछे शेष रहिता है तात्पर्य्य अर्थ एह जो हृदय विषे साक्षी प्रकाशमान है स्वप्रकाशताकरके अर अपरोक्षरूपताकरके सोई साक्षी संपूर्ण जगत्की कल्पनाका अधिष्ठानरूपता करके स्थित है अर संपूर्ण जगत्के बाध होयांहोयां बाकी रहिता है ।

इति श्रीमहावाक्यविवेकः समाप्तः

पंचमविवेकः संपूर्णः

श्रीः

पञ्चदशी भाषा

अथ चित्रदीपदा प्रकरणम् ।

॥ ओंसतगुरुप्रसाद ॥ दोहरा ॥ श्रीमतगंगारामगुरु, चरणकमलकीभक्ति ॥ जगकोंचित्रदिखाइके, मेटदयीसंशक्ति ॥ अथ चित्रदीपदा प्रारंभ कर्ते हैं सो चित्रदीप पंचदशीदा छिवां ग्रंथ है तिसविषे जगत्कों चित्ररूपकरके वर्णन करेंगे जिस प्रकार चित्रपटविषे चार अवस्था देखीतीयां हैं तैसे परमात्माविषेभी चार अवस्था जाननीयां सो श्रवण कर वस्त्रकी एक अवस्था धौत दूसरी घटित तीसरी लांछित चौथी रंजित तैसे परमात्माकी एक अवस्था चित् दूसरी अंतर्यामी तिसरी सूत्रात्मा चौथी विराट् वस्त्र स्वभावते जो शुद्ध है मायासें रहित सो धौत है अर जिसनूं अन्नलेपनरूप माया लगी है सो घटित हैं अर सूक्ष्म सूक्ष्म आकार जिसनूं लगे हैं सो लांछित है अर जिसविषे काले पीलेआदिक रंगांकरके मूर्तां प्रगटकर दितीयां हैं सो रंजित है तैसे वास्तव शुद्ध जो परमात्मादा स्वरूप है मायाके संबंधसें रहित सो चित् है अर मायाके संबंधवाला अंतर्यामी है अर अपंचीकृतपंचमहाभूतोंसहित अर समष्टि सूक्ष्मशरीरां सहित जो है चिदात्मा सो सूत्रात्मा है अर स्थूलप्रपंचसहित जो परमात्मा है सो विराट है जैसे चित्रपटविषे देवता मनुष गौ घोडे आदिक मूर्तां लिखीतीयां हैं तैसे ब्रह्मासें आदिलेकर अस्तंबपर्यंत प्राणधारी अर पर्वत वृक्षआदि जड एह संपूर्ण चित्रपट-

विषे चित्रकी न्यांई तिस परमात्माविषे स्थित हैं ब्रह्मासें आदि लेकर जगत् चेतनरूपता करके स्थित है अर पर्वत आदिक जड-रूपताकरके स्थित हैं । काहेते जो ब्रह्माआदिकांविषे चिदाभा-स है अर पर्वतादिकांविषे चिदाभास नहि जैसे चित्रविषे लिखे जो मनुष हैं तिन्नादे वस्त्राभास भिन्नभिन्न लिखीते हैं सो वस्त्रा-भास आधारभूत वस्त्रके सदृश कल्पीते हैं तैसे परमात्माविषे क-ल्पे जो प्राणी है तिन्नाके भिन्नभिन्न जीवनाम चिदाभास क-ल्पीते हैं सो चिदाभास नाम जीव देवता तिर्यक मनुष आदि शरीरांकों धारकरके जन्ममरणकों प्राप्त होते हैं अर परमात्मा निर्विकार जन्म मरणकों प्राप्त नहि होता अर जेडे वादी अर लो-क कहिते हैं जो परमात्माही जन्ममरणकों प्राप्त होता है सो परमात्माके अज्ञानकरके कहिते हैं इस विषे दृष्टांत श्रवण कर जैसे चित्रके देवतामनुषआदिकांके वस्त्रांविषे रक्तपीतादियो रंग हैं तिन्नानूं मूड आधाररूप वस्त्रविषे कहिते हैं पर ओह आधार रूप वस्त्रविषे नहि किंतू वस्त्राभासांविषे हैं तैसे जन्ममरणरू-प संसार चिदाभासांविषे हैं परमात्माविषे नहि अर मूर्ख अज्ञा-नी परमात्माविषे कल्पिते हैं इस प्रकार परमात्माविषे जो आ-रोपित संसार है सो ब्रह्मज्ञान करके दूर होता है काहेते जो अ-ज्ञानकरके उत्पन्न हूयाहूया है संसार सत्यरूप है अर परमा-त्माविषे लगाहूया है एह जो भ्रम है इसका नाम अविद्या है अर अज्ञानभी है तिस अज्ञानदी ज्ञानकरके निवृत्ति होती है सो ज्ञान कवन है जे ऐसा पुछें तां श्रवण कर चिदाभासविषे जन्ममरण है अर रागद्वेष हैं असंग कूटस्थ निर्विकार परमा-त्माविषे जन्ममरण अर रागद्वेषादि नहि इस दृष्टिका नाम बो-

थ है अर इसीका नाम ब्रह्म विद्या है सो ब्रह्म विद्या विचारमें प्राप्त होती है तांते मुमुक्षु सदाजीव अर जगत् अर परमात्मादा विचार करे।

शंका—परमात्मादा विचार तो कीता चाहीदा है काहेते जो परमात्मा मोक्षअवस्थाविपेभी विद्यमान है फलरूपताकरके अर मिथ्यारूप जीव अर जगत्का विचार करणा व्यर्थ है।

उत्तर—जीव अर जगत्दा निषेध करके परमात्माकी अद्वैत रूपतादी सिद्धिदे वासते जगत् अर जीवकाभी विचार कीया चाहीता है जगत् अर जीवके विचार कीएसें विना जगत् अर जीवकी मिथ्यारूपता निश्चय नहि होती अर जगत् अर जीवकी मिथ्यारूपतादे निश्चय कीए तेविना परमात्मादी अद्वैतरूपतादा निश्चय नहि होता। तांते जगत् अरजीवके बाधदे वासते अर परमात्मादी शेषरूपतादे वासते सदाही जीव अर जगत् अर परमात्मा एन्ना तिन्नादा विचार करणा।

शंका—विचार करके जीव अर जगत्के बाध होयांहोयां जीव अर जगत्की प्रतीति न होवेगी जीव अर जगत्दी प्रतीति न होई तां तत्ववेत्तादा सर्व व्यवहार लोप हूआ चाहीये

उत्तर—बाधशब्ददा एह अर्थ नहि जो जीव अर जगतदी प्रतीति न होनी किंतु बाध शब्दका अर्थ एह है जगत् अर जीवकों मिथ्या जानना अर जेकर ऐसा तु हठ करे, जगत् अर जीवकी जो न प्रतीत होनी इसीका नाम बाध है॥ तद सुषुप्ति अर मूर्छाआदिक अवस्था विषे जीव अर जगत्की प्रतीति तां नही

होती ॥ तांते विनाही ब्रह्मज्ञानते सुषुप्तिवाले अर मूर्छावाले पुरुषकी मोक्ष होई चाहीये ॥ ब्रह्मज्ञानके वासते यत्न किसीने काहेकों करणा है । सो तौ एह वार्ता नहि होती ॥ काहेते जो ब्रह्मज्ञानसेंही मोक्ष होती है ॥ अर परमात्मादी सत्यरूपतादा जो निश्चय है सोई परमात्माकी शेषता है ॥ और जगत्‌का भुल जाना एह परमात्माकी शेषता नहि॥जेकर जगत्‌दा भुलजानाही परमात्मादी शेषता होवे॥तां जीवन्मुक्ति न सिद्ध होवेगी ॥ काहेते जो जगत्‌का सर्वथा भुलजाना तां विदेहमुक्तिमैंही सिद्ध होता है॥

शंका—सदा विचार करणा । इस तुसाडे कहनेते एह प्रतीत होता है जो मरणपर्यंत विचार करणा ।

उत्तर—एह असी नही कहिते जो मरणपर्यंत बिचार करणा किंतु क्या कहितेहां अपरोक्षब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिपर्यंत बिचार करणा ॥ जैसे तृप्तिपर्यंत भोजन करीता है ॥ सो ब्रह्मज्ञान बिचारजन्य दोप्रकारका है एक परोक्ष दुसरा अपरोक्ष ॥ अपरोक्षब्रह्मज्ञानकी प्राप्ती होयां विचार समाप्त होजाता है ॥ अर्थ एह जो आगे फेर विचार करणा नहि रहिता ॥ है ब्रह्म जगत्‌दा कारण ऐसा जो ज्ञान है ॥ सो परोक्ष ज्ञान है ॥ अर सर्व जगत्‌का कारण मैंहां ॥ ऐसा जो ज्ञान है सो अपरोक्षज्ञान है॥ तिस अपरोक्ष आत्मज्ञानदी सिद्धिदे वासते विचार कीया चाहीता है ॥ जिस ज्ञानकरके एह पुरुष ज्ञानकी प्राप्ती समकालही सर्व संसारसें मोक्षकों प्राप्त होजाता है ॥ सो विचारका स्वरूप श्रवणकर ॥ एकहि परमात्मा व्यवहारदशाविषे चाररूपकों प्राप्त होता है ॥ एक कूटस्थ दुसरा ब्रह्म तीसरा जीव चौथा ईश्वर ॥ जैसे एक

आकाश चांहरूपांकों प्राप्त होता है । एक घटाकाश दूसरा महाकाश तिसरा जलाकाश चौथा मेघाकाश । घटावच्छिन्न जो आकाश है सो घटाकाश है । अर्थ एह जो घटके अंतर आकाश है सो घटाकाश है। अर जो घटके बाहिर आकाश है ॥ सर्व पदार्थांकों अवकाश देनेवाला सो महाकाश है अर घटके अंतर्गत जो घटावच्छिन्न आकाश है तिसदे विपे जो जल है तिस जलविपे जो प्रतिबिंब भावनूं प्राप्त भया है वदलां अर तारयां सहित आकाश ॥ सो जलाकाश है ॥ अर महाकाशके बीच जो नजर आंवदा है मेघमंडल तिस मेघमंडलविपे जो जल है ॥ तिस जलविपे जो आकाशका प्रतिबिंब है॥ सो मेघाकाश है॥

शंका—मेघमंडलविपे जलतां प्रतित नहि होता तांते तिसविपे आकाशका प्रतिबिंब कैसे कहिते हो ॥

उत्तर—मेघ मंडल विपे जो जल है सो यद्यपि प्रत्यक्षकरके प्रतीत नहि होता तौभी मेघ मंडलसें वर्षा प्रत्यक्ष प्रतीत होती है ॥ तांते तिस वर्षाका कारणरूप जल बरफदी न्यांई जंमया होया मेघमंडलविपे स्थित है ॥ जिस कारणते जल स्थित है तिस कारणते तिसविपे आकाशका प्रतिबिंबभी पडता है ॥ तांते एह सिद्ध भया ॥ मेघमंडलमैं जो जल है सो आकाशके प्रतिबिंबवाला है जल होनेते जैसे घटविपे जल आकाशके प्रतिबिंबवाला है ॥ तांते मेघाकाश सिद्ध भया ॥ इस प्रकार दृष्टांतरूप आकाशके चार भेद सिद्ध कीते ॥ अब दार्ष्टांतविपे जो चैतन्यके चार भेद है ॥ तिन्नाविपे प्रथम कूटस्थका स्वरूप श्रवण कर ॥ पंचीकृत जो महाभूत हैं तिन्नादा कार्य जो स्थूलशरीर है ॥ अर

अपंचीकृत महाभूतांदा कार्य जो सूक्ष्मशरीर है ॥ अविद्या कल्पित तिन्ना दोनो शरीरांका अधिष्ठानता करके दोनो शरीरांकरके जो अवछिन्न चैतन्य है ॥ कूटकी न्यांई निर्विकार स्थित सो कूटस्थ है कूटनाम अहिरणका है ॥ कूटस्थविषे कल्पितबुद्धिमें जो चैतन्यदा प्रतिबिंब है ॥ सो जीव है शरणांदे धारणेतें सो जीव जन्ममरण रागद्वेषरूप संसारकों प्राप्त होता है ।

शंका—प्राणांके धारणेवाला जीव तौ प्रतीत होता है ॥ अर तिस जीवते भिन्न कूटस्थ नहि प्रतीत होता॥तांते कूटस्थ है नहि॥

उत्तर—जीवने कूटस्थकों आछाद रख्या है ॥ इसते कूटस्थ नहि प्रतीत होता ॥ जैसे जलाकाश करके आछाद्या होया घटाकाश नहि प्रतीत होता ।

शंका—एह जो जीवकरके आछादना कूटस्थका तुसी कथन कर्ते हो ॥ सो शास्त्रांविषे तां किते कथन नहि कीआ इसते स्वकपोल कल्पित प्रमाण नहि ॥

उत्तर—चिदाभास करके जो कूटस्थका आछाद्या जाना है इसकों शारीरक भाष्यादिकांविषे अन्योन्याध्यासनामकरके कथन कीया है तांते स्वकपोल कल्पित नहि ।

शंका—जेकर इसीका नाम अन्योन्याध्यास है तद इस ध्यासका कारणरूप अविद्या कथन कीती चाहीये ॥

उत्तर—संसारदशाविषे एह जीव आपनेसें भिन्न कूटस्थकों जानता कदाचित् नहि ॥ ऐसा जो अनादि अविवेक है ॥ सो मू-

त्राविद्या कथन करीती है ॥ १ ॥ सो अविद्या दो प्रकारकी है ॥ विक्षेप रूप अर आवरण रूप ॥ कूटस्थ है नहि ॥ अर प्रतीतभी नहि होता ॥ इस व्यवहारका कारण आवरण है।

शंका—अविद्या अर अविद्याका कार्यरूप आवरणविषे-की प्रमाण है।

उत्तर—अविद्या अर अविद्याके कार्य आवरण विषे अज्ञानी जीवका अनुभव प्रमाण है सो जिस प्रकार है सो प्रकार श्रवण कर किसी एक स्थानविषे ज्ञानवाननें अज्ञानीकों पुछ्या जो तूं कूटस्थनूं जानता हैं तद अज्ञानी कहिता भया मै कूट-स्थको नहि जानता तब एह अज्ञानीका अनुभव अज्ञानको जा-नावता है कूटस्थविषे एसे अज्ञानद अनुभवनूं जनायिके अज्ञा-नी चुप्प नहि कर्ता क्या कहिता है कूटस्थ हैनहि जिसते मैनूं नजर नहि आवता एह जो अज्ञानीदा कथन है सो कूटस्थविषे असत्तापादक अर अभानापादक आवरणकों जनांवदा है ॥ इ-स कारणते अविद्या अर तिसका कार्य आवरण एनां दोनोविषे अज्ञानीका अनुभव प्रमाण है।

शंका—तेरे मतविषे आत्माकों स्वप्रकाश होनेते तिसविषे अविद्या नहिबनती॥काहेते जो स्वप्रकाश अर अविद्याका संबंध-ही नहि बनता॥परस्पर विरुद्ध स्वभाव होनेते॥ सूर्य अर अंधका-रकी न्यांई ॥ अविद्याके अभाव होयांहोयां अविद्याका कार्य आ-वरणभी नहि बनता आवरणके अभाव होयांहोयां आवरण है मूल जिसका ऐसा जो है विक्षेप सो भी नहि बनता ॥ अर वि-क्षेपके अभाव होयांहोयां ज्ञान करके निवृत्त होनेके योग्य अन-

र्थ कोई न भया तांते ज्ञानको व्यर्थता प्राप्त भई ज्ञानको व्यर्थ होयांहोयां ज्ञान प्रतिपादक वेदांत शास्त्रको व्यर्थता प्राप्त भई।

उत्तर—एन्ना संपूर्ण तेरीआं तर्कांदे समूहनूं अज्ञानीका अनुभव भक्षण करजाता है काहेते जो अज्ञानी आपने अनुभव करकेअविद्या अर आवरण दोनो कूटस्थविषे देख लीए हैं तांते अनुभव सिद्ध अर्थविषे तेरीयां तर्कांको व्यर्थता है।

शंका—अनुभव मात्र करके तां किसी अर्थकी सिद्धि नहि होती जेकर अनुभव मात्रसे कोई वस्तु सिद्ध होवे तां सूर्यभी गिठमात्र सिद्ध हूआ चाहिए किंतु अबाधित अनुभव करके वस्तु की सिद्धि होती है अर सूर्यका जो गिठमात्र अनुभव है सो बाधित है काहेते जो गिठमात्र होता तौ ब्रह्मांडको कैसे प्रकाशता तैसे अज्ञानीका जो अनुभव है अविद्या अर आवरणनूं जनावनेवाला सो भी बाधित है मैने जो कथन कीतीयां हैं पिछे तर्कां तिन्नाके साथ विरोध होनेते तांते तिस अनुभव आभास करके तत्त्व निश्चय नहि होता।

उत्तर—जेकर अनुभवकी प्रमाणता न अंगीकार करेंगा तौ केवल तर्कतां निश्चयका कारण नहि होती एह वार्ता तां तूं आपहि अंगीकार कर्ता है तांते कँहूँभी तेरेकों तत्त्वका निश्चय न होवेगा काहेते जो अनुभवविषे तां तेरेकों विश्वास है नहि अर तर्क विषे अनवस्था होती है सो तिस अनवस्थाका एह रूप है एक तर्कविषे दूसरी तर्क दूसरी तर्कविषे तीसरीतर्क तीसरी तर्कविषे चौथी तर्क इसीतरां अगेअगे तर्ककी प्रवृत्ति होती है ।

शंका—अनुभव तत्त्वनिश्चयका कारण है यद्यपि तौभी अनुभवका विषे जो पदार्थ है बुद्धिविषे तिसकी संभावनाकी दृढताके वास्ते तर्कभी चाहती है।

उत्तर—जे इसप्रकार तर्ककी लोड है तब आपने अनुभवके अनुसार तर्क करनी चाहीये आपने अनुभवसे विरुद्ध तर्क न करनी चाहीये तांते जो पिछे अज्ञानीके अनुभव करके साध्या है अविद्या अर आवरण तिस अनुभवके अनुसार तर्क वर्णन करी चाहीये सो तर्क कवन है ऐसा पुछें तां श्रवण कर कूटस्थचैतन्य अर अविद्याका परस्पर विरोधा नहि जैसे काष्टांविषे सामान्यरूप जो अग्नि है तिसका अंधकारके साथ विरोध नहि अर जेकर कूटस्थ चैतन्यभी अज्ञानी अर आवरणका विरोधी होवे तो अज्ञान आवरणकी स्थिति किसके आसरे होवे अर प्रतीति किस करके होवे काहेते जो कूटस्थभिन्न न कोई अधिष्ठान होय सकता है न प्रकाशक होय सकता है तांते अविद्या अर आवरणका अधिष्ठान अर प्रकाशक जो कूटस्थ चैतन्य है सो अविद्या अर आवरणका विरोधी नहि एह जो तर्क है सो अनुभवके अनुसार है जेकर कूटस्थ चैतन्य अविद्या अर आवरणका विरोधी नहि एह जो तर्क है सो अनुभवके अनुसार है जेकर कूटस्थ चैतन्य अविद्या अर आवरणका विरोधी नहि तो कौन अविद्या अर आवरणका विरोधी है जे ऐसा पुछे तां श्रवण कर अविद्या अर आवर्णका विरोधी विवेक है जे ऐसा पुछें तां श्रवण कर अविद्या अर आवरणका विरोधी विवेक है जाँहाँजाँहाँ विवेक है तांहाँ तांहाँ अविद्या अर आवरण नहि रहिंदा जैसे ज्ञानीविषे॥अविद्या करके आवरण हो-

आ जो कूटस्थ है उस विषे देह दोनो सहित चिदाभास अध्यस्त है सो विक्षेपाध्यास है जैसे सिप्पीविषे रुप्पेका अध्यास है जैसे इदंता अर सन्मुख देशनाल संबंध है तौ सिप्पीदा अर भासता है सिप्पीविषे कल्पित सबंध रुप्पेदा॥अर अबाध रूप सत्ता है तो सिप्पीमै अर भासती है कल्पित रुप्पेमै तैसे स्वयंता अर वस्तुता है तां अधिष्ठान कूटस्थ विषे अर भासते हैं कल्पित चिदाभासविषे अर जैसे सिप्पीदी नील पृष्टता अर त्रिकोणता आछदीगई है तैसे कूटस्थदी असंगता अर आनंदता आछादी गई है अर जैसे सिप्पीविषे कल्पित पदार्थका नाम रूप्पी है तैसे कूटस्थ चिदात्मा विषे कल्पित चिदाभासका नाम अहं है।

शंका—दृष्टांत जो सिप्पी है तिसके साथ नेत्रांके संबध होयांहोयां रुप्पेका अभिमान जीवाको उत्पन्न होता है अर दार्ष्टांतविषे ता आत्मासे भिन्नवस्तुका अभिमान नहि होता ताते दृष्टांत दार्ष्टांतते विषम है।

उत्तर—स्वप्रकाशता करके आत्मादे प्रकाशमान होयांहोयां भी जिसनूं स्वप्रकाश आत्मरूप नहि मानता अहं ऐसे मानता है इसते दृष्टांत दार्ष्टांतकी विषमता नहि काहेते जो सिप्पीरूप दृष्टांतविषे देखता है इदम अंशनूं अर मानता है रुप्पेनूं तैसे दार्ष्टांतविषे देखताहे स्वयंनूं अर मानता है अहंनूं जैसे इदंसमान है अर रुप्पाविशेष है रुप्पे अर इदंतादी एकता नहि तैसे स्वयं अर अहंदी एकता नहि स्वयं सामान्यरूप है अरु अहं विशेष रूप है जो बहुव्यापक होता है सो सामान्य है अर जो अल्पव्यापक है सो विशेष है सो स्वयं बहुव्यापक है काहे

ने जो लोक ऐसा कथन करते हैं देवदत्त स्वयं कुरुक्षेत्रकों जाता है अर तूं स्वयं देख अर अहं स्वयं समर्थ नहि इस प्रकार देवदत्त अर तूं अर अहं एन्ना संपूर्णांविपे स्वयंव्यापक सिद्ध भया तांते स्वयं सामान्यहै अर अहं देवदत्त अर त्वंविपे व्यापक नहि इसते विशेष है जैसे इदं रजतं इदं वस्त्रं इदं जलं एन्ना संपूर्णांविपे इदं व्यापक है तांते सामान्य है अर रजत व्यापक नहि इसते विशेष है जैसे इदं अर रजतका भेद है सामान्य विशेष रूपता करके तैसे स्वयं अर अहंकारभी भेद है सामान्य विशेष रूपता करके।

शंका—होवे लोकेविपे स्वयं अर अहंका भेद पर तिस करके कूटस्थ आत्माविपे क्याआया।

उत्तर—यो सामान्य रूप स्वयं है सोई कूटस्थ एह वार्ता सिद्ध भया।

शंका—स्वयंत्वरूप धर्म अन्यतादा निवारण करणेवाला है अर कूटस्थतादा बोध नहि करावणे वाला।

उत्तर स्वयं स्वरूप धर्म करके अन्यतादा निवारण जो होता है सो यथार्थ है काहे ते जो अन्यतादानिवारण आत्माविपे होताहै सो आत्मा कूटस्थहै तांते स्वयं कूटस्थहै एह सिद्धभया।

शंका—स्वयं शब्ददी प्रवृत्तिदा निमित्त भिन्न है अर आत्मशब्द दी प्रवृत्तिदा निमित्त भिन्न है इसते स्वयंशब्द अर आत्म शब्द एक अर्थनूं कथन नहि करते जैसे गौशब्द अर घोडा शब्द तांते स्वयं शब्ददे अर्थ कूटस्थनूं आत्मता कैसे कहिते हो।

उत्तर स्वयंशब्द अर आत्मशब्ददी प्रवृत्तिदा निमित्त

भिन्न नहि हस्त अर कर आदिक शब्दांकी न्यांयो पर्यायता है इसी कारणते लोकविषे स्वयं अर आत्म शब्ददा उच्चार्ण अकठा नहि करदे तांते एह सिद्ध भया जैसे आत्म शब्द अन्यतादा निवारण कर्ता है तैसे स्वयं शब्दभी अन्यतादा निवारण कर्ता है तांते स्वयंशब्द अर आत्मशब्द एक अर्थकों कथन कर्ते हैं एन्ना दोनोके अर्थका भेद नहि।

शंका—घट जो है सो स्वयं नहि जानता ऐसा लोक कथन कर्ते है तांते अचेतन घटादिकां विषे स्वयं शब्द देखनेते स्वयं अर आत्मा एन्ना दोनोकी एकता नहि बनती।

उत्तर—अचेतन घटादिकां विषेभी स्फुरण रूपता करके आत्मादी चेतनता विद्यमान है। तांते घटादिकां विषे स्वयं शब्ददा कथन विरुद्ध नहि।

शंका—घटादिकां विषेभी आत्मादी चेतनतादे विद्यमान होयां होयां घटादिकां विषे अचेतन व्यवहार न होया चाहीये अर जीवदे पुरुष विषे अचेतन व्यवहार होया चाहीये घटादिकां की न्यांई॥ऐसे तां लोकां विषे व्यवहार नहि देखीता॥ किंतु घटविषे चेतन व्यवहार देखीता है। अर जींवदे पुरुष विषे चेतन व्यवहार देखीता है सो व्यवहार निर्निमित्तक तुमारे मतविषे होवेगा।

उत्तर—चेतन अचेतन एह जो विभाग है, सो निर्निमित्तक नहि किंतु बुद्धिसहित चिदाभास जहां है तहां चेतन व्यवहार होता है अर जहां बुद्धि सहित चिदाभास नहि तहां अचेतन व्यवहार होता है अर कूटस्थ आत्मा जो है सो चेतन अर अचेतन

दोनों विषे समवस्थित है तांते कूटस्थ आत्मा चेतन अर अचेतन विभागका निमित्त नहि।

शंका—जेकर कूटस्थ आत्मा चेतन अर अचेतन विभागका कारण नहि अर बुद्धि सहित चिदाभास होना अर न होना चेतन अर अचेतन विभागका कारण है तो अचेतनां विषे कूटस्थका अंगीकार करणा व्यर्थ है॥

उत्तर—अचेतनां विषे जो कूटस्थ आत्माकों हम मानतें है सो चेतन अचेतन विभागकी कारण रूपता करके नहि मानते। किंतु अचेतनांकी कल्पना का अधिष्टान रूपता करके कूटस्थ आत्माकों अचेतनां विषे हम मानते हैं जैसे चेतन रूप करके प्रतीत होता जो है चिदाभास सो कूटस्थ विषे भ्रम करके कल्पित हैं तैसे चेतन घटादि भी कूटस्थ विषे भ्रम करके कल्पित हैं॥

शंका—जैसे स्वयं शब्दकों त्वं अहं घटादिकां विषे सर्वत्र व्यापक होने ते तिसके अर्थकों आत्मता है तैसे तद्शब्द अर इदं शब्दके अर्थकोभी आत्मता होई चाहिये सर्वत्र व्यापक होनेते।

उत्तर—तत् शब्द अर इदं शब्दका अर्थ यद्यपि त्वं अर अहं आदिकांविषे व्यापक है स्वयं शब्दके अर्थकी न्याई तो भी तिन्हाविषे वर्तमान जो है आत्मता तिसविषेभी तत् शब्द अर इदं शब्द वर्तता है तांते आत्मतादी अपेक्षा करके अधिकविषे वर्तनेवाला भया काहेते जो आत्मत्व आत्मत्व विषे नहि वर्तता अर तत् शब्द आत्मत्व में वर्तता है अर इदं शब्दभी आत्मत्व में वर्तता है तत् आत्मत्वं इदं आत्मत्वं ऐसे व्यवहारदे देखनते तांते तत् श-

व्दके अर्थको अर इदं शव्दके अर्थको आत्मता नहि वनती जैसे सम्यक्त्व अर असम्यक्त्वको आत्मता नहि वनती सर्वत्र व्यापकतादे होयांहोयांभी काहेते जो आत्मता मैभी संम्यक्त्व अर असंम्यक्त्वदी प्राप्ति है देह आदिकांदी आत्मता जो है सो असंम्यक् है अर प्रत्यकदी आत्मता जो है सो संम्यक है तांते लोकविषे तत् अर इदं जैसे परस्पर विरुद्ध प्रसिद्ध हैं जों तत् होता है सो इदं नहि होता अर जो इदं होता है सो तत् नहि होता तत् नाम है परोक्षदा अर इदं नाम है अपरोक्षदा अर जैसे त्वं अर अहं एक लोकविषे परस्पर विरुद्ध प्रसिद्ध हैं त्वं अहं नहि होता अर अहं त्वं नहि होता तैसे स्वयं अर अन्य परस्पर विरुद्ध हैं इसविषे संशय नहि स्वयं नाम है आपने आपका सो कदाचित्भी अन्यनहि होता अर जो अन्य है अर्थ इह जो आपने आपते भिन्न है सो आपना आप कदाचित् नहि होता तांते एह सिद्ध भया अन्यतादा विरोधी जो है स्वयं सो कूटस्थ है तिस कूटस्थ विषे त्वंतादाविरोधी अहं कल्पित है इस प्रकार अहं शव्दका अर्थ जो है जीव अर स्वयं शव्दका अर्थ जो है कूटस्थ तिन्ना दोनोका भेद अत्यंत प्रत्यक्ष है अर अज्ञानी मूर्ख तिन्ना दोनोकी एकतानूं जानते हैं जिस कारणते बुद्धिदे साक्षी कूटस्थको बुद्धि करके प्रत्यक्ष करणेको कोईभी समर्थ नहि होता इसी कारणते अहं अर स्वयं ऐसे प्रतीत होते जो हैं जीव अर कूटस्थ तिन्ना दोनोकी एकत्तानूं मानतेहैं अज्ञानी भ्रम करके जैसे रूपे अर इदंतादा भेद प्रगट है पर अज्ञानी एन्ना दोनोकी एकतानूं मानते है भ्रम करके।

प्रश्न—जीव अर कूटस्थकी एकता रूप भ्रमदा कारण कौनहै

उत्तर—इस भ्रमदा कारण तादात्म्याध्यास है सो ओह अ-ध्यास अविद्यादा कीता होया है सो अविद्या अविवेकरूप है अर विवेक करके अविद्यादी निवृत्ति होनेते अध्यासकी निवृति होतीहे

शंका—अविद्याकी निवृति करके तादात्म्याध्यास निवृत होता है अविद्याका कार्य होनेते ॥ एह तुमारा कहना अयुक्त है ॥ काहेते जो ब्रह्म अर आत्मादी एकताके ज्ञानकरके अविद्यादे ना-श होयांहोयांभी ज्ञानवान्दा शरीरआदिक देखीता है ॥अविद्या-दा कार्य ॥ अर जेकर अविद्याके नाश होयांहोयां अविद्याका का-र्य नाश होवे ॥ तां ज्ञानवान्दा शरीरभी नाश होवे ॥ तांते शरीर-के नाश होयांहोयां जीवन्मुक्ति सिद्ध न होवेगी ॥ तांते जैसे ज्ञा-नवान्के शरीरका नाश नहि होता ज्ञान करके ॥ तैसे तादात्म्या ध्यासदाभी नाश नहि होता ज्ञान करके ।

उत्तर—आवरण अर तादात्म्याध्यासदा नाश हो जाता है ज्ञान करके ॥ काहेते जो एह दोनो अविद्या एक करके ही उत्पन्न-होए हैं ॥ अर विक्षेप रूप जो चिदाभास है अर शरीर एह कर्म सहित अर विद्यादा कार्य हैं ॥ तांते जितना काल कर्म है तित-ना काल शरीरका नाश नहि होता ॥ अविद्याके नाश होयांहोयां भी अर प्रारब्धके क्षय होयांहोयां शरीरका नाश होता है ॥ तांते जीवन्मुक्ति सिद्ध होती है ॥ जितना काल कर्महै तितना काल प-र्यंत ज्ञानकी प्राप्तिसे अनंतर अविद्याके नाश होयांहोयां ।

शंका—प्रारब्ध तां शरीर आदिकांविषे निमित कारण है ॥ उपादान कारण नहि ॥ उपादानकारण तां अविद्या है जैसे घट-

दा उपादानकारण मृतिका है ॥ अर निमितकारण कुलाल है ॥ अर कुलालके विद्यमान होयांहोयां जैसे घट स्थित नहि रहिता तैसे प्रारब्धकर्मके विद्यमान होयांहोयां अर अविद्याके नाश होयांहोयां शरीरकी स्थिति नहि चाहीदी।

उत्तर—जैसे नैयायिकांदे मत विपे उपादानदे नाश होयां-होयांभी क्षणमात्र कार्यकी स्थिति होती है ॥ तैसे अविद्याके नाश होयांहोयां शरीर आदिकांदी स्थिति होती है।

शंका—नैयायिक उपादानदे नाश होयांहोयां क्षणमात्र कार्यदी स्थिति मानते हैं॥ वहुत काल नहि मानते ॥ अर तुसी तां वहुतकाल स्थिति मानतेहो शरीर आदिकांदी सो नहि बनती ॥

उत्तर—वस्त्रका उपादान जो तंतू हैं सो थोडे काल कीआं है तांते तिन्नादे नाश होयांहोयां कार्य जो है वस्त्र सो क्षणमात्र ही स्थित रहिता है ॥ अर संसार भ्रमतां अनंत कल्पांका अनादि चलिआ आवता है ॥ तांते तिसके योग्यही क्षणभी मन्नना चाहीता है।

शंका—नैयायिकांने यो उपादानदे नाश होयांहोयां क्षण स्थिति कार्यकी मानी है सो अयुक्त है ॥ तैसे तुमभी उपादान अविद्यादे नाश होयांहोयां जो स्थिति देह आदिकादी मानते हो सो भी अयुक्त है।

उत्तर—नैयायिक जो मानते है उपादानदे नाश होयांहोयां कार्यकी स्थिति क्षणमात्र सो अयुक्त है ॥ काहेते जो विचार देस हारणेवाले प्रमाणते विनाही मान रपी है ॥ आपनी मूर्खता कर-

के ॥ अर असीं तां श्रुतीआं अर युक्तियां अर अनुभवरूप प्रमाणांको लेकरके कथन करते हैं ॥ तांते असाडा कथन यथारथ है ॥ सो श्रुति छांदोग्य उपनिषद्दी है सो एह कहिती है ॥ ज्ञानवानको तितना कालही विदेह मुक्तिविषे देर है ॥ जितना काल प्रारब्धकर्म क्षय नहि होता ॥ प्रारब्ध कर्मदे क्षय होयांहोयां विदेह मुक्तिनूं प्राप्त होता है ज्ञानवान ॥ तांते इस श्रुति करके एह सिद्ध भया ॥ जो ज्ञान करके अज्ञानदे नाश होयांहोयांभी प्रारब्ध कर्म करके शरीरदी स्थिति होती है ॥ अर युक्ति नाम दृष्टांतका है ॥ सो जैसे कुलालके चक्रके भ्रमणदा कारण कुलालका यत्न है सो तिस यत्नदे नाश होयांहोयांभी कुलालदा चक्र भ्रमदा है ॥ तैसे अविद्यादे नाश होयांहोयांभी शरीरकी स्थिति होती है ॥ अर ज्ञानवानादे अनुभव करकेभी शरीरकी स्थिति प्रसिद्ध है ॥ तांते पोटीआं तर्कांदे करणेवालेयो नैयायिक हैं ॥ तिन्नाके साथ बहुत विवाद करणा इछा नहि ॥ तांते ओह विवाद इहांका इहांहीं स्थित रहो ॥ अब जो प्रसंग है तिसको कथन करते हैं ॥ स्वयंशब्दका अर्थ जो है निर्विका रकूटस्थ अर अहंशब्दका अर्थ जो है विकारी चिदाभास तिन्ना दी एकता भ्रम करके सिद्ध है ।

शंका—जेकर कूटस्थ अर जीवकी एकता भ्रमसिद्ध है ॥ तद इशनूं संपूर्ण शास्त्रांवाले अर लोक भ्रम सिद्ध किउ नहि जानते ॥ इसमैं कारण की है ।

उत्तर—संपूर्ण शास्त्रांवाले अर संपूर्ण लोक हैं तो मूर्ख ॥ पर आपने आपको पंडित मान रहे हैं तिस कारणते श्रुतीआंदे

तात्पर्यसे रहित हूए ॥ केवल युक्तिनूं आश्रयकरके मूर्खता करके परे भ्रमते हें ।

शंका—श्रुतीआंदे अर्थदे कथन करणेवालेभी कोई इक इस प्रकार करके किस कारणते नहि जानते ।

उत्तर—जेरे पुरुप कूटस्थ अर चिदाभासदी एकतानूं भ्रमसिद्ध नहि जानते ॥ तिन्नाको आदिसे लेकर अंतपर्यंत श्रुतीआंदे अर्थका ज्ञान नहि ॥ तांते लज्जासे रहित हूएहूए वाक्या भासांनूं आपोआपने मतोके अर्थ विपे जोडते हैं ॥ सो तिन्ना अज्ञानीआंके मत अनेक हें ॥ तिन्ना विच्चों अति स्थूल बुद्धिवाले जो देह आत्मवादी हें ॥ एक प्रत्यक्ष प्रमाणके अंगीकार करणे वाले ॥ तिन्नादे मत्तनूं प्रथम कथन कर्ते हैं सो श्रवण कर ॥ देह आत्मवादी अर पामर ॥ कूटस्थसे आदि लेकरके स्थूल शरीर पर्यंत जो संघात हे तिसीकों आत्मा मानते हैं ॥ प्रत्यक्षाभासको आश्रय करके विचार करके देखीऐ ॥ तौ प्रत्यक्ष प्रमाण देहको अनात्मरूपता जनावता है ॥ सो देह आत्मवादी जिज्ञासूआंनूं मोह न करणे वासते वेदविपे श्रद्धा करणेवाले जो जिज्ञासु हैं ॥ तिनको एह कहिते हैं ॥ जो हमारे मतकोही वेद कथन कर्ता है ॥ हमारे मतविपे वेद वाक्य बहुते प्रमाण हैं ॥ एक तैत्तरीय उपनिषदका वाक्य प्रमाण है॥सो कहिता है अन्नमयकोश स्थूलदेह आत्मा है॥ अर छांदोग्य उपनिपदविपे एह कथन किआ है ॥ ब्रह्माजीते सुन करके विरोचनने ॥ स्थूल शरीरही पूजने योग्य है ॥ स्थूल शरीरही आत्मा है ॥ होर कोई इकवादी ऐसा कथन कर्ते हैं ॥ स्थूल शरीर आत्मा नहि ॥ काहेते जो जीव आत्माके निकिस गियां

होयां देहका मरणा देखीता है ॥ तांते आत्मा स्थूल देहते भिन्न है।

प्रश्न—देहसे भिन्न आत्माकास्वरूप की है॥अर किस प्रमाण करके देहसे आत्मा भिन्न जानीता है।

उत्तर—मैं देखता हां मैं सुनता हां इस प्रतीतिते देहसे भिन्न इंद्रियां आत्मा हैं ॥ काहेते जो अहंता करके जानीता है ॥ सो आत्मा है ॥ अर अहंता करके इंद्रियां जानीतीआं हैं ॥ तांते इंद्रियां प्रत्यक्ष प्रमाण करके आत्मा हैं।

शंका—इंद्रियांतां अचेतन हैं ॥ अर आत्मा चेतन है ॥ तांते इंद्रियां आत्मा नहि।

उत्तर—इंद्रियां अचेतन नहि किंतु चेतन हैं ॥ काहेते जो उपनिषदविषे ऐसी कथा है जो इंद्रियां किसी कसमे आपसमैं मिलकर झगडा करतीयां भईयां॥ वाणी कहे मैं श्रेष्टहां ॥ नेत्रकहें असी श्रेष्टहां ॥ श्रोत्र कहें असी श्रेष्टहां ॥ इसी तरां होरभी इंद्रियां कहें असी श्रेष्टहां मैं श्रेष्टहां ॥ सभी इंद्रियां मिलकर ब्रह्माजीके पास झगडा मुकावने वासते गइयां ॥ तांते इंद्रियां अचेतन नहि ॥ काहेते जो चेतन घटादि लोकविषे झगरदे देखे नहि अर सुना नहि तांते इंद्रियां चेतन हैं ॥ चेतन होनेतेहि इंद्रियां आत्मा हैं ॥ काहेते जो चेतनता आत्माका लक्षण है ॥ होर जो हिरणगर्भके उपासक हैं प्राणात्मवादी सो ऐसा कथन कर्ते हैं ॥ इंद्रियां आत्मा नही ॥ किंतु प्राण आत्मा हैं ॥ काहेते जो नेत्र आदिक इंद्रियांके अभाव होयांहोयां भी ॥ प्राणांदे होयांहोयां जीवना होताहै ॥ अर सुषुप्ति अवस्थाविषे इंद्रियांदे लीन होयांहोयां भी प्राण जागता है ॥ अर प्राणांकी श्रेष्ठता श्रवण करीती है ॥ उप-

निषदांविषे एकएक इंद्रियके निकस गियाभी क्रम करके शरीर न गिरता भया ॥ अर यद प्राण निकसने लगा तव शरीर गिरणे लगा तव प्राण इंद्रियांनू कहिने लगा तुसी शरीरनू सावधान करो ॥ तद सभी इंद्रियां आपोआपना यत्न कर थकीयां पर शरीर सावधान न होया ॥ तव संपूर्ण इंद्रियांने प्राणनू कहिआ तूं शरीरनूं सावधान कर ॥ तद प्राण कहा अच्छीवात में शरीरको सावधान कर्ता हां तां जव प्राणने गमनागमनरूपप्रयत्नकीता ॥ तव शरीर सावधान होजाता भया तव इंद्रियां संपूर्ण कहितीयां भइयां प्राणनूं तूं श्रेष्ठ हैं॥तांते तेरा नाम उक्थ भया॥काहेते जो शरीरको उत्थान करवावणेकी शक्ति तेरे विच्च है ॥ अर प्राणमय कोशका भली प्रकार विस्तार करके निरूपण कीता है ॥ तांते एह सिद्ध भया जो प्राण आत्मा है ॥ होर कोइ एक वादी जौ हैं उपासक सो ऐसा कथन कर्ता हैं ॥ प्राण आत्मा नहि ॥ काहेते जो प्राण जड हैं ॥ इसी कारणते भोगता नहि ॥ सुषुप्ति अवस्था विषे प्राण विद्यमानभी है पर ग्रहके पदार्थांकी चोरां ते रक्षा करणेकी समर्थ नहि प्राणांकों ॥ तांते प्राण घटादिकांकी न्यांई भोगता है अर जड है ॥ तांते भोगता जो मन है सो आत्मा हैं अर बंध अर मोक्ष कां कारण मनुषांको मनहि है ॥ अर मनोमय कोशको आत्मरूपता उपनिषदविषे श्रवण करी है ॥ तांते एह सिद्ध भया जो मनहि आत्मा है ॥ होर विज्ञानवादी कहिते हैं विज्ञान आत्मा है ॥ मन आत्मा नहि ॥ जिस कारणते मन विज्ञानते उत्पन्न होता हैं ॥ मन विज्ञानते कैसे उत्पन्न होता है ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ अंतःकरणदी दो वृति है । एक अहं वृति एक इदं वृति ॥ अहं वृत्ति जो है सो विज्ञान है ॥ अर इदं वृत्ति मन है ॥इदं

वृत्ति रूप मन अहं वृत्तिरूपविज्ञानते उत्पन्न होता है ॥ एह वार्ता अति प्रगट है ॥ जिसकारणते आपनें आपदे जानेसे विना बाहिरली वस्तुनूं कोईभी कहूं कदीभी नहि जानता ॥ सो विज्ञानक्षण कहे ॥ इसवार्ता विषे अनुभवहि प्रमाणहै ॥ जिस कारणते अहं वृत्तिदा क्षणक्षणाविषे उत्पति अविनाश अनुभव करीनादे ॥ तिस कारणते विज्ञान क्षणक है ॥ अर सो विज्ञान स्वप्रकाश है जिसते विज्ञान आपने आप करके प्रकाशता है॥ अर विज्ञानमयकोश आत्मा है ॥ऐसे वेदभी कथन कर्ता है ॥ संपूर्ण संसार जन्म मरण सुखदुखरूप इस विज्ञानमय कोश को है ॥ विज्ञानहि संपूर्ण यज्ञदानादि अर खेती वनजादिकर्मादि करणेवाला है॥ तांते एह सिद्ध भया क्षणक विज्ञान आत्माहै॥अर शून्यवादि माधिमक ऐसा कहिते है क्षणक विज्ञान आत्मानाहिं विजली अर बदलांदी न्याई ॥ अर नेत्रांदी आंपलकां लगावनदी न्याई ॥ अर विज्ञानते भिन्न होर कोई वस्तु प्रतीत नहि होती ॥ तांते शून्य आत्मा है ॥ अर वेदभी कहिता है जगतकी उत्पतिसे प्रथम शून्य होता भया ॥ अर ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय रूप जगत् भ्रम कल्पित है ॥ सिद्धांती कहिता है ॥ भ्रम जो है सो अधिष्ठान विना नहि सिद्ध होता ॥ अर शून्यको अधिष्ठानता नहि वनती काहेते जो शून्य नाम उसका है जिसका स्वरूप कुछ न होवे ॥ तांते जो जगत् भ्रमका अधिष्ठान है ॥ सो सत्यरूप आत्मा है ॥ अर शून्यवादी जो कहिता है शून्य है ॥ सो शून्य साक्षीसे विना सिद्ध नहि होता ॥ तांते शून्यका साधक साक्षी सत्यरूप आत्मा मन्निया चाहीये ॥ अर जेकर सत्यरूप साक्षी आत्माको तूं न मानेगा तद शून्य एह तेरा कहिना कैसे सिद्ध होवेगा ॥ अर वे-

दशी कहिता है विज्ञामयते भिन्न आनंदमय कोश आत्मा है सो विज्ञानमय कोशते परे है ॥ सो सत्तारूप जानने योग्य है ॥ एह वेदका सिद्धांत है ॥ इस प्रकार आत्मादे स्वरूपाविषे अनेक प्रकारदे विवाद वादी कर्ते हैं ॥ सो वर्णन कीते ॥ अब आत्माके परिणाम विषे वादीआंके जो विवाद हैं तिनकोभी श्रवण कर ॥ कोईवादी आत्माको अणु परिमाण कहिते हैं ॥ अर्थ एह जो जितना अणु होता है तितना आत्मा है ॥ अणु अणु किसको कहिता है जे ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ झरोखेद्वारा सूर्य कीयां किरणा जब किसी स्थानविषे प्राप्त होतीयां हैं तिन्ना विषे जो नजर आंवदे हैं सूक्ष्म सूक्ष्म रजदे कनके तिनका नाम त्रिसरेणु है ॥ तिस त्रिसरेणुके छिंवे हिसेका नाम अणु है ॥ अर कोई एक वादी कहिते हैं आत्मा मधम परिमाणवाला है ॥ अर्थ एह जो जितनी देह है तितना आत्मा है ॥ अर कोइ वादी कहिते हैं आत्मा महान् है ॥ अर्थ एह जो व्यापक है ॥ इस तरां बहुत तरांके विवादको कर्ते हैं ॥ श्रुतीयां अर युक्तियांको आश्रय करके केरे वादी आत्माको अणु कहिते हैं ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ जेडे न तां अत्यंत आस्तिक हें न अत्यंत नास्तिक हैं ॥ ऐसे जो आस्तिकां अर नास्तिकांके मधविषे वर्तनेवाले हैं ॥ अंतराल ॥ सो आत्माको अणु परिणाम कहिते हैं जेकर आत्मा अणु परिणाम न होवे तद सूक्ष्म नाडीआं विषे कैसे विचरे ॥ रोमदे हजारवें हिसेदे तुल्य जो सूक्ष्म नाडीयां हैं ॥ तिन्नाविषे आत्मा विचरदा है ॥ काहेते जो मछर आदिकांके डंगका अनुभव होता है ॥ अर आत्माकी अणुरूपतानूं श्रुतीयांसें करे अर हजारां कथन कर्तीयां हैं ॥ कठवली उपनिषधाविषे एह कथन कीता है आत्मा अणुते अति अणु है ॥ अर मुंडक उप-

निपदविषे कथन कीआ है एह आत्मा अणु रूप है ॥ सो चितक-रके जानने योग्य है ॥ अर कैवल्य उपनिषदविषे कहिया आत्मा सूक्ष्मतेभी अति सूक्ष्म है ॥ होर श्रुति कहिती है वालदे अग्रभा-गनूं सौ भाग करीए तिसदे विचों एक भागनूं लेकर फर सौ भा-ग करीए॥ ओह जितना होता है तितना आत्मा जानने योग्य है॥ इस प्रकार आत्मादी अणु रूपतानूं श्रुतिआं अर युक्तियां करके अंतराल कथन करते हैं ॥ अब आत्मानूं मधम परिमाण कथन करणवालिआंके मतको श्रवण कर ॥ मुख अगे पटीवननेवाले जेडेसरेवडे हैं सो कहिते है आत्मा अणु परिमाण नहि ॥ किंतु म-धम परिमाण है ॥ काहेते जो चरणांसे लेकर मस्तक पर्यंत चेत-नतादी व्यापकता शरीर विषे देखीती है ॥ जेकर आत्मा शरीर जितना न होवे तां संपूर्ण शरीरविषे चेतनतादी प्रतीति न होवे ॥ अर होती तौ है सर्व शरीरमै चेतनतादी प्रतीति ॥ तांते आत्मा अणु परिमाण नहि ॥ किंतु शरीर जेता है ॥ अर बृहदारण्यक उप निपदविषे भी कथन किया है नखादे अग्रभागसें लेकरके शिर-पर्यंत आत्माने शरीर विषे प्रवेश किया है।

शंका—जेकर आत्मा मधम परिमाण वाला होवेगा तद श्रुतिएयां करके सिद्ध सूक्ष्म नाडियां विषे आत्मादा विचरणा न बनेगा।

उत्तर आत्मादीआं जेडीयां सूक्ष्मअंशां है तिन्ना करके सू-क्ष्म नाडीयांविषे आत्मा विचरता है ॥ जैसे शरीरके अंश जो हैं भुजां तिन्नादे जामे विषे प्रवेशदे होयांहोयां शरीरदा जामेविषे प्र-वेश कथन करीता है ॥ तैसे आत्मादीयां सूक्ष्म अंशांदा नाडीयां

विषे प्रवेश करके आत्मादा नाडीयां विषे प्रवेश कथन करीता है।

शंका—आत्माको मधम परिमाणवाला नेम करके मान्यां होयां कर्मांदे वसते हस्तीदे शरीरके त्यागकरके मछरदे शरीर प्राप्त होयांहोयां तिस मछरदे शरीरविषे हस्ती जेता आत्मा कैसे समवेगा अर मछरदे शरीरनूं त्याग करके हस्तीके शरीर प्राप्त होयांहोयां मछरके शरीर जितना आत्मा हस्तीदे शरीरदे किसीएक जागा रहेगा सारे तौ नहि रह सकता ॥ तांते कैसे कहिते हो आत्मा शरीर जेता है।

उत्तर—कर्मांदे वसते हस्तीके शरीरदी प्राप्ति होयांहोयां आत्माके अवयव वध जाते हैं॥ जैसे जन्मसे अनंतर शरीर वडा होता जाता है ॥ तैसे आत्माभी वडा होता जाता है ॥ अर जैसे रोगके प्राप्त होयां शरीर कृश होता जाता है ॥ तैसे आत्माभी कृश होता जाता है॥ अर कर्मांदे वशते मछरके शरीरदे प्राप्त होयां होयां आत्माके अवयवांदी क्षीणता करके आत्मा मछरदे शरीर जेता होजाता है ॥ तांते आत्मा मधम परिमाणवाला है एह वार्ता सिद्ध भयी ॥ अव आत्मानूं महान् कथन करणेवालियांदा मत श्रवण कर ॥ आत्मा मधम परिमाणवाला नहि बनता ॥ काहेते जो मधम परिमाणके होयांहोयां सावयवता अवश्य होती है॥ अर्थ एह जो साकारता अवश्य होती है जो वस्तु साकार होती है तिसका नाश अवश्य होता है जैसे घटसाकार है तौ दुसरा नाश अवश्य होता है तैसे आत्मा जेकर साकार होवेगा तां तिसका नाश अवश्य होवेगा ॥ तां आत्माके नाश होयांहोयां पुण्यपापका फल कौन भोगेगा ॥ तां ऐसे होयांहोयां पुण्यदा करणा अर पा-

पदा न करणा एह जो तुसी कथन करदे हो सो एह तुसाडा कहि-
ना व्यर्थताको प्राप्त होवेगा ॥ अर इस शरीरविषे जो सुखदुख
भोगीते हैं सो कर्मांदे कीतेसे विना प्राप्त होवेंगे ॥ इसका नाम
शास्त्रांविषे कृतनाश अर कृताभ्यागम नाम दोष कहिते हैं ति-
सकी प्राप्ती होवेगी ॥ आत्माको मधम प्रमाण मान्यांहोयां ॥
इसदोषकी निवृत्तिकदे न होवेगी तातें आत्मा महान् है ॥ न
अणु है न मधम है तिसविषे श्रुति प्रमाण है॥ आत्मा आका-
शदी न्यांयी सर्व व्यापक है अर नित्य है ॥ अर आत्मा निःफल
है। अर्थ यह जो निराकार है ॥ अर आत्मा क्रियासे रहित है ॥
इसप्रकार आत्माके परिमाणदे विचार कीत्यां होयांहोयां आ-
त्मादी व्यापकता निश्चय होती है ॥ अर आत्माके स्वभाव निर्ण-
यविषे भी वादीयांके अनेक विवाद होते हैं ॥ कोई वादी कहिते हैं
आत्मा चैतन्य स्वरूप है ॥ कोई वादी कहते हैं आत्मा जड है ॥
कोई कहिते हैं आत्मा जड चैतन्य उभय स्वरूप है ॥ केडे वादी
कहिते हैं आत्मा जड है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ प्रभाकर जो
मीमांसक है ॥ अर नैयायिक जो हैं सो आत्माको जडकहिते हैं ॥
आत्मा द्रव्य है ॥ अर चैतन्य उसकाण्ड है ॥ जैसे आकाश द्रव्य
है अर शब्द तिसका गुण है ॥ आत्माविषे जो विशेष गुण रहिते
हैं इछा १ द्वेष २ प्रयत्न ३ धर्म ४ अधर्म ५ सुख ६ दुख ७
अर तिन्नादे संस्कार ८ अर चेतनता ९ एता नवां गुणां द्वारा
आत्मादा पृथिवी आदिकांते भेद निश्चय करीता है ॥ काहेते जो
पृथिवी आदिकांविषे एह नौं गुण नहि रहिते ॥ अर एह नौंगुण
उत्पत्ति विनाशवाले हैं ॥ धर्म अधर्म दोनोका नाम अदृष्ट है ॥
आपोआपने अदृष्टते आत्मादा मनदे साथ संयोग होता है ॥

तिस आत्म मन संयोगते एह सभी नौंगुण उत्पन्न होते हैं ॥ अर सुषुप्ति अवस्थाविषे अदृष्टदे नाश होनेते सभी नाश होजाते हैं ॥ अर चेतनता रूप गुणवाला होनेते आत्मा चेतन है ॥ अर जो जड होते हैं तिन्नाविषे चेतनता गुण नहि पाईता ॥ जैसे घटादिकांविषे चेतनता गुण नहि पाईता ॥ अर आत्मा इछा अर द्वेष अर प्रयत्न एन्ना गुणावाला है इसतेभी चेतन है ॥ काहेते जो अचेतनविषे एछा अर द्वेष प्रयत्न आदिक गुण नहि देखीते ॥ अर आत्मा ईश्वरसें भिन्न है ॥ जिसते धर्मअधर्मका कर्ता है ॥ अर धर्म अधर्मदा फल सुख दुःखका भोक्ता है ।

शंका जेकर आत्मा विभु है तां तिसका लोकांतरविषे जाना नहि बनता ॥ काहेते जो जानां अवना क्रियावालेका होता है॥ अर विभुविषे क्रिया नहि बनती ।

उत्तर—जैसे विभुका लोकांतरांविषे जाना आवना नहि बनता तैसे विभुकी इस शरीरविषे स्थितिभी नहि बनती ॥ अर जैसे इस शरीरविषे कर्मांदे वसते इछादिकांदी उत्पत्तिदे होयांहोयां आत्मादा इस शरीरविषे स्थिति व्यवहार होता है ॥ तैसे कर्मांदे वासते लोकांतरविषे शरीरांतरदी उत्पत्तिदे होयांहोयां तिस शरीरावछिन्न आत्माविषे सुख दुःखदी उत्पत्ति होती है ॥ तिस कारणते आत्मादा लोकांतरविषे गमन कथन करीता है ॥ वास्तवसे आत्मादा लोकांतरविषे गमन नहि उपाधिरूप मनकाही लोकांतरविषे गमन है ॥ जैसे घटके गमन करके घटाकाशका गमन कथन करीता है ॥ इस प्रकार मनरूप उपाधिदे गमन करके उपाधि अवछिन्न आत्माका गमन कथन करीता है ॥

आत्माकर्ता है अर भोक्ता है इसविषे सर्व कर्मकांड प्रमाण है ॥

शंका—पिछे एह तुसां कथन कीयांसी विज्ञानमयतें परे आनंदमय आत्मा है ॥ अर अब कहितेहो इच्छादि धर्मवाला आत्मा है ॥ इसतें तुसाडे पिछले कथनदातें इस कथनदाविरोध है

उत्तर—आनंदमयहीआत्मा है ॥ जो सुपुप्ति अवस्थाविषे सभसदे लय होयां बाकी शेष रहिता है तिस सुपुप्ति अवस्थाविषे चेतनता स्पष्ट नहि रहिती ॥ अर जाग्रत् अवस्थाविषे इच्छा आदि नोंगुण तिसविषे उत्पन्नहो आवते हैं ॥ तांतें आत्मा इच्छावाला कहीता है अर इच्छा आदिकांतें परेभी है ॥ काहेतें जो इच्छा आदिकांका आश्रय है ॥ तांतें पिछले कथनदा अर इस कथनदा विरोध नहि ॥ तांतें एह सिद्ध भया आत्मा विज्ञान गुणवाला है ॥ अर चैतन्य स्वरूप नहि ॥ अब जेडे वादी आत्माको चैतन्यरूप अर जडरूप मानते हैं । तिन्नाका मत श्रवण कर ॥ भाटनाम करके जो मीमांसक हैं ॥ सो ऐसा कथन कर्ते हैं ॥ आत्मा केवल चैतन्यरूप नहि ॥ अर केवल जडरूपभीनहि ॥ काहेतें जो जब पुरुष सुपुप्तिसे उठता है ॥ तब एह कहिता है जो मै इतना काल जडरूप होकर सोता भया ॥ एजो उसदा कहना है सो स्मरण रूप ज्ञानकर है ॥ अर स्मरण रूप ज्ञान अनुभवसे विना नहि बनता ॥ तांतें सुपुप्ति अवस्थाविषे जडतादा स्मरण विना सुपुप्ति अवस्थाविषे अनुभवसे नहि बनता ॥ तांतें सुपुप्ति विषे चेतनतादी सिद्धि होयी ॥ पर जैसे जाग्रत् अवस्थाविषे चेतनतादी स्पष्ट प्रतीति होती है तैसे सुपुप्ति अवस्थाविषे स्पष्ट चेतनतादी प्रतीति नहि होती ॥ तांतें एह सिद्ध भया सुते उठे पुरुपका जो एह क-

थन है में जड होकर सोता भया कुछ न जानता भया ॥ सोई ज-नावना है आत्मादी जड रूपतानूं अर चेतनरूपतानूं ॥ सुषुप्ति-विषे चैतन्यदा नाश नहि होता ॥ तिसको अविनाशी होनेते ॥ अ-र जेकर आत्मादे विनाशनूं मानो तां तिस विनाशदा कोई साक्षी किहा चाहिये ॥ सो तो साक्षी कोई है नहि ॥ तांते आत्मादा स्व-रूप जो चैतन्य है तिसका नाश नहि होता ॥ ऐसे श्रुति कथन क-र्ती है ॥ तिस कारणतेभी आत्मा जडरूपभी है अर चेतनरूप भी है ॥ जैसे हि नानाप्रकाश रूपभी है अर अप्रकाश रूपभी है ॥ अर सांख्य शास्त्रवाले कहिते हैं आत्मा चैतन्य अर जड उभय रूप नहि वन सक्ता तांते आत्मा चैतन्य रूप है जेकर पुछें आत्मा जड अर चेतन उभय रूप कैसे नहि वनता तां श्रवण कर ॥ जि-सते आत्मा निरवयव है इसते उभयरूप नहि वनता ॥ तांते एह अर्थ विवेक करके देखने योग्य है अर्थ एह जो अंतर मुख वृत्ति कीत्यां होयां सूक्ष्म विचार करके जानने योग्य है।

शंका—(मीमांसक चैतन्य जड आत्मावादीकी ॥) असां तां अंतर्मुख वृति करके विचार कीया है ॥ तौ सुते उठे पुरुषका एह जो कथन है सो आत्माकी जडता अर चेतनताते विना नहि वनता ॥ जेकर केवल आत्मा चैतन्य रूपही होवे तां सर्व लोकांदे अनुभव साथ विरोध आवेगा।

उत्तर—(विवेकी सांख्य शास्त्रवालेदा) सुषुप्ति अवस्था विषे जो जडता है सो प्रकृतिदा रूप है॥प्रकृति नाम मायाका है ॥ सो जडता आत्मादा रूप नहि सो प्रकृति विकारी है ॥ अर्थ एह जो अनेक प्रकारके कार्यांको उत्पन्न कर्ती है ॥ जिसते सत्व,रज,

तम,एन्ना तिन्ना गुणावाली है ॥ सो तिस प्रकृतिको जगत्के उत्प-न्न करणेविषे आपना कुछ प्रयोजन नहि । पुरुषदे भोग अर मोक्ष वास्ते जगत्को उत्पन्न कर्ती है ।

शंका—प्रकृतिदी जगत्दे उत्पन्न कारण रूप प्रवृति करके पुरुष मे भोग मोक्ष नहि बनता पुरुषको असंग होनेते ॥ जाते असंगविषे भोग मोक्ष नहि बनता ॥ अर जेकर कहो प्रकृतिविषे भोग मोक्ष हैं ॥ अर पुरुषविषे प्रतीत होते हैं ॥ सो एहबी कहना नहि बनता ॥ काहेते जो प्रकृति अर पुरुष अत्यंत विलक्षण हैं जेडे अत्यंत विलक्षण नहि होते ओन्नादे धर्म परस्पर होरदे होर-विषे भास आवते हैं ॥ जैसे वस्त्रविषे लाली है ॥ अर भासती है वस्त्रनाल जो मिल्या होया स्फटक तिसविषे ॥ तांते वस्त्रका धर्म जो लाली है तिसदा स्फटकविषे भासनेका कारण वस्त्र अर स्फ-टकका संयोग है ॥ तैसे प्रधान अर आत्मादा जेकर संयोग होवे तां प्रधानके धर्म भोग मोक्ष आत्मा मैं भासे ॥ सो तौ प्रधानका अर आत्माका संयोगही है नहि ॥ तांते प्रधानके धर्म बंध मोक्ष पुरुषविषे भासते हैं एह वार्ता अयोग्य है ।

उत्तर—वास्तवसे आत्मा विषे भोग मोक्ष कोई नहि ॥ प्रकृ-तिविषेहि भोग मोक्ष हैं ॥ पर जितना काल प्रकृति अर पुरुषका भेद यथावत् नहि जानीता तितना कालपर्यंत भोग मोक्ष पुरुष-विषे भ्रम करके प्रतीत होता है ॥ अर आत्मा जो है चैतन्य रूप सो नाना है॥एक नहि॥ जे आत्मा एक होवे तौ एकके मोक्ष करके सभ मोक्ष होये चाहिये ॥ अर एकके बंध होयां सभ बंध होये चा हिये ॥ तांते जो बद्ध है सोई बद्ध है ॥ जो मुक्त है सोई मुक्त है ॥

इस व्यवहारकी सिद्धि वास्ते असी आत्मादा भेद मानते हां जैसे नैयायिक अर मीमांसक आत्मादा भेद मानते हैं ॥ अर प्रकृतिनूं श्रुतिभी कथन कर्ती है ॥ महतत्वते परे प्रकृति है ॥ अर आत्मादी असंगतानूं श्रुति कथन कर्ती है ॥ ताते चैतन्य स्वरूप है॥ ऐसे सांख्य शास्त्रवाले कथन कर्ते हैं ॥ इस प्रकार अनेक वादीयांदे विवाद जीवविषे हैं ॥ सो तेरे तांई श्रवण करवाये ॥ अब ईश्वरदे स्वरूपविषे जो वादीयांदे विवाद हैं तिनकोभी श्रवण कर॥ चैतन्यदी निकटतादे होयांहोयां प्रपंचदे उत्पन्न करणेवाली जो प्रकृति है। तिस प्रकृतिका जो प्रेरक है सो ईश्वर है ऐसे योग शास्त्रवाले ईश्वरका लक्षण कर्ते हैं ॥ सो ईश्वर जीवांते परे हैं ॥ इसी अर्थको उपनिषदविषे कथन कीया है ॥ ईश्वर कैसा है प्रधान अर क्षेत्रज्ञ एन्ना दुहांका स्वामी है ॥ प्रधाननाम है तिसका जो तिन्ना गुणादी साम्या अवस्था है ॥ अर क्षेत्रज्ञनाम हैं जीवदा ॥ क्षेत्र जो है शरीर तिसदे जाननेवाला है इसते जीवको क्षेत्रज्ञ कहिता है ॥ अर ईश्वर सत्व,रज,तम,एन्ना तिन्ना गुणांका प्रेरक है ॥ अर्थ एह जो ईश्वरदी इच्छा करके जीवांको सत्त्वादी गुण प्राप्त होते हैं॥ अर अंतर्यामी ब्राह्मणविषेभी अंतर्यामी नाम करके ईश्वर बहुत विस्तार करके कथन कीता है ॥ अंतर्यामी ब्राह्मण वृहदारण्यक उपनिषदविषे है ॥ एह तेरे तांई ईश्वरदा असां स्वरूप कथन कीया ॥ ऐसा जो ईश्वरदा स्वरूप है तिसविषे वादीयांके अनेक प्रकारदे विवाद हैं ॥ तिनको श्रवण कर ॥ योगशास्त्रवाले कहिते हैं क्लेश जो हैं अविद्या १ अस्मिता २ राग ३ द्वेष ४ अभिनिवेश ५ एह पंज अर कर्म जो है चार प्रकारदा। पुण्य रूप १ अर पापरूप २ अर पुण्यपापमिश्रितरूप ३ एह तिन्ना प्रकारदा

अयोगीयांदा कर्म है ॥ अर योगीदा कर्म है पुण्यपाप दुहांसे र-हित ॥ २ ॥ योगाभ्यास करके उत्पन्न होयाहोया शुद्ध धर्मरूप ॥ अर तिन्ना कर्मांदा जो फल है अविद्यादे होयांहोयां जाति अर आरबला अर भोग ॥ अर भोगदे जेडे मनविषे संस्कार हैं ॥ एन्ना संपूर्णांदे साथ जिसदा संबंध नहि ॥ ऐसा जो पुरुष विशेष है सो ईश्वर है ॥ ईश्वर जीवांदी न्यांई असंग चैतन्य रूप है ॥ यद्यपि असंग रूपको प्रेरकता नहि बनती तौभी पुरुष विशेष होनेते तिसको मायाकी प्रेरकता बनती है ॥ अर जेकर ईश्वर मायाका प्रेरक न होवे तां बंध मोक्षदी व्यवस्था नष्ट हो जाये॥अर्थ एह जो बंधके योग्यको मोक्ष हो जाये ॥ अर मोक्षके योग्यको बंध हो जाये ॥ असंग ईश्वर मायादा प्रेरक है ॥ इस अर्थविषे तैतरीयउपनिषदका वचन प्रमाण है ॥ सो कहिता है परमात्मादे भय करके पवन चलता है अर सूर्य तपता है ॥ सो ईश्वरको मायाकी प्रेरकता यथार्थ है ॥ जिस कारणते ईश्वर क्लेशकर्म अर कर्मांदा फल अर फलदे संस्कार एन्ना चारोंसे रहित है ॥ एह क्लेशादी चारे जीवांके धर्म हैं ॥ ईश्वर तिन्नासे रहित है ॥

शंका—(योगीके तांई नैयायिकदी) तुसाडे मतविषे जीवभी असंग है ॥ तांते ईश्वरदी अधिकता न भयी जीवांनालों ।

उत्तर—जीवांको यद्यपि वास्तवते क्लेशादि नहि ॥ पर तौभी जीवाको बुद्धिके साथ भेदज्ञान नहि होता ॥ इसते क्लेशादि आपने आपविषे मानते हैं जीव ॥ अर ईश्वर आपने आपविषे क्लेशादिक नहि मानता ॥ इसी कारणते ईश्वर प्रकृतिदा प्रेरक होता है ॥ अर जीव प्रकृतिदे प्रेरक नहि होते ॥ इतनी जीवांनालों

ईश्वरविषे अधिकता है ॥ ऐसा योगशास्त्रवाले मानते हैं ॥ अर नैयायिक कहिते हैं असंगको प्रेरकता नहि बनती ॥ तांते ईश्वर नित्य ज्ञानवाला है ॥ अर नित्य इच्छावाला है ॥ अर नित्य प्रयत्नवाला है ॥ प्रयत्ननाम है उतसाहदा॥जीवांदा यो ज्ञान इछा प्रयत्न है सो अनित्य है अर ईश्वरदे नित्य हैं ॥ इसी कारणते ईश्वर जीवांनालों भिन्न है ॥ अर प्रेरक है ॥ अर श्रुतिभी कथन कर्ती है॥ ईश्वर सत्यसंकल्प है ॥ अर ईश्वर सत्यकाम है ॥ ऐसा नैयायिक कहिते हैं ॥ अर हिरण्यगर्भदी उपासना करणेवाले ऐसा कहिते हैं ईश्वर नित्य ज्ञानइछा प्रयत्नवाला नहि ॥ जे ईश्वर नित्यज्ञानइछाप्रयत्नवाला होवे तां जगत्‌दी उत्पत्ति सदाही होई चाहिये ॥ तांते लिंग शरीर सहित जो हिरण्यगर्भ है सो ईश्वर है ॥ परमात्मा मायोपाधिक जो है सो समष्टि लिंग शरीरदे अभिमान करके हिरण्यगर्भ रूपतांनूं प्राप्त होता है सो हिरण्यगर्भ ईश्वर है ॥ उदगीथब्राह्मणनामग्रंथविषे हिरण्यगर्भदा महात्म बहुत विस्तार करके कथन कीता है ॥

शंका—लिंगशरीरदे संबंध होयांहोयां हिरण्यगर्भको इश्वरता नहि बनती ।

उत्तर—लिंगशरीरदे संबंध होयांहोयांभी हिरण्यगर्भ जीव नहि ॥ काहेते जो जीव भावविषे अविद्याकामकर्म कारण हैं सो अविद्याकामकर्म हिरण्यगर्भविषे है नहि ॥ तांते हिरण्यगर्भ ईश्वर है ॥ अर विराट्‌दे उपासक कहिते हैं ॥ विराट्‌ही ईश्वर है संपूर्ण तिसके मस्तक हैं ॥ अर सभनी पासीं तिसके नेत्र है ॥ जांते स्थूलशरीरसें विना लिंगशरीर कहूं देखनेमैं नहि आवता

नांते ब्रह्मांडरूप स्थूलशरीरवाला विराट्‌ही ईश्वर है ॥ अर सह-स्रशीर्षा उपनिषदविषे कहा है ॥ सहस्रही तिसके शिर हैं ॥ अर सहस्रही तिसके नेत्र हैं ॥ अर सहस्रही तिसके चरण हैं ॥ होर कोई एक वादी कहिते हैं ॥ चतुर्मुख ब्रह्माही ईश्वर है ॥ होर कोई ईश्वर नहि ॥ जेकर सहस्र चरणावाला ईश्वर होवे तां बहुते चर-णांवाले कीडेभी ईश्वर होये चाहिये प्रजापति संपूर्ण प्रजानूं रचिता भया॥ इसते आदि लेकर वो श्रुतिभी तिसविषे प्रमाण है इसप्रकार पुत्रदी प्राप्तिवासते ब्रह्मादी उपासना करणेवाले कहि-ते हैं ॥ अर भागवत इसप्रकार कहिते हैं ॥ चतुर्मुख ब्रह्मा विष्णु दे नाभिकमलते उत्पन्नभया है तांते चतुर्मुख ब्रह्मा ईश्वर नहि ॥ जिसते चतुर्मुख ब्रह्मा उत्पन्नभया है सो विष्णु भगवान् ईश्वर है अर शिवके उपासक ऐसा कहिते हैं ॥ शिवजीके चरणानूं लभने-वासते विष्णुजी वडा यत्न कीया ॥ पर शिवजीके चरणानूं विष्णु-जी न लभते भये ॥ तांते विष्णु ईश्वरनहि ॥ शिव ईश्वर है ॥ अर गणेशजीके उपासक ऐसा कहिते है ॥ गणेशजीके चरणपूजके शिवजी त्रिपुरदैत्यके मारणेको समर्थ भये ॥ तांते गणेशजी ई-श्वर है ॥ इसी प्रकार होरभी वादी आपने आपने पक्षदे अभि-मान करके होरहोर प्रकारके ईश्वरनूं कथन कर्ते हैं ॥ कोई आपने मतविषे मंत्रको प्रमाण कथन कर्ता है ॥ कोई अर्थवादको प्रमाण कथन कर्ता है ॥ कोई ऋषीश्वरांदे वाक्यको प्रमाण कथन कर्ता है

प्रश्न—ऐसे होयांहोयां ईश्वरविषे वादीयांदे कितने मत्त हैं सो कहो।

उत्तर—वादीयांदे मतांदी कुछ गिणती नहि अंत हैं॥ अंत-

यामीने लेकर स्थावर पर्यंत ईश्वरके मन्ननेवालयांके मत है ॥तांते तिनकी गिणती कुछ नहि।

शंका—स्थावरांको ईश्वर मन्ननेवाले तां कोईभी जगत्‌मैं प्रसिद्ध नहि।

उत्तर—कोई पिपलको कुलका देवता मानते हैं ॥ तांते पिपलदी पूजा करते है ऐसे जो हैं सो पिपलको ईश्वर मानते हैं ॥ सो पिपल स्थावर प्रसिद्ध है ॥ इसी प्रकार कोई अर्कको कुलदेवता मानते हैं ॥ कोई वांसांको कुलदेवता मानते हैं ॥ कोई तकडीके ईश्वरमानते हैं ॥ कोई सुईको ईश्वर मानते हैं ॥ इसीतरां आपोआपने मतके अनुसार स्थावरांको ईश्वर माननेवाले बहुतहैं

शंका—इसी प्रकार मतां बहुतयांदे होयांहोयां किस मतदा ग्रहण करणा जिज्ञासीने अर किसमतदा त्याग करणा ॥ एह कहो ।

उत्तर—तत्वदे निश्चयदी कामना करके युक्तीयांदे विचार करणेवाले अर वेददे विचार करणेवाले जो जिज्ञासी हैं तिन्नाको एकरूपही निश्चय प्राप्त होता है ॥ सो प्रकट करके कहिते हां श्रवण कर ॥ माया जगत्‌दा उपादान कारण है ॥ अर मायादा प्रेरक ईश्वर है ॥ तिस ईश्वरदे अवयवां करके संपूर्ण जगत् पूर्ण होयाहोया है ऐसा श्रुति कहिती है ॥ तांते इस श्रुतिके अनुसार ईश्वरदा निर्णय करणा जिज्ञासीको युक्त है ॥ इस श्रुतिके अनुसार निर्णय कीतियां होयांहोयां किसीके साथ विरोध नहि आवता ॥ काहेते जो स्थावर पर्यंत संपूर्णांको ईश्वरदा अवयव रूपताकरके ईश्वररूपता मानते है जिज्ञानी जन।

प्रश्न—जगतदा उपादान रूप जो माया है॥ तिसका क्या रूप है।

उत्तर—एह माया तमोरूप है॥ ऐसा नरसिंहतापनी उपनिषद्‌विषे कथन कीता है॥ मायादी तमोरूपताविषे अनुभव प्रमाण है॥ ऐसे श्रुति आप कथन कर्ती है॥ सो एह मायाका रूप जड है॥ अर मोहात्मक है॥ ऐसे श्रुति अनुभव करावती है जिज्ञासीयांनूं॥ अर बालकांसे लेकर गोपालांपर्यंत स्पष्ट होनेते माया अनंत है॥ ऐसे श्रुति कथन कर्ती है॥ चैतन्यसे भिन्न घटादिपदार्थांदा जो स्वरूप है सो जड है॥ अर जिसविषे पुरुषांदी बुद्धि नहि पहुज सक्ति सो मोह है॥ ऐसा सभी लोक कहिते हैं॥ इस प्रकार जडरूप करके अर मोहरूपता करके मायादी तमोरूपता सभनां लोकांनि अनुभव करीती है तांते माया अनंत है॥ अर चैतन्यरूप आत्माते भिन्न जो घटादिकांका स्वरूप है सो जड है॥ अर जिसविषे बुद्धि कुंठित होजाती है॥ तिसनूं मोह कहिते हैं सभीलोक॥ इस प्रकार जडरूपता करके अर मोहरूपता करके संपूर्ण लोकांदे अनुभव सिद्ध है मायादा स्वरूप॥ तांते मायादा स्वरूप अनंतहै॥ अर युक्ति करके देखीये तां माया अनिर्वचनी है॥ न सत्य है न असत्य है॥ ऐसे श्रुतिभी कथनकर्ती है॥ असत्य किउं नहि जो प्रतीत होती है सत्य किउं नहि जो ब्रह्मज्ञानते नाश होजाती है॥ अर सत्य असत्य दोनो रूपभी नहि॥ एना दुहांरूपांको विरुद्ध होनेते॥ इसतरां युक्तियांरूपी नेत्रांसे देखयां होयां मायाका स्वरूप अनिर्वचनी है॥ अर ज्ञानवानाकी दृष्टिसे देखयां होयांहोयां मायाका स्वरूप तुच्छ है॥ श-

शेके शृगांकी न्यायी ॥ तिसकों सदाही अविद्यमान होनेते तां ते तिन्ना दृष्टियां करके मायाका स्वरूप तिन्न प्रकारका है ॥ श्रौ तदृष्टि जो है ज्ञानवानांका अनुभवरूप तिसकरके मायाका स्वरूप तुच्छ है ॥ अर युक्तिदृष्टि करके मायाका स्वरूप अनिर्वचनी है ॥ अर अज्ञानीयांकी दृष्टि करके मायाका स्वरूप सत्य है॥ माया पसारेको प्राप्त होईहोई जगत्‌दी सतानूं दखावती है ॥ जैसे चित्रया होया वस्त्र पसरिया होयाहोया हस्ती घोडे आदिक मूर्तां दी सतानूं दखावता है ॥ अर माया संकोचनूं प्राप्त होईहोई जगत्‌दी असतानूं दखावती है ॥ जैसे चित्र होया वस्त्र संकोचनूं प्राप्त हूयाहूया हस्ती घोडे आदिक सूरतांदी असतानूं दिखावता है ॥ अर एह माया अस्वतंत्र है ॥ जिसकारणते चैतन्यसे विना नहि प्रतीत होती ॥ अर माया स्वतंत्रभी है ॥ जिसते असंगको संगवाला करदेती है ॥ अर्थ एह असंग कूटस्थ आत्मानूं जगत् रूप करदेती है ॥ अर चिदाभास रूपता करके जीव ईश्वरनूंभी रचिती है ।

शंका—जेकर माया आत्मानूं जगत्‌रूप अर जीव ईश्वररूप करदेती ॥ तद आत्मादी कूटस्थतादा नाश भया ।

उत्तर—आत्मादी कूटस्थतादा न नाश करके आत्माको जगत् अर जीव अर ईश्वर रूप करदेती है ।

शंका—आत्मादी कूटस्थतादा न नाशकरके आत्माको जगत् आदि रूप करणा तौ असंभव है ।

उत्तर—मायाका स्वभावही ऐसा है जेडी वार्ता न बने ति-

मको बनादेना ॥ तांते आत्माको कूटस्थताको न दूरकरके आ-त्माको जगत् आदि रूप करदेना एह मायाविषे कुछ आश्चर्य नहि ॥ जैसे सिपीका अज्ञान सिपीदी सिपीरूपतानूं न दूरकरके सिपीनूं रूपारूप करदेता है ॥ जैसे जलांविषे द्रवता स्वभाव सिद्ध है ॥ अर जैसे अग्निविषे उष्णता स्वभाव सिद्ध है ॥ जैसे पथरविषे कठनता स्वभाव सिद्ध है तैसे मायाविषे जेडी बात न बने तिसको बनाय देना एहभी स्वभाव सिद्ध है ॥ लोक जितना कालपर्यंत मायादे रचनेवालेनूं नहिजानते तितना काल माया लोकांके मनविषे अनेक प्रकारके चमत्कार दिखावती है ॥ अर जद मायादे रचनेवालेनूं जानीता है तां माया आपही नष्ट होजातीहै ॥ अर अनेक शंका जो है सो जगत्को सत्य मननेवाले नैयायिक आदिकांको प्राप्त होतीयां हैं ॥ अर मायाविषे शंका कोई नहि बनती ॥ काहेते जो माया आपही शंकारूप है ॥ जैसे कोलेको काला करणा नहि बनता ॥ काहेते जो काला तौ तिसका स्वरूपहीहै।शंकारूप मायाविषेभी जेकर शंका करेंगा तां तेरी शंकाविषे मैं अगे शंका करांगा ॥ तांते वस्तुदा निर्णय कुछ न होवेगा ॥ तांते जिस प्रकार माया निवृत्त होवे सो उपाय कीता चाहीदा है अर तिसविषे शंका नहि बहुतीयां कीतीयां चाहीदीयां ॥ आश्चर्य है इस स्वरूप जिसका ऐसी जो माया है तिसको विकल्प रूप होनेते बुद्धिमान् पुरुषने यत्न करके तिसदे दूर होनेदा उपाय लभया चाहीये ।

शंका—मायादे स्वरूपदे निश्चय होयांहोयां तिसदे दूर करणेदा उपाय लभना बनता है ॥ सो तौ मायादे स्वरूपदा अज्ञ-तांई निश्चय नहि भया ।

उत्तर—मायादे स्वरूपनूं निश्चय कर ॥ क्या मायादा स्वरूप है ॥ ऐसा पूछें तां श्रवण कर ॥ सर्व लोकांको प्रसिद्ध जो मदारीदो माया है उसदा जो लक्षण है तिस लक्षणनूं प्रथम देख ॥ लोक प्रसिद्ध मायाका की लक्षण है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ लोक प्रसिद्ध जो मदारीकी माया है सो निरूपण करणेविच्च नहि कुछ आवती ॥ अर स्पष्ट नजर आवती है ॥ कैसे नहि निरूपण करीजाती ॥ जे ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ मदारी जो मोहरां आदिक रच लेता है ॥ सो मोहरां स्पष्ट नजर आवतीयां है ॥ अर जेकर ओ मोरां सच्चीयां होवें तां मदारी कौडीकौडी काहेको मंगे॥ अर जेकर कहिये ओह मदारी लोकांदी नजर बंद करलेता है ॥ तां शाहूकारांदीयां हटीयांसे थैलीयां उठाय लये ॥ कंगाल काहेको रहे ॥ तांते ओह मोहरां मायामात्र हैं ॥ ऐसे एह जगत्‌भी स्पष्ट नजर आवता है ॥ पर इसदे स्वरूपदा निर्णय कुछ नहि हो सकता॥तांते जगत् माया मात्र है॥इसवार्तानूं हठनूं त्याग करके देख।

शंका—जगत्‌का निरूपण अशक्य कैसे है।

उत्तर—जगत्‌दे निरूपण करणेनूं कोईभी समर्थ नहि ॥ एक समे संपूर्ण बुद्धिमान् अकठे होकरके जगत्‌नूं निरूपण करणे लगे ॥ तिन्नानूं दूसरे तीसरे प्रश्नविषे अज्ञानही नजर आया ॥ सो अज्ञान कैसे नजर आया ॥ ऐसे पुछें तां श्रवण कर ॥ शरीर इंद्रियां अर प्राणादिक वीर्यसे कैसे उत्पन्न भये ॥ अर शरीरविषे चेतनतादी प्रतीति कैसे होती है एह जेडा हमारा प्रश्न है तिसका उत्तर कोई कहो ॥ तां स्वभाववादी बोलता भया ॥ तां वीर्यदा स्वभावही देह इंद्रियां आदिकांको उत्पन्न करण ॥ प्राणां सहित

शरीरका स्वभावही है जो तिसविषे चेतनता होनी ॥

प्रश्न—(सिद्धांतीदा फर स्वभावादीके तांई) तैने इस वा-तांनूं कीकूं जाता जो वीर्यका स्वभावही है देह आदिकांको उ-त्पन्न करणा।

(स्वभाववादी फर बोलता भया) मैने अन्वय व्यतिरेक क-रके जानया है जो वीर्यके होयांहोयां शरीर इंद्रियां होते हैं॥ अर वीर्य न होवे तां शरीर इंद्रियां आदिक नहि होते।

(सिद्धांती) अन्वय व्यतिरेक तौ नहि बनते ॥ काहेते जो वीर्यके होयांहोयांभी शरीर इंद्रियां आदिक बहुत्यां स्थाना मे नहि होते ॥ सो बहुतेस्थान कवन हैं ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ सुते होये पुरुषका कदी वीर्य शरीरतेंनिकस जाता है॥ पर ऊंहां देह इंद्रियां आदिक नहि होते ॥ अर गर्भवती स्त्रीविषे दूसरी वारी वीर्य पवेतां ओथे देह इंद्रियां आदिक नहि होते ॥ अर वंध्यास्त्रीविषे वीर्यके प्राप्त होयांहोयांभी देह इं-द्रियां आदिक उत्पन्न नहि होते॥ अर कांमीयां पुरुषांके हजारां-वारी वीर्य पडे निकसते हैं ॥ पर देह इंद्रियां आदिक उत्पन्न नहि होते॥ तांते अन्वय न भया अर व्यतिरेकभी नहि बनता ॥ काहे-ते जो वीर्यदे अभाव होयां होयांभी जूंयां आदिक अनेक जीव उत्पन्न नहि होते हैं॥ तांते एह जो प्रश्न है वीर्यने शरीर आदिक कैसे उत्पन्न कीते॥ इसका उत्तर कहो ॥ स्वभाववादी बोल्या ॥ इसका उत्तर मै कुछ नहि जानता॥ तांते जैसे शरीरकी उत्पत्ति-का निर्णय कुछ नहि होसक्का तैसे संपूर्ण पदार्थांका निर्णय कुछ नहि होसक्का॥इसी कारणते महान् पुरुष इस जगत्को मह्रागिको

खेडवांगु कहिते हैं॥ तांते इसनालो मदारीकी खेड होर अधिक क्या होती है॥जो गर्भवासके स्थानविषे स्थित होयांहोयां पुरुषका वीर्य चेतनतानूं प्राप्त होजाता है ॥ अर तिस वीर्यविच्चों हस्त अर मस्तक अर चरणांते आदि लेकरके अनेक प्रकारदे अंकुर निकस आवते हैं॥ अर ओह वीर्य बालअवस्थानूं प्राप्त होजाता है॥ अर यौवनावस्थानूं प्राप्त होजांदा है। अर वृद्धावस्थानूं प्राप्त होजांदा है। अर देखनेवाला होजाता है अर भोजन करणेवाला होजाता है॥ अर सुननेवाला होजाता है ॥ अर सुंघनेवाला होजाता है ॥ अर देश देशांतरांविषे जानेवाला होजाता है ॥ अर आवनेवाला होजाता है॥ तांते जैसे शरीरका निरूपण नहि होसक्ता॥ तैसे वटवीज आदिकांविषे भली प्रकार विचारकरके देखो किथे तां वटका वीज जिसको छोटी जेई चिडीवी खायसक्ति है ॥ अर किथे वटका वृक्ष जिससाथ हस्तीभी आन करके पडे खुरकते हैं॥ तांते जगत् मायामात्र है ॥ निरूपण कुछ नहि होसक्ता ॥ अर्थ एह जो जगत् मिथ्या है ॥ ऐवें पडा नजर आवता है ॥ अर वास्तव ते कुछ है नहि मदारीदीयां हरांदी न्यांई॥ऐसे निश्चय कर।

शंका—(नैयायिकदी) साडेयासों यद्यपि जगत्दा निरूपण नहि होसक्का॥ पर तौभी हमारे वडे यो उदयनाचार्यसे आदि लेकरके हैं॥ सो जगत्दा निरूपण करेंगे ।

उत्तर—जो अभिमान करदे हैं उदयनाचार्यसे आदि लेकरके असी जगत्दा निरूपण करेंगे ॥ तिन्नाको हमारे बडे जो हैं हर्षमिश्रसे आदिलेकरके तिन्नाने भली प्रकार करके निरुत्तर कीता है ॥ तांते एह जगत्दी रचना किसीदे चिंतन करणे योग्य

नहि ॥ तांते इसनूं तर्कां करके चिंतन करे बुद्धिमान ॥ काहेते जो इसकी रचना चिंतन करणेविषे नहि आवती ॥ तांते जगतदी रचनादे चिंतन करणेदा उद्यम व्यर्थ है जैसे कोलेको चिटेकरणेका उद्यम व्यर्थ है।

शंका—होवो जगत्को अचिंत्य रचनारूपता पर मायाविषे क्या आया।

उत्तर—अचिंत्यरचनादी शक्तिवाला जो कारण है ॥ सो माया है ॥ ऐसे निश्चयकर सो मायारूप कारण एक सुषुप्ति अवस्थाविषे अनुभव करीता है ॥ तिसको कैसे जगत् कारणता है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ जाग्रत्दा जगत् अर स्वप्नदा जगत् सुषुप्ति अवस्थाविषे प्रतीत होता जो मायारूप बीज है ॥ तिसविषे लीन हूयाहूया है ॥ अर तिसतेहि उत्पन्नहो आवता है ॥ जैसे वटदे बीजविषे वट लीन होता है ॥ तिसतेही वट उत्पन्न हो आवता है ॥ तांते जगत्दा कारण माया है ॥ तिस विषे संपूर्ण जगत् वासना स्थित है ॥ अर जो बुद्धिदी बुद्धिदाकारण रूपायां वासना हैं तिन्नाविषे चैतन्यदा प्रतिबिंब पडता है ॥ तिसकानाम चिदाभास है ॥ सो स्पष्ट नहि प्रतीत होता ॥ जैसे मेघाकाश स्पष्ट प्रतीत नहि होता ॥ अर अनुमान करके जानीता है ॥ तैसे बुद्धिदीयां वासना विषे जो चिदाभास है सोभी जानीता है॥अनुमान करके।

शंका—वदलांविषे जो जल है तिसको अस्पष्ट आकाशदे प्रतिबिंब वाल्यां होयांहोयांभी पर घटविषे जो जल है तिसविषे स्पष्ट आकाशदा प्रतिबिंब प्रतीत होता है॥इसते मेघाकाशदा अनुमान बनजाता है अर बुद्धिदीयां वासनाविषे चैतन्यदा प्रति-

विंव है इसविषे दृष्टांत कोई नहि ॥ तांते बुद्धिदीयां वासनाविषे चैतन्यदे प्रतिविंवदा अनुमान नहि बनदा ।

उत्तर—बुद्धिदीयां वासनाविषे चैतन्यदे प्रतिविंवदे अनुमानदा दृष्टांत है सो श्रवण कर ॥ बुद्धिविषे स्पष्ट चिदाभास प्रतीत होता है तांते बुद्धिदा जो कारण है सो चैतन्यदे प्रतिविंववाला है ॥ जेकर बुद्धिदे कारणविषे चैतन्यदा प्रतिविंव न होवे तौ बुद्धिदीयां वृतीयांविषे चैतन्यदा प्रतिविंव कैसे प्रतीत होवे ॥ तांते एह सिद्ध भया बुद्धिदीयां वासना चैतन्यदे प्रतिविंववालीयां है॥ बुद्धिदी अवस्था विशेषरूप होनेते बुद्धिदी वृतीयांदी न्यांई ॥ श्रुतिने जो कथन कीया सो जीव अर ईश्वरको प्रतिविंवरूपता ॥सो सिद्ध भई ॥ जो बुद्धिदीयां वासना विषे चैतन्यदा प्रतिविंव है सो ईश्वर है ॥ अर जो बुद्धिविषे चैतन्यदा प्रतिविंव है सो जीव है॥ सो जीव अर ईश्वर मेघाकाश अर जलाकाशकी न्यांई स्थित है जैसे मेघाकाशको अर जलाकाशको प्रतिविंवरूपतादे तुल्य होयां होयां भी ॥ मेघाकाशकी उपाधि जो मेघांविषे जल है ॥ सो अस्पष्ट है ॥ ईसते मेघाकाशभी अस्पष्ट है ॥ अर जालकाशकी उपाधि जो घटविषे जल है ॥ सो स्पष्ट है ॥ इसते जलाकाशभी स्पष्ट है ॥ तैसे ईश्वरकी उपाधि जो बुद्धिकीयां वासना हैं सो अस्पष्ट हैं ॥ इसते ईश्वर स्पष्ट नहि प्रतीत होता ॥ अर जीवकी उपाधि अंतहकरण स्पष्ट है ॥ इसते जीव स्पष्ट प्रतीत होता है ॥ मेघदी न्याई माया है ॥ अर मेघविषे जलदी न्यांई बुधिदीयां वासना हैं अर तिसजलविषे आकाशके प्रतिविंवकी न्यांई बुधिदीयां वासनाविषे चैतन्यदा प्रतिविंव है ॥ बुद्धिदीयां वासनादा नाम माया है ॥ तिस मायाविषे जो चैतन्यदा प्रतिविंव है सो ईश्वर है ॥ ऐसे

श्वेताश्वतरउपनिषदकी श्रुति कथन करती है ॥ महेश्वर जो है सो मायादे अर्थात चिदाभासका नाम है ॥ अर सो ईश्वर अंतर्यामी है ॥ अर सर्वज्ञ है ॥ अर जगतका कारण है।

शंका—बुधिदीयां वासनाविषे जो चैतन्यदा प्रतिबिंब है ॥ सो ईश्वर है ॥ अर सर्वज्ञ है ॥ इसते आदि लेकरके जो अर्थ है सो श्रुति सिद्ध कैसे है।

उत्तर—मांडूक्य उपनिषदकी श्रुति अर नरसिंहतापनी उपनिषदकी श्रुति ॥ बुधिदीयां वासनाविषे चैतन्यदा प्रतिबिंबरूप जो आनंदमय है ॥ तिसके ईश्वर अर सर्वज्ञादि रूप कथन कर्ती है ॥ सुपुप्ति है स्थान जिसका अर एकतानूं जो प्राप्त होती है ब्रह्मके साथ ॥ ऐसा जो चैतन्य घन आनंदमय है सो सुपप्ति अवस्थाविषे आंनदको भोक्ता है ॥ अज्ञानदीयां वृतीयांविषे चैतन्यदा प्रतिबिंब रूप मुखकरके ऐसा जो प्राज्ञ है सो आत्मादा तीसरा पाद है ॥ सो सुपोपत कैसी है ॥ जिसविषे स्थित हूयाहूया जाग्रतदे पदार्थांदी कामनाते रहित होजाताहै ॥ अर स्वप्नदे पदार्थ किसीनूंभी नहि देखता ॥ सो एह प्राज्ञ सर्वदा ईश्वर है ॥ अर सर्वदा है ॥ अर सर्वज्ञ कारण है ॥ जिसते प्राज्ञते ही संपूर्ण भूतांदी उत्पति होती है ॥ अर प्राज्ञविषेही संपूर्ण भूतांदा लय होता है।

शंका—आनंदमय जो है प्राज्ञ तिसदी सर्वज्ञता आदिक अनुभवसे तौ नहि प्रतीत होती।

उत्तर—आनंदमय प्राज्ञदी सर्वज्ञता आदिकांविषे विवाद

नहि कीता चाहीदा ॥ काहेते जो श्रुतिदे अर्थविषे विवाद अछा नहि ॥ अर मायाविषे सभ कुछ बनजाता है।

शंका—आनंदमय प्राज्ञको जो श्रुति सर्वज्ञ सर्वेश्वरादि रूप कथन कर्ती है ॥ सो श्रुति अर्थवाद रूप है ॥ जिसते युक्तिसे रहित है ॥ जैसे पथर तर जाते हैं ॥ एह श्रुति अर्थवाद रूप है ॥ युक्तिसे रहित होनेते ॥ अर्थवाददा अर्थ स्तुति है।

उत्तर—आनंदमयप्राज्ञको जो श्रुति सर्वज्ञसर्वेश्वरादिरूप कथन कर्ती है ॥ सो श्रुति अर्थवाद रूप नहि ॥ यथार्थ अर्थको कथन कर्ती है ॥ सो जिस प्रकार है सो प्रकार श्रवण कर ॥ सुपुप्ति अवस्थाविषे विद्यमान जो आनंदमय प्राज्ञ है ॥ तिस करके रचया होया जो स्वप्नेदा जगत् है ॥ तिसको स्वप्नावस्थाविषे अन्यथा करणेनूं कोईभी नहि समर्थ ॥ तैसे जाग्रत् अवस्थाविषे तिस आनंदमय प्राज्ञने रचया जो है जगत् तिसकोभी अन्यथा करणेनूं कोईभी नहि समर्थ ॥ तिसकारणते श्रुतिभी आनंदमय प्राज्ञको ईश्वर कथन कर्ती है ॥ काहेते जो ईश्वरका लक्षण एही है ॥ जो जिसदे कीतेनूं कोई अन्यथा करसके ॥ सो लक्षण प्राज्ञविषे आवता है ॥ तांते प्राज्ञ ईश्वर है ॥ अब जिस प्रकार प्राज्ञ सर्वज्ञ है सोभी श्रवण कर ॥ सुपुप्ति अवस्थाविषे जो अज्ञान है ॥ तिस अज्ञानते संपूर्ण प्राणीयांदीयां बुद्धीयां उत्पन्न होतीयां हैं ॥ अर तिस अज्ञानविषेही संपूर्ण प्राणीयांदीयां बुद्धियां लय होजातीयां हैं ॥ अर तिन्ना प्राणीयांदीयां बुद्धीयांने संपूर्ण जगत्को जानीता है ॥ तिस कारण करके प्राज्ञ सर्वज्ञ है ॥ सर्व अर्थांदे जाननेवालीयां जो सर्व बुद्धीयां हैं तिन्नादा वासनारूप करके

जिस अज्ञानविषे लीनता है ॥ ओस अज्ञान उपाधिवाला प्राज्ञ है ॥ तांते प्राज्ञ सर्वज्ञ है ॥ किउं जो सर्वज्ञदा अर्थ एही होता है जो सर्वनूं जाने ॥ प्राज्ञदी उपाधिविषे लीन होइयां जो संपूर्ण बुद्धीयां हैं तिन्ना द्वारा प्राज्ञ सर्वको जानता है ॥ अर सुषुप्ति अवस्थाविषे नहि जानता ऐसा जेकर कहें इसदा उत्तर श्रवण कर ॥ सुषुप्ति अवस्थाविषे सर्वदा लय होजाता है ॥ इसते सर्वको नहि जानता ॥ जैसे तेरे मतविषेभी प्रलयावस्थमें ईश्वर सर्वको नहि जानता ॥ पर तिसदी सर्वज्ञतादा अभाव नहि होता ॥ काहेते जो सर्वकी स्थिति दशामै सर्वको जानता है ॥ तैसे प्राज्ञ सुषुप्ति अवस्थाविषे सर्वको नहि जानता ॥ तौभी तिसदी सर्वज्ञता नहि दूर होती ।

शंका—जेकर प्राज्ञ सर्वज्ञ है तौ सर्वज्ञ किउं नहि प्रतीत होता।

उत्तर—प्राज्ञकी उपाधिरूप जो बुद्धिदीयां वासना हैं ॥ तिन्नाको परोक्ष होनेते प्राज्ञदी सर्वज्ञता प्रत्यक्ष नहि अनुभव होती ॥ प्राज्ञदी सर्वज्ञता अनुमानसे जानीती है ॥ सर्व बुद्धियांविषे सर्वज्ञतानूं देखकरके ॥ सर्व बुद्धियांविषे सर्वज्ञता अनुभव सिद्ध है॥ काहेते जो दशपदार्थ किसीकी बुद्धि जानती है अर दशपदार्थ किसीकी बुद्धि जानती है ॥ तांते सर्व बुद्धियांविषे जेडी सर्वज्ञता है॥ सो आपनीयां कारणरूप जो वासना हैं तिन्नाविषे सर्वज्ञता करके उत्पन्न होई है ॥ काहेते जो कार्यविषे धर्म है ॥ सो कारणविषे धर्मकरके उत्पन्न होता है ॥ जैसे वस्त्रविषे रूप तंतूयांविषे रूपते उत्पन्न भया है ॥ इस प्रकार आनंदमय प्राज्ञदी सर्वज्ञता

सिद्ध भई ॥ अब जैसे तिसको अंतर्यामी रूपता है सोभी श्रवण कर ॥ विज्ञानमयसे आदिलेकरके जो कोश हैं ॥ अर पृथिवीसे आदि लेकरके जो पदार्थ हैं ॥ तिन्नाके अंतर स्थित हूयाहूया तिन्ना संपूर्णांको प्रेरता है ॥ तिस कारण करके अंतर्यामी है ॥ इस अर्थविषे संपूर्ण अंतर्यामी ब्राह्मण प्रमाण है ॥ तिसदे सारे अर्थ कथन करणेविषे ग्रंथ वहुत विस्तारको प्राप्त होता है ॥ तांते तिसदे एकवाक्यदा अर्थ कथन कर्ते हैं ॥ सो एह अंतरर्यामीब्राह्मणविषे कथन कीया है ॥ जो वुद्धिदे अंतर स्थित है ॥ अर वुद्धि जिसको नहि देख सक्ति अर वुद्धि जिसका शरीर है ॥ अर वुद्धिनूं जो अंतरसे प्रेरता है ॥ सो अंतर्यामी है ॥ ऐसा जो अंतर्यामीदा लक्षण है ॥ सो आनंदमय प्राज्ञमै वनता है ॥ तांते आनंदमय प्राज्ञ अंतर्यामी है ॥ जैसे वस्त्रविषे उपादानरूपता करके तंतू स्थित हैं ॥ तैसे सर्व जगत्‌दा उपादान होनेते अंतर्यामी सर्व जगत्‌विषे स्थित है ।

शंका—जेकर अंतर्यामी सभनां पदार्थांविषे स्थित है ॥ उपादान रूपता करके ॥ तौ सर्वत्र किउं नहि प्रतीत हुंदा ।

उत्तर—सर्वके अंतर होनेतेही सर्वत्र नहि प्रतीत हुंदा ॥ तांते अनुमानते जानीता है ॥ सो अनुमान किस प्रकार करणा ॥ पटदे अंतर तौ तंतू हैं ॥ अर तंतूयांदे अंतर तंतूयांदे अवयव है ॥ अर तंतूयांदे अवयवादे अंतर ओन्नाते सूक्ष्म अवयव हैं ॥ इसी प्रकार जिथे अंतरता समाप्त होजाए सो अंतर्यामी है ।

शंका—अंतर्यामीको सर्वदे अंतर होयांहोयांभी अंतर्यामी-

दीप्रतीति किउं न होवे ॥ जैसे तंतूयांदे अवयव तंतूयांदे अंतर होते हैं ॥ सो प्रतीत होते हैं ।

उत्तर—तंतूयांदे अवयव यद्यपि तंतूयांके अंतर हैं ॥ पर तो भी आपन्यां अवयवांते बाह्य हैं इसते प्रतीत होते हैं ॥ अर अंतर्यामी किसीते बाह्य नहि ॥ सर्वके अंतर है ॥ इसते नहि प्रतीत होता ॥ तांते श्रुतीयांकरके अर युक्तियांकरके अंतर्यामीका निर्णय होता है ॥ सो युक्तियां कौन हैं ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर जड पदार्थांदी प्रवृत्ति चेतन अधिष्ठानसे विना नहि बनती जैसे रथादिकांदी घोडयां करके प्रवृत्ति होती है ॥ तैसे जडांकी प्रवृत्ति अंतर्यामीसे होती है ॥ एह युक्ति है ॥ अर श्रुतितो पिछे कथन कर आये हैं ॥ जो बुद्धिविषे स्थित है इसते आदि लेकरके अर एह संपूर्ण अंतर्यामीदा शरीर है ॥ काहेते जो सर्वरूप करके अंतर्यामी स्थित भया है जैसे तंतूयांदा शरीर वस्त्र है ॥ पटरूप करके तंतूयांको स्थित होनेते ॥ जैसे तंतूयांदे संकोच करके पटका संकोच होता है॥अर तंतूयांदे विस्तारते पटका विस्तार होता है ॥ तंतूयांके संकोच अर विस्तारते विना स्वतंत्र पटका संकोच अर विस्तार रतीभरभी नहि ॥ तैसे एह अंतर्यामी जिथेजिथे जिसजिस घटादिरूपताकरके विस्तारको प्राप्त भया है ॥ तैसेतैसे घटादि पदार्थ अवश्य होते हैं ॥ भगवान्नेभी गीतादे अठारवें अध्यायविषे अंतर्यामी कथन कीता है ॥ हेअर्जुन!ईश्वर संपूर्ण प्राणीयांदे हृदयविषे स्थित है ॥ शरीररूपी जंत्रविषे बैठे होये जो प्राणी हैं तिन्नानूं मायाकरके भ्रमावता होयाहोया ॥ सर्व प्राणी कहिते हैं सो हृदयविषे स्थित हैं ॥ ओन्ना विज्ञानमयादा उपादान रूपता करके अंतर्यामी परिणामको प्राप्त होता है ॥ अर शरीरादि पिंज-

रायंत्र है ॥ अर शरीरदा जो अभिमान है सोई शरीरविषे बैठना है अर पुण्यपापविषे जेडी प्रवृति है सो भ्रमण है ॥ विज्ञानमयरूपताकरके अर विज्ञानमयदी पुण्यपापविषे प्रवृतिरूपता करके ॥ आपनी माया शक्ति करके ईश्वर विकारको प्राप्त होता है ॥ जो ईश्वरका विकारको प्राप्त होना है सोई भ्रमावण है ॥ गीताविषे जो भ्रमावणा कहा है ॥ तिसका जो अर्थ है ॥ सोई अर्थ श्रुतिने कथन कीया है अंतरसे प्रेरता है इस शब्द करके ॥ जिस प्रकारकरके बुद्धिको प्रेरता है ॥ तिसी प्रकारपृथिवी आदिक संपूर्ण पदार्थोंको प्रेरता है अंतर्यामी ॥ ऐसा बुद्धि करके जानना ॥ जो प्रवृति है सो संपूर्ण अंतर्यामीकि अधीन है ॥ इसविषे महाभारतदा वाक्यभी प्रमाण है दुर्योधन कहिता है ॥ जानताहां मैं धर्मनूं ॥ पर धर्मविषे मेरी प्रवृत्ति नहि होती ॥ अर जानताहां मैं अधर्मनूं ॥ पर अधर्मते मेरा मन हटता नहि ॥ तांते कोईक देव हृदयविषे स्थित होयां होयां जैसे मैनूं प्रेरता है ॥ तैसे मैं कर्ता हां॥ इस महाभारतदे वाक्यद्वारा क्या सिद्धभया ॥ सर्व प्रवृत्ति अंतर्यामीकि अधीन है।

शंका—जेकर जीवांदी पुण्यपापविषे प्रवृत्ति ईश्वरके अधीन है ॥ तद पुरुपार्थको व्यर्थता भई।

उत्तर—पुरुपार्थकोभी ईश्वरकारूप होनेते पुरुपार्थकी व्यर्थता नहि।

शंका—जेकर पुरुपार्थ ईश्वर रूप है॥ तौ ईश्वर प्रेरता है ॥ ईश्वर भ्रमावता है ॥ एह कथन व्यर्थतानूं प्राप्त होजावेगा ।

उत्तर—ईश्वर प्रेरता है ॥ ईश्वर भ्रमावता है ॥ रसज्ञान कर-

के आत्मादी असंगता निश्चय होती है ॥ तांते अंतर्यामी रूपता-करके ईश्वर प्रेरता ईश्वर भ्रमावता है ॥ एह शास्त्रका कथन व्यर्थ नहि ॥ ईश्वर पुरुषार्थ रूपता करके स्थित भया है॥ इस ज्ञानक-रके अंतर्यामी रूपताकरके ईश्वरदी प्रेरकता दूर नहि होती ॥ ई-श्वर प्रेरक है ॥ आत्मा असंग है ॥ इस ज्ञानकरके मोक्षदी प्रा-प्ति होती है ॥ ऐसे श्रुतीयां अर स्मृतीयां कथन कर्तीयां हैं ॥ सो श्रुतीयां स्मृतीयां ईश्वरदी आज्ञारूप हैं ॥ ऐसा ईश्वरने कथ-न कीया है ॥ तांते ईश्वरकी आज्ञारूप श्रुतिस्मृतिके अनुसार निश्चय कीया चाहिये ॥ सो श्रुति ईश्वरको भयदा कारण कहि-ती है ॥ इस परमात्मादे भयकरके पवन चलता है ॥ अर परमा-त्मादे भयकरके सूर्य उदे होता है ।

शंका—श्रुतीयां ईश्वरको भयदा कारण किसवास्ते कहि-तीयां हैं ।

उत्तर—ईश्वर अर अंतर्यामी एन्नादे अर्थभेददे वास्ते कहि-ती हैं॥जो भयदा कारण है॥ सो तौ ईश्वर है॥अर जो प्रेरक है सो अंतर्यामी ॥ ईश्वरही बाह्यप्रेरक है ॥ अर ईश्वरही अंतर प्रेरक है ॥ ऐसे श्रुतीयां कथन कर्तीयां हैं ॥ एह जो परमात्मा है तिसदी आज्ञाविषे सूर्य चंद्रमाआदिक स्थितहैं॥अर एह परमात्मा अंतः-करणविषे स्थित होयकरके संपूर्ण जीवांका प्रेरक है ॥ इस प्रका-र प्राज्ञ ईश्वर अंतर्यामी है ॥ अर एह आनंदमय प्राज्ञ जो है ई-श्वर सो संपूर्ण जगतदा कारण है ॥ काहेते जो संपूर्ण जगतको उत्पन्न कर्ता है॥ अर नाशकर्ता है ॥ जेडा जगतदा प्रकट होना है ॥ सो जगतदी उत्पत्ति है ॥ अर जेडा जगतदा तिरोधान हो-

जाना है सो जगत्‌दा प्रलय है ॥ एह प्राज्ञ ईश्वर आपनेविषे लीन होयेहोये संपूर्ण जगत्‌को प्रकट करदेता है ॥ प्राणीयांदे कर्मां-करके जैसे एकठा कीता होयाहोया चित्रवस्त्र आपनेविषे लिखी यां होयीयां जो हस्ती घोडियांकीयां मूर्तां हैं तिन्नानूं लीन कर-लेता है॥ अर जो लीन होयींयाहोयीयां हस्ती घोडे आदिकांकी-यां मूर्तां हैं ॥ तिन्नानूं खूलया होयाहोया प्रकट करदेता है ॥ तैसे प्राज्ञ ईश्वरभी आपनेविषे संपूर्ण जगत्‌को लयकरलेता है ॥ प्राणीयांदे कर्मांदे अभाव होयांहोयां ॥ जैसे तहकीता होया चि-त्रया होया वस्त्र आपनेविषे हस्ती घोडे आदिकमूर्तां लयकरले-ता है ॥ अर जैसे रात्रि अर दिन होते हैं ॥ जैसे सुपुप्ति अर जाग्रत् होती है ॥ अर जैसे नेत्रांकाखोलना अरमीटना होता है ॥ अर जैसे समाधि अर मनोराज्य होते हैं ॥ तैसे जगत्‌दी उत्पत्ति अर विनाश है ।

शंका—एह जो तुम कहितेहो ईश्वर जगत्‌दा कारण है ॥ सो तौ नहि बनता ॥ काहेते जो कारण दोप्रकारका होता है ॥ ए-क आरंभक कारण है ॥ एक परिणामी कारण है ॥ आरंभक कारण जैसे बहुतीयां तंतू मिल करके पटका कारण हैं ॥ अर पर-मात्मा तौ ऐसे आरंभक कारण नहि ॥ काहेते जो अद्वितीय है ॥ अर परिणामी कारण जैसे दुगध दधिका कारण है ॥ ऐसे परमा-त्मा कारण नहि ॥ जो निरवयव है ।

उत्तर—विवर्तवादकों हम अंगीकार कर्ते हैं ॥ विवर्त कहीता है॥ जैसे सिप्पी आपनी सिप्पीरूपतानूं न त्यागकरके रूप्पारूप होजाती है ॥ तैसे ईश्वर आपनी ईश्वर रूपतानूं न त्यागकरके

जगतरूप होकर भासता है ॥ जगतदा प्रकट करदेना मायाका स्वभाव है ॥ अर जगत्को फेर अंतर्धानभी करलेना मायाका स्वभाव है ॥ तिस मायाशक्तिवाला ईश्वर है ॥ तांते आरंभवाद-विषे अर परिणाम वादविषे जो दोष कहे हैं तेने ॥ तिन्ना दोषांकी प्राप्ति नहि होती ।

शंका—मायाशक्तिवाले ईश्वरको जो तुसी जगतदा कारण कथन कर्तेहो ॥ सो सुरेश्वराचार्यके वचनसाथ विरोधको प्राप्त होता है ॥ काहेते जो सुरेश्वराचार्य ऐसा कथन कर्ता है ॥ अज्ञान प्रधान परमात्मा अचेतनां पदार्थांदा कारण है ॥ अर चैतन्य प्र-धान परमात्मा जीवांदा कारण है संस्कार अर ज्ञान अर कर्म एन्नाकरके युक्त होयाहोया ॥ इस प्रकार परमात्माको कारणता है ॥ अर ईश्वरको कारणता नहि ॥

उत्तर—जैसे त्वंपदार्थविषे कूटस्थ अर चिदाभासदा अन्यो-न्याध्यास है ॥ तैसे तत्पदार्थविषे ब्रह्मका अर ईश्वरका अन्यो-न्याध्यास है ॥ तिसते ईश्वरविषे जो जगत्की कारणता है ॥ सो ब्रह्मविषे प्रतीत होती है ॥ एह सुरेश्वराचार्यका तात्पर्य है ॥ इसते सुरेश्वराचार्यके वचनसाथ विरोध नहि आवता ।

शंका—सुरेश्वराचार्यका एह तात्पर्य है ॥ एह वार्ता तु-सां कैसेजानी ।

उत्तर—श्रुतिके अर्थदे विचारकरके असांने सुरेश्वराचार्यका तात्पर्य ऐसे जाता है ॥ सो श्रुति कौन है ऐसे पुछें तां श्रवण कर ॥ एह श्रुति है ॥ ब्रह्म सत्य है ॥ अर चेतन्य है अर अनंत है ॥ ति-

सते आकाश पवन अग्नि जल धर्ती अन्न औषदीयां शरीर उत्पन्न होता भया ॥ सामान्य दृष्टिकरके तिस श्रुतिविषे निर्गुण ब्रह्मकों जगत् कारणता प्रतीत होती है ॥ अर जगत्दा कारण जो है मायाधीन चिदाभासरूप ईश्वर ॥ तिसको सत्यता प्रतीत होती है ॥ सो अन्योन्याध्यासते विना नहि बनती ॥ तांते ईश्वर अर ब्रह्मदा अन्योन्याध्यास है ॥ जैसे शुद्धवस्त्रका अर अन्नलिप्तवस्त्रका अन्योन्याध्यास है ॥ जैसे शुद्धवस्त्र अन्नलिप्त वस्त्रके साथ एकतानूं प्राप्त होयाहोया भ्रांति करके प्रतीत होता है ॥ तैसे शुद्ध निर्गुण ब्रह्मभी ईश्वरके साथ एकतानूं प्राप्त होयाहोया भ्रांतिकरके प्रतीत होता है ॥ तांते ईश्वरविषे जो जगत्की कारणता है सो शुद्ध ब्रह्मविषे भ्रांतिसे प्रतीत होती है ॥ जैसे मेघाकाश अर महाकाशनूं पामर भिन्नभिन्न नहि जानसक्के ॥ तैसे सूक्ष्म विचारसें रहित जो पुरुष हैं सो ब्रह्म अर ईश्वरके भेदनूं नहि जानसक्के।

प्रश्न—ओह कौन सूक्ष्म विचार है जिसकरके ब्रह्म अर ईश्वरका भेद प्रतीत होता है।

उत्तर—उपक्रमउपसंहार १ अभ्यास २ अपूर्वता ३ फल ४ अर्थवाद ५ उपपति ६ एह तात्पर्यदे निश्चय करावणेवाले पट्लिंग हैं ॥ एन्ना पटा लिंगांकरके श्रुतीयांके अर्थदे तात्पर्यदे निश्चय कीतयां होयां ब्रह्म असंग प्रतीत होता है ॥ अर मायाधीन ईश्वर जगत्का कारण प्रतीत होता है ॥ तांते श्रुतिविषे उपक्रम उपसंहारदी एकरूपतादे देखनेकरके ब्रह्मदी असंगता स्पष्ट भासती है ॥ सो श्रवण कर ॥ सत्य चैतन्य अनंत ब्रह्म है ऐसे उपक्रम करके जिसते मन सहित वाणी निवृत्त होजाती है ॥ एह उ-

पसंहार कीआ है ॥ इसते ब्रह्मदी असंगता निश्चय होती है॥ अर मायावाला जो ईश्वर है तिसको जगतकारणता श्रुति कहि-ती है ॥ ईश्वरने जो उत्पन्न कीता है जगत् ॥ तिस जगतविषे जीव बंधनको प्राप्त होता है ईश्वरदी मायाकरके ॥ ऐसे श्वेताश्वतर उपनिषद्की श्रुति कथन कर्ती है ॥ इस करके एह जानीता है जो ईश्वर जगत्का कारण है ॥ जो आनंदमय ईश्वर जगत्दा कारण कथन कीता है ॥ तिसते जिसप्रकार जगत्दी उत्पत्ति होती है सो श्रवण कर ॥ आनंदमय जो ईश्वर है सो इछाकर्ता भया जो में बहुतरूप होवां ॥ ऐसी इछाकरके ईश्वर हिरण्यगर्भ रूपतानूं प्राप्त भया ॥ जैसे सुपुप्ति स्वप्न रूपतानूं प्राप्त होजाती है ।

शंका—तिस इस आत्माते आकाश उत्पन्न होता भया॥अर आकाशते पवन उत्पन्न होता भया ॥ इसते आदि लेकरके श्रुति-विषे क्रमकरके जगत्दी उत्पत्ति कथन कीती है ॥ अर होर श्रुति-विषे अकठी जगत्दी उत्पत्ति कथन कीती है ॥ इस संपूर्ण जग-त्नूं रचिता भया ॥ तांते एन्ना दोनो प्रकारांदी उत्पत्तिविचों कि-सनूं ग्रहण करणा अर किसनूं त्यागना ।

उत्तर—दोनोप्रकारकी जगत्दी उत्पतिनूं श्रुतीयां कथन कर्तीयां हैं ॥ अर दोनोप्रकार युक्तिकरके सिद्ध होते हैं ॥ जिसदे दोप्रकारकाही स्वप्ना देखीता है ॥ क्रमकरकेभी स्वप्नके पदार्थ उत्पन्न होते हैं ॥ अर एकठेभी स्वप्नके पदार्थ उत्पन्न होते हैं ॥ तांते दोनो उत्पत्तिदे प्रकार ग्रहण करणे योग्य हैं ॥ कोईभी त्या-गने योग्य नहि ॥ जिस हिरण्यगर्भकी उत्पत्ति होई है ईश्वरते ॥ तिस हिरण्यगर्भके स्वरूपको श्रवण कर ॥ हिरण्यगर्भको सूत्रा-

त्मा कहिते हैं ॥ जैसे वस्त्रांविषे सूत्रव्यापक होता है ॥ तैसे संपूर्ण जगत्विषे हिरण्यगर्भ व्याप रहिया है तांते हिरण्यगर्भको सूत्रात्मा कथन करीता है ॥ अर सूक्ष्म शरीरभी तिसका नाम है ॥ सो हिरण्यगर्भ सूक्ष्मशरीर उपाधिवाले संपूर्ण जीवांका समष्टि रूप है ॥ जिसते संपूर्ण व्यष्टि सूक्ष्म शरीरांविषे अहं अभिमानवाला है ॥ हिरण्यगर्भ इच्छाशक्ति क्रियाशक्ति ज्ञानशक्तिवाला है ॥ हिरण्यगर्भरूप अवस्थाविषे जगत् स्पष्ट नहि नजर आवता॥जैसे प्रातःकालविषे अर संध्याकालविषे मंद अंधकारविषे लीन होए पदार्थ स्पष्ट नहि नजर आवते ॥ अर जैसे अन्नदी माया लगीहोई है ॥ जिस वस्त्रको तिसवस्त्रविषे जो सूक्ष्मशाहीदीयां लीकांकरके रचे होये हाथी घोडे आदिक होते हैं ॥ सो स्पष्ट नहि नजर आवते ॥ काहेते जो ओन्नाविषे लालपीले आदिक रंग पूर्ण नहि भये ॥ तैसे मायावाले ईश्वरका स्वरूप ॥ अपंचीकृत भूतांका कार्य सूक्ष्म शरीरोंकरके युक्त स्पष्ट नहि भासता ॥ जैसे कनक छोले आदिकांके नवे उत्पन्न होयेहोये अंकुर अर मेथीपालकआदिक सागांदे उत्पन्न होयेहोये अंकुर कोमल होते हैं ॥ तैसे हिरण्यगर्भ अवस्थाविषे जगतूरूपी अंकुरको मलहोता है ॥ सो सूत्रात्मा पंची कृत भूतांदा कार्य स्थूल उपाधिसहित हूयाहूया विराट् रूपतानूं प्राप्त होता है ॥ तिस विराट् अवस्थाविषे जगत् स्पष्ट प्रतीत होता है ॥ जैसे सूर्य उदय होनेसे धुपविषे स्पष्ट पदार्थ प्रतीत होते हैं ॥ अर जैसे लाल पीलेआदिक रंगांदे प्राप्त होयांहोयां चित्रविषे हाथी घोडेआदिक स्पष्ट प्रतीत होते हैं ॥ अर जैसे खेतीको फल प्राप्त होयांहोयां कनक छोलेआदिक स्पष्ट प्रतीत होते हैं ॥ सो एह विराटका स्वरूप विश्वरूपाध्यायविषे

अर सहस्रशीर्षाविषे कथन कीना है ॥ ब्रह्मासे आदि लैकरके अ-स्तंभपर्यंत संपूर्ण विराटके अवयव जानने ॥ ऐसा कथन कीना है तांते एह सिद्ध भया ॥ ईश्वर अर सूत्रात्मा अर विराट, अर ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इंद्र, अग्नि, गणेश, भैरों, मैराल, मारिका य-क्ष, राक्षस, ब्राह्मण, क्षत्री, वैश, शूद्र, गौयां, घोडे, मृग, पक्षी, पिपल, वट, अंबजां, धाँइं, तृण, जल, पाषाण, मृत्तिका, काष्ट बांसते साकही इसते आदि लैकरके संपूर्ण ईश्वर हैं ॥ एन्ना संपू-र्णांदी पूजा कील्यां होयां फलदी प्राप्ति होती है॥ तिस ईश्वरदी जिस जिस प्रकर करके जो उपासना कर्ता है ॥ तिसनूं तिस-तिसदी पूजाते तिसतिस फलदी प्राप्ति होती है ॥ ऐसे श्रुति क-थन कर्ती है ।

शंका—संपूर्णको ईश्वररूपतादे होयांहोयां फलदी विषमता किउं होती है ।

उत्तर—पूजादे अधिष्ठान जो व्यक्तीयां हैं॥अर पूजा जो है॥ एन्नादे सात्विक राजस तामस भेदकरके फलदी नूनता अर अधिकता होती है।

शंका—संसारदे फल इसप्रकार होवें प्राप्त ॥ परमुक्ति कि-सदी उपासना तैसे होती है एह कहो ।

उत्तर—मुक्तिदी प्राप्तितां ब्रह्मज्ञानते होती है ॥ और किसी-करके नहि होती ॥ जैसे आपना स्वप्ना आपने जागेसे विना नहि दूर होता ॥ तैसे ब्रह्मदे अज्ञानकरकल्पा जो जगत् है ॥ सो ब्रह्मज्ञानसे विना होर किसीउपाय करके दूर नहि होता ।

शंका—द्वैत प्रपंचदी निवृत्तिरूप मोक्षकी ब्रह्मज्ञान करके प्राप्ति जो तुसी कथन कर्तेहो ॥ स्वप्नदे दृष्टांत करके सो तौ नहि बनती ॥ जिसते ज्ञानकरके दूर होनवाला जो जाग्रत् प्रपंच है ॥ तिसको स्वप्न तुल्यता नहि ।

उत्तर—द्वैतप्रपंचको स्वप्न तुल्यता नहि है ॥ जैसे स्वप्नके पदार्थ निद्रादोपकरके प्रतीत होते हैं ॥ तैसे जाग्रत् जगत्भी अज्ञानरूप दोपकरके भासता है ॥ वास्तवसे हैनहि ॥ श्रुतिभी कथन कर्ती है ॥ जाग्रत् स्वप्न सुपुप्ति एह तिन्नो मिथ्या हैं ॥ तांते अद्वितीय ब्रह्मतत्वविषे ईश्वर जीवादि रूपताकरके जडचेतन जगत् संपूर्ण स्वप्ना है।

शंका—ईश्वरजीव तौ ब्रह्मसे अभिन्न हैं ॥ ओन्नाको जगत्के अंतर कैसे कथन कर्ते हो ।

उत्तर—आनंदमय जो ईश्वर है ॥ अर विज्ञानमय जो जीव है ॥ सो एह दोवें मायाकरके कल्पित हैं ॥ एन्ना दोहांने आगे संपूर्ण जगत् कल्पिआ है ॥ तांते माया कल्पित जीव ईश्वरको जगत्के अंतर्गतता है ॥ इछासे आदि लेकरके शरीरविषे प्रवेश पर्यंत जगत् ईश्वरने कल्प्या है ॥ अर जाग्रत् अवस्थातें लेकर मोक्षपर्यंत जगत् जीवने कल्प्या है।

शंका—जेकर जीव ईश्वररूपताकरके वर्तमान जडचेतनरूप जगत् मिथ्या है ॥ अर ब्रह्मही एक वास्तव सत्य है ॥ तौ वादोयांदा जीव ईश्वरविषे विवाद किउं है।

उत्तर—श्रुति सिद्ध असंग अद्वितीय ब्रह्मतत्त्वनूं वादी नहि

जानते ॥ तांते मिथ्याभूत जीव ईश्वरविषे व्यर्थही वादी विवाद
कर्ते हैं।

शंका—जेकर अज्ञान करके जीव ईश्वरविषे वादीयांका
विवाद है ॥ तौ वादीयांको ऐसा उपदेश कीया चाहीये तुसी अ-
ज्ञान कर विवाद कर्ते हो।

उत्तर—वादियांको ऐसा उपदेश करणेमें लाभ कुछ नहि॥व्य
र्थ श्रम है ॥ तांते हम वादीयांको ऐसा उपदेश नहि कर्ते॥किंतु त-
त्वनिष्ठा वालयांनूं देखकरके सदाही आनंदको प्राप्त होते हैं ॥ अर
तत्वनिष्ठासे रहित जो अज्ञानी हैं तिन्नाको देखकरके शोककर्ते हैं॥
परभ्रमकों जो प्राप्त होयेहोये अज्ञानी हैं ॥ तिन्नाके साथ विवाद
नहि कर्ते ॥ तृणादी पूजाकरणवालयांसे लेकरके अर योगशास्त्र
वालयांपर्यंत जो वादी है ॥ सो ईश्वरविषे भ्रमको प्राप्त होएहोए
हैं ॥ अर देहात्मवादीसे आदिलेकरके सांख्य शास्त्रवालयांपर्यंत
जो वादी है ॥ सो जीवविषे भ्रमको प्राप्त होएहोए हैं ॥ जिसते
अद्वितीय ब्रह्मतत्वको नहि जानते ॥ इसते संपूर्णवादी भ्रमको
प्राप्त होएहोए हैं ॥ अर तिन्नाकों मोक्षकी प्राप्तिदी वार्ता क्या क-
हिती है ॥ संसारका सुखभी तिन्नाको नहि होता ॥ काहेते जो आ
आपने आपने पक्षदे सिद्ध करणेवासते तिन्नाका चित्त सदाही
तप्ता रहिता है।

शंका—यद्यपि तिन्नावादीयाकों ब्रह्मविद्याकी प्राप्ति नहि॥
पर होर तौ विद्या ओन्नाकों अनेक प्राप्त होइयांहोइयां हैं ॥ तिन्ना
विद्याकरके तिन्ना वादीयांदी उतमता अर अधमता देखीती है ॥

तिस उतमताकरके तिन्नाकों सुखहोवो तुम कैसे कहितेहो ओन्ना-को संसारका सुखभी नहि ।

उत्तर—ऐसा जो ओन्नावादियाको संसारका सुख है सो हो-वे ॥ पर मुमुक्षुकी दृष्टिकरके तिस सुखको सुख नहि कहीता ॥ जैसे स्वप्नद राजकरके अर भिक्षाकरके जागेहोए पुरुषको सुख अर दारिद्रता नहि होती ॥ तांते मुमुक्षुने जीव ईश्वरवादविषे आपनी बुद्धि न लगाई चाहीये ॥ जिसते जीव ईश्वरवाद मोक्षका कारण नहि ॥ तांते मोक्षका कारण जो है ब्रह्मज्ञान ॥ तिसनूं प्राप्त होया चाहीये ॥ ब्रह्म विचारकरके ।

शंका—ब्रह्मज्ञानदेवास्ते जीव ईश्वरका स्वरूप त्यागने यो-ग्य है ॥ विना जानेसे जीव ईश्वरका त्याग वनता नहि ॥ तांते जीव ईश्वरदा स्वरूप जानयां चाहिये ।

उत्तर—जेकर जीव ईश्वरदे त्यागनेवास्तेही जीव ईश्वरका स्वरूप जानयां चाहीता है ॥ तौ जीव ईश्वर वादविषेही बुद्धि न-हि खरच करदेनी ॥ जिसते पूर्वपक्ष रूपता करके जीव ईश्वर नि-र्णय ब्रह्मनिर्णयविषे कारण हैं ॥ तिसते जीव ईश्वर निर्णयविषेही नहि डुव जाना ॥ किंतु जीव ईश्वर निर्णयदे आगे ब्रह्मनिर्णय करणा ।

शंका—सांख्यशास्त्रकरके कथन कीया जो जीव ॥ अर यो-गशास्त्रकरके कथनकीया जो ईश्वर ॥ तिन्ना दुहांको शुद्ध चैतन्य रूपता करके तुसीभी अंगीकार कर्तेहो ॥ तांते सांख्यशास्त्रकरके कथन कीया जो जीव तिसको पूर्वपक्ष रूपता नहि ॥ अर योग-

शास्त्रकरके कथन कीया जो ईश्वर तिसको पूर्वपक्ष रूपता नहि ॥ काहिते जो सांख्यशास्त्रवाले असंगचैतन्य रूप जीवको कथन करतेहैं ॥ अर योगशास्त्रवाले असंग चैतन्यरूप ईश्वरको कथन करतें हैं ॥ तांते शुद्धचैतन्यरूप जो जीव ईश्वर हैं ॥ तिन्नाको पूर्वपक्ष रूपता नहि बनती ।

उत्तर—यद्यपि सांख्य योगशास्त्रकरके कथन कीए जीव ईश्वरको शुद्ध चैतन्यरूपता है ॥ पर तौभी जीवांदा भेद वास्तव मानते हैं ॥ सांख्यशास्त्रवाले अर योगशास्त्रवाले जीव ईश्वरदा भेद वास्तव मानते हैं ॥ इसते सांख्यशास्त्रकरके अर योगशास्त्रकरके कथन कीया योजीव ईश्वरका स्वरूप है ॥ सो हमारे सिद्धांत मे अंगीकार नहि ।

शंका—कूटस्थ शब्दकरके शुद्ध चैतन्य रूपत्वं पदार्थ ॥ अर ब्रह्मशब्दकरके शुद्ध चैतन्य रूप तत्पदार्थ ॥ भिन्न तुसीभी कथन कर्तेहो ।

उत्तर—लोक प्रसिद्ध जीव ईश्वरदे भेद दूरकरणेद्वारा जीव ईश्वरदी एकतादे कथन करणेदेवासते जीव ईश्वरकाभेद असानें जनाया है ॥ नहि वास्तव हम जीव ईश्वरका भेद कथन कर्ते ॥ तौ फेर जीव ईश्वरदा शोधन किसवास्तेकर्तेहो ॥ जेकर जीव ईश्वरदा भेद नहि ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ अनादि अविद्याकरके भ्रमको प्राप्त होयेर जो लोक हैं॥ सो जीव ईश्वरनूं भिन्नभिन्न मानते हैं ॥ क्या कहिते हैं ॥ भ्रमको प्राप्त होयेहोये लोक ॥ कर्ता भोक्ता जीव है ॥ अर सर्वज्ञतादिक गुणांवाला ईश्वर है ॥ तांते जीव ईश्वरदा वास्तव भेद है ॥ इस भ्रमके दूरकर-

णेदे वासते ॥ जीव ईश्वरदा शोधन असी कर्ते हैं॥जिसते जीव ई-श्वरदा शोधन अवश्य करणे योग्य है ॥ इसीसे पिछे हम शोधन के अनुकुल दृष्टांत कथन करआये हैं ॥ घटाकाश ॥ महाकाश ॥ जलाकाश ॥ मेघाकाशरूप ॥ जलरूप उपाधिके अधीन जलाकाश है ॥ अर मेघरूप उपाधिके अधीन मेघाकाश है ॥ तांते जलाकाश अर मेघाकाश दोवें मिथ्याभूत हैं ॥ अर जलाकाश अर मेघाकाशदा अधिष्टान घटाकाश अर महाकाश सत्य हैं ॥ जलरूप अर मेघरूप उपाधिसे रहित आकाशमात्र रूप होनेते जैसे ॥ तैसे आनंदमय जो ईश्वर है सो मायाउपाधिके अधीन है ॥ अर विज्ञानमय जो जीव है ॥ सो अंतकरणरूप उपाधिके अधीन है ॥ अर आनंदमयका अधिष्टान जो ब्रह्म है ॥ अर वि-ज्ञानमयका अधिष्टान जो कूटस्थ है ॥ सो सत्य है ॥ अर आनंदमय अर विज्ञानमय कल्पित हैं।

शंका—त्वंपदार्थदे शोधनवास्ते सांख्यशास्त्रदा अंगीकार कीता चाहीदा है ॥ जिसकारणते त्वंपदार्थदे शोधनविषे जो अनेक प्रकार हैं ॥ ओन्नाविच्चों एकप्रकार सांख्य शास्त्रवालयांनेभी कथन कीया है ॥ अर तत्पदार्थदे शोधनविषे जो अनेक प्रकार हैं ॥ ओन्नाविच्चों एकप्रकार योगशास्त्रवालयांनेभी कथन कीया है ॥ तांते योगशास्त्रभी अंगीकार कीया चाहीदा है।

उत्तर—इसप्रकार जेकर सांख्यशास्त्र अर योगशास्त्रदा अंगीकार है ॥ तौ बाकी दियां शास्त्रांदाभी अंगीकार कीता चाहीये ॥ तांते देहकोभी आत्मरूपता अंगीकार कीती चाहीये ॥ जैसे देहको आत्मरूपता हम नहि अंगीकार कर्ते ॥ तैसे

सांख्य योगके मतकोभी हम अंगीकार नहि कर्ते ।

शंका—जैसे देहात्मवादका वेदांतांकेसाथ विरोध है ॥ ऐसे सांख्य अर योगशास्त्र वाल्यांदा तां विरोध नहि प्रतीत होता ॥ जिसते सांख्य योगवाले जीव ईश्वरको शुद्ध चैतन्यरूप मानते हैं।

उत्तर—तिन्ना बातांका सांख्य अर योगशास्त्रवाल्यांदा वेदांतांकेसाथ विरोध है ॥ एकतौ आत्मादा भेद ॥ दूसरा जगत् सत्य ॥ तीसरा जीव ईश्वरदा भेद ॥ जेकर एन्ना तिन्नाबातांको त्याग देवें ॥ सांख्ययोगवाले तद वेदांतांकेसाथ विरोध कुछ नहि।

शंका—जीव असंग है ॥ इस ज्ञानकरकेही मोक्षकी प्राप्ति होजाती है ॥ अद्वैतज्ञानदी कुछ लोड नहि ।

उत्तर—हृदयविषे गुह्य तात्पर्यनूं रखकरके ॥ पुष्पमाला अर चंदनादि जो विषे हैं॥ एन्नादी नित्यता ज्ञानकरकेही मोक्षदी प्राप्ति होजाएगी ॥ जीवदी असंगता ज्ञानदीभी कुछ लोड नहि।

शंका—पुष्पमाला चंदनआदिक विषयांदी नित्यता तौ बनती नहि ॥ जिसकारणते प्रत्यक्ष उत्पत्तिविनाशवाले नजर आवते हैं ॥

उत्तर—गुह्यतात्पर्यकों प्रकटकर्ते होयेहोये कथन कर्ते हैं ॥ जैसे पुष्पमाला अर चंदनआदिक विषयांदी नित्यता नहि बनतो तैसे अद्वैतज्ञानते विना आत्मादी असंगताभी नहि बनती ॥ तांते अद्वैतज्ञान अवश्य चाहीता है ॥ जेकर आत्मादा भेद बनया रहेगा॥तद रागद्वेष आदिक अवश्य प्राप्त होवेंगे ॥ अर जेकर ईश्वर आत्मासे भिन्न होवेगा॥तां परतंत्रता आत्मादी दूर नहोवेगी॥

अर जगत् जेकर सत्य होवेगा ॥तद आत्मादी असंगता न सिद्ध होवेगी ॥ अर प्रकृतिजे सत्यहोवेगी ता प्रथमकी न्यांई फेर संगकों करवाय देवेगी ॥ अर जीवको फेर पुण्यपापविषे प्रेरदेवेगी ॥ ऐसे होयांहोयां इस जीवदा मोक्ष क्या सिद्धभया ।

शंका—संग अर प्रेरणा अविवेककरके कीते होए हैं ॥ विवेककरके अविवेकके नाश होयां फेर संग अर प्रेरणादी उत्पत्ति नहि होती ।

उत्तर—ऐसे मान्यां होयां दुष्ट बुद्धि सांख्यको आपने सिद्धांतदी हानि होवेगी ॥ अर वेदांत सिद्धांत जो है ब्रह्मसे भिन्न सर्वकी मिथ्यारूपता तिसकी प्राप्ति होवेगी जोराजोरी ॥ तात्पर्य एह ॥ तूं जो कहिता हैं अविवेककरके संगादिक हैं ॥ सो अविवेक किसका नाम है ॥ जेकर कहें विवेकके अभावका नाम अविवेक है ॥ तद अभावमात्रको भावरूप संगादिकांकी कारणता नहि बनती ॥ अर जेकरकहें विवेकते अन्य अविवेक है ॥ तद विवेकते अन्य जो घटपटआदिक पदार्थ हैं ॥ तिन्नाकोभी संगआदिकांकी कारणता होई चाहीये ॥ सो तां कदीभी नहि देखीती अर जेकर कहें विवेकका विरोधी अविवेक है ॥ तदविवेकदा विरोधी अज्ञान सिद्धभया ॥ तांते अज्ञानकृत संगआदिक हैं ॥ एह सांख्य शास्त्रवालेको प्राप्त भया ।

शंका—अद्वैतदे अंगीकार कीतयां होयां बंधमोक्षदी व्यवस्था नहि बनती॥तांते आत्मादा भेद अंगीकार कीता चाहीदा है।

उत्तर—आत्मादी एकतादे अंगीकार कीतयां होयांभी मा-

याकरके बंधमोक्ष व्यवस्था बनजाती है ॥ जांते माया जेडीबात न बने तिसके बनावनेकोभी समर्थ है ।

शंका—मायाभी एकआत्माविषे बंधमोक्ष कैसे करदेएगी॥

उत्तर—मायाका स्वभावही ऐसाहै ॥जेडीबात नबने तिसको बनायदेना ॥ ऐसा विरुद्ध स्वभाव मायाका तूं नहि देखता ।

शंका—बंधको अविद्याका कार्य होयांहोयांभी मोक्षको सत्य मन्या चाहीताहै ।

उत्तर—मोक्षनाम बंधकी निवृत्तिका है ॥ तांते जैसे बंध मिथ्या है ॥ तैसे मोक्षभी मिथ्या है ॥ वास्तव बंध अर मोक्ष दोवे श्रुति न हि मानती ॥ सो श्रुति एह है ॥ नाश अर उत्पति अर बध अर साधक अर मुमुक्षु अर मुक्त इसते आदिलेकरके सत्य कुछ नहि ॥ जैसे कोई आपने घरविषे बैठा है अर उसनूं भ्रमकरके यह प्रतीत भया ॥ मैनूं सुपाईप करने आए है अर मेरे उते किसीने चुगली कीती है ॥ अर मैनूं राजसभाविषे उतर कुछ नहि आया ॥ अर मेरे पैरी वेडीयां पयगईयां हैं ॥ अर अमुकेने सुपारस करके छुडाया है ॥ अर पंजसतरुपईयातिस ने बडीदा दिताहै॥ अर मेरे उपर वहुत उपकार कीता है ॥ इसते आदि लेकरके वास्तव कुछ नहि॥ तांते जीव ईश्वर आदि भेद संपूर्ण मिथ्या है॥ मायारूप कामधेनू गौंदे जीव ईश्वरदोवें बछे हैं॥ सो द्वैतरूप दुधनूं आपने इच्छासे पीवें ॥ अर तत्व तो वास्तव अद्वैत है ।

शंका—जीव ईश्वर दुहांको मिथ्या होने करके तिनका भेद

भी मिथ्याहोवो ॥ पर कूटस्थ अर ब्रह्मतौ वास्तव हैं ॥ तांते तिन का भेदभी वास्तव होवे ।

उत्तर—कूटस्थ अर ब्रह्मदा भेद वास्तव नहि॥ कथन मात्र-भेद है ॥ जिसते स्वरूपदा भेद नहि ॥ जैसे सच्चिदानंदरूप कूट-स्थ है ॥ तैसे सच्चिदानंदरूप ब्रह्म है ॥ जैसे घटाकाश अर माहा-काशदा भेद नहि ॥ तैसे कूटस्थ अर ब्रह्मका भेद नहि ॥ जो अ-द्वैत जगतदी उत्पत्तिसे प्रथम श्रवण कीया है ॥ सजातीय विजा-तीय स्वगतभेदसे रहित ॥ सो जिउंकांतिउं अज्ज पर्यंत स्थित है ॥ तैसाही आगे मोक्ष अवस्थाविषे होवेगा ॥ व्यर्थमाया संपू-र्ण लोकांनूं भ्रमाय रहित है ॥ मूर्खता करके अज्ञानी भेदविषे हठकर्ते हैं ।

शंका—जेडे पुरुष इसप्रकार प्रपंचदी मिथ्यारूपतानूं कथ-न कर्ते हैं ॥ अर आत्मादी अद्वैत रूपतानूं कथन कर्ते हैं ॥ सोभी संसारको प्राप्त होयेहोये देखीते हैं ॥ इसते तत्वज्ञानके साथ कुछ प्रयोजन नहि ॥ जिसते तत्वज्ञानीनूंभी रागद्वेष रूप संसारपिया भ्रमावता है ।

उत्तर—कर्मांदे वास्ते कईयां ज्ञानवानांकों व्यवहारविषे स्थित होयांहोयांभी प्रथमकी न्यांईं रागद्वेष नहि होते ॥ तांते ब्रह्मज्ञानके साथ प्रयोजन है जिसते ब्रह्मज्ञान करके भ्रम अ-भाव होजाता है ॥ अर अज्ञानीको भ्रम होजाता है अज्ञानीके निश्चय अनुसार जानीता है जो अज्ञानीको भ्रम है अर ज्ञानी-के निश्चय अनुसार जानीता है ज्ञानीको भ्रम नहि ॥ सो अज्ञा-नी अर ज्ञानीका निश्चय श्रवण कर ॥ अज्ञानीका निश्चय तौ

एह है ॥ इसलोकविषे स्त्रीपुत्र आदिकांदा पालना ॥ अर परलो-कविषे स्वर्गसुख आदिकांदा अनुभव करणा ॥ एह है रूप जिसका ऐसा जो संसार है सो सत्य है अर अद्वैत न है न भासता है ॥ अर ज्ञानवानका निश्चय एह है ॥ अद्वैत वास्तव है ॥ अर अपरोक्ष भासता है ॥ अर पुत्रस्त्री आदिक अर स्वर्गसुखादि सर्व मिथ्या हैं ॥ आपने निश्चय करके अज्ञानी बंधको प्राप्त होता है॥अर आपने निश्चय करके ज्ञानवान् मोक्षको प्राप्त होता है।

शंका—एह जो ज्ञानवान् कहिते हैं ॥ अद्वैत अपरोक्ष भासता है ॥ सो कहिना शास्त्रदे बलते है ॥ अनुभव करके नहि।

उत्तर—चैतन्यरूपताकरके अद्वैत अनुभव सिद्ध है।

शंका—चैतन्यरूपताकरके अद्वैत प्रतीतदे होयांहोयांभी सर्वरूपकरके अद्वैत प्रतीति नहि होती।

उत्तर—सर्वरूपकरके द्वैतभी नहि भासता ॥ जैसे किसीक रूप करके द्वैत भासता है ॥ तैसे अद्वैतभी किसीक रूप करके भासता है ॥ तांते द्वैत निश्चयदी नियांई अद्वैत निश्चय किसकर तेरेको नहि होता।

शंका—अद्वैतनाम है द्वैतसे रहितका ॥ सो द्वैतके ज्ञान होयांहोयां अद्वैत निश्चय कैसे बने ॥ जिसते द्वैत अद्वैत परस्पर विरोधवाले हैं।

शंका—(सिद्धांतीदी) जैसे द्वैत अद्वैतका विरोधी है ॥ तैसे अद्वैतभी द्वैतका विरोधी है ॥ तांते चैतन्य रूपकरके अद्वैतदी प्र-

तींनिदे होयांहोयां द्वैत निश्चय नहि चाहीता ॥ तांते एह शंका तेरेको अर मेरेको एक जैसी है ।

उत्तर—(पूर्वपक्षीका) एह शंकासमान नहि ॥ जिसते चैतन्य रूपताकरके अद्वैतदी जो प्रतीति है ॥ सो द्वैत प्रतीतिको नाश नहि कर्ती ॥ जिसते चैतन्य प्रतीति द्वैत प्रतीतिदा कारण है ॥ अर द्वैतप्रतीति अद्वैतप्रतीतिका कारण नहि ।

उत्तर—(सिद्धांतीका) प्रतीत हुंदा जो द्वैत है तिसको मिथ्या होनेते सो अद्वैतदे नाशनूं नहि कर्ता ॥ तांते सर्व रूपताकरके अद्वैत भासदा है ॥ जितना एह जगत् है ॥ सो मिथ्या है ॥ जिसते इसदी रचना चिंतन नहि कीती जाती ॥ एहि मिथ्यांका लक्षण है ॥ जो प्रतीत होना ॥ अर अचिंत रचनारूप होना ।

शंका—इसप्रकार अद्वैत निश्चयकीत्यां होयांभी वारंवार पूर्वलीयां वासनाकरके द्वैतदी सत्ता प्रतीत होती है ।

उत्तर—द्वैतसतादे दूर करणेवास्ते वारंवार द्वैतदी मिथ्या रूपतादा विचार कीता चाहीदा है ॥ अद्वैतदे विचारविषे तैनूं की भार है ॥ कितनाकाल तोरी द्वैतदी मिथ्या रूपतादा विचार करणा ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥अद्वैतदीप अपरोक्ष प्रतीति पर्यंत द्वैतदी मिथ्या रूपतादा विचार करणा ॥ तांते अद्वैत विचारविषे खेद नहि मन्नना ॥ अर द्वैत प्रतीतिविषेही खेद मन्नना ॥ जिसते द्वैतदी प्रतीतिदे होयांहोयांही सर्व अनर्थांकी प्राप्ति होती है ॥ अर अद्वैतदी प्रतीति होयांहोयां सर्व अनर्थांका अभाव होजाताहै

शंका—इसप्रकार अद्वैत आत्मतत्वदे अपरोक्ष ज्ञानवान् जो

में हां ॥ उसके क्षुधा तृपा आदिक अनर्थ तो दूर होयेहोये नजर नहि आंवदे ॥ ताते अद्वैत ज्ञान अनर्थदे अभावदा कारण है ॥ इह कहिना अयुक्त है ।

उत्तर—अहंकारविषे क्षुधा तृपादिक नजर आवते हैं तां नजर आंवे ॥ हम नहि एह वार्ता अंगीकार कर्ते जो अहंकारविषे क्षुधा तृपाआदिक दूर होजाते हैं ॥ तां हम क्याकहिते हैं साक्षी असंगरूप जो आत्मा है॥ तिसविषे क्षुधा तृपाआदिक जो क्लेश भ्रमकरके प्रतीत होते से सो ज्ञानकरके दूर होजाते हैं ।

शंका—वास्तव चैतन्यरूप आत्माविषे क्षुधा पिपासा आदिक नहि ॥ पर अहंकारके साथ तादात्म्याध्यासकरके चैतन्य रूप आत्माविषे क्षुधा पिपासा आदिक प्रतीत होते हैं ।

उत्तर—जेकर अध्यासकरके प्रतीति होते हैं ॥ क्षुधा पिपासा आत्माविषे॥ तो अनर्थांदा कारण जो अध्यास है ॥ तिसदे दूरकरणेदेवास्ते सदा विवेकनूं कर ।

शंका—अनादिकाल दीयांवासना करके वारंवार अध्यासदी प्राप्ति होती है।

उत्तर—अध्यासदे दूर करणेवास्ते वारंवार विवेकही करणा चाहीदा है ॥ होर उपाय कोई नहि कीया चाहीता॥ जैसे वारंवार क्षुधाके प्राप्त होयांहोयां तिसदे दूर करणेवास्ते अन्न भक्षण करीता है॥ जितना कालपर्यंत विवेक दृढचित्तविषे न वस जाए ॥ तितना कालपर्यंत विवेकदा अभ्यास कीता चाहीदा है।

शंका—विवेकरके द्वैतदी मिथ्या रूपता युक्तिकरके सिद्ध

होती है॥अनुभव करके तो नहि द्वैतदी मिथ्या रूपता सिद्ध होती॥

उत्तर—द्वैतदी अचिंत्य रचना रूपता तो तेरे अनुभव करके सिद्ध है ॥ अचिंत्य रचना रूपता मिथ्या वस्तुका लक्षण है ॥ तांते द्वैतदी मिथ्या रूपता तेरे अनुभव करके सिद्ध भई ।

शंका—अचिंत्य रचना रूपता तो मिथ्या पदार्थदा लक्षण नहि बनता ॥ जिसतें आत्माभी अचिंत्य रचनारूप है ॥ कोईभी आत्मादी रचना रूपतानूं नहि जानसक्ता ॥ जिसते आत्मादी रचना है नहि ॥ आत्माको नित्य होनेते ।

उत्तर—जेडा पदार्थ उत्पत्तिवाला होवे अर उसदी उत्पत्तिदा प्रकार न चिंतन कीता जाये सो पदार्थ मिथ्या होता है ॥ आत्मातां उत्पत्तिसे रहित है ॥ तांते तिसदी उत्पत्तिदे प्रकारदी चिंतादे अभाव होयांहोयांभी आत्मा सत्यरूप है ।

शंका—एह जेडा तुसाने मिथ्या वस्तुदा लक्षण कीता है ॥ सो अविद्याविषे नहि संभव होता ॥ जिसते अविद्या उत्पत्तिसे रहित अनादि है ।

उत्तर—जो उत्पत्ति वाला होवे अर भावे विनाशवाला होवे॥ अर फेर अचिंत्य रचना रूप होवे॥ सो मिथ्या कहीता है॥अविद्या यद्यपि उत्पत्ति वाली नहि ॥ तथापि विनाशवाली है ॥ तांते अविद्याभी मिथ्या है ॥ अर चैतन्य उत्पत्ति विनाश दुहांसे रहित है॥ इसते अचिंत्य रचना रूपतादे होयांहोयांभी सत्य है ॥ उत्पत्ति किसदी होती है ॥ जिसदा प्राग अभाव होता है ॥ चैतन्यका तो प्राग अभाव है नहि ॥ अर चैतन्यका नाशभी नहि ॥ अर जेकर

कोइ कहे चैतन्यदी उत्पत्ति अर विनाश होता है ॥ तव हम उस-कोक्यों पुछदेहां ॥ चैतन्यकी उत्पत्ति अर विनाशका अनुभव होता है ॥ के नहि होता ॥ जेकर कहे नहि अनुभव होता तद चैतन्यका उत्पत्ति विनाश न सिद्ध भया ॥ अर जेकर कहे अनुभव होता है ॥ तद जडकरके अनुभव होता है ॥ के चैतन्य करके अनुभव होता है ॥ जड करके अनुभव होता है ॥ एह तो कहिना नहि वनता ॥ जिसते जडांको अनुभव करणेका समर्थ नहि ॥ अर जेकरके चैतन्यके उत्पत्ति विनाशको अनुभव कर्ता है ॥ तद जिस चैतन्यका उत्पत्ति विनाश होता है ॥ तिसी चैतन्यने तिसदा अनुभव करीता है ॥ के होर चैतन्यने अनुभव करीता है ॥ जेकर कहें तिसी चैतन्यने अनुभव करीता है ॥ तो एहवार्ता नहि वनदी ॥ जिसते उत्पति विनाशका सो अनुभव कर्ता है ॥ जो उत्पत्तिसे प्रथम होता है ॥ अर विनाशके पाछे शेप रहिता है ॥ जिस चैतन्यका उत्पत्ति भया ॥ सो उत्पत्तिसे प्रथम नहि ॥ अर जिस चैतन्यका विनाशभया सो विनाशके पाछे नहि ॥ अर होर चैतन्यने उत्पत्ति विनाश अनुभव करीता है॥ एहभी कहिता नहि वनता ॥ जिसते चैतन्य दूसरा अद्वैत वादविषे है नहि ॥ अर चैतन्यके उत्पत्ति विनाशका अनुभव तो वने जेकर चैतन्यकाभी अनुभव होवे ॥ जिसते ऐसा जगत्विषे नियम है ॥ जिस पदार्थका अनुभव होवे तिसके उत्पत्ति विनाशभी अनुभव नहि होता॥तांते चैतन्यदी उत्पत्ति अर विनाशदे अनुभव वास्ते॥चैतन्यदाअनुभव अवश्य मान्यां चाहीये ॥ ऐसे होयांहोयां जिसका अनुभव भया सो चैतन्य नहि ॥ किंतु जड है ॥ तांते एह सिद्धभया चैतन्यके उत्पत्ति विनाशका नहि अनुभव होता ॥ तांते चैतन्य नित्य है ।

शंका—जैसे आत्माका उत्पत्ति विनाश ग्रहण नहि होता ॥ तैसे अनात्माकाभी उत्पति विनाश ग्रहण नहि होता ॥ जांते अनात्मा नाम प्रमाता प्रमाण प्रमेयका है ॥ ग्रहण जो वस्तु होती है सो प्रमाताने ग्रहण करीती है ॥ प्रमाण करके ॥ तांते प्रमाता आपने अभावको आप कैसे ग्रहण करे ॥ जिसते प्रमातादी विद्यमान अवस्थाविषे अर अविद्यमान अवस्थाविषे प्रमाताने प्रमातादा अभाव नहि ग्रहण करएकीता ॥ प्रमातादी विद्यमान अवस्थाविषे प्रमातादा अभाव विद्यमान है ॥ अर प्रमातादी अभाव दशाविषे ग्राहिकदा अभाव है ॥ इसीतरां प्रमाणदा अभाव प्रमाणदी विद्यमान अर अविद्यमान अवस्थाविषे प्रमाणकरके नहि ग्रहण होसक्ता ॥ इसीतरां प्रमेयदी विद्यमान अर अविद्यमान दशाविषे प्रमेयदा अभाव नहि ग्रहण होता ॥ अर प्रमातासे भिन्न होर कोई प्रमाता आदिरूप द्वैतदे अभावको ग्रहण नहि करसक्ता ।

उत्तर—द्वैतदे अभावको चैतन्यने ग्रहण करीता है ॥ सुषुप्ति अवस्थाविषे जाग्रत् स्वप्नरूप द्वैतका अभाव साक्षीने अनुभव करीता है ॥ सुषुप्तिविषे प्रमाता नहि होता ॥ जांते प्रमाता नाम अंतःकरण विशिष्ट चैतन्यका है ॥ अर प्रमाणनाम अंतःकरण वृत्ति विशिष्ट चैतन्यका है ॥ अर प्रमेयनाम तिसका है ॥ जो जाग्रत् स्वप्नविषे प्रतीत होता है पदार्थ ॥ तिन्ना संपूर्णांदे अभावनूं सुषुप्ति अवस्थाविषे साक्षीने ग्रहण करीता है ॥ श्रुतिभि कथन कर्ती है ॥ आत्मा अज्ञानदा साक्षी है ॥ सर्वदा साक्षी है ॥ तांते द्वैत प्रपंचको उत्पत्तिवालयां होयांहोयांभी अचिंत्य रचनारूप होनेते

मिथ्यारूपता सिद्ध भई ॥ जैसे घटादिक उत्पत्ति वाले हैं ॥ तैसे द्वैतभी उत्पत्तिवाला है ॥ पर तोभी तिसकी रचना चिंतन नहि होयसकी ॥ ताते द्वैत मिथ्या है ॥ ऐंद्रजालिककरके रचेहोये मंदरकी न्याईं चैतन्य तो स्वप्रकाशता करके नित्य अर अपरोक्ष प्रतीत होता है ॥ अर चैतन्यसे भिन्न जो वस्तु है॥ तिसकी मिथ्यारूपता चैतन्यने अनुभव करीती है ॥ ऐसे होयांहोयां चैतन्य अद्वैत अपरोक्ष नहि ॥ एह कहिना अयुक्त है ॥ जैसे कोई कहे मेरे मुखमें जीभ नहि ॥ एह कहिना अयुक्त है।

प्रश्न—इस प्रकार वेदांतदे अर्थनूं जाननेवाले जेडे पुरुष हैं ॥ ओन्नाविच्चों केयां पुरुषांकों इस अर्थविषे विश्वास किउं नहि हुंदा ॥ इस वार्तादा उत्तर कहो।

प्रश्न—(सिद्धांतीदा प्रतिबंदीरूप) विचारविषे चतुरया देहात्मवादी है ॥ उसकों देहदी अनात्मता किउं नहि ग्रहण होती॥ इस प्रश्नका उत्तर कहो ॥ प्रतिबंदी रूप प्रश्नदा उत्तर कहिता है पूर्वपक्षी ॥ यथार्थ विचारकी प्राप्ति नहि भई देहात्मवादीको बुद्धि आपनीदे दोष करके ।

उत्तर—(सिद्धांतिदा) ॥ जेडे वेदांत अर्थविषे संतोषसे रहित हैं ॥ तिन्नाको वेदांत अर्थदा विचार यथावत् नहिभया ॥ बुद्धिआपनीदे दोषते ॥ ईहांपर्यंत वस्तुके तत्वका विचार कीया ॥ उस करके क्या जानया द्वैत मिथ्या है॥ अर आत्मा अद्वितीय है॥ अब आगे विचारजन्य तत्वज्ञानदा जो फल है ॥ तिसको श्रवण कर ॥ श्रुति तत्वज्ञानदा फल कथन कर्ती है ॥ पुरुषदे हृदयविषे स्थित जो कामना हैं ॥ तादात्म्याध्यासते उत्पन्न भईयां इच्छाआ-

दिक सो दूर होजातीयां हैं तद तत्वज्ञानकरके अध्यासदी नि-वृत्तिदे होयांहोयां तिसीकालविषे एह पुरुष मोक्षको प्राप्त होता है जिसते ब्रह्मरूप होजाता है ॥ एह जो फल है सो श्रुति कथन कर्ती है ॥ पर अनुभव सिद्ध नहि ॥ ऐसा कहें तां नहि कहिणा ॥ जिसते अगली श्रुतिदे विचार कीतयां होयांहोयां इस तत्वज्ञानके फलको अनुभव सिद्धता नजर आवती है ॥ सो अगला श्रुतिवा-क्य कौन है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर एह श्रुति है ॥ जद इसपु-रुषदे हृदयविषे स्थित संपूर्ण हृदयग्रंथीयां दूर होय जातीयां हैं ॥ तद पुरुषको मोक्षदी प्राप्ति होती है॥ इसवाक्याने क्या कथन क-राता है ॥ ज्ञानकरके कामदी निवृत्ति जो है ॥ सो ग्रंथिदी निवृत्ति जाननी ग्रंथिनाम है अहंकार अर चिदात्मादे अध्यासदा सो अ-ध्यासदी निवृत्ति अनुभव सिद्ध है॥ तांते तिसनूं अप्रत्यक्षता नहि।

शंका—लोकविषे कामनाम इच्छादा है॥ तुसी कामदा नाम ग्रंथि कैसे कथन कर्तेहो।

उत्तर—अध्याससहित इछाकानाम काम है॥ इछामात्रका नाम नहि ॥ अहंकार अर चिदात्मा एन्ना दुहांनूं एकठयां करके अविवेकते एहपदार्थां मेरेको प्राप्त होवे ॥ एह पदार्थ मेरेको प्राप्त होवे ॥ ऐसी जेडी इछा है ॥ इसका नाम काम है ।

शंका—अध्याससहित जो इच्छा है इसीको त्यागयोग्य होयांहोयां अध्यासते रहित इच्छाका अंगीकार करणा आया।

उत्तर—अध्यासते रहित इछादे अंगीकार करणेविषे दोष कोई नहि ॥ तत्ववेता जो पुरुष है सो अहंकारते चिदात्मानूं भि-

ज्ञानके इच्छा होयांहोयां अहंकारके अंतर चिदात्मादा न प्रवेश करके करोडां वस्तुआंदी भावे इच्छाकरो ॥ तिसकरके तत्वज्ञानकी हानि कुछ नहि होती ॥ जिसतें तत्ववेतादी अहंकार अर चिदात्मा दी तादात्म्याध्यासरूप गंठ नाश होगेई है।

शंका—अध्यासदे अभाव होयांहोयां कामनादा उदय न-हि बनता।

उत्तर—तादात्म्याध्यासरूप ग्रंथिदे खुल्यां होयांभी प्रारब्धरूप कर्मदोषते इच्छाभी उत्पन्न होतीया हैं तत्ववेताको ॥ जैसे पापांदी बाहुल्यता करके जानयां होयांहोयांभी तत्वके तेरेको संतोष नहि ॥ अध्यासके अभाव होयांहोयांभी अहंकारकेविषे इच्छाआदिकां करके साक्षी चैतन्यरूप आत्माविषे कुछ दोष प्राप्त नहि होता ॥ जैसे देहविषे रोगादिकां करके अर वृक्षआदिकांदी उत्पत्ति अर विनाशकरके साक्षीरूप आत्माविषे कुछ दोष नहि प्राप्त होता।

शंका—चिदात्मादी असंग एकरूपता सदा एक रस है ॥ जैसे तादात्म्याध्यासके नाश होनेते पहलां सी ॥ तैसे तादात्म्याध्यासके नाश समेविषे होई ॥ तांते तादात्म्याध्यासके नाश होनेते फल कुछ न सिद्धभया।

उत्तर—इसीको तादात्म्याध्यासका नाशकहीता है ॥ जो आत्माकी सदा असंग एकरसता जाननी ॥ इसका फल कृतकृत्यता है ॥ तांते इसबातांको भुलावना कदी नहि ॥ अर जेडी आत्मादी सदा असंग एकरसतादी न प्रतीति होनी है ॥ तिसीका नाम तादात्म्याध्यासरूप चिज्जडग्रंथि है ॥ सो अज्ञानीके

हृदयविषे रहिती हे ॥ अर ज्ञानीके हृदयते नष्ट होजाती है ॥ इतना मात्रही ज्ञानी अर अज्ञानीका भेद है ॥ होरभेद किसी बातका नहि॥शरीर अर इंद्रियां अर मन अर बुद्धि एन्ना चवांकी प्रवृत्ति अर निवृत्तिविषे भेद किंचित् मात्रभी नहि ॥ जैसे ज्ञानवान्का शरीर अन्न जलकरके स्थिरताको प्राप्त होता है अर अन्न जलके न प्राप्त होयांहोयां व्याकुल होजाता है ॥ तैसेही अज्ञानीका शरीर अन्न जलके प्राप्तहोयां स्थिरताको प्राप्त होता है॥ अर अन्न जलके न प्राप्त होयांहोयां व्याकुल होजाता है ॥ अर जैसे ज्ञानीके नेत्रादिक रूपादिकांको देखते हैं ॥ तैसे अज्ञानीकेभी नेत्रादिक रूपादिकांको देखते हैं ॥ इसी प्रकार जैसे अज्ञानीका मन अनुकूल पदार्थांकी इच्छा कर्ता है ॥ तैसे ज्ञानीका मनभी अनुकूल पदार्थांकी इच्छा कर्ता है ॥ इसीतरां जैसे अज्ञानीकी बुद्धि वर्फकों शीतल अर अग्निकों उष्ण निश्चय कर्ती है ॥ तैसेही ज्ञानीकी बुद्धि निश्चय कर्ती है ॥ जैसे संस्कारसे रहित जो ब्राह्मण है ॥ अर वेदवेता जो ब्राह्मण है ॥ तिसका इतना मात्रही भेद होता हे ॥ जो संस्कारसें रहित है ॥ तिसने वेद नहि पडया अर वेदवेताने वेद पडिया है ॥ भोजन आदिकांविषे भेद नहि ॥ तैसे ज्ञानी अर अज्ञानीका इतना मात्र भेद है ॥ ज्ञानीकी चिज्जड ग्रंथि नष्ट होगई है ॥ अर अज्ञानीकी नहि नष्ट होई ॥ ज्ञानीकी चिज्जडग्रंथि नष्ट होजाती है ॥ इसवार्ताको भगवान् गीताके चौदवें अध्यायविषे कथन कीता है ॥ हे अर्जुन! दुखांके प्राप्तहोयां ज्ञानवान् द्वेष नहि कर्ता ॥ अर सुखांके दूर होयांहोयां तिन्नाकी इच्छा नहि कर्ता ॥ उदासीनकी न्यांई वर्तता है ॥ इस वाक्य करके भगवान्ने ज्ञानवान्को चिज्जड ग्रंथिका अभाव कथन करीता है।

शंका—इसवाक्य करके भगवान्नें उदासीनता विधान क-रीना है ॥ अर्थ एह ज्ञानवान् सर्व व्यवहारसें उपराम होजाए ग्रं-थिभेद तों नहि भगवान्नें कथन करीता ।

उत्तर—इसवाक्य करके उदासीनतादा विधान नहि करी-ना ॥ जिसते इसवाक्यविषे वत्शब्द है ॥ मीमांसक कहिते हैं वत्शब्दवाला वाक्यविधि पर नहिहोता ॥ तांते इसवाक्यको वि-धिपर मानयां होयां वत्शब्ददी व्यर्थता होय जाएगी ।

शंका—ज्ञानीदे शरीर इंद्रियांविषे कार्यकरणेदी समर्थता न-हि रहिती ॥ इसते ज्ञानवान्दी सुखप्राप्ति अर दुखनिवृति वास-ते प्रवृति नहि होती ॥ अर एह जो तुम गीतावाक्यदे व्याख्यान-विषे कहया ज्ञानवान्की चिज्जड ग्रंथिनाश होजाती है ॥ इसते ज्ञानवान्की प्रवृति नहि होती ॥ सो व्याख्यान अयुक्त है ।

उत्तर—(हास्यसहित) जेकर ज्ञानवान्के शरीर इंद्रियांविषे समर्थ नहि रहिती ॥ तां ज्ञान एक क्षयीरोग भया ॥ जैसे क्षयी-रोगवालेके शरीर इंद्रियांविषे समर्थ नहि रहिता ॥ तैसे ज्ञानीके शरीर इंद्रियांविषे समर्थ नहि रहा ।

शंका—होवे तत्त्वज्ञान क्षयीरोग इसमेंभी दोष कोई नहि ।

उत्तर—जेडे वडीबुद्धिवाले तेरे जैसे तत्त्वज्ञाननूं क्षयीरोग मानते हैं ॥ तिन्नादी बुद्धि अतिनिर्मल है ॥ तिन्नाको दुःसाध्य कुछ नहि ॥ अर्थ एह जो ओह चाहें सो सिद्ध करलवें ।

शंका—तत्वनिर्णयके स्थानविषे एह जो तुसी हासीयां कर्ते

हो ॥ सो तुसाडी बुद्धिदी निर्मलतानूं जनावदीयां हैं ॥ अर हमतां पुराणांकरके प्रसिद्ध ज्ञानवानांदी प्रवृत्तिदे अभावनूं कथन कर्ते हां ॥ जिसते पुराणांविषे जडभरत आदिकांदी प्रवृत्तिदा अभाव कथन कीता है।

उत्तर—श्रुतीयांदा ज्ञान तेरेको है नहि ॥ इसते तूं अयुक्त शंका पिया कर्ता हैं ॥ तांते तूं हासीके योग्य सी इसते हमने तेरे साथ हासी कीती है ॥ श्रुति कहिती है ॥ आपने तुल्य अवस्था वालियांके साथ हसता होयाहोयाभी ज्ञानवान् अर आपनी जाती संबंधवालियांके साथ हसता होयाभी ज्ञानवान् अर हाथी घोडे आदिक असवारीयां पर आरूढ होयाहोयाभी ज्ञानवान् एह जो सर्वलोकांदे निकट शरीर है ॥ इसनूं अहंबुद्धिकरके ग्रहण नहि कर्ता।

शंका—श्रुतीके अनुसार तत्त्ववेत्तादी प्रवृत्ति मान्यां होयांहोयां पुराणांदी क्या अवस्था है।

उत्तर—पुराण ज्ञानवान्दी उदासीनतानूं कथन कर्ते हैं ॥ अर्थ एह जो ज्ञानवान् सर्व व्यवहारांको कर्ता होयाहोयाभी शरीरविषे अहंभावको नहि प्राप्त होता ॥ अर पुराण ज्ञानवान्दी प्रवृत्तिदे अभावनूं नहि कथन कर्ते ॥ जिसते पुराणांविषे एह नहि किदरे कथन कीता ॥ जो जडभरत आदिक भोजनआदिकांका त्याग करके काष्ठ पथरांदी न्यांई स्थित होगये हैं॥ किंतु क्या कह्या है पुराणांविषे जडभरत आदिक संगदोषते डरे होएहोए सर्वदे संगदा त्याग कर्ते भये हैं।

शंका—संगदोषते दुःख होवेहाये संगदोषदा त्याग किउं कर्ते भये जडभरत आदिक।

उत्तर—सदाही जो सुखदी इच्छानूं करणेवाला है ॥ तिसने सर्वदा संग त्याग करणा ॥ जिसकारणते संगकरणेवाले पुरुषको सभीलोक दुःख देते हैं॥ अर संगसे रहित जो पुरुष है सो सुखको प्राप्त होता है।

शंका—पुराणांदे अनुसार संग त्याग प्रतीत होता है ॥ अर श्रुतिके अनुसार संगवालेकोभी शरीरविषे अभिमान नहि प्रतीत होता॥तांते दुहांकरके क्या अर्थ सिद्ध भया मनकरके संग दुखां का कारण है ॥ अर बाहिरला संग दुखांका करण नहि॥ऐसे होयां होयांअंतर संगसे रहित जो पुरुष हैं ॥ बाहिर व्यवहारवाले ॥ तिन्नाको संगी अज्ञानीलोक किउं कथन कर्ते हैं।

उत्तर—शास्त्रदे तात्पर्यनूं न जाननेवाले जो मूर्ख हैं ॥ सो अन्यथा अन्यथा बकवाद कर्ते हैं॥तांते मूर्खांदे बकवाद करके तत्त्ववेत्तादा निर्णय नहि होता ॥ तौ फेर किसप्रकारकरके निर्णय है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ शास्त्रका तात्पर्य रूप जो हमारा सिद्धांत है तिसनूं ॥ वैराग्य अर ज्ञान अर उपरामता एह तिन्ने परस्पर सहायिक हैं ॥ अर बाहुल्यता करके एकठे रहिते हैं ॥ अर कहुं कहुं वियोगकोभी प्राप्त होजाते हैं।

शंका—वैराग्यसे बिना उपरामता नहि किदरे देखीती ॥ अर उपरामतासे बिना वैराग्य नहि देखीता ॥ अर वैराग्य अर उपरामतासे बिना ज्ञान नहि देखीता ॥ अर ज्ञानसें बिना

वैराग्य उपरामता नहि देखीती ॥ तांते एह तिन्ने एकरूप हैं ।

उत्तर—वैराग्यका कारण अर स्वरूप अर फल अर अवधि भिन्न है ॥ अर उपरामतादा कारण अर स्वरूप अर फल अर अवधि भिन्न है ॥ अर ज्ञानदा कारण अर स्वरूप अर फल अर अवधि भिन्न है ॥ तांते एन्नाका अभेद नहि ॥ किंतु एन्नादा भेद है ॥ सो शास्त्रदे विचार करणेवालेने यथावत् जानना ॥ प्रथम वैराग्यदे कारणआदिकांनूं श्रवण कर विषयांविषे दोषदृष्टि वैराग्यका कारण है ॥ अर विषयांके त्यागकी जो इच्छा है सो वैराग्यका स्वरूप है ॥ अर विषयांको त्याग करके पाछे किसीविषेविच्च मनकी दीनता अधीनता न होनी ॥ एह वैराग्यका फल है ॥ अर गलीयांदे करवांदी न्यांई ब्रह्मलोक आदिक संपूर्ण पदार्थांविषे चितदी उपेक्षा होजानी ॥ एह वैराग्यकी अवधि है ॥ अब तत्वज्ञानके कारण आदिकांको श्रवण कर ॥ श्रवण मनन निदिध्यासन तत्वज्ञानका कारण हैं ॥ तत्व अर मिथ्याको भिन्नभिन्न जानना एह तत्वज्ञानका स्वरूपहै॥अर फेर तादात्म्याध्यासरूप चिज्जड ग्रंथिका उदय न होना एह तत्वज्ञानका फल है ॥ देहविषे अहंबुद्धिकी न्यांई ब्रह्मविषे अहंबुद्धि होनी एह तत्वज्ञानकी अवधि है॥ अव उपरामताके कारण आदिकांको श्रवण कर ॥ यमनियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि एह अष्ट उपरामतादा कारण हैं ॥ अर चित्तदा निरोधरूप निर्विकल्प समाधि उपरामतादा स्वरूप है ॥ अर व्यवहारांदा अभाव उपरामतादा फल है ॥ अर जैसे सुषुप्तिविषे संपूर्ण पदार्थांकी विस्मृति होती है ॥ तैसे संपूर्ण पदार्थांदी विस्मृति होजाती ॥ एह उपरामतादी अवधि है ।

शंका—एन्हा तिन्हाकी समप्रधानता है ॥ जैसे पाल्कीके उ-ठावनेविषे चहारांदी ॥ अथवा एककी प्रधानता है ॥ अर दोकी गौणता है ॥ जैसे जंजविषे वरदी प्रधानता है अर होरणांदी गौ-णता है ।

उत्तर—तत्त्वज्ञानदी प्रधानता है ॥ जिसते साक्षात् मोक्षके देनेवाला तत्वज्ञान हैं ॥ अर वैराग्य अर उपरामता बोधदे सहा-यिक हैं ॥ जिसते श्रुति कथन कर्ती है ॥ परमात्मादे ज्ञानकरके जन्ममरणसे रहित होता है पुरुष ॥ ज्ञानसे विना होर किसी मा-र्गकरके मोक्षकी प्राप्ति नहि होती ।

शंका—किस कारणकरके एन्हा तिन्नका परस्पर वियोग हो-जाता है ॥ अर किसकारणकरके एह तिन्ने संयोगको प्राप्त होते हैं।

उत्तर—महत् तपरूप पुण्यांकरके एह तिन्ने एकठे होते हैं ॥ अर पापांकरके कहुंकहुं एन्हा तिन्हाका वियोग होजाता है ॥ तिस-विषेभी तत्वज्ञानदे प्रतिबंध होयांहोयां अर वैराग्य अर उपराम-तादे पूर्ण होयांहोयांभी मोक्षकी प्राप्ति नहि पुरुषको होती ।

शंका—तौ वैराग्य अर उपरामता निष्फलभये ।

उत्तर—वैराग्य अर उपरामता निष्फल नहि ॥ तिन्हा करके ब्रह्मलोकादिकांकी प्राप्ति होती है ॥ ब्रह्मलोकादिकांविषे बहुका-ल वासकर्ता है ॥ ब्रह्मलोकविषे निष्काम पुरुषको ज्ञानद्वारा मो-क्षदी प्राप्ति होती है ॥ अर जेकर मनविषे भोगांदी कामना होवे तद सुचि अर धनवालियांके घरविषे जन्मको प्राप्त होता है ॥ योगभ्रष्ट पुरुष ॥ ऐसे भगवान्ने गीताके छिवें अध्यायविषे कथ-

न कीता है ॥ तांते वैराग्य अर उपरामता निष्फल नहि ॥ अर जिसपुरुषकी वैराग्य अर उपरामता प्रतिबंधको प्राप्त होगई है ॥अर बोध पूर्ण है ॥ तिसपुरुषको मोक्ष तौ अवश्य होता है ॥ इसविषे संशय कोई नहि ॥ परंतु जीवन्मुक्तिसुख सिद्ध नहि होता॥ होर इसीप्रकार आपनी बुद्धिकरके वैराग्य अर उपरामता अर ज्ञान एन्नादी नूनतानूं अर अधिकतानूं निश्चय करणा ।

शंका—तत्वज्ञानवालियांकोभी केयांको रागद्वेष आदिक नहि देखीते ॥ अर केयांको देखीते हैं ॥ तांते ज्ञानवानांकी एकरूपता न भई ॥ इसते ज्ञानमोक्षदा कारण है ॥ एह निश्चय नहि होता ।

उत्तर—रागद्वेष आदिक रोगांदी न्यांई प्रारब्धकर्मदा फल है॥तांते मोक्षदा प्रतिबंधक नहि होता॥रागद्वेष इसते शास्त्रदे अर्थविषे विवाद नहि कीता चाहीता॥तत्ववेतयांदे प्रारब्ध कर्म अनेक प्रकारदे हैं ॥ तिसकरके तत्ववेतयांदी भिन्नभिन्न प्रवृत्ति होती है॥ अर संपूर्ण तत्ववेतयांका अहंब्रह्मास्मि एह निश्चय एकरूप होता है अर निर्दोष ब्रह्मरूपता करके स्थितिभी सभनांकी एकरूप होती है ॥ अब संपूर्ण चित्रदीपके अर्थको संक्षेपकरके वर्णन करते हैं॥चैतन्यात्माविषे जगत् इसप्रकार स्थित है ॥ जैसे वस्त्रविषे हाथीघोडे आदिकांदीयां मूर्ती होतीयां हैं॥सो जगतरूपचित्र आत्माविषे मायाने कल्प्या है ॥ तिस जगत्रूप चित्रदी उपेक्षाकरके बाकी जो चैतन्य है ॥ तिसको ग्रहण करणा जैसे हाथी घोडे आदिक चित्रदी उपेक्षाकरके वस्त्र ग्रहण करीता है ॥ जेडे पुरुष इस चित्रदीप ग्रंथको नित्यही विचारते हैं तिसदे अर्थको जानते

होयेहोये सो पुरुष जगत्रूप चित्रको देखते होयेहोयेभी तिस जगत्करके मोहको नहि प्राप्त होवे ॥ जैसे अज्ञानकालमें मोह-को प्राप्त होनेसे ॥ तात्पर्य एह चित्रदीपके विचारणे करके जगत् मिथ्या प्रतीत होता है।

इति श्रीचित्रदीपःसमाप्तः। छिंवांग्रंथसमाप्तः॥

॥ इतिचित्रदीपप्रकरणं समाप्तम् ॥

श्रीः

पञ्चदशी भाषा

अथ तृप्तिदीप विवेकप्रकरणम्

॥ ओंसतगुरुप्रसाद ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ तृप्तिदीपनाम जो दूसरा दीप है आदिसें पंचदशीदा सतवां ग्रंथ तिसका आरंभ कर्ते हैं इसविषे वृहदारण्यक उपनिषदकी श्रुतिका व्याख्यान करेंगे ॥ सो तिस श्रुतिका अर्थ एह है अनेक जन्मांविषे संचित जो पुण्य तिन्नाके प्रतापकरके ॥ जेकर पुरुष आत्मानूं जाने ॥ जो स्वप्रकाश अपरोक्ष कूटस्थ आत्मा है सो मैहां ॥ तद किसदी इच्छा कर्ता होय्यांहोय्यां अर किसदी कामनादे वासते शरीरदे तापांकों प्राप्त होय्यांहोय्यां तापकों प्राप्त होवे। अर्थ एह जो शरीरके तापांकर तापकों प्राप्त नहि होता ॥ इस श्रुतिका जो तात्पर्य है सो इस तृप्तिदीपनाम ग्रंथविषे भलीप्रकार विचार करेंगे ॥ तिस विचारकरके जीवन्मुक्तकी श्रुतियांकरके सिद्ध जो तृप्ति है ॥ सो प्रगट होवेगी ॥ पुरुष दोप्रकारका है ॥ जीव ईश्वर भेदते ॥ अविद्याविषे जो चैतन्यका प्रतिबिंब है ॥ सो जीव है ॥ अर मायाविषे जो चैतन्यका प्रतिबिंव है सो ईश्वर है ॥ ऐसे श्वेताश्वतर उपनिषदकी श्रुति कथन कर्ती है ॥ तांते एह जानीता है सो जीव ईश्वर दोवें काल्पित हैं ॥ तिन्ना दुहांने आगे संपूर्ण जगत् कल्प्या है ॥ मै एकसें बहुतरूप होवां प्रजारूप करके उत्पन्न होवां ॥ ऐसी जो ईश्वरदी इछा इसते आदि लेकरके संघातविषे जीव रूपताकरके प्रवेश पर्यंत जगत् ईश्वरने कल्प्या है ॥ जाग्रत् अवस्थासें आदि लेकरके मोक्षपर्यंत संसार जीवने कल्प्या है ॥

अब पुरुष शब्दका अर्थ श्रवण कर ॥ देह इंद्रियां आदिकांविषे तादात्म्याध्यासरूप भ्रमदा अधिष्ठान जो असंग निर्विकार कूटस्थ चैतन्य है ॥ परमात्म रूप सो असंग हूआहूआही तादात्म्याध्यास करके आपने साथ वासतव संगसे रहित जो बुद्धि ॥ तिसविषे स्थित हूआहूआ जीव रूपतानूं प्राप्त होजाता है सो इस श्रुतिविषे पुरुष नाम करके कथन करीता है ।

शंका—पुरुषनाम करके इस श्रुतिविषे चिदाभासरूप जीवदाहि कथन होवे अधिष्ठान रूप कूटस्थ चैतन्य सहित चिदाभास रूप जीवदा पुरुषनाम करके कथन किउँ कतेंहो ।

उत्तर—पुरुषने मोक्षकों प्राप्त होना है मोक्षकों सों प्राप्त होवे जिसकी मोक्ष अवस्थाविषे स्थिति होवे ॥ चिदाभास कीतां मोक्ष अवस्थाविषे स्थिति नहि होती ॥ जिसते चिदाभास कलिपत है ॥ इसते केवल चिदाभासरूप जीवका पुरुषनाम नहि वनता॥ अधिष्ठान रूप कूटस्थ चैतन्य मोक्ष अवस्थाविषे स्थित होता है॥ जिसते कूटस्थ चैतन्य शुद्ध परब्रह्म रूप है ॥ तांते अधिष्ठान कूटस्थ चैतन्यसहित चिदाभास पुरुषनाम करके कहीता है ॥ जिसते अधिष्ठान कूटस्थ चैतन्य सहित चिदाभासरूप जीव स्वर्गमोक्ष आदिकांदे साधनादा अधिकारी है केवल चिदाभास रूप जीव अधिकारी नहि ॥ जिसते अधिष्ठानसें रहित भ्रमलोकविषे कहुं नहि देखीता ॥ चिदाभासभी भ्रमरूप है ॥ तांते चिदाभासरूप जीवभी अधिष्ठान कूटस्थ सहित है ॥ तांते एह सिद्ध भया जो अधिष्ठान चैतन्य कूटस्थ सहित चिदाभासका नाम पुरुष है॥चिदाभास सहित जो शरीर त्रय हैं तिसनूं प्रधानता करके अर अधिष्ठान चैतन्यनूं गौणता करके जदजीव आपना स्वरूप

मानता है तद मै संसारी हां ॥ ऐसे जीव मानता है ॥ अर जद चिदाभास सहित शरीर दोनोकों मिथ्या जानकरके तिसविषे अहंबुद्धिका त्याग करदेता है ॥ अर तिसके अधिष्ठान कूटस्थ चैतन्यनूं स्वरूप आपना मानता है ॥ तद जीव एह जानता है ॥ मै चैतन्यरूप आत्मा हां ॥ मै असंगहां ।

शंका—मै असंग हां मै चैतन्यहां ॥ एह जानना कूटस्थविषे नहि बनता ॥ कूटस्थकों असंग होनेते ॥ २ ॥

उत्तर—अहंकार तिन्न प्रकारदा है ॥ एक मुख्य है दो गौण है कौन मुख्य है ऐसे पुछें तां श्रवणकर ॥ परस्पर अध्यास करके कूटस्थ अर चिदाभासकी जो एकरूपता है ॥ सो अहंशब्दका वाच्य अर्थ है ॥ सो अहंशब्दका मुख्य अर्थ है ॥ तिसते मूर्ख जो हैं विवेक ज्ञानते रहित संपूर्ण प्राणी ॥तिन्नाने अकठे होयेहोये चिदाभास अर कूटस्थनूं अहं ऐसे कथन करीता है ॥ अब गौण जो अहं शब्ददे दो अर्थ हैं ॥ तिनकों श्रवण कर ॥ चिदाभासते भिन्न केवल कूटस्थ अर कूटस्थते भिन्न केवल चिदाभास ॥ एह दोवें गौण अहंकार हैं ॥ जिसते सभीलोक एन्ना दुहांकों नहि जानते ॥ अर तत्ववेत्ता क्रम करके लौकिक व्यवहारविषे अर शास्त्रीयव्यवहारविषे अहंशब्दनूं कथन कर्ता है ॥ जद तत्ववेत्ता मै गमन कर्ता हां ॥ मैं स्नान कर्ता हां ॥ मैं भोजन कर्ता हां ॥ इसते आदि लेकरके लौकिक व्यवहारविषे स्थित होता है ॥ तद कूटस्थते भिन्न चिदाभासनूं अहंशब्दकरके कथन कर्ता है ॥ तात्पर्य एह जो स्नान गमन भोजन आदि व्यवहारांदे करणेवाला स्थूल सूक्ष्म शरीर दोसहित चिदाभास है ॥ कूटस्थ नहि ॥ ऐसे संपूर्ण व्यवहारांकों कर्ता होया तत्ववेत्ता जानता है ॥ अर एहि तत्ववेत्ता

जब ज्ञानदृष्टिविषे स्थित होता है तब मैं असंग हां मैं चिदात्मा हां ऐसे कथन करता है ॥ सो चिदाभासते भिन्न केवल कूटस्थकों अहंशब्दका अर्थ मानकरके कथन करता है तांते एह सिद्ध भया ॥ लक्षणा करके अहंशब्द कूटस्थकों जनावता है ॥ तांते मैं असंग हां एह ज्ञान बनसकता है।

शंका—भिन्नभिन्न चिदाभास अर कूटस्थ अहंशब्ददे गौण अर्थ हैं ॥ एह तुसां जो कथन कीआ है ॥ तिसविषे हम पुछते हैं॥ मैं असंग हांमैं चिदात्माहां ॥ एह ज्ञान कूटस्थकों होता है के चिदाभासकों होता है ॥ जिसकों एह ज्ञान होता है ॥ तिसका अज्ञान निवृत्त होता है ॥ ऐसे अवश्य कहया चाहीयेगा ॥ कूटस्थविषे तां एह जानना नहि बनसकता ॥ जिसते कूटस्थविषे अज्ञान प्रथम है नहि ॥ इसीते कूटस्थविषे ज्ञानभी है नहि ॥ जैसे सूर्यविषे हनेरा अर चानना नहि होता अर जेकर कूटस्थविषे ज्ञान अज्ञान मानोंगे तद कूटस्थदी असंगता न रहेगी इसते मैं असंग हां मैं चिदात्मा हां एह ज्ञान चिदाभासकों होता है ॥ तिस ज्ञानकरके चिदाभासका अज्ञान नाश होजाता है ऐसे कहा चाहीये ॥ ऐसे होयांहोयां एह वार्ता प्राप्त भई ॥ कूटस्थते भिन्न जो चिदाभास है सो जानता है ॥ जो मैं कूटस्थ हां ॥ ऐसा जो जानता है ॥ सो परम भ्रमरूप है ॥ जैसे कोई कंगाल एह जाने जो मैं राजा हां सो जानना परम भ्रमरूप होता है।

उत्तर—जेकर चिदाभास कूटस्थते भिन्न होवे तां एह जानना भ्रमरूप होवे ॥ पर चिदाभासतां कूटस्थते भिन्न नहि ॥ किंतु कूटस्थ एक स्वभाव वाला है ॥ जिसते आभासरूपता मिथ्या

है ॥ अर कूटस्थरूपता सत्य है ॥ जो कल्पितके बाध होयांहोयां पाछे शेष रहिती है ॥ जैसे दर्पणविषे प्रतीत होता जो मुखाभास है॥तिसदा स्वरूप वासतवसें ग्रीवाविषे स्थित जो मुखं है सोई है।

शंका—चिदाभासकों मिथ्या तुम कहितेहो ॥ तांते चिदाभासके आश्रय जो कूटस्थोस्मि एह ज्ञान है ॥ सोभी मिथ्या होया चाहीये।

उत्तर—यथार्थ कहया है तैंने ॥ कूटस्थते भिन्न चिदाभास मिथ्या है ॥ जिसते कूटस्थते भिन्न संपूर्ण वस्तु मिथ्या हम मानते हैं ॥ तांते कूटस्थोस्मि इसज्ञानकों जो तैंने मिथ्या कहया है सो हमारेकों इष्टहि है जैसे रसिविषे सर्प कल्पित है ॥ तां तिससर्पका फूंकारा अर तुर्णाभी कल्पित है ॥ तैसे चिदाभास कल्पित है ॥ तौ चिदाभासके आश्रयअसंगोस्मी ज्ञानभी कल्पित है।

शंका—ज्ञानकरके मिथ्या है ॥ तां ज्ञानकरके संसार निवृत्त न होया चाहीये।

उत्तर—ज्ञानकरके निवृत्त होनेवाला जो संसार है सोभी मिथ्या है तांते मिथ्या ज्ञानकरके मिथ्या संसारकी निवृत्ति होजाती है ॥ जैसे स्वप्नके शेर देखनेकरकें निद्रादी निवृत्ति होजाती है ॥ अर जैसे स्वप्नदी तलवार लैकरके स्वप्नेदे शेरनूं मारलईदा है ॥ तैसे मिथ्यारूप ज्ञानकरके मिथ्यारूप संसार दूर करदेईता है ॥ लोकभी कहिते हैं । जैसा देव तैसी पूजा ॥ जिस कारणते कूटस्थहि चिदाभास दा वास्तव स्वरूप है ॥ तिसकारणते पुरुष शब्दका अर्थ कूटस्थ सहित चिदाभास है ॥ सो मिथ्यारूप चिदाभासते कूटस्थनूं भिन्न जानकरके ॥ लक्षणाकरके मैं कूटस्थहां

ऐसे जाननेकों समर्थ होता है ॥ ऐसे श्रुति कहिती भई ॥ मैं कूटस्थहां एह ज्ञान अत्यंत दृढ होयाहोया मोक्षका कारण होता है ॥ ज्ञानकी दृढता एह है जो संशय विपर्यय न उदय होवे ॥ जैसे देहविषे संशय विपर्ययते रहित ज्ञान होता है ॥ अज्ञानिआंकों ॥ तैसा कूटस्थ आत्माविषे संशय विपर्ययते रहित ज्ञान जो है सो मोक्षका साधन है ॥ इस अर्थके निर्णय करणेके वास्ते श्रुति अर्थ कथन कर्ती है ॥ संशय विपर्ययते रहित ज्ञान मोक्षका साधन है ॥ इसी अर्थको उपदेश सह श्रीविषे भगवान् शंकराचार्य कथन कर्ते भये हैं ॥ अज्ञानीयांनूं जैसे देहविषे आत्मज्ञानमें मनुषहां एह संशय विपर्ययते रहित दृढ होता है ॥ इसीतरां कूटस्थ आत्माविषे संशय विपर्ययसें रहित जो दृढज्ञान है। सो देहविषे आत्मज्ञानके नाश करणेवाला है ॥ ऐसाज्ञान जिस पुरुषको प्राप्त भया है॥सो मोक्षकी इच्छा न भी करे तांभी मोक्षकों प्राप्त होजाता है ॥ जिसते संसारका कारण अज्ञान तिसका ज्ञानकरके नष्ट होगिया है॥ अयं इसशब्दकरके तां अपरोक्षता कथन करीता है ऐसा जेकर कँहे ता एही अर्थ होवो इसविषे दोष नहि जिसकारणतें स्वप्रकाश चैतन्य सदाही अपरोक्ष है।

शंका—स्वप्रकाश चैतन्यरूपता करके आत्मादी सदा अपरोक्षतादे मान्या होयां आत्माको परोक्षविषयता अपरोक्ष विषयता अर ज्ञान अज्ञानकी आश्रयता, अर ज्ञानअज्ञानकी विषयता न बनेगी।

उत्तर—दशमपुरुषकी न्यांई सभी कुछबन जायेगा ॥ जैसे सदा अपरोक्ष जो दशवां पुरुष है ॥ तिसविषे अज्ञानभी होता

है अर परोक्ष ज्ञानभी तिसविषे होता है ॥ अर अपरोक्ष ज्ञानभी तिसविषे होता है॥तैसे नित्य अपरोक्ष आत्माविषे भी अज्ञान अर परोक्षज्ञान अर अपरोक्षज्ञान सभी कुछ बनता नित्य अपरोक्ष दशवें पुरुषविषे अज्ञान अर परोक्षज्ञान अर अपरोक्षज्ञान कैसे बनता है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ कोई दश मूर्ख पुरुष एक-ग्रामसें किसी कार्यके निमित चले होर ग्रामकों ॥ तिसमार्गके बीच एक नदी सी॥तिस नदीका वडा वेग सा॥तिसनदीके पारले कनारेकों प्राप्त होयके आपस विच्च एह विचारकरणे लगे ॥ नदी वडेवेगवाली हमने तरी है ॥ तांते असी आपन्यां पुरुषांनूं गिणलईये॥ जो मत कोई नदीविषे रुडगिया होवे ॥ तब गिणने-वाला पुरुष इदंताकरके प्रतीत होते जो हैं नौं तिन्नाकों गिणता भया ॥ अर नवांका द्रष्टा जो है आपना आपतिसकों न जानता भया भ्रमकरके ॥ ईहां दशवां नित्य अपरोक्ष है ॥ अर द-शवेका अज्ञानभी है ॥ दशवा है नहि ऐसे जानकरके एह दशवा कथन कर्ता भया न दशवा भासता है न दशवाहै ॥ इस कथनका कारणजो है सो आवर्ण है अज्ञानदा कार्य ॥ अर दूसरा अज्ञानदा कार्य विक्षेप है ॥ तिसकोंभी श्रवण कर ॥ दशवा नहि भासता दशवा है ॥ इसते उपरंद दशवां नदीविषे डु-बगिया है॥ एह निश्चय करके सोककरके दशवाहि दशवेनूं रों-दाभया ॥ सो एह जो रोंणाआदिक है सो विक्षेप कथन करीता है इसप्रकार अज्ञान अर आवर्ण अर विक्षेपकों प्राप्त होयाहोया जो दशवा है नदीके कनारे चिंतातुर॥ अर उच्चीयां स्वरांकरके रोंदा॥ एते चिरकों कोई दयावान् पुरुष जिसपासे नदी जाती सी तिस-पासेसें आन प्राप्तभया ॥ अर तिसने पुछियां जो हे पुरुष! तूं

फिर रोता हैं ॥ तब दशवां पुरुष कहिता भया॥जो असाडा दश-वां पुरुष मरगिया है नदीविषे डुबकरके ॥ इसवास्ते मैं रोता-हां ॥ तब दयावान पुरुष आपनी दृष्टिकरके देखयातो दशहि पुरु-ष तिसको बैठे नजर आये ॥ तो तिसको दुख करके दया आई जो एह तो व्यर्थही पडेमूर्खता करके रोते हैं ॥ तांते इनका दुख नि-वार्ण कीता चाहीता है ॥ ऐसे विचार करके दयावान पुरुष कहि-ता भया ॥ दशवां मोया नहि तुसी न रोवो ॥ ऐसा तिसका वचन सुनकरके दशवां पुरुष एह मानता भया ॥ इसने किधरे नदीके कनारे दशवेंपुरुषको देखया होवेगा ॥ इसप्रकार दशवां दशवेंनूं परोक्ष रूपकरके जानताभया स्वर्ग आदिकांकी न्यांई॥तो इस प-रोक्ष ज्ञानकरके दशवें विषे अज्ञानका कार्य अवर्णकी असतापाद-क अंश दूर होगई ॥ अज्ञानका कार्य आवर्णदोयां दो अंशा हैं ॥ असतापादक अर अभानापादक ॥ परोक्षज्ञानते असतापादक अंश दूर होती है ॥ अर अपरोक्षज्ञानते दोवें अंशा दूर होजातीयां हैं ॥ तब दशवांपुरुष तिस दयावान् पुरुषको कहिता भया ॥ किथे है दशवां मैनूं मिलायदेह ॥ तब दयावान् पुरुष एह कहिता भया ॥ तूंही दशवां हैं ॥ तब दशवां कहिता भया मैं दशवां कैसे हां ॥ तब दयावान् पुरुष कहिने लगा तूं मेरे सामने गिण ॥ तब दशवांपुरुष गिणता भया ॥ अर कहिता भया नौं पुरुष मेरको न-जर आवते हैं ॥ तब दयावान् पुरुष कहिता भया नवांदे गिणने वाला दशवां पुरुष तूं हैं॥जेतूं दशवां न होवें तो नवांनूं कैसे जाने॥ तांते नवांदे जाननेवाला दशवां तूं ही हैं ॥ इसप्रकार दशवें पुरु-षको जद अपरोक्षज्ञान भया जो मैं दशवां हां तब दशवां पुरुष हर्षको प्राप्तभया ॥ अर रोणेको त्यागता भया ॥ जैसे नित्य अप-

रोक्षरूप दशवेंविषे सतअवस्था होयां हैं ॥ अज्ञान १ आवर्ण २ विक्षेप ३ परोक्ष ज्ञान ४ अपरोक्षज्ञान ५ शोकाभाव ६ हर्ष ७ तैसे नित्य अपरोक्षरूप आत्माविषे भी एह सतअवस्था जाननीयां ॥ सो जिसप्रकार हैं तैसे श्रवण कर ॥ एह जो चिदाभास है सो विषयादे भोगांविषे आसक्त चित होयाहोया आपना जो वास्तव स्वरूप है स्वप्रकाश चैतन्यरूप कूटस्थ तिसनूं श्रुतीयांदे विचारते प्रथम नहि जानता ॥ एह जो न जानना है तिसका नाम अज्ञान है ॥ सो प्रथम अवस्था है अर किसीक स्थानविषे चैतन्यआत्मादा प्रसंग चलया होया सी तव सुनके अज्ञानी एह कहिता भया कूटस्थ चैतन्यरूपआत्मा कोई नहि ॥ जिसते नजर नहि आवता ॥ जेकर कूटस्थ चैतन्यरूप आत्मा हुंदा तां मैनूं नजर आंवदा॥एह जो अज्ञानीदा कथन है सो अज्ञानदा कार्य आवर्ण है ॥ सो दूसरी अवस्था है॥ कूटस्थदी असता अर अभानदे कथनदी न्यांई आत्माविषे मैं कर्ताहां मैं भोक्ताहां इस कल्पनादा कारण देहद्वय सहित चिदाभास है ॥ तिसकानाम विक्षेप है ॥ सो चिदाभासकी तीसरी अवस्था है।

शंका—शरीर द्वयसहित चिदाभासनूं तुसी विक्षेपरूप कहिते हो ॥ अर नाले चिदाभासदी विक्षेपरूप अवस्था कहितेहो॥ सो तौ एह वात विरुद्ध है।

उत्तर—जीवकीयां एह सत अवस्था हैं ॥ जीवनाम लिंगशरीर अर चिदाभास अर कूटस्थ चैतन्यका है ॥ तांते त्रितयरूप जो जीव है सो अवस्थावाला है अर देह द्वयसहित चिदाभास अवस्था है॥ तांते अवस्था अर अवस्थावालेका भेद सिद्ध भया॥

अर ज्ञानवान करके बोधकों प्राप्त होयाहोया कूटस्थकी सत्तामात्र को जानताहै ॥ इसकानाम परोक्षज्ञानहै ॥ सो जीवदी चौथी अवस्था है ॥ अर जद श्रवणमनन निदिध्यासनदी परिपाकता- करके मैं कूटस्थ हां ॥ एह जानताहै ॥ इसकानाम अपरोक्ष ज्ञा- न है सो जीवकी पंजवीं अवस्था है ॥ अर कूटस्थ असंगआ- त्मादे ज्ञानकरके मैं कर्त्ताहां मैं भोक्ताहां इसते आदिलेकरके शोक समुदायकों त्याग देता है ॥ इसकानाम शोकाभाव है ॥ सो जीवकी छिवीं अवस्था है ॥ अर तिसते उपरंद एह जानता है जो करणेयोग्य सी सो मै करलयाहै॥ अर जो प्राप्तहोने योग्य सी सो मनूं प्राप्त होगिया है इसप्रकारकरके हर्षकों प्राप्त होता है ॥ सो इसकानाम निरंकुशा तृप्ति है ॥ सो जीवदी सतवीं अवस्था है ॥ एह जो सप्तअवस्थां कथन करीतीयां हैं ॥ सोचिदाभास दीयां हैं ॥ कूटस्थदीयां नहि ।

शंका—एन्ना सतांअवस्थांका एथे जो कथन है ॥ सो व्यर्थ है ॥ जिसते इसविषे फल कुछ नहि नजर आवता ।

उत्तर—एह सत अवस्था बंधमोक्षरूप फलकों जनावतीयां हैं ॥ तांते बंधमोक्षका ज्ञान हि एन्ना सतां अवस्थांदे निरूपणदा फल है ॥ तांते सतांअवस्थांदा निरूपण निष्फल नहि ।

शंका—एह सते अवस्था बंधदा कारण हैं अर एह सतेअ- वस्था मोक्षदा कारण हैं ॥ अथवा होर कोई प्रकार है ।

उत्तर—होर प्रकार है ॥ एन्ना सतां अवस्थाविच्चों तीन अव- स्था बंधदा कारण हैं आदिकीयां अज्ञानआवर्ण अर विक्षेप

रूप ॥ एन्ना तिन्नाअवस्थांकों बंधकारणता कार्यद्वारा कथन कर्ते हैं ॥ तांते प्रथम अज्ञानके स्वरूपकों श्रवण कर ॥ मैं नहि जानता कूटस्थनूं ॥ एह जो उदासीनरूप व्यवहार है ॥ तिसका जो कारण है ॥ विचारदे प्रागअभाव सहित ॥ तिसकों महात्मा अज्ञान कथन कर्ते हैं ॥ अर शास्त्रकरके कथनकीया जो प्रकार तिसनूं उलंघन करके ॥ केवल तर्कांकरके विचारनूं करके पाछेसें एह जानना ॥ कूटस्थ है नहि ॥ जिसतें भासता नहि ॥ ऐसा जो विपरीत व्यवहार है ॥ तिसका कारण आवर्ण है ॥ स्थूल सूक्ष्म शरीरांदुयांसहित चिदाभासका नाम विक्षेप है ॥ अर बंधका कारण संसार है नाम जिसका है ऐसा जो मैं कर्ताहां मैं भोक्ताहां॥इसते आदिलेकरके संपूर्ण शोक हैं॥सो विक्षेपदा कार्य है।

शंका—एह जो तुसां कह्या सप्त अवस्था चिदाभासदीयां है ॥ सो अयुक्त है ॥ जिसते अज्ञान अर आवर्ण एन्ना दुयांकों विक्षेपदी उत्पत्तिसें प्रथम विद्यमानता है ॥ अर चिदाभासकों विक्षेपके अंतर्गतता है ॥ इसते विक्षेपभी चिदाभासकी अवस्था नहि बनती ।

उत्तर—यद्यपि अज्ञान अर आवर्ण विक्षेपदी उत्पत्तिसें प्रथम सिद्ध हैं ॥ तौभी अज्ञान अर आवर्ण विक्षेपकीयां अवस्था हैं ॥ आत्मादीयां अवस्था नहि ॥ जिसते आत्मा असंग है।

शंका—विक्षेपदी उत्पत्तिसें प्रथमतौ विक्षेपहि है नहि इसते विक्षेप कीयां अवस्था अज्ञान अर आवर्ण कैसे होवे ॥ अवस्थावालेदे होयांहोयां अवस्था होतीयां हैं ॥ अवस्थावालेके अभाव होयांहोयां अवस्था नहि बनदीयां ॥ जैसे पुत्रके न उत्पन्न होयां-

होयां पुत्रदीयां ॥ बाल्क जोबनआदिक अवस्था नहि चनदी-यां ॥ तैसे आवर्ण अर विक्षेप चिदाभासदीयां अवस्था नहि बनदीयां ।

उत्तर—स्थूलरूपताकरके विक्षेपदी उत्पतिसें प्रथमविक्षेप का स्वरूप नहि यद्यपि ॥ तौभी सूक्ष्मरूपताकरके विक्षेपदी उ-त्पतिसें प्रथमविक्षेप विद्यमान है ॥ तिसकारणतें अज्ञान अर आवर्णकों विक्षेपदीयां अवस्थादा वर्णन करणा दोष नहि ।

शंका—अप्रसिद्ध सूक्ष्मरूपनूं अंगीकारकरके अज्ञान अर आवर्णकों विक्षेपदीयां अवस्था वर्णनकरणेते ॥ अधिष्टान रूप-ताकरके प्रसिद्ध जो ब्रह्म है ॥ तिसकीयां अवस्था हैं अज्ञान अर आवर्ण एह वर्णन कर्णा श्रेष्ट है ।

उत्तर—अधिष्टानरूपता करके प्रसिद्ध जो ब्रह्म है ॥ तिस-कीयां अवस्था जेकर कहें अज्ञान अर आवर्ण ॥ तौ संपूर्ण अव-स्थाका अधिष्टान ब्रह्म है ॥ संपूर्ण अवस्था ब्रह्मदीयां कहो ॥ अज्ञान अर आवर्ण दोवें अवस्था ब्रह्मदीयां किउ कहिता हैं ।

शंका—यद्यपि ब्रह्मविषे संपूर्ण कल्पित हैं। जिसतें ब्रह्म सं-पूर्ण अवस्थांदा अधिष्टान है ॥ तौभी विक्षेपदी उत्पतिसें पाछे हो-नवालीयां जेडीयां अवस्था हैं चार तिन्नाका जीवविषे अनुभव होता है ॥ इसतें ओह चारो अवस्था जीवकीयां हैं ॥ ब्रह्मविषे ओन्नाका अनुभव नहि होता इसतें ओह चारो ब्रह्मदीयां अव-स्था नहि ॥ सो चारअवस्था कौन हैं ॥ मैं संसारी हां ॥ एक अ-वस्था तो एह है ॥ अर मैं ज्ञानवान् हां ॥ एह दूसरी अवस्था

है ॥ अर मैं शोकसे रहितहां ॥ एह तीसरी अवस्था है ॥ अर मैं कृतकृत्य हां ॥ एक निरंकुशातृप्तिरूप चतुर्थ अवस्था है।

उत्तर—जैसे जीवविषे अनुभव होनेते जीवकीयां अवस्था चारेनूं मानता हैं॥ तैसे अज्ञान अर आवर्णकोंभी जीवविषे अनुभव होनेते जीवकीयां अवस्था मान॥जिसते जीव एह कहिताहै॥ मैं अज्ञानीहां ॥ इस प्रतीति करके अज्ञान जीवविषे भासता है ॥ अर ब्रह्मदी सत्ता अर भान मेरी दृष्टि करके हैनहि ॥ इसप्रतीति करके आवर्ण जीवविषे भासता है ॥ तांते अज्ञान अर आवर्ण जीवकीयां अवस्था अनुभव करके सिद्ध भईयां।

शंका—जे कर अनुभवकरके अज्ञान अर आवर्ण जीवकीयां अवस्था सिद्ध होतीया हैं॥ तौ पिछलियां आचार्यांने अज्ञान अर आवर्णकों ब्रह्मके आश्रय किउं वर्णन कीया है।

उत्तर—अधिष्ठान रूपता करके अज्ञान अर आवर्णका आश्रय ब्रह्म है॥ एह पूर्वलियां आचार्यांदा तात्पर्य है॥ अर अज्ञान अर आवर्णका अभिमानी जीव है ॥ इसते अज्ञान अर आवर्ण जीवकीयां अवस्था हैं॥ एह हमारा तात्पर्य है॥ इसते पिछलियां आचार्यांके वचनासाथ हमारे वचनाका विरोध नहि॥ जैसे आदिदीयां तिन्न अवस्था बंधका कारण हैं ॥ तैसे परोक्षज्ञान अर अपरोक्ष ज्ञानरूप अवस्था दो अज्ञानका कार्य आवर्ण निवृत्ति द्वारा मोक्षदा हेतु हैं॥ परोक्षज्ञानकरके असतापादक आवर्णदा कारण अज्ञाननाश होजाता है॥ अर अपरोक्ष ज्ञान करके अभानापादक आवर्णदा कारण अज्ञाननाश होजाता है॥ अर शोका

भाव अर निरंकुशा तृप्ति एह दो अवस्था ज्ञानका फलरूप हैं ॥
निद्राविक्षेपी अज्ञानापादक आवरणके नाश होयां होयां भ्रांति-
कल्पित जो जीवरूपता प्रतीत होती सी ॥ सो नाश होजाती है ॥
तिस जीवरूपतादे नाश होनेते मैं कर्ताहां मैं भोक्ताहां इत्यादि ल-
क्षण है जिसदा ॥ अर संसार है नाम जिसदा ऐसा जो शोक है
सो संपूर्ण नाश होजाता है संपूर्ण संसारके नाश होयांहोयां आ-
त्मादी नित्य मुक्तरूपता प्रतीत होती है ॥ तिसते निरंकुशा तृप्ति-
दीप्राप्ति होती है ॥ फर शोक कदी नहि उत्पन्न होता ।

शंका—ग्रंथदे आरंभविषे बृहदारण्यक उपनिषददी श्रुतिदे
अर्थ करणादी प्रतिज्ञा कीती सी तुसाने तिसकों छोडदीया ॥ अर
अवस्थासप्तांदा वर्णन कीता सो प्रसंगसें असंगत है ।

उत्तर—श्रुतिदे तात्पर्य कथनदे प्रसंगविषे तिसदां अंग रूप
सप्तअवस्था वर्णन कीतीयां हैं ॥ इसते अवस्थादा वर्णन प्रसं-
गमें असंगत नहि ॥ जिसते श्रुति अपरोक्षज्ञान अर शोकाभाव
रूप दो अवस्था आप वर्णन कर्ती है ॥ तिसविषे ऐसे जिज्ञासी-
के मनविषे आया जीवदीयां अवस्था दोई हैं ॥ जो श्रुति वर्णन
कर्ती है ॥ अथवा जीवदीयां अवस्था होरभी हैं ॥ तव हमने जी-
वदीयां सप्त अवस्था वर्णन कीतीयां तांते पंजां अवस्थांका अ-
धिक वर्णन करणा असंगत नहि ॥ जैसे कोई स्वामी किसी आ-
पने सेवकको कथन करे ॥ इस आभ्यागतकों भोजन करवाय
देओ ॥ तव तिस सेवकने तिस अभ्यागतकों चरण धोने वास्ते
जल दित्ता अर आसन दित्ता अर पतल दिती अर पानकर-
णेवास्ते जलदिता तो एह संपूर्ण सेवकका व्यवहार स्वामीकी

आज्ञासें विरुद्ध नहि होता ॥ अर मूर्खांकों तिसविषे शंका भासती है ॥ जो इस सेवकनें स्वामीकी आज्ञा नही मानी ॥ तैसे श्रुतिने जिज्ञासीकों दोअवस्था वर्णन कीतीयां अपरोक्ष ज्ञान अर शोकका अभावरूप ॥ तिसके अनकूल पंजअवस्था हमने होर वर्णन कीतीयां हैं ॥ तांते सतांअवस्थांदा निरूपण विरुद्ध नहि ।

शंका—पाछे तुसाने कहिया सी आत्मा स्वप्रकाशताकरके सदा अपरोक्ष है ॥ तांते आत्मा अपरोक्ष ज्ञानदा विषे होवे ॥ अर परोक्ष ज्ञानकाविषे न होवे ।

उत्तर—आत्मादी अपरोक्षता दोप्रकारदी है ॥ एक स्वप्रकाशरूपता करके अपरोक्षता है ॥ जिसते आत्मा आपनी सिद्धिविषे होर किसी साधनकों नहि चाहिता ॥ अर दूसरी आत्मादी अपरोक्षता एह है ॥ जो बुद्धिकरके आत्माकों स्वप्रकाश जानना ॥ तांते परोक्ष ज्ञानकालविषे भी आत्माकी स्वप्रकाश रूपताकरके जो अपरोक्षता है ॥ सो निवृत नहि होती ॥ जिसते परोक्ष ज्ञानकालविषे आत्मा स्वप्रकाश है ॥ ऐसे प्रतीति होती है ।

शंका—आत्मासें अभिन्न जो ब्रह्म है ॥ तिसविषे ज्ञानकों परोक्षता किसते है ।

उत्तर—आत्मरूपता करके ब्रह्मदा ज्ञान नहि होता अर ब्रह्मरूपता करके ब्रह्मदा ज्ञान होता है ॥ इसते ब्रह्मज्ञानकों परोक्षता है ।

शंका—ब्रह्म आत्मरूप है ॥ अर आत्मा सदा अपरोक्ष है ॥ तांते अपरोक्षरूप ब्रह्म आत्माविषे परोक्ष ज्ञान जो है सो भ्रमरूप है ।

उत्तर—ब्रह्मरूप आत्माविषे परोक्षज्ञानकों जो तूं भ्रमरूप कहिता हैं ॥ सो किसकारणकरके कहिता हैं ॥ ज्ञानकी भ्रमरूपताविषे कारण चार होते हैं ॥ एक तौ कारण एह है ॥ जो ज्ञानका बाधा होजाना ॥ जैसे सिपीविषे रूपज्ञानदा बाधा होजाना है ॥ दूसरा ज्ञानदाविषे प्रत्यक्ष न नजर आवना ॥ तीसरी अपरोक्ष रूपता करके ग्रहण योग्य पदार्थका परोक्ष रूपता करके ग्रहण होना ॥ चौथा ज्ञानदा जो विषा है तिसका कोईक अंश प्रतीत होना अर कोईक अंश न प्रतीत होना ॥ जेकर कहें पहला पक्ष तौ नहि बनदा ॥ जिसते परोक्षज्ञानदा बाधा नहि होता ॥ जैसे सिपीविषे रूपज्ञानदा बाधा भया सी नेदं रजतं इस ज्ञानकरके ॥ तैसे ब्रह्मनास्ति एह किसीप्रमाण करके जे प्रतीत होवे ॥ तद ब्रह्म अस्ति इस परोक्ष ज्ञानदा बाधा होवे ॥ सो तौ ऐसा प्रमाण कोई बलवाला नहि देखीता ॥ इसते ब्रह्म अस्ति इसपरोक्ष ज्ञानदा बाधा नहि होता ॥ अर द्वितीयपक्षभी नहि बनता ॥ जिसते कुरुक्षेत्रविषे स्थित जो पुरुष है ॥ तिसकों मथुरा प्रत्यक्ष नहि नजर आवती ॥ पर तिसको मथुरादा ज्ञान भ्रमरूप नहि ॥ किंतु मथुरादा ज्ञान तिसपुरुषकों परोक्ष रूप यथार्थ है॥अर जैसे पृथिवीविषे स्थितपुरुषकों स्वर्गदा जो परोक्ष ज्ञान है ॥ सो यथार्थ है ॥ स्वर्गदि प्रत्यक्ष रूपता करके न प्रतीत होयांहोयांभी ॥अर तीसरा पक्षभी नहि बनता ॥ जिसतें ब्रह्म परोक्ष है ॥ ऐसीप्रतीति नहि होई ॥ तद फेरब्रह्मज्ञानकों परोक्षरूपदा किउं कर हो॥ऐसा पुछें तौ श्रवण कर ब्रह्म अस्ति ऐसे सत्तामात्र रूपताकरके ब्रह्म भासना है ॥ अर अहंब्रह्म इसरूपता करके ब्रह्मदा स्वरूप नहि प्रतीत होता इसवास्ते अर्थात ब्रह्मज्ञानकों परोक्षता है ।

शंका—तिन्ना कारणाकरके ज्ञानकों भ्रमरूमता न होवे ॥ पर चौथे कारणकरके परोक्ष ब्रह्मज्ञानकों भ्रमरूपता बनती है ॥ जिसते परोक्षज्ञान विषे आत्म अंशदा ग्रहण नहि भया ॥ अर ब्रह्मअंशदा ग्रहण भया है ॥ जांते एक अंशदा ग्रहण भया ॥ अर एक अंशदा ग्रहण न भया ॥ तांते परोक्ष ब्रह्मज्ञानकों भ्रमरूपता सिद्ध भई ।

उत्तर—जेकर अंशदे ग्रहण करके अर एक अंशदे न ग्रहण करके ब्रह्मज्ञानकों भ्रमरूपता होवे ॥ तद घटपट आदिकादे ज्ञानकोंभी भ्रमरूपता होई चाहिये ॥ जिसते घटज्ञानकरके घट-दे संपूर्ण अंशांदा ग्रहण नहि होता ॥ घटदे अंतर जो अवयव हैं तिन्नांदे साथ नेत्रांका संबंध नहि होता ॥ इसते घटदे सर्व अंश नहि ग्रहण होते ।

शंका—घट सावयव पदार्थ है ॥ इसतें किसी अंशदे ग्रहण कीतीयां होयां किसी अंशदा अग्रहण वी वन जाता है ॥ पर ब्रह्म तां निरंश है ॥ इसतें ब्रह्मविषे अंशदा अग्रहण नहि बनता ।

उत्तर—दूरकरणे योग्य जो अंशां हैं ॥ सोई भई उपाधि ति-सकरके ब्रह्मवी अंशांवाला वनजाता है ॥ सो दूरकरणे योग्यकों न अंशां हैं ॥ ऐसे पुछें तां श्रवण कर ॥ दूरकरणे योग्य ब्रह्मविषे दोअंशां हैं ॥ एक असता १ दूसरा अभान २ परोक्षज्ञानकरके असता दूर होती है॥ अर अपरोक्षज्ञानकरके अभान दूर होता है॥ अपरोक्ष रूपता करके ग्रहण योग्यपदार्थविषे परोक्षज्ञान भ्रम-रूप नहि होता ॥ जैसे अपरोक्षरूप दशवें पुरुषविषे परोक्षज्ञान

भ्रमरूप नहि होता ॥ तैसे अपरोक्षरूप ब्रह्मविषैभी परोक्षज्ञान भ्रमरूप नहि होता ॥ जिसतैं अज्ञानका कार्य असत्तापादक आवरण दशम पुरुषविषै अर ब्रह्मविषै तुल्य है ॥ अर परोक्षज्ञानकरके तिसकी निवृत्ति भी तुल्य है ।

शंका—वाक्यतैं जेकर परोक्षज्ञान होता है ॥ तो अपरोक्ष ज्ञान किसतैं होता है ।

उत्तर—विचारसहित महावाक्यतैं अपरोक्षज्ञान होता है ॥ एह आतमा ब्रह्म है ॥ इस महावाक्यके अर्थदे भली प्रकार विचार कीताथां होयांहोयां प्रथम परोक्षता करके जानियां जो ब्रह्मसी ॥ तिसविषे आत्माके साथ अभिन्नरूपता साक्षात् करीती है ॥ जैसे दशवां तूं हैं ॥ इस वाक्यते दशमपुरुषने आपनी दशम रूपता साक्षात् करीती है ॥ विचारसहित वाक्यतें अपरोक्षज्ञानदी उत्पति जिसप्रकार होती है ॥ तिसनूं दृष्टांतसहित श्रवण कर ॥ जैसे शोकसहित रोंदे दशवें पुरुषकों देखकरके दयावान् पुरुषने कहियासी दशवां डुवा नहि ॥ तूं मत शोक कर॥तद तिस दशवें पुरुषने पुछया दशवां किथे है ॥ तद दयावान् पुरुषने कहिया दशवां इथेही है ॥ तद दशवां पुछता भया ओह कौन है ॥ तव दयावान् पुरुष कहिताभया तूंही दशवां हैं तद दशवां कहिताभया मैं कैसे दशवां हां ॥ तद दयावान् पुरुष कहिता भया गिण ॥ तद दशवां नवांनूं गिणता भया ॥ अर कहिता भया नों पुरुष मेरेको नजर आवते हैं ॥ तद दयावान् पुरुष कहिता भया नवांदे देखने वाला कौन है ॥ जो नवां को देखता है सो दशवां तूं हैं ॥ इसप्रकार विचारकरके दशम-

पुरुष एह जानता भया दशवां मैंहां ॥ दशवे पुरुष को जो एह ज्ञानभया है ॥ मैं दशवांहां ॥ सो ज्ञान विचारसहित वाक्यदे अर्थते उत्पन्न भया है ॥ इसते संशयरूप अर विपयरूप नहि ॥ जिसते आदि मध्यअंतविषे तिसकों नवांविषे संशय है नहि ॥ मैं दशवां एह जो वाक्यते उत्पन्न भया है ॥ ज्ञान ॥ सो कदीभी दूरनहि होता ॥ इसते ओह ज्ञान दृढ अपरोक्ष रूप है ॥ इसका दृष्टांत संपूर्ण अव श्रवणकर ॥जगत्‌दी उत्पत्तिसें पूर्व संपूर्ण जगत् सत्‌रूप ब्रह्ममात्र होता भया ॥ सो ब्रह्मसजातीय विजातीय स्वगतभेदसें रहित है ॥ इसते आदिलेकरके परोक्ष रूपताकरके ब्रह्मदी सतानूं जानयां प्रथम जिज्ञासीने॥ पाछे जीव रूपताकरके संघातविषे प्रवेश आदिरूप युक्तिदे विचारकरके ब्रह्मदी आत्मरूपतादी संभावना भई ॥ पाछेसे ब्रह्म तूं हैं ॥ इसवाक्य करके अद्वितीय ब्रह्म रूपता आपनी निश्चयकर्ता भया ॥ अर्थ एह जो मैं ब्रह्महां ॥ ऐसे साक्षात्कारकों प्राप्त होता भया ॥ जिसते ब्रह्मका लक्षण सच्चिदानंदरूपता आत्माविषे अपरोक्षकरके देखता भया ॥ पंजां कोशांदे आदि मध्यअंतविषे आत्मादे व्यवहार होयांहोयांहोयांभी आत्माकी सच्चिदानंदरूपता दूर नहि होती है ॥ इसते मैं सच्चिदानंद रूप ब्रह्महां ॥ इसज्ञानको दृढ अपरोक्ष रूपता है ॥ २० ॥

शंका—प्रथम विचारसहित केवल वाक्यते परोक्षज्ञान उत्पन्न होता है ॥ अर पाछे विचारसहित वाक्यते अपरोक्ष उत्पन्न होता है ॥ इस वार्ताकों तुसी कैसे जानते हो ।

उत्तर—तैतिरीआदिक उपनिषदांके अर्थ विचारद्वारा हम

जानते हैं ॥ सो प्रथम तैत्तिरी उपनिषद्की कथा श्रवण कर ॥ वरुणनाम एक ब्रह्मवेत्ता होता भया है तिसका पुत्र भृगुनामकरके होता भया ॥ सो भृगु ब्रह्म जिज्ञासाकों धारकरके पिताके पास प्राप्त होता भया ॥ अर कहिता भया ॥ हे पिताजी! मेरेकों ब्रह्म उपदेश करो ॥ तब वरुण कहिते भये ॥ हे पुत्र! जिसतें एह संपूर्ण भूत उत्पन्न होते हैं ॥ अर जिसकरके संपूर्ण स्थिति कों प्राप्त होते हैं ॥ अर जिसविषे संपूर्ण लयकों प्राप्त होते हैं ॥ सो ब्रह्म है ऐसे तूं जान ॥ इसवाक्यदे श्रवण करणे करके जगतदे जन्मआदिकांदा कारण रूप ब्रह्मनूं परोक्ष रूपकरके जानता भया ॥ पाछे तें पंजांकोशांदे विचारनूं करके आत्मरूप करके अपरोक्ष ब्रह्मनूं जानता भया ।

शंका—भृगु अर वरुणके संवादविषे वरुणने भृगुके तांई तूं ब्रह्म हैं ॥ ऐसा महावाक्यदा उपदेश तो नहि कीया ॥ तांते भृगुकों आत्मतत्वदा साक्षात्कार कैसे होता भया ।

उत्तर—यद्यपि तूं ब्रह्म है ॥ ऐसा महावाक्य भृगुके तांई वरुणने उपदेश नहि कीता ॥ तौभी आत्म साक्षात्कारदा कारण जो है पंजां कोशांदा विचार ॥ तिसकों कथन कर्ता भया तिसतें आत्म साक्षातकार भृगुकों होता भया है ।

शंका—अन्नमयआदिक पंजां कोशांदे विचार कीतियां होयां आत्मादा साक्षात्कार होवे ॥ पर ब्रह्मका साक्षात्कार कैसे होता भया ।

उत्तर—आत्मा ब्रह्मरूप है ॥ तांते पंजांकोशांदे विचारकरके आनंदरूप आत्मादे साक्षात्कारनूं प्राप्त होयकरके ब्रह्मका लक्ष-

ण जो है जगतदी उत्पत्तिस्थितिलयकारणतारूप तिसनूं आनंदरूप आत्माविषे जोडता भया ॥ आनंदतेई एह संपूर्ण भूत उत्पन्न होते हैं ॥ अर आनंद करकेही जीवते हैं ॥ अर आनंदविषेही लय होजाते हैं सुपुप्ति कालविषे ॥ ऐसे जानता भया ।

शंका—ब्रह्मदा लक्षण आनंदरूप आत्माविषे नहि बनदा ॥ जिसते ब्रह्म भिन्न है ॥ अर आत्मा भिन्न है ॥

उत्तर—आत्मा अर ब्रह्मका भेद नहि ॥ सच्चिदानंद ब्रह्म लक्षण को आत्मरूपता करके स्थिति श्रवण करणेतें ॥ ब्रह्म सच्चिदानंद रूप है ॥ एह जो ब्रह्मका स्वरूप लक्षण है ॥ तिसनूं कथन करके सो सच्चिदानंद लक्षण ब्रह्म पंचकोश रूप गुहा विषे स्थित है ॥ ऐसा कथन कीया ॥ तांते जानीदा है सच्चिदानंद रूप ब्रह्म आत्मा है ॥ जिसते पंचकोशरूप गुहाविषे स्थित आत्मा है इसप्रकार तैतिरीय उपनिषददे विचार करके एह जानीता है ॥जो भृगुकों परोक्ष ज्ञान पहिलां होता भया ॥ अर पाछेसें विचार करके अपरोक्ष ज्ञान होता भया है ॥ अर छांदोग्य उपनिषददे विचार करकेभी एह जानीता है ॥ जो परोक्ष ज्ञान पहिला होता है॥ अर विचार करके पाछेसें अपरोक्ष ज्ञान होता है ॥ सो छांदोग उपनिपददी कथा श्रवण कर ॥ ब्रह्माजी आपनी सभाविषे बैठे होयेहोये एह वाक्य कथन कर्ते भये ॥ जो आत्मा है ॥ तिसकों पापांदा स्पर्श कदी नहि होता ॥ अर तिसको विक्षेप प्राप्त कदी नहि होता ॥ अर आत्मा मृत्युसें रहित ॥ अर खाने पीनेकी इच्छासें रहित है॥ अर सत्यकाम है ॥ अर सत्य संकल्प है ॥ तिस वाक्यकों इंद्र श्रवण कर्ता भया ॥ तिस वाक्य करके परोक्ष

रूपता करके आत्मानूं जानता भया ॥ पाछेते विचार करके ति न्ना शरीरांकों आत्मरूपतादे निषेध करणेकरके तिन्ना शरीरांदा साक्षीरूप आत्मादे जानने वासते ॥ वारवारी गुरु जो हैं ब्रह्माजी तिनके पास प्राप्त होता भया ॥ अर ऐतरेय उपनिषदविषे भी एह बात निर्णय होती है ॥ जो प्रथम परोक्षज्ञान होता है॥पाछेते विचार करके अपरोक्ष ज्ञान होता है ॥ ऐतरेय उपनिषदविषे एह कथा है ॥ एह संपूर्ण जगत् उत्पत्तिसें पहिलां आत्मरूप होता भया ॥ अर आत्मासें भिन्न होर कुछभी सतायुक्त न होता भया॥इसवाक्य करके ब्रह्मदा लक्षण कथन करके पाछेसें एह कथन कीया ॥ में लोकांनूं रचां एह आत्मा कर्ता भया ॥ ऐसा आरंभ करके फेर एह कथन कीया ॥ आत्मादे तिन्ना स्थान हैं ॥ एक जाग्रत् १ दूसरा स्वप्न २ तीसरी सुषुप्ति ३ सो तिन्ने स्वप्नरूप हैं॥ परमार्थ दृष्टिकरके ॥ इस वाक्यकरके परमात्माविषे जगत्‌दे आरोपनूं कथन कीया ॥ अर फेर एह कथन कीया ॥ सो परमात्मा जन्मकों प्राप्त होता भया अर जिज्ञासाकों प्राप्त होय करके एह विचार कर्ता भया ॥ एन्ना पृथिवी आदिक पंजांभूतां की परमात्मासें भिन्न सता है के नहि ॥ इस विचारनूं करके परमात्मासें भिन्न किसीकी सता है नहि एह निश्चय कर्ता भया ॥ इस प्रकार आरोपित जगत्‌के निषेधनूं करके पाछेते एह कथन कीया ॥ सो आत्मा आपने आपनूं व्यापक ब्रह्मरूप देखता भया इसप्रकार आत्मादि ब्रह्मरूपता कथन कीती अर इसतें आगे ज्ञानदा साधन जो वैराग्य है ॥ तिसदी प्राप्तिदे वासते पुरुषदे शरीरविषे जीवदा चारमहीने वास अर स्त्रीदे शरीरविषे दशमहीने वास इसविषे अनेक प्रकारदे दुःख वर्णन कीते ॥ ओन्ना दुखांनूं

जानकरके जब वैराग्यदी प्राप्ति होइगई तद कौन है एह आत्मा जिसदी हम उपासना करें ॥ इसतें आदि लेकरके जो वाक्य है तिन्ना करके तत्पदार्थ अर त्वंपदार्थका शोधन करके चैतन्यरूप आत्मादी ब्रह्मरूपतानूं निश्चय कर्ता भया जिज्ञासी ॥ इसीप्रकार होरणा उपनिषदांविषेभी एह कथन कीया है ॥ अवांतर वाक्या करके परोक्ष ब्रह्मज्ञान होता है ॥ अर महावाक्यदे विचार करके अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान होता है।

शंका—महावाक्यदे विचार करके अपरोक्ष ज्ञान होता है ॥ इसबातनूं तुसी आपने मुखसें बनायबनाय कहितेहो ॥ अर पिछलियां आचार्यांने तौ इसअर्थको नहि कथन कीया ॥ तांते तुमारे कहिनेकें कोई नहि मानता।

उत्तर—वाक्यवृत्तिनाम ग्रंथविषे शंकराचार्यजीने एह अर्थ कथन कीया है महावाक्यतें अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान होता है ॥ इसते ब्रह्मदी अपरोक्षताविषे विवाद नहि ॥ तांते ऐसे मत कहु तुसी आपने मुखसें बनायबनाय कहितेहो ॥ तांते तिन्नां वाक्यवृत्तिदे श्लोकांनूं श्रवण कर ॥ अहं शब्दकरके अर अहं इस ज्ञानकरके जो प्रतीत होता है ॥ अंतःकरणरूप उपाधि सहित चैतन्यरूप आत्मा सो त्वंपददा वाच्यअर्थ है ॥ अर परोक्षता रूप धर्म करके युक्तजगतदा कारण माया उपाधिवाला सर्वज्ञतादि धर्मांवाला सच्चिदानंद रूप आत्मा तत्पददा वाच्य अर्थ है ॥ ऐसे तत्पद अर त्वंपदके वाच्य अर्थनुं जानकरके ओन्नाके अभेदवासते लक्षणा करणी योग्यहै ॥ सो लक्षणा महावाक्यविषे भागत्याग रूप है ॥ जैसे सोयं देवदत्तः ॥ इस वाक्यविषे भागत्याग लक्षणा है ॥

अर जहत्लक्षणाभी नहि ॥ अर अजहत्लक्षणाभी नहि ।

शंका—महावाक्य विषे लक्षणा किउं आश्रय करणी योग्य है ।

उत्तर—जिसते वाच्य अर्थदी एकता नहि बनती ॥ इसते लक्षणा करणी योग्य है ॥ आत्मरूपता अर परोक्षता एकको नहि बनती ॥ अर सद्वितीयता अर पूर्णता एकको नहि बनती जिसकारणते ॥ तिस कारणते लक्षणा आश्रय करणी योग्य है ॥ लक्षणातें विना अखंडार्थ बोध नहि होता ।

शंका—जैसे गौनूं लेआ ॥ इसते आदिलेकरके जो वाक्य हैं ॥ तिन्ना वाक्याविषे लक्षणाते विनाहि वाक्यदे अर्थदा ज्ञान होता है ॥ तैसे महावाक्यविषेभी लक्षणासें विनाहि वाक्यदे अर्थदा ज्ञान किउं न होवे ।

उत्तर—गौनूं लेआ इत्यादिकांविषे पदांने स्मरण करवाये जो हैं आकांक्षा योग्यता सानिध्यादिवाले गौसें आदिलेकरके पदार्थ ॥ तिन्नादा परस्पर संबंध वाक्यदा अर्थरूपताकरके अंगीकार करीता है अर जैसे नील महत् सुगंधवाला कमल है ॥ इसतें आदिलेकरके वाक्यांविषे नीलता आदिक गुणकरके विशिष्ट कमलकों वाक्यदा अर्थ रूपता करके अंगीकार करीता है ॥ तैसे महावाक्यविषे संबंध अर विशिष्ट एन्ना दुहांविच्चों एककों वाक्यदी अर्थ रूपता नहि अंगीकार करीती ॥ किंतु सजातीय विजातीय स्वगतभेदते रहित वस्तुमात्र रूपकरके वाक्यदा अर्थ ज्ञानवान् अंगीकार कर्ते हैं ॥ इसतें महावाक्यविषे लक्षणा अंगी-

कार करणी योग्य है ॥ जब लक्षणा अंगिकार कीती तब त्वंपददा वाच्य अर्थ जो सो अंतःकरण उपाधीसहितचैतन्यरूपआत्मा तिसविच्चों अंतःकरणउपाधिका त्यागकर देना ॥ अर चैतन्यरूपआत्मादा ग्रहण करणा ॥ अर तत्पददा वाच्य अर्थ जोसी जगत् कारण सर्वज्ञतादि सहित अद्वयानंद रूप आत्मा तिसविच्चों जगत्कारण सर्वज्ञानादि रूपदा त्याग करदेना ॥ अर अद्वयानंद रूप आत्मादा ग्रहण करणा ॥ इसप्रकार एक भागके त्याग कीतीयां होयां अर एक भागके ग्रहण कीतीयां होयां जो ज्ञान होता है ॥ तिसकों श्रवण कर ॥ जो चैतन्यरूप आत्मा सभनाते परे बुद्धि आदिकांदा साक्षीरूपता करके प्रतीत होता है ॥ सो अद्वयानंद स्वरूप है ॥ अर्थ एह अद्वितीय आनंद स्वरूप परमात्मा है ॥ अर जो अद्वितीय आनंदरूप परमात्मा है सो बुद्धि आदिकांदा साक्षी चैतन्य एक स्वभाव है ॥ इस प्रकार अखंडार्थका बोध होता है ।

शंका—ऐसे अखंड अर्थ बोधसें क्या फल प्राप्त होता है ।

उत्तर—इसप्रकार दुआंदा परस्पर तादात्म्य बोध जब होता है ॥ तब त्वंपदार्थदी जो भ्रमकरके अब्रह्मरूपता प्रतीत होती सी ॥ सो दूर हो जाती है ॥ अर तत्पदार्थदी जो परोक्षता सी भ्रमसिद्ध सोभी दूर होजाती है ।

शंका—तिसतेभी क्या फल प्राप्त भया ।

उत्तर—जो तिसते फल प्राप्त होता है ॥ सो श्रवणकर ॥ बुद्धिआदिकांदा साक्षीजो आत्मा है सो पूर्णानंद रूपता करके

स्थित होता है ॥ दुःखरूपता अर परिछिन्न रूपता तिसकी नष्ट होजाती है ।

शंका—संकेतदे बलकरके यथार्थ अनुभवका जो साधन होवे तिसका नाम शास्त्र है ॥ ऐसे शास्त्रकार शास्त्रदा लक्षण कर्ते हैं ॥ इसते वाक्यकों अपरोक्ष ज्ञान कारणता नहि बनती तुसी कैसे कहिते हो वाक्य अपरोक्ष ज्ञानदा कारण है ।

उत्तर—तेरेकों सिद्धांतदे रहस्यदी खबर है नहि ॥ इसतें तूं वाक्यतें अपरोक्ष ज्ञान नहि मानता ।

शंका—सिद्धांत आपने घरमें बैठो ॥ हम तां युक्तिकरके अर्थका निर्णय कीता चाहिते हैं ॥ सो युक्तिकरके तां वाक्यकों परोक्षज्ञान कारणता प्रतीत होती है ॥ जैसे स्वर्गआदिकांदा कथन करणेवाला जो वाक्य है तिसवाक्यते स्वर्गआदिकांदी परोक्ष रूपता करके प्रतीति होती है ॥ तैसे महावाक्यभी वाक्य है ॥ तिसते अपरोक्ष अर्थ अर्थकी प्रतीति नहि होती ।

उत्तर—इह नियम नहि जो सर्ववाक्यते परोक्ष अर्थदी प्रतीति होती है ॥ जिसते दशवां तूं हैं ॥ इसवाक्यते अपरोक्ष अर्थदी प्रतीति होती है ॥ तैसे महावाक्यतेभी अपरोक्ष अर्थदी प्रतीति होती है ॥ त्वंपदार्थ जो है जीव सो स्वभावते अपरोक्षरूप है ॥ तिसको जब ब्रह्म होनेकी इछा भई तब तिसने महावाक्य श्रवण कीया ॥ सो महावाक्य जेकर परोक्षज्ञानकों उत्पन्न करे तब तिसदी प्रथम सिद्ध जो अपरोक्षता सो ॥ सो नाश होजावे ॥ इसतें एह जो तूं कहिता है महावाक्यतें परोक्ष ज्ञान उत्पन्न होता है युक्तिकरके सो एह तेरी युक्ति बडी सुंदर है॥ इस-

दी महिमा कुछ नहि कहिजांदी ॥ एह जेडा वचनसी लोकांदा वाधेदी इछा करणेवालेदा मूल वीनाश होगिया ॥ सो तेरी कृपा-करके अर्थवाला होया अज ॥ जिसते ब्रह्मभाव रूपबाधेदी इछा करणवाला जो जीव सी तिसदा मूलरूप जो प्रथम सिद्ध अपरो-क्षता सी ॥ सोभी नाश होगई ।

शंका—जीवकी अपरोक्षता तौ बनती है जिसते जीव उपा-धिवाला है ॥ सो उपाधि अंतःकरण है ॥ अर ब्रह्मकी अपरोक्ष-ता नहि बनती ॥ जिसते ब्रह्म उपाधिसें रहित है ।

उत्तर—ब्रह्म उपाधिसें रहित नहि ॥ जीवकों जो ब्रह्मरूप-तादा ज्ञान होता है ॥ सो ज्ञान उपाधि सहित वस्तुविषे है ॥ तां-ते तिसज्ञानदाविषे जो ब्रह्म है सोभी उपाधिवाला है ॥ जिसते विदेहमुक्तिसें प्रथम उपाधिका अभाव नहि होता ।

शंका—तौ फेर जीवब्रह्मदी उपाधि भिन्नभिन्न कही चाहीये ।

उत्तर—अंतःकरणसहितता जीवभावविषे उपाधि है ॥ अं-तःकरणरहितता ब्रह्मभावविषे उपाधि है ।

शंका—अंतःकरण संबंधकों भावरूप होनेते उपाधिता बन जाती ॥ अर अंतःकरणरहितताकों अभावरूप होनेते उपाधिता नहि बनती ।

उत्तर—जितनाकाल जीव है ॥ तितनाकाल अंतःकरण स-हितता है जैसे ॥ तैसे जितनाकाल ब्रह्म है तितना काल अंतःक-रण रहितता है ॥ तांते एह जो उपाधिका लक्षण है ॥ जितनाका-ल उपहित होवे ॥ तितनाकाल जो स्थित होवे अर उपहितदा इ-

तयांमे भेद करे सो अंतःकरण सहितता अर अंतःकरण रहितता एन्हा दुयांविषे एक जेसा है ॥ ताते जैसे अंतःकरण सहितता उपाधि है जीवभावकी ॥ तैसे अंतःकरण रहितताभी उपाधि है ब्रह्मभावकी ॥ भावरूपता अर अभावरूपता करके अंतःकरण सहितता अर अंतःकरणरहितताके भेद होयांहोयांभी उपाधिरूपताविषे भेद कुछ नहि ॥ जैसे लोहेदी बनीहोई एक बेडी है ॥ अर एक स्वर्णदी बनी होई बेडी है ॥ तिन्हा दुहांदा स्वर्णरूपता करके अर लोह रूपता करके भेद होयांहोयांभी बेडीरूपविषे भेद कुछ नहि ॥ लोहेदी बेडी जिसनूं पई होई है ओहबी केदी है॥अर स्वर्णदी बेडी जिसकों पई होई है ओहभी कैदी है ॥ तैसे अंतःकरण सहिततावालाभी उपाधिवाला है॥ अर अंतःकरणरहिततावालाभी उपाधिवाला है॥ जैसे भावरूपउपाधि ब्रह्मज्ञानदा कारण है ॥ तैसे अभावरूपउपाधिकोंभी ब्रह्मज्ञानविषे कारणता है॥इसअर्थदे दृढकरणेनूं शंकराचार्यजीने भाव अर अभाव दुयांकों ब्रह्मज्ञानकी साधनता कही है॥ दोप्रकार करके वेदांताकी प्रवृत्ति है ॥ एक विधिमुखता करके एक निषेधमुखता ता करके विधिमुखता करके प्रवृत्ति तो एह है ॥ जो वेदांतउपदेश कते है॥ब्रह्म सत्यरूप है॥ब्रह्म चैतन्यरूप है॥ब्रह्म आनंदरूप है ॥ अर निषेधरूपता करके वेदांतोंकी प्रवृत्ति एह है जो नेतिनेति करके अनात्मप्रपंचदा निषेध करणा ब्रह्मविषे ।

शंका—जेकर वेदांत अनात्मप्रपंचदे निषेधद्वार ब्रह्मकों जनावते हैं ॥ तद अहंशब्ददा अर्थ जो कूटस्थ है ॥ तिसकाभी निषेध होवेगा ॥ ताते ब्रह्म अहं अस्मि एह समानाधिकरणता करके ज्ञान न उदय होवेगा ॥ अर्थ एह जो कूटस्थ अर ब्रह्मका अ-

भेद ज्ञान न होवेगा जिसते अहं शब्ददा अर्थ जो कूटस्थ है तिसका त्याग करदिता है ।

उत्तर—संपूर्ण अहंशब्ददे अर्थदा त्याग नहि करीता॥ जिसकारणते भागत्याग लक्षणा करके अहंशब्ददे अर्थदा एक अंश त्याग्या है जडरूप ॥ अर एकअंश जो है चैतन्यरूप कूटस्थ तिसका त्याग नहि होता ॥ इसतें अहंब्रह्म एह ज्ञान उत्पन्न होता है ॥ अंतःकरणमात्र अंशदे त्यागनेते वाकी रहिया जो चिदात्मा साक्षी रूप तिसविपे मैं ब्रह्महां इस महावाक्य करके ब्रह्मरूपतादा अनुभव होता है ।

शंका—अंतःकरणसें रहितकेवल आत्माकों स्वप्रकाश होनेते ॥ सो वुद्धि वृत्तिदाविपे नहि होता ।

उत्तर—स्वप्रकाश आत्मा साक्षीरूप घटादिकांकी न्यांई वुद्धि वृत्तिदाविपे होता है॥ जिसते मैं स्वप्रकाश हां ऐसे वुद्धिदी वृत्ति उदय होती है ।

शंका—वुधिदी वृत्तिदा जो विषे होता है सो दृश्य होता है ॥ तिसकों स्वप्रकाशता नहि वनता ।

उत्तर—वुद्धिवृत्तिविषे प्रतिबिंब भावकों प्राप्त भया जो चैतन्य तिसका नाम फल है॥ तिस फलका जो विषे है सो स्वप्रकाश नहि होता अर सो ईदृश्य होता है ॥ साक्षीरूप आत्मा फलदा विपे नहि ॥ अर वृत्तिदा जो विषे है ॥ तिसदी स्वप्रकाशता दूर नहि होती ॥ ऐसा पूर्वल्या आचार्यांने मान्या है ॥ वृतिने अज्ञान नाश करीता है ॥ अर फलने तिस पदार्थकों प्रकाशीता है ॥

साक्षी तौ आपहि प्रकाशरूप है ॥ तिसकौं फल नहि प्रकाशता ॥ अर अनात्म पदार्थ जो हैं घटादिकसो फलदांभी विषे होते हैं ॥ अर वृत्तिकांभी विषे होते हैं ॥ वृत्तिने अज्ञानकौं नाश करीता है॥ अर फलने घटादिकांकौं प्रकाशीता है ॥ जिसते घटादिकांकौं जडरूप होनेते प्रकाश रूपता है नहि ॥ अर ब्रह्मविषे अज्ञानदे नाश वासते वृत्तिमात्रदी प्राप्ति होती है॥जिसते अज्ञानकरके ब्रह्म आछ्या होया है ॥ इसते अज्ञानदे नाश वासते वृत्ति चाहिती है ॥ महावाक्यजन्य अहं ब्रह्म अस्मि इस वृत्तिने ब्रह्मविषे अज्ञान नाश करीता है ॥ अर ब्रह्मकौं आपही प्रकाशरूप होनेते तिसविषे फलदी अपेक्षा नहि ॥ इसते वृत्तिविषे प्राप्त होयाहोया चिदाभास ब्रह्मदे प्रकाशने विषे समर्थ नहि होता ॥ जैसे घटादिक पदार्थांदे देखने वासते नेत्र अर दीपक दोवें चाहीते हैं ॥ अर दीपकके देखने विषे एक नेत्रहि चाहीते हैं ॥ दीपक हथविषे पकड्या होयाभी दीपकदे देखने विषे सहायता कुछ नहि करता ॥ तैसे ब्रह्मदे अज्ञान नाशवासते वृत्ति एक चाहिती है ॥ अर वृत्ति विषे विद्यमानभी चिदाभासरूप फल ब्रह्मदे प्रकाश करणेकौं समर्थ नहि होता ॥ जैसे घटादिकांदे प्रकाशनेकौं समर्थ होता है ॥ इसते चिदाभास ब्रह्मकेसाथ अभेद होजाता है ॥ ब्रह्मसें भिन्न होकरके नहि प्रकाशता ॥ जैसे अति तिखी धुपविषे स्थित हूयाहूया दीपक धुपकेसाथ एकतानूं प्राप्त होजाता है धुपसें भिन्न होकर धुपदे प्रकाशनेकौं समर्थ नहि होता ।

शंका—ब्रह्म फलदाविषे नहि होता ॥ अर वृत्तिदाविषे होता है ॥ इसविषे क्या प्रमाण है ।

उत्तर—इसविषे वेद प्रमाण है ॥ ब्रह्मबिंद नाम जो उपनिषद है ॥ तिसविषे एह कथन कीया है ॥ निर्विकल्प अर अनंत अर हेतुसें रहित अर दृष्टांतसें रहित अप्रमेय अर अनादि जो परम शिव है ॥ तिसनूं जानकरके ब्रह्मरूप होजाता है ॥ इस उपनिषद विषे जो अप्रमेय शब्द है ॥ तिस करके एह कथन कीया है ॥ ब्रह्म फलदाविषे नहि ॥ अर कठवली उपनिषदविषे एह कथन कीया है ॥ जिस ब्रह्मविषे सजातीय विजातीय स्वगतभेद किंचित नहि ॥ सो ब्रह्म मनकरके जानने योग्य है ॥ इसवाक्य करके एह प्रतीत होता है ब्रह्म बुद्धिवृत्तिका विषे है ॥ तांते ब्रह्म फलदाविषे नहि ॥ इसविषे ब्रह्मबिंदुउपनिषदका वाक्य प्रमाण है अर ब्रह्म बुद्धिवृत्तिकाविषे है ॥ इस विषे कठवली उपनिषदका वाक्य प्रमाण है ॥ ऐसे व्यवस्था कीत्यां होयां दुहां वचना का परस्पर विरोध निवृत होजाता है ।

प्रश्न—आत्मानूं जेकरजाने इसते आदि लेकर जो बृहदारण्यकका मंत्र आदि विषे तुसां कथन किआ है तिसके अर्थ करणेके समे एह तुसा कथन किया है अपरोक्ष ज्ञान अर शोकदा अभाव एह दो अवस्था जीवदीयां इसमंत्रने कथन करीतीयां हैं ॥ तिस विषे हम पूछते हैं अपरोक्ष ज्ञान मंत्रदे कितने अंशने कहीता है ॥ अर शोकदा अभाव मंत्रदे कितने अंशने कहोता है ॥

उत्तर—मंत्रदे पूर्वार्धने अपरोक्ष ज्ञान कथन करीता है ॥ अर मंत्रदे दूसरे अर्द्धने शोकदा अभाव कथन करीता है ॥ सो अपरोक्ष ज्ञानका एह स्वरूप है ॥ सच्चिदानंद लक्षण ब्रह्मसें अभिन्न बुद्धि आदिकांदा साक्षी आत्मानूं जानना ।

शंका—ऐसे जाननेका नाम लेकर अपरोक्ष ज्ञान है॥ तो ओह अपरोक्ष ज्ञान एकवारी वाक्यदे विचारकरके होता है॥ तां-ते श्रवण मननदा वारंवार कर्तव्य जो व्यासजी सूत्रां विषे कथ-न करे हैं॥ सो जिज्ञासीने न करने चाहिये।

उत्तर—यद्यपि एक वारी महावाक्यदे विचार करके अपरो-क्ष ज्ञान होता है॥ पर तौभी ओह दृढ नहि होता॥ ताते ज्ञान दी दृढता दे वासते वारंवार श्रवण मनन आदिक करणे ऐसा श्रीम-त शंकराचार्यजीने कथन कीया है॥ इसते एकवारी महावाक्यदे विचार करके अपरोक्ष ज्ञानदी उत्पति होयां होयांभी पाछेते ति-स ज्ञानदी दृढतादेवासते वारंवार श्रवण मनन आदिकरणे जिज्ञासीयांने।

शंका—शंकराचार्यजीने किसवाक्य करके वारंवार श्रवण मनन आदिकांदी कर्तव्यता कही है।

उत्तर—वाक्यवृति नाम ग्रंथ विषे एह शंकराचार्यजीदा व-चन है॥ अहं ब्रह्म इस महावाक्यदे अर्थदा ज्ञान जितना काल-दृढ नहोवे॥ तितना काल शम दम आदिक साधना सहित होय-करके जिज्ञासी श्रवण मनन आदिकांदि अभ्यासनूं करे।

शंका—वेदवाक्य करके उत्पन्न भया जो ज्ञान है॥ तिसदी अदृढता किसकारणते है।

उत्तर—तिसदी अदृढतादे तिन्न कारण हैं॥ एकतां श्रुति-आं दी अनेकता॥ अर दूसरा अखंड एकरस अद्वितीय ब्रह्मकों सर्व लोकों करके न प्रसिद्ध होनेते तिसदी असंभावना॥ अर ती-

सरा विपरीत भावना ॥ अर्थ एह मैं कर्ताहां मैं भोक्ताहां इस प्र-तीतिकी दृढता ॥ एन्ना तिन्ना कारणासें अपरोक्ष ज्ञानकी अदृढ-ता होती है ॥ तांते अपरोक्ष ज्ञानदी दृढतादेवासते वारंवार श्र-वण आदिक कीते चाहीये ॥ एह जो अपरोक्ष ज्ञानदी अदृढतादे कारन हैं तिन्न॥ तिन्नादी तिन्नाही कारणा करके निवृत्ति होती है॥ सो श्रवण कर ॥ श्रुतीयांदी अनेकता करके जो अदृढता है सो एह है॥जेसे कर्मकांडविषे वेददीयांशाखादे भेद करके कर्मदा भेद होता है ॥ सो इस प्रकार है ॥ ऋग्वेद करके होत्र नाम कर्म हो-ता है ॥ अर यजुर्वेद करके अध्वर्यव नाम कर्म होता है ॥ अर सा मवेद करके उद्गीथ नाम कर्म होता है ॥ अर जैसे कामनादे भेद करके कर्मदा भेद होता है ॥ सो इस प्रकार है ॥ वर्षादी का-मना वाला कारीरी नाम यज्ञनूं करे ॥ अर बहुते जीवनेदी का-मना वाला शतकृष्णलनाम यज्ञनूं करे तैसे उपनिषदांविषे क-थन करीदा जो ब्रह्म तत्व है सो भिन्न भिन्न है ॥ ऐतरेयउपनिष-द् विषे कहीता है जो ब्रह्म चैतन्य रूप है ॥ अर तैतरीयउपनिषद विषे कहीता है जो ब्रह्म आनंद रूप है ॥ अर छांदोगउपनिषद विषे कहीता है जो ब्रह्म सत्‌रूपहै ॥ अर किसी जगाशोकनिवृत्ति रूप फल श्रवण करीता है ॥ अर किसी जगा पापनिवृत्तिरूप फल श्रवण करीता है ॥ अर किसी जगा जन्म मरण निवृत्ति रूप फल श्रवण करीता है॥ तांते फलकाभी भेद है ॥ अर प्रतिपाद्य ब्रह्मवस्तुकाभी भेद है ॥ ऐसीयां शंका जिसकों उदय होतीयां हैं ॥ तिसकों ब्रह्मका दृढ अपरोक्ष ज्ञान नहि ॥ तांते एन्ना शंकादे निवारण करणे वासते वारंवार श्रवण कीया जाहीता है ॥ श्रवण करके एह शंका संपूर्ण नाश होजातीयां हैं ॥ श्रवणका क्या लक्ष-

ण है ॥ ऐसा पूछे तां श्रवण कर ॥ संपूर्ण उपनिषदांदा आदि मध्य अंतविषे आत्मा ब्रह्म स्वरूप है ॥ अर सच्चिदानंद रूप है ॥ तिस विषे द्वैत सत्ता कदी नहि भई ॥ इस अर्थविषे तात्पर्य है ॥ ऐसा जो निश्चय है तिसका नाम श्रवण है ॥ ऐसा श्रवण शारीरक भाष्यके प्रथम अध्यायविषे कथन कीया है ॥ अर अर्थदी असंभावनादी निवृत्तिदेवास्ते मनन शारीरकभाष्यदे दूसरे अध्यायविषे कथन कीया ॥ ब्रह्मतत्त्वविषे संपूर्ण शंकादे दूर करणे करके बुद्धिदी स्थिरतादा कारण जो अनेक प्रकारदीयां युक्तीयां हैं ॥ तिन्ना करके अखंड अद्वितीय ब्रह्मदी संभावना रूप मनन कथन कीता है ॥ तांते एह सिद्ध भया ॥ मनन करके बोधदी अदृढतादा कारण असंभावना नाश होजाती है ॥ अब पिपरीत भावनानूं अर तिसदी निवृत्तिदे साधननूं श्रवण कर विपरीतभावना दोप्रकारकी है ॥ एकतौ एह है ॥ अन्वयव्यतिरेक करके आत्माकों देह आदिकांसे भिन्न जानियां होयांहोयांभी अनेक जन्मांदे दृढ अभ्यास करके देह आदिकांविषे वारंवार क्षणक्षणविषे अहंबुद्धिका उदय होना ॥ अर दूसरी विपरीत एह है॥ अचिंत्य रचना रूपताकरके प्रपंचदी मिथ्या रूपतादे अनुभव होयांहोयांभी अनेक जन्मांदे दृढ अभ्यास करके जगतविषे वारंवार क्षणक्षणविषे सत्यबुद्धिदा उदय होना ॥ सो विपरीत भावना दोप्रकारकी चितदी एकाग्रताते नाश होजाती है ।

शंका—विपरीत भावनादे नाशदा कारण चितदी एकाग्रता किससाधनते प्राप्त होती है।

उत्तर—चितदी एकाग्रता दुहसाधनांते प्राप्त होती है ॥ एक-

तां सगुण ब्रह्मदी उपासनाते अर दूसरा ब्रह्म अभ्यासते ॥ दो-प्रकारके पुरुष हैं एह तो ऐसे हैं जिन्नाने निर्गुण ब्रह्मतत्वदा उपदेश अजे श्रवण नहि कीया तिन्नाकों सगुण ब्रह्मदी उपासनाते चितदी एकाग्रता प्राप्त होती है ॥ इसीकारणते वेदांत शास्त्रोंविषे उपासनादे विचार कीते हैं अनेक प्रकारके ॥ अर दूसरे पुरुष ऐसे हैं ॥ जिन्नाने निर्गुण ब्रह्मका उपदेश श्रवण करलीया है ॥ अर सगुण ब्रह्मकी उपासना नहि प्रथम कीती होई ऐसे जो पुरुष हैं तिन्नाके चितकी एकाग्रता ब्रह्म अभ्यास करके होती है ॥ ब्रह्मअभ्यासदा क्यास्वरूप है ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ जगत्दी मिथ्यारूपता अर देह आदिकांदी अनात्मरूपतादा चिंतन करणा । अर्थ एह जो मन मैं होर संकल्प कोई उदय न होना ॥ इसी चिंतामैं जलता न रहणा अर मुखसें जद कुछ कथन करणा तव एही कथन करणा जगत् मिथ्या है अर देह आदिक अनात्मा हैं ॥ अर जद आपने जैसयांके साथ मिलना तव परस्पर एहि निर्णय करणा जगत् जो मिथ्या है अर देह आदिक अनात्मा हैं ॥ एन्ना तिन्नाका नाम एक परता है ॥ अर एन्ना तिन्नाका नाम ब्रह्मअभ्यास है ॥ ऐसा बुद्धिमान जानते हैं ॥ एह ब्रह्मअभ्यास वसिष्ठनाम ग्रंथके उत्पत्ति प्रकरणमैं लीलाके प्रसंगविषे कथन कीया है ॥ अर श्रुतिभी कथन कर्ती है ॥ ब्रह्म होनेकी इछा जिस जिज्ञासीकों है ॥ सो ब्रह्मचर्यआदि साधना करके युक्त हूयाहूया श्रवण मनन करके आत्मानूं ब्रह्मरूप जानकरके ब्रह्म अर आत्मादी एक रूपतादे ग्रहण करणेवाली जो चितकी वृत्ति है ॥ तिसदी नदीधारादी न्यांई प्रवाहरूपतानूं करे अर अनात्म पदार्थांनु विषे करणेवालेजो शब्द हैं तिन्नानूं कथन न करे॥आपने मुख

करके अर मनकरके अनात्मपदार्थांका चिंतन न करे ॥ जिस्ते अनात्म पदार्थांदे चिंतन करणेमें केवल मनकों थकेवां होता है ॥ अर अनात्मपदार्थांके कथन करके वाणीनूं थकेवांहोता है ॥ अर गीतादी वाक्यभी चित्तदीएकाग्रतानूं कथन कर्ता है ॥ हे अर्जुन! जेहपुरुष मैं सच्चिदानंद रूप ब्रह्महां ॥ इस ज्ञानकरके मेरेसे अभिन्न हूयेहूये अभेदरूपकरके मेरा चिंतन कर्ते होयेहोये मेरी उपासना कर्ते है ॥ अर्थ एह जो सर्वकालांविषे मेरा रूप होयेहोये स्थित होते हैं ॥ इस प्रकार सदा मेरेविषे चितदे स्थित करणेवाले जेहे पुरुष हैं ॥ तिन्ना पुरुषांकों आत्मरूपता करके चिंतन कों प्राप्त हूयांहूयां मैं ॥ तिन्ना पुरुषांकी विपरीत भावनाकों नाश करदेताहां अर तिन्नापुरुषांकों अपरोक्ष दृढ बोधमें सिद्ध करदेतांहां एह जो बृहदारण्य उपनिषदकी श्रुति है ॥ अर गीतादी स्मृति हैं ॥ सो दोवें सदाही आत्माविषे चितदी एकाग्रतानूं कथन कर्तीयां हैं ॥ विपरीतभावनादे नाशवास्ते।

शंका—देहआदिकांकों आत्मरूप जानना अर जगतकों रूप जानना एह विपरीत भावना कैसे है।

उत्तर—विपरीत भावनाका लक्षण इसविषे आवता है ॥ तांते एह विपरीत भावना है ॥ विपरीत भावनादा क्या लक्षण है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ जो वस्तु जिस रूपकरके स्थित है ॥ तिसवस्तुनूं तिसरूप करके न जानना अर होर रूपकरके जानना तिसका नाम विपरीत भावना है ॥ जैसे सिप्पी सिप्पीरूपता करके स्थित है ॥ तिसकों सिप्पी न जानना अर रूप्पा जानना ॥ होर दृष्टांत ॥ जैसे मातापिताकों शत्रुरूप जानना ॥ अब दार्ष्टांत

श्रवण कर आत्मा वास्तवसें देह आदिकांते भिन्न है ॥ तिसकों देह आदिरूप जानना ॥ अर जगत् वास्तवसे मिथ्या है ॥ तिसकों सत्यरूप जानना ॥ सो एह विपरीत भावना है तिस विपरीत भावनाका तत्व भावनाकरके नाशहोजाता है ॥ तत्वभावना कहीये ॥ आत्मादी देह आदिकांते भिन्नभावना अर जगतूदी मिथ्यारूप भावना ॥ तांते विपरीत भावनादे नाशवासते जिज्ञासीने दिनरात्र उठदांयां वैठदांयां जागदांयां सुतांयां आत्मादो आदिकांते भेद चिंतन कीया चाहिये ॥ अर जगत्की मिथ्यारूपता चिंतन करी चाहिये ।

प्रश्न—जैसे गायत्री आदिक मंत्रांदे जपकरणेविषे अर देवतादे ध्यान करणेविषे पूर्वमुख आदि नियम चाहीते है ॥ तैसे आत्मादी देह आदीकांते भिन्नरूपता चिंतनविषे अर जगतूदी मिथ्यारूपता चिंतनविषे नियम चाहीता है ॥ अथवा नियम नहि चाहिता ॥ जैसे हलवाहना अर वनजकरण इस विषे नियम नहि चाहीता ।

उत्तर—विपरीतभावनादे दूरकरणे वासते जोब्रह्मअभ्यासहै तिसविषे नियम नहि चाहीता है॥नियमतां ओन्नाविषे चाहिता है ॥ जिन्नाका फल मरकरके प्राप्त होता है ॥ अर ब्रह्मअभ्यासका फलतों प्रत्यक्ष है ॥ तांते इसविषे नियमकी लोड कोई नहि ॥ जैसे क्षुधाकी निवृत्तिवास्ते जो भोजन करीता है ॥ तिसविषे नियम नहि ॥ खडोते वैठे जैसे खुसी होवे तैसे भोजन करे ।

शंका—प्रत्यक्ष क्षुधाकी निवृति है फल जिसका ऐसा जो भोजन ॥ तिसविषे श्रुतीयां स्मृतीयांने नियम कथन कीते हैं ॥

पूर्वकूपासे मुखकर भोजन करे ॥ अर हस्त चरण पवित्रकरके भो-
जन करे॥अर मलेच्छ आदिकांदी दृष्टि जिथे नापवे तिथे भोजन
करे ॥ इसतें आदि लेकरके नियम भोजनविषे कथन कीने हैं ॥
तुम कैसे कहितेहो प्रत्यक्ष फलवाले भोजनविषे नियम नहि ॥
तांते यह सिद्ध भया ॥ प्रत्यक्ष है क्षुधा निवृति फल जिसका ॥ ऐ-
सा जो भोजन है तिसविषे जैसे नियम हैं ॥ तैसे विपरीत भावना
निवृति प्रत्यक्ष है फल जिसका ऐसा जो ब्रह्म अभ्यास तिसवि-
षेभी नियम चाहिते हैं ।

उत्तर—क्षुधाका दूर करणा है फल जिसका ॥ ऐसा जो भो-
जन तिसविषे नियम कोई नहि ॥ अर जो श्रुतीयां स्मृतीयांने
भोजनविषे नियम कथन कीते हैं ॥ सो नियम परलोकविषे सुख-
दा कारण हैं अर क्षुधा निवृतिदा कारण नहि इसीकारणने क्षुधा-
के दूरकरणेवास्ते भोजन करणेवाला पुरुष नियम करके भोजन
नहि कर्ता दशग्रास भोजन करणा अथवा वीसग्रास करणा ॥
किंतु जितने ग्रासोंकरके क्षुधा निवृत होवे तितने ग्रासोंका भोज-
न कर्ता है ॥ अर जपकरणेवाला जैसे दशांमालां पंजांमालांका
नियम कर्ता है ॥ तैसे भोजन करणेवालेका नियम नहि ॥ क्षुधा-
की निवृतिदी इछावाला जो पुरुष है ॥ सो अन्नके प्राप्त होयांहो-
यां भोजन कर्ता है ॥ अर अन्नके न प्राप्त होयांहोयां सुतरंज चौ-
पड आदिकांविषे चितकों परचावता है ॥ जिसकरके क्षुधाका क्ले-
श भुल जावे ॥ इसप्रकार पहर चार घडीयांको बिताय लेता है ॥
अर पाछेसें भोजनकी प्राप्तिदे होयांहोयां बैठा तुरता लेटापया
होया जैसे तिसदी इछा होती है तैसे भोजन करलेता है ॥ जिस-
प्रकार करके क्षुधादीदा क्लेश न प्रतीत होवे॥सोई उपाय कर्ता है ॥

अर जपआदिकांविषे नियम अवश्य है ॥ अर जपनूं न करे तां पापदी प्राप्ति होती है ॥ अर जपमंत्रदे स्वर अक्षर विपरीत होजावे तां अनर्थदी प्राप्ति होती है जैसे इंद्रके मारणेवास्ते त्वष्टाने मंत्रदा जप कीता सी॥ तिस मंत्रदे स्वरके विपरीत होनेते त्वष्टादे पुत्रनूं इंद्रने मारदिता ॥ तांते जपमंत्रविषे नियम चाहीते हैं ॥ अर भोजनविषे नियय कोई नहि चाहीता ।

शंका—क्षुधासें प्रत्यक्ष दुख प्रतीत होता है॥ इसते क्षुधाके दूर करणेवास्ते भोजन विषे नियम नहि चाहिता ॥ भोजनहि कीता चाहीता है अर विपरीत भावनातां प्रत्यक्ष दुखदा कारण है नहि। तांते विपरीत भावनादे दूर करणेवाळा जो ब्रह्म अभ्यास है ॥ तिसका फल परलोकविषे होवेगा ॥ तांते ब्रह्मअभ्यास नियम सहित करणा।

उत्तर—विपरीत भावना तौ प्रत्यक्ष दुख देनेवालीहै ॥ जैसे क्षुधा प्रत्यक्ष दुख देनेवाळी है तांते जिसतरां विपरीतभावना दूर होवे ब्रह्म अभ्यास करके ॥ तिसी प्रकार ब्रह्मअभ्यास करणा तुरदिया फिरदियां लंबियां पियां ब्रह्मअभ्यासविषे नियमदी लोड नहि। सो विपरीत भावनादे दूरकरणेदा साधन ब्रह्मअभ्यास पिछे कथन कीया है। प्रपंचदी मिथ्यारूपता चिंतन करणी अर देहआदिकांदी अनात्मरूपता चिंतन करणी ॥ इसते आदि लेकरके।

शंका—मंत्रजपदी न्यांई पूर्वदिशावल्लमुख करणा इसते आदिलेकरके नियम मत होवे ब्रह्म आभ्यास विषे परंतु देवता ध्यानदी न्यांई एक परतारूप एकाग्रतादा नियम चाहीता है ॥

उत्तर—ब्रह्म अभ्यास एक परता रूप है ॥ ताते तिसविषे एक परतादा नियम नही चाहीता आपने विषे अपना नियम नहि होता ॥ ताते ध्यानविषे जैसे नियम चाहीते है ॥ तैसे ब्रह्म अभ्यासविषे नियम नहि चाहीते ।

शंका—ध्यानभी चिंतामात्र रूप होता है ॥ तिसविषे नियम कौन है ।

उत्तर—प्रथम ध्यानके स्वरूपके श्रवण कर ॥ पाछेते ध्यान-विषे नियमांकों हम कथन करेंगे॥ विजातीय प्रत्ययसें रहित देव-तादे स्वरूपविषे जो सजातीय प्रत्ययांदा प्रवाह होता है ॥ तैल-धारादी न्यांई अनवछिन्न ॥ तिसका नाम ध्यान है ॥ अब ध्यान-विषे नियमकों श्रवण कर ॥ जैसे हाथी घोडाआदिक जो वडा चंचल है तिसदा एक स्थानविषे बंधनेदेवास्ते होरणा पास्यांनूं जावनेते रोकणेदा नियम है ॥ तैसे ध्यानविषे मनदा होरणा पा-स्यानूं जावनेते रोकणेदा नियम है ॥ जिसते मन अति चंचल-रूप है ॥ मनकी चंचलता अर्जुनने गीताविषे कथन करी है ॥ हे भगवन्! हे कृष्ण! एह मन वहुत चंचल है॥ ध्यानकों मथन कर-देता है ॥ अर पुरुषकों व्याकुल करदेता है ॥ जैसे मथानी दहीकों व्याकुल करदेती है ॥ अर एह मन बडे बलवाला है ॥ इसदा निरोध नहि होसक्ता अर जिसविषे मन जायलगे चंगेविषे भावें मंदेविषे ॥ तिसविषेसें मनका निवारण करणा कठन है ॥ जैसे सहित उपर बैठी होई जो मखी है ॥ तिसनूं सहितसें हटावना कठन है ॥ अर्थ एह जो मखी सहितकूं जैसे छोड नहि सक्ति तैसे मनभी विषयांकों छोड नहि सक्ता ॥ इसते विषयांते मनदा रो-

कणा में कठन मानताहां ॥ जैसे पवनदा रोकणा कठन है तैसे मन विषयांते रोकणा वहुत कठन है ॥ एह वसिष्ठजीनेभी कथन कीयां है। हे रामजी! समुद्रदा पीजाना अर सुमेरूपर्वतनूं सुंवदी न्यांई पुठल्हैना ॥ अर अग्निनूं भोजन कर लैना ॥ एह तिन्ने यद्य-पि वडेकार्यभी है ॥ पर हे साधो! मनद रोकणा वहुत कठन है ॥ एह तिन्ने सुखाले हैं ॥ अर ब्रह्म अभ्यासविषे कुछ नियम नहि चाहीता ॥ जिसते ब्रह्मअभ्यास देह आदिकांदी अनात्मता अर जगत्दी मिथ्यारूपता चिंतन अर कथन अर अन्योन्य प्रबोधन रूप है॥तांते इसदी च्छा आवे तां कथन करे॥इसदी इच्छा होवे तां चिंतन करे। इसदी इछा होवे तां अन्योन्य प्रबोधन करे तांते ब्रह्मअभ्यासविषे किसीवातदा नियम नहि। जैसे संगलांकरके वद्धाहोया है शरीर जिसका। उसपुरुषका ओधर एधर न जाना अर एक स्थानविषे वैठरहणेका नियम है तैसे ब्रह्म अभ्यासविषे मनने एधर ओधर नजाना अर एक जगाही स्थित होना॥तिसवा र्ताका नियम नहि। किंतु जैसे संगलांकरके नहि बद्धा होया श-रीर जिसका ओह पुरुष जैसे इच्छा आवती तैसे विचरता है इछा होती है तां वागवगीचे मैं चलया जाता है॥ इच्छा होती है स-भाविषे जानेदी तां सभाविषे चलिया जाता है ॥इछा होती है ग्रहविषे वैठनेदी तां ग्रहविषे वैठता है ॥ तैसे ब्रह्मअभ्यासविषे स्थित होयाहोया मनभी जैसे इच्छा होवे तैसे विचरे जे कथन करणेको इच्छा होवे तां देह आदिकांदी अनात्मता अर जगतकी मिथ्यारूपतादा कथन करे। अर जेकर चिंतनकी इछा होवे तां इसीअर्थदा चिंतन करे अर जेकर प्रबोधनकी इछा होवे तां इसी अर्थका परस्पर प्रबोधन करे ब्रह्मअभ्यासविषे केवल नियमदा-

ही अभाव नहि किंतु जैसें मेलेनमाने देखनेविषे बुद्धिकों हर्ष प्राप्त होता है तैसे कथन आदिकांविषे अनेक जो मुनीश्वर अर राजे ज्ञानवान होये है पिछे तिन्नांकी ज्ञान निष्ठाकों स्मरण करके अर अनेक प्रकार कीयां लौकिक कथानूं स्मरण करके अर अनेक प्रकारके अनुकूल दृष्टांत ॥ अर अनेक प्रकार कीयां अनुकूल यु-क्तीयांको स्मरण करके ॥ बुद्धिकों हर्ष प्राप्त होता है।

शंका—कथन आदिकांकरके एक परतादा अभाव हो-जायेगा ।

उत्तर—आत्मा चैतन्यरूप है ॥ देह आदिरूप नहि अर ज-गत् मिथ्या है सत्य नहि इस अर्थविषे इतिहासांका तात्पर्य है ॥ तातें एक परतारूप निदिध्यासनविषे इतिहास आदिकांकरके विक्षेप प्राप्त नहि होता।

शंका—जेकर निदिध्यासनविषे इतिहास आदिकां करके विक्षेप नहि हुंदा ॥ इसते इतिहासआदिक अंगीकार करोगे ॥ तो खेतीदा करणा अर वनजदा करणा अर सेवादा करणा अर का-व्यकोश व्याकरणादा पडना अर न्यायशास्त्र अर मीमांसा सां-ख्य शास्त्रदा पडना ॥ इसते आदिलेकरकेभी निदिध्यासनविषे विक्षेप करेंगे ऐसे अंगीकार किया चाहीये।

उत्तर—खेतीदि करणेसे आदि लेकरके जो तेने कथन कीते हैं ॥ तिन्नांकरके बुद्धिकों विक्षेप प्राप्त होता है ॥ जिसतें तिन्नांकर-के तत्त्वदी स्मृति नहि होती इसतें खेती आदिक संपूर्णांका त्याग कीता चाहीता है।

शंका—खेतीते आदिलेकरके जेकर संपूर्ण त्यागने योग्य हैं ॥ तत्वदे स्मरणदा विरोधि होनेते ॥ तौ भोजन आदिकांदाभी त्याग कीता चाहीये ॥ जिसते भोजन आदिकांविषे प्रवृत्ति भी तत्वदे स्मरणदा विरोधि है।

उत्तर—तत्वदा स्मरण करत्यां होयांभी भोजन आदिकांविषे प्रवृत्ति बन सक्ति है ॥ जिसते भोजन आदिकांविषे अत्यंत विक्षेप नहि होता ॥ कहिते जो ओथे शतावी फेर तत्वदा स्मरण होय आवता है।

शंका—भोजन आदिकांविषे प्रवृत्त होयांहोयां अत्यंत विक्षेप यद्यपि नहि ॥ तौभी तत्वदी विस्मृति तां तिसकालमैं होती है ॥ कहिते जो मन दशवीश तौ है नहि ॥ मन तौ है एक ॥ भावें ओह तत्वदा स्मरण करे भावें ओह भोजन करे ॥ तांते भोजनविषे प्रवृत्ति होयांहोयां निदिध्यासनदा अभाव होवेगा।

उत्तर—यथार्थ है ॥ भोजन विषेप्रवृत्ति होयांहोयां तत्वददी विस्मृति होती है ॥ परंतु तत्वदी विस्मृतिमात्रते अनर्थ नहि होता ॥ अनर्थ किसते होता है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ अनर्थ विपर्ययसें होता है ॥ विपर्ययनाम है जगत्‌विषे सत्यबुद्धिदा अर देह आदिकांविषे आत्मबुद्धिदा।

शंका—तत्वदे विस्मरण होयांहोयां विपर्ययभी होजावेगा।

उत्तर—बहुतकाल तत्वदे विस्मरण होयांहोयां विपय होता है ॥ अर शतावी तत्वदे स्मरण करणेवाले पुरुषको विपर्यय प्राप्त

होनेदा काल कोई नहि ॥ न तां तिसकों देह आदिकांविषे आत्म-बुद्धिरूप विपर्यय प्राप्त होता है ॥ अर न जगत्‌विषे सत्यबुद्धिरूप विपर्यय होता है।

शंका—भोजन आदिकांविषे प्रवृत्त होयेहोयेकों जैसे शता-वी तत्त्वदा स्मरण होता है ॥ तैसे न्यायशास्त्र आदिकांके अभ्यास करणेवाले पुरुषकोंभी शतावी तत्त्वदा स्मरण किउं न होवे।

उत्तर—न्यायशास्त्र आदिकांके अभ्यासमें प्रवृत्त होयेहोये पुरुषकों तत्त्व स्मरणदा वेलही नहि मिलदा ॥ केवल तत्त्वदे स्मर-णदा समयने मिलना एहि नहि ॥ किंतु न्यायशास्त्र अर काव्य आदिकांदे अभ्यासदा अर ब्रह्म अभ्यासदा परस्पर विरोध है ॥ धुप अर छांकी न्यांई ॥ तांते न्याय काव्यआदिकांदे अभ्यास कालविषे दैवयोगसें स्मरणकों प्राप्त भया जो तत्त्व है। तिसदा बलसें अनादर कर्ता है ॥ तिस तत्त्वस्मरणसे न्यायकाव्य आदि-कांदे अभ्यासदा विरोधी जानके ॥ तांते ब्रह्म अभ्यासविषे प्रवृत्त भया जो पुरुष है ॥ तिसने न्याय काव्य कोश व्याकरण मीमां-सा आदिक शास्त्रांदे अभ्यासदा त्याग कीता चाहीये ॥ जो तत्त्व दे स्मरणदा विरोधी वाणीदा व्यापार है ॥ सो त्याग चाहीये ॥ इस अर्थकों मुंडक उपनिषद्‌की श्रुति कथन कर्ती है॥ब्रह्मरूप जो आत्मा है ॥ तिस इककों जानो अर होर जितनी वाणी है अना-त्मांदे कथन करणेवाली काव्य कोश व्याकरणादिरूप तिसका त्याग करो॥आत्मज्ञानहि मोक्षदी प्राप्तिदा साधन है आत्मज्ञान-के अभ्यास विना होर किसी अभ्यासविषे लगोगे ॥ तों संसार नदीविषे डुब मरोगे ॥ जैसे वर्षाकालकी नदीके पार प्राप्त होने-

वास्ते पुल साधन है ॥ पुलनूं छोडके होर रसते पया होया पुरुष डुब मरता है ॥ अर बृहदारण्यक उपनिषदविषेभी कथन कीया है ॥ अनात्म अर्थदे जनावनेवाले जो शब्द हैं ॥ तिन्नाकों बहुत ना पडे अर मनकरके तिन्नाकों स्मरणते करे॥ जिसते तिन्नाके पडने करके वाणिकों थकेवां होता है ॥ अर स्मरणकरके मनकों थकेवां होता है ।

शंका—तत्वस्मरणते भिन्न भोजनआदिक जैसे नहि त्यागींदे ॥ तैसे तत्वअभ्यासते भिन्न जो काव्य कोश व्याकरण न्याय आदिकांदा अभ्यास है ॥ सोभी मैंने नहि त्यागना ।

उत्तर—भोजन आदिकांकों त्याग कर्ता होया ती पुरुष जीवता नहि ॥ तूंभी जेकर होरणां शास्त्रांदे अभ्यासनूं त्याग कर्ता होया न जीवसकें तौ अैसा खोटा हठ कर ॥ तात्पर्य एह होरणां शास्त्रांदे त्याग कीत्यां होयां तूं मरता नहि ॥ तांते मत खोटा हठ कर ।

शंका—जेकर होरणांशास्त्रांदा अभ्यास तत्वअभ्यासदा विरोधी है ॥ तौ जनकसें आदिलेकरके ज्ञानवानांने राजपालन आदिक किउं कर कीते हैं ।

उत्तर—जनक आदिकांकों दृढ अपरोक्षज्ञानकी प्राप्तिसी तिसकरके जनक आदिकांको राजपालन आदिकांकरके विक्षेप न प्राप्त भया ।

शंका—मेरेकोंभी तां दृढअपरोक्ष बोधदी प्राप्ति है ।

उत्तर—जेकर तेरेको भी दृढ अपरोक्ष बोधदी प्राप्ति है तौ

तेरी जो इच्छा होवे सो कर ॥ भावें न्यायशास्त्रआदिकांनूं पढ ॥ भावें खेतीनूं कर ।

शंका—तत्ववेत्ता तां संसारदी असारतादे जाननेवाले हैं ॥ ओनांदी राजपालन आदिकांविषे प्रवृत्ति किउं होवे ।

उत्तर—तत्ववेत्तादी एह दृष्टि होती है ॥ प्रारब्धकर्मदा फल अवश्य भोगना है तांते हमारा प्रारब्ध कर्म भिक्षा मांगनेका है ॥ तो भिक्षा मांगनी है अर जे राजदा है तां राजकरणा है ॥ तांते जैसा प्रारब्ध कर्म है तैसे प्रवृत्ति होवे ॥ इसते भोगद्वारा प्रारब्धके नाशवास्ते राजआदिकांविषे तत्ववेत्तादी प्रवृत्ति होती है ॥ प्रवृत्त होयेहोयेभी राजआदिकांविषे प्रारब्धके अनुसार ॥ जगत्‌विषे मिथ्यारूपता ज्ञानदी दृढता करके क्लेशकों प्राप्त नहि होते ।

शंका—जेकर प्रारब्ध कर्मकरके राजआदिकांविषे तत्ववेत्तायांदी प्रवृत्ति मानोगे ॥ तो प्रारब्ध कर्मदे वशकरके पापोंविषेभी प्रवृत्ति मानी चाहीये ।

उत्तर—आपने कर्मदे वशवर्तनेवाले जो है तत्ववेत्ता ॥ तिन्नाविषे अतिप्रसंगदी शंका नहि कीती चाहीदी ॥ अति प्रसंगदा अर्थ पापकर्मविषे प्रवृत्ति ।

शंका—प्रारब्धदे वशते अतिप्रसंगभी तत्ववेत्ता में होवेगा ।

उत्तर—प्रारब्धकर्मकरके अतिप्रसंग होता है तां होवे ॥ प्रारब्धकर्मदे दूरकरणेकों कोईभी समर्थ नहि ।

शंका—जैसा ज्ञानीने प्रारब्धकर्म भोगीदा है ॥ तैसा अ-

ज्ञानीने प्रारब्धकर्म भोगीदा है ॥ तांते ज्ञानीदी अर अज्ञानीदी समानताभई ॥ भेदज्ञानीदा अर अज्ञानीदा किसकारणकर कहितेहो ।

उत्तर—प्रारब्धकर्मदे फल भोगनेविषे भेद हम ज्ञानीदा अर अज्ञानीदा नहि कहिते किंतु क्याकहिते हां ॥ ज्ञानवान् प्रारब्धकर्मनूं भोगता होयाभी क्लेशकों नहि प्राप्त होता ॥ धीर्यकरके ॥ अर अज्ञानी क्लेशकों प्राप्त होता है अधीर्य करके ॥ तिसविषे दृष्टांत श्रवण कर ॥ दशपंजकोश पर कोई ग्राम है ॥ तिसग्रामको दो-पुरुष चले जाते हैं॥ एक पुरुष मार्गके जाननेवाला है अर एक पुरुष मार्गके नहि जाननेवाला॥तिन्ना दुहांकों मार्गके चलनेका तौं श्रम एक जैसा है ॥ परंतु जेडा जाननेवाला है ॥ ओह धीर्यसहित गमनकर्ताचल्या जाता है ॥ अर धुपआदि कांदे दुःखते रहित होता है॥अर नजाननेवाला दीनताकों प्राप्त हूयाहूया वारंवार बैठता है मार्गविषे अर लोकांसे पूछता है जो केतीदूर ग्राम है केतीदूर ग्राम है इसते धुपके दुःखकों अधिक प्राप्त होता है इतने ग्रंथकरके श्रुतिदे पूर्वअर्द्धदा अर्थ वरणन कीया ॥ तिसका अर्थ संक्षेप करके अव श्रवण कर ॥ जद एह पुरुष यथार्थ आत्मसाक्षात्कारकों प्राप्त होता है ॥ तद इसपुरुषकों जगत्विषे सत्यता बुद्धि नही रहँदी ॥ अर देहआदिकांविषे आत्मबुद्धि नहि रहँदी अव श्रुतिदे उत्तर अर्द्धके अर्थनूं श्रवण कर ॥ दृढ अपरोक्ष आत्मसाक्षात्कारकों प्राप्त होया जो पुरुष है ॥ सो किसपदार्थदी इच्छानूं कर्ता होया ॥ अर किसदी कामनादेवासते ॥ शरीरके तापकरके तापकों प्राप्त होवे ॥ अर्थ एह जो शरीरके तापकरके तापकों नहि प्राप्त होता ॥ अव इस अर्धमंत्रदे तात्पर्यनूं श्रवण कर ॥ दृढ

अपरोक्ष ज्ञानवान् पुरुषकों जगतविषे मिथ्या बुद्धि दृढ होती है॥ इसतें तिसकों कामना करणेलायक कोई पदार्थ नजर नहि आवता ॥ अर कामना करणेवालाभी कोई नहि प्रतीत होता ॥ एन्ना दुहांके अभाव होयांहोयां कामनाका अभाव होजाता है ॥ जिसतें कामनाका कारणतां दोईसे ॥ आश्रय अर विषय एन्ना दुहांके अभाव होयांहोयां कामनाका अभाव होजाता है॥ कामनाके अभाव होयांहोयां तापांदा अभाव होजाता है ॥ काहेतें जो तापतां कामना करकेही प्राप्त होते हैं ॥ जैसे तेलदे अभाव होयांहोयांदी एक निर्वाण होजाता है ।

शंका—कामनादेविषेदे अभाव होयांहोयां कामनादा अभाव होजाता है एह वार्ता तुसाने कहां देखीहै ।

उत्तर—मायावी पुरुषने मायाकरके रचया जो नगर है ॥ तिस नगरविषे अनेक प्रकारके स्थित जो पदार्थ हैं ॥ तिन्ना पदार्थांनूं जिसपुरुषने मिथ्यारूप जानयांहे॥एह पदार्थ सभ इंद्रजाल करके रचेहोये हैं ॥ एन्नाविषे सत्यपदार्थ कोई नहि ॥ ऐसा जाननेवाला पुरुष तिन्ना पदार्थांदी कामना नहि कर्ता ॥ तातें कामनादे विषेदे अभाव होयांहोयां कामनादा अभाव सिद्ध भया ॥ केवल कामनादाही अभाव नहि होता ॥ किंतु तिन्ना पदार्थांनूं मिथ्या जाननेवाला पुरुष हसता होयाहोया तिन्ना पदार्थांनूं त्याग करदेता है ॥ इसी प्रकार विना विचारतें सुंदर जो एहविषे भोग हैं ॥ पुष्पांकीमाला चंदन स्त्रीआदिक तिन्नाविषे मिथ्या दृष्टिवाला जो पुरुष है सो तिन्ना पदार्थांविषे प्रीति नहि कर्ता ॥ किंतु दोषांदे देखनेकरके तिन्नादा त्याग करदेता है कौन ओह दो-

पहें विषयांविषे जिन्ना दोषांनूं देखकरके विषयांदा त्याग करदे-ता है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवणकर ॥ पहलां धनकें दोष कथन करतें हैं ॥ धनके एकठे न करणेविषे अनेक क्लेश होते हैं ॥ विदेशका जाना अर नीचांदी सेवा करणी अर झूठ बोलना ॥ इस आदि-लेकरके अनेक अनर्थ धनके एकठेकरणेविषे प्राप्त होते है ॥ अर धनकी रक्षा करणेविषेभी अनेक क्लेश होते हैं ॥ धनवान्कों चोरका भय होता है ॥ धनवान्कों राजाका भय होता है ॥ धन-वानकों सभीलोक चोर नजर आवते हैं ॥ इसते बडा पाप प्राप्त होता है ॥ अर धनकी रक्षा करणेविषे सदा तप्ता रहिता है ॥ अर धनके खर्च होनेविषे वडे क्लेशको प्राप्त होता है ॥ अर जेकर धन नाशकों प्राप्त होता है ॥ तदभी वडेदुःखांको प्राप्त होता है ॥ इसतरां सर्व प्रकारकरके धन अनर्थांका कारण है ॥ अब स्त्रीके दोष अर असुंदरता श्रवण कर ॥ स्त्रीदा जो शरीर है ॥ सो बडा चंचल है पंपूडदी न्यांई तिसविषे सुंदरता कुछ है नहि ॥ जिसतें मासदी एक पुतली है ॥ नाडीआं अर अस्थीयां अर मासदीयां गंडांस्तनआदिक स्थानांविषे हैं ॥ एन्नाकरके रचया होया जो स्त्रीदा शरीर है ॥ तिसविषे सुंदरता कुछ है नहि ॥ अर कामरूपी सर्पकरके डंगाया होया जो कामी पुरुष है ॥ सो स्त्रीकों बहुत सुंदर मानता है ॥ जैसे जिसकों सर्पने डंगया है सो कौडीयां मि-र्चानूं मिठीयां मानता है ॥ जिन्ना पदार्थां करके स्त्रीदा शरीर बन-या होया है ॥ तिन्ना पदार्थांकों भिन्नभिन्न देखयांहोया जेकर स्त्री-दा शरीर सुंदरहोवे तांवे शक्यस्त्रीदे शरीरनूं तूंदेख विनाविचारसें व्यर्थ किउं मोहकों प्राप्त होता हैं॥ स्त्रीदाशरीर किन्नापदार्थांकरके बनया होया है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ त्वचा मांस रक्तते

आदिककरके जो परम अपवित्र पदार्थ हैं ॥ तिन्नांकरके ओह्ना शरीर बनया होया है ॥ इसते आदिककरके जो शास्त्र हैं तिन्ना विषे जो विषयांके दोष हैं सो विस्तार करके वर्णन कीने हैं ॥ तिन्ना शास्त्रांदे सदा विचारणेवाला जो पुरुष है सो दोषांवाल्-यां विषयांविषे कैसे डुबे ॥ जिस विषयविषे जिस पुरुषकों दोष प्रतीत होता है तिसविषेदी तिसपुरुषकों इछा नहि होती॥ इसविषे युक्ति सहित दृष्टांतनूं श्रवण कर ॥ कोई पुरुष क्षुधाकरके बडा दुःखी होवे अर कोई उसनूं विषवाले लडु लियाइदेवे अर दूसरा पुरुष इसदे कन्नविच्च कहदेवे जो एन्ना लडुयांविच्च विषपडी होई है ॥ तब ओह पुरुष क्षुधादे क्लेशको तां सहारलेता है पर ओन्ना लडुकों नहि खाता ॥ अर जिसपुरुषदी बहुत सुंदर मिठे अन्नकरके क्षुधा निवृत होईहोई है ॥ अर आपने विवेककरके जानता है जो एन्ना लडुयांविच्च विषपडी होई है ॥ सो पुरुष तिन्ना लडुयां देखानेदी इछा नहि करदा इसदा तां क्याकहिना है ।

शंका—प्रारब्धकर्मदी प्रबलताते ज्ञानवानकोंभी भोगोंविषे इछा होती है ।

उत्तर—प्रारब्धकर्मदी प्रबलताते ज्ञानवानकों जेकर भोगोंकी इच्छा होती है ॥ तदभी ज्ञानवान् क्लेशकों प्राप्त हूयांहूयां भोक्ता है ॥ अज्ञानीकी न्यांई प्रसन्न हूयाहूया नहि भोक्ता ॥ जैसे बिगारी पकड्या होया पडकों उठावता है तो भी प्रसन्नता करके नहि उठावता क्लेश करके उठावता है ॥ अर मंजूरी लैनेवाला प्रसन्नतासें उठावता है ॥ कैसे इसबातकों तुसी जानतेहो ॥ जो ज्ञानवान भोगांको भोक्ता होता क्लेशकों प्राप्त होता है ॥ बिगारीकी

न्यांई ॥ ऐसा पुछेंतां श्रवण कर ॥ गृहस्थी जो ज्ञानवान् कुटुंबवाले अर शास्त्रविषे श्रद्धावाले हैं सो भोगांको भोक्ते हूये इसप्रकार सदा क्लेशकों प्राप्त होते हैं ॥ अज्जपर्यंतभी हमारा कर्म क्षीण नहि भया ऐसा लोकविषे देखीता है ॥ इसते हम जानते हैं जो ज्ञानवान् भोगांनूं भोक्ता होया क्लेशकों प्राप्त होता है ।

शंका—तत्ववेताकोंभी जेकर क्लेश होता है तां ज्ञानकों व्यर्थता भई ।

उत्तर—एह जो ज्ञानवान्कों क्लेश प्राप्त होता है ॥ सो संसार ताप नहि ॥ किंतु भोगांविषे तिसका वैराग्य है संसार ताप ओह होताहै जेडा भ्रांति ज्ञानते होवो॥अर्थ एह जो विषयांविषे स्नेहदा कारणताप है सो संसार ताप है ऐसा आचार्यांने निर्णय कीता है तांते ज्ञानवान्को जो क्लेश है सो विवेकते उत्पन्न भया है॥ सो संसार ताप नहि ।

शंका—एह क्लेश विवेक जन्य है॥ अर अविवेक जन्य नहि एह तुसां किसते जाता ।

उत्तर—एह क्लेश कामनादी निवृतिदा कारण है ॥ इसते जाता जो विविकते उत्पन्न होया है ॥ विवेककरके क्लेशकों प्राप्त होयाहोया थोडेई भोगकरके तृप्त होजाता है ॥ अर विवेकसे विना अनंत भोगोंके प्राप्त होयांहोयांभी तृप्त नहि हुंदा कदीभी ।

शंका—विवेकी पुरुषकी जैसे भोगांकरके तृप्ति होजाती है॥ तैसेअवेवेकी पुरुपकी ॥ भोगांकरके तृप्ति होवे तांते विवेकतृप्ति मै कारण नहि ।

उत्तर—भोगनूं तृप्तिदा कारण नहि ॥ इस अर्थकों श्रुति कथन करती है सो श्रवण कर॥ विषयांदे भोगने करके चित कदीभी तृप्त नहि होता॥ त्योंत्यों विषयांदे भोगनेदी कामना वद्ती जाती है॥ जैसे अग्निविषे आहुतीयांदे पायांहोयांअग्नि वद्ती है ॥ अग्नि शांतकों नहि प्राप्त होती॥ तैसे भोगांदे भोगने करके तृष्णा वद्ती है तृष्णा शांत नहि होती ॥ अर विवेककरके भोगानूं जानकरके भोगांदे भोगयां होयां चितशांतिकों प्राप्त होजाता है ॥ जैसे चोरको जानलईये जद एह चोर है ॥ तव ओह चोरीकों नहि कर्ता ॥ तांते तृष्णा वृद्धिदा कारण जो सीभोगांदा भोगना सो विवेकदे प्रभाव करकेतृष्णादी वृद्धिदा कारण नहि होता।

शंका—मनका तो स्वभावही है कामना करणी ॥ तांते मन थोडे भोगकरके कैसे तृप्तिकों प्राप्त होता है।

उत्तर—निदिध्यासनकरके कैदीकों प्राप्त होयाहोयां जो मन है ॥ तिसका स्वभाव कामना करणेवाला नहि रहिता ॥ तिसकारणते निदिध्यासनविषे स्थित जो मन है ॥ सो तृप्तिकों प्राप्त होजाता है थोडे भोगकरके तिसमनकों थोडाभी लीलारूप भोग वहुत प्रतीत होता है ॥ जिसते विस्तारकों प्राप्त नहि होय सक्ता ॥ तांते क्लेश युक्त होनेते थोडेभोगनूंभी वहुत मानता है ॥ अर प्रथम वहुत नहि सीमानता ॥ जैसे कोई वहुते देशकाराजा होवे अर उसराजानूं होर कोई राजा जितलये अर कैद करलये अर पाछेसें उसको एक ग्रामदेये ॥ तव ओह कैदते छूटया होया राजा एकग्राम करके प्रसन्न होजाता है ॥ अर जितनाकाल ओह शत्रुयां करके जितयानहिगया अर कैदकों नहि प्राप्त भया तित-

नाकाल पर्यंत ओह राजा देशकोंभी वहुत नहि मन्नदा ॥ तैसे मनभी जितना कालपर्यंत विवेकरूप राजाने निदिध्यासनरूप कैदखानेमें नहि कैद कीता ॥ तितना काल पर्यंत सारे त्रिलोकीदे भोगांकरकेभी तृप्त नहि होता ॥ अर निदिध्यासनरूपि कैदते छूटया होया थोडे भोगकोंभी वहुत मानता है ।

शंका—पाछे तुमने एह कहियासी प्रारब्धकर्मदी प्रवलतांते ज्ञानवान्कोंभी भोगोंविषे इछा होती है सो तुमारा कहिना अयुक्त है ॥ जिसतें भोगोंविषे इछादे नाशकरणेवाले विवेकदे प्रगट होयांहोयां भोगांविषे इछा उत्पन्नह नहि होय सक्ति ।

उत्तर—विषयांविषे दोष दर्शनदे होयांहोयांभी इछादी उत्पत्ति होती है ॥ काहेते जो प्रारब्धकर्म तिन्न प्रकारदा है ॥ एक स्वेछारूप है १ एक अनिछारूप है २ एक परेछारूप है ३ इछा प्रारब्ध कौन है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ जैसे रोगीपुरुष कुपथदा जो भोजन कर्ता है ॥ सो स्वेछा प्रारब्ध है ॥ जिसते आपनी इछाकरकेही रोगदे वदनेदे कारणविषे प्रवृत्त भया है ॥ तांते आपने अनर्थनूं जानता होयाहोयाभी कुपथदी इछानूं कर्ता है प्रारब्ध कर्मकरके अर चोर चोरी कीतयां होयां फांसी मिलना न कवडना अर कैद होना ॥ इसते आदिलेकरके अनर्थांकों जानताभी है ॥ पर प्रारब्धकर्मते फेर चोरीकी इछा कर्ता है ॥ अर राजादी स्त्री नाल प्रीतकरणेवाले अनर्थकों जनाते है ॥ पर प्रारब्धकर्मते फेर तिसीकी इछा कर्ते हैं ॥ अपथसेवा अर चोरी अर राजादी स्त्रीनालप्रीती एह प्रारब्ध कर्मदा फल हैं ॥ एह तुसां कैसे जानयां ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ जिसते एह किसीसेंभी

दूर नहि कीते जाते ॥ ईश्वरभी इन्हांके दूर करणेकों समर्थ नहि ॥ इसतें जानीता है ॥ जो एह प्रारब्धकर्मदा फल है ॥ जिसतें ई-श्वर आपही आपने मुखसें गीताविषे कथन कर्याभया है अर्जुन-के तांई ॥ हे अर्जुन! जैसे जिसदा प्रारब्ध कर्म होता है ॥ तैसेही उसदी प्रवृत्ति होती है ॥ अज्ञानीयांकी क्या कहिनी है ज्ञानीभी आपने प्रारब्धके अनुसार प्रवृत्त होता है ॥ संपूर्ण प्राणी आपने प्रारब्ध कर्मकों प्राप्त होते हैं ॥ तिसविषे प्रवृत्तिदे निवारण करणेदा प्रयत्न जो है सो निष्फल है ॥ तीव्र प्रारब्ध किसीकरके निवारण नहि होती इसविषे होरभी वचन श्रवण कर अवश्य भोगनेयो-ग्य जो सुखदुःख है सो जेकर कदी दूर होता ॥ तद राजा नल अर रामचन्द्रजी अर राजा युधिष्टर दुःखांनूं न प्राप्त होते ।

शंका—प्रारब्धकर्मके निवारण करणेकों जेकर ईश्वर समर्थ नहि ॥ तद ईश्वरकों अनीश्वरता प्राप्त भई ॥ जिसते ईश्वरदा लक्षण ईश्वरविषे न आया ईश्वरका लक्षण एह है जो करणेनूं अर न करणेनूं अर अन्यथाकरणेनूं समर्थ होवे सो ईश्वर कहीता है ॥ तांते इस लक्षणदे अभाव होनेते ईश्वरकों अनीश्वरता प्राप्त भई ।

उत्तर—प्रारब्धकर्मदे न दूर करणेते ईश्वरकों अनीश्वरता-दी प्राप्ति नहि होती ॥ जिसकारणेतें प्रारब्ध कर्मदी अवश्य भा-वताभी ईश्वरने रची है आपने कीतेकों आप कैसे दूर करे जे आपने कीतेकों आप दूर करे तो ईश्वरदा महत्व दूर होजावे ॥ लोकविषेभी जो आपने कीतेकों आप नहि पालना तिसपुरुषका महत्व नहि रहिंदा अब अनिच्छा प्रारब्धकों श्रवण कर गीता-

विषे अर्जुनदे प्रश्न अर भगवान्दे उत्तर करके अनिछा प्रारब्ध जानीती है ॥ सो जिसप्रकार अर्जुनदा प्रश्न है ॥ अर भगवान्दा उत्तर है सो श्रवण कर किसकरके प्रेरया होया एह पुरुष पापदी इछानूं न कर्ता होयाभी पापको कर्ता है जैसे राजाका नौकर राजाकरके प्रेरया होयाहोया नहिभी किसी पुरुषदे अनादरकी इछा तिसको पर अनादर कर्ता है हे वृष्णिवंशविषे अवतारको प्राप्त भगवन् कृष्ण इस मेरे प्रश्नका उत्तर कृपाकरके कहो ।

श्रीभगवानुवाच

एह पुरुषकी पापांविषे प्रवृत्ति करवावनेवाला काम है अर एह कामही किसीक निमितकरके क्रोध रूपताको प्राप्त होजाता हैं जैसे किसीपुरुपकी किसीपुरुषविषे दशांरूपईयादी कामना भई अर इस पुरुपने उसनूं दशरूपईये नदिते तब ओह पुरुष क्रोधको प्राप्त होता है तांते कामही क्रोधरूपको प्राप्त भया ॥ सो काम रजोगुणते उत्पन्न होता है अर वडा इसदा भोजन है ॥ किसीविषे करके तृप्त नहि होता जैसे अग्नि आहुतीयां करके तृप्त नहि होती अर काम वडे पापांदा कारण है तांते कामनूं मोक्ष मार्गविषे वैरी जान ॥ इस प्रश्न उत्तरकरके अनिछा प्रारब्ध प्रतीत होती है ॥ जिसतें इछाते विनाही पुरुषदी प्रवृत्ति कथन कीती हैं।

शंका—भगवान्दे उत्तर विषे कामक्रोधको पुरुष प्रवृत्ति विषे कारणता प्रतीत होती है अनिछा प्रारब्धको पुरुष प्रवृत्तिकी कारणता नहि प्रतीत होती।

उत्तर—प्रारब्धकर्मको पुरुष प्रवृत्तिविषे कारणता कथन करणेवाले गीतावाक्यको श्रवण कर॥हेअर्जुन!आपना जेडा प्रारब्ध

कर्म है ॥ इसकरके यदा होयाहोया जिसदे न करणेदी इच्छा करेगा अविवेकतें ॥ तिसनूं भी करेगा प्रारब्धकर्मदे अधीन होयाहोया जिसने प्रारब्धकर्म शरीरके साथ उत्पन्न होयाहोया है तांते अनिच्छा प्रारब्ध सिद्ध भया ॥ अब परेच्छा प्रारब्धनूं श्रवण कर ॥ किसीपुरुषके घरविषे विवाहादिक कार्य होता है ॥ तद ओह भाईचारेकों एकठ्यां कर्ता है ॥ तिस भाई चारेविषे जो मुखीआ होता है तिसकों संपूर्ण कार्यांविषे तत्पर करदेता है सो पुरुष तत्पर हूयाहूया सुखदुःखकों प्राप्त होता है ॥ एह सुखदुखकी प्राप्ति तिसकों आपनी इच्छासें नहि भई अर अनिच्छासेंभी नहि भई किंतु जिसके घर विवाह है तिसदी इच्छा करके भई है ॥ तांते एह जो कर्म है सो परेच्छा कर्म कर है इसी कारणतें विषयांविषे दोष दर्शनदे होयांहोयांभी प्रारब्धदे निवार्ण करणेको नहि समर्थ होता ॥ तांते प्रारब्ध कर्म इच्छानूं उत्पन्न कर देता है ।

शंका—तत्ववेताकोंभी जेकर तुसी इच्छादा अंगीकार करोगे तद इच्छादे निषेधकरणेवाली जो श्रुति है तिसदा विरोध प्राप्त होवेगा ।

उत्तर—श्रुति इच्छादे अभावनूं नहि कहिती किंतु क्याकहिती है तत्ववेत्ताकों इच्छा होती है पर तत्ववेतादी इच्छा सफल प्रवृतिवाली नहि होती एह श्रुतिने कथन कीता है तिसविषे दृष्टांत श्रवणकर जैसे भुंना बीज अंकुरको नहि उत्पन्न कर्ता तैसे तत्ववेतादी इच्छा जन्मांकों नहि देती ॥ जिसतें तत्ववेताकों संपूर्ण पदार्थांविषे मिथ्याज्ञान होता है ।

शंका—तत्ववेता विषयक इछा न अंगीकार कीती चाहीये ॥ जिसते तिस इछादा फल कुछ हैनहि ।

उत्तर—तत्ववेताकी इछा फलते रहित नहि ॥ तात्काल भोगरूप फलके देनेवाली है ॥ जैसे भुंनेअन्नदे न उगियां होयांभी उदर पूर्ती लक्षण कार्यकों कर्ता है ॥ तैसे ज्ञानवान्की इछाअल्पभोगरूपकार्यनूं करदेती है ॥ अर बहुते व्यसननूं नहि कर्ती व्यसनदा अर्थ इक तौ विपदा १अर भ्रंश २अर कामते अर क्रोधते उत्पन्नभया जेडा विकार एह चार हैं ॥ अर्थ एह ज्ञानवान् इछाकरके देह आदिकांविषे अध्यासकों नहि प्राप्त होता ॥ अर ब्रह्मानंददे अनुभवसें रहित नहि होता अर कामजन्यदोष करके वर्णआश्रमदी मर्यादाकों नहि त्याग देता ॥ अर क्रोधकरके होरणां जीवांदे प्राणानूं नाश नहि करदा ।

शंका—प्रारब्धकर्म भोगद्वारा व्यसननूंभी उत्पन्न करदेयेगा।

उत्तर—प्रारब्धकर्मदा स्वभाव भोगदेनेदा है ॥ अर व्यसननूं उत्पन्न करणा एह प्रारब्धकर्मदा स्वभाव नहि ।

शंका—जे प्रारब्धकर्म व्यसननूं नहि उत्पन्न करदा तौ व्यसननूं कौन उत्पन्न करदा है ।

उत्तर—भोग पदार्थविषे जेडा सत्यता भ्रम है ॥ सो व्यसननूं उत्पन्न करदा है भोगांविषे अब व्यसनदा कारण जो भ्रम है तिसनूं श्रवण कर एह भोगमत विनाशकों प्राप्त होवे अर दिनोदिन वदते जांवें ॥ अर एन्नाभोगांनूं मत कोई विघ्न प्राप्त होवे ॥ एन्ना भोगां करके ई मैं वडयाईकों प्राप्त भया हां ऐसा जो भ्रम

है ॥ तिसतें व्यसनकी उत्पत्तिहोती है ॥ अब प्रसंगतें इस भ्रमके नाशके साधनकों श्रवण कर ॥ जो नहि होनेवाला सो कदी नहि-होना जो होनेवाला है सो दूरनहि होना ऐसा जो ज्ञान है सो ए-ह जो चिंता है ॥ एह इष्टपदार्थ मेरेकों कद प्राप्त होवेगा ॥ अर एह दुःख मेरा कद दूर होवेगा ॥ सोई अर्डविषे तिसदे नाश करणेवाला है ॥ जैसे विष पुरुषके अंतर प्राप्त होईहोई पुरुषकों नाश करदेता है ॥ तैसे चिंताभी पुरुषके अंतर प्राप्त होईहोई पुरुषकों नाश करती है ॥ तांते चिंताकों विष कहीता है ॥ तिस चिंतारूप विषदे नाश करणेवाला जो बोधहै ॥ सो भ्रमदे नाश-करणेवाला है ।

शंका—ज्ञानवानकों भोगांके भोगतियां होयांभी व्यसन नहि होता अर अज्ञानीकों व्यसन होता है ॥ इस वार्तानूं तुसां किसकारणतें जानया ।

उत्तर—ज्ञानवानकों जगतविषे मिथ्या ज्ञान होता है तिसतें तिसनूं व्यसननहि उत्पन्न होता अर अज्ञानीकों जगतविषे सत्य-रूपता ज्ञान है ॥ तिसकरके अज्ञानीकों व्यसन उत्पन्न होता है ॥ तात्पर्य एह जिसकों भ्रम है तिसकों व्यसन होता है अर भोग मात्रतें व्यसन नहि होता ज्ञानीको भ्रम हैनहि तिसतें व्यसनभी नहि होता अर अज्ञानीकों भ्रम है ॥ तिसतें अज्ञानीकों व्यसन होता है ॥ भ्रम व्यसनका कारण कैसे है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर भ्रमकरके अशक्य अर्थांदा संकल्प उदय होता है अज्ञानी-कों तिसतें अज्ञानी व्यसनकों प्राप्त होताहै॥अर विवेकीकों अश-क्य अर्थांदा संकल्प नहि होता ॥ तिसतें तिसकों व्यसन कैसे

होवे ॥ ज्ञानवान् संपूर्ण भोग्यपदार्थांनूं मिथ्याजानकरके भोगांविषे आस्थादा त्याग करदेता है ॥ इसते भोक्ता होयाभी भोगांदे संकल्पनूं नहि कर्ता तांते तिसकों व्यसन कैसे होवे ।

शंका—भोपदार्थांको मिथ्या जानयांहोयांभी तात्काल सुखका हेतु भोगांकों होनेते तिन्नाविषे आस्थादा अभाव नहि बनदा ।

उत्तर—भोगांविषे अनेकप्रकारदे दोषांके देखनेते ज्ञानवा-भोगांविषे आस्था नहि रहती जिसते ज्ञानवान संपूर्ण भोग्यप-दार्थांनूं स्वप्नदे भोगपदार्थांदे तुल्य देखताहै अर मदारीकरके वानाये होये पदार्थांके तुल्य देखता है जैसे मदारीकरके बनाये होये पदार्थ अचिंत्य रचना रूप है ॥ अर देखतियां देखतियां ही नाशकों प्राप्त होजाते है॥ तैसें संपूर्ण पदार्थ अचिंत्य रचना रूप हैं ॥ अर देखतियां देखतियां नाश होजाते हैं । ऐसे जानता होया होया ज्ञानवान् जगतूदे पदार्थांविषे आस्था नहि कर्ता आस्था-नाम प्रीतिका है ॥

शंका—जाग्रतूदे पदार्थांविषे स्वप्नदी अर इंद्रजालदी सदृ-शतादे ज्ञानदे होयांहोयां तिन्नाविषे आस्थादा अभाव होवे स्वप्न अर इंद्रजालदी सदृशतादा ज्ञान किसते होता है ॥

उत्तर—जाग्रतूदे पदार्थांविषे स्वप्न इंद्रजालके पदार्थांदी सदृशतादे ज्ञानदा कारण श्रवण कर ॥ जिसवेले पुरुष सुताउठे तिसवेले एह विचार करे स्वप्नमैं जैसे पदार्थ प्रतीत होतें हैं अप-रोक्ष रूपताकरके तैसे जाग्रतके पदार्थभी अपरोक्ष रूपताकरके

प्रतीत होते हैं। तातें जाग्रत स्वप्न एन्ना दुहांदे पदार्थांनूं वारंवार विचार निश्चयपर्यंत जाग्रत अर स्वप्नके पदार्थांको तुल्यतानूं देखकरके जाग्रतदे पदार्थांविषे सत्यताबुद्धिनूं त्यागकरके अज्ञान दशादी न्यांई जाग्रतदे पदार्थांविषे रागद्वेषकों नहि प्राप्त होता ॥

शंका—जगतविषे जो मिथ्यारूपतादा ज्ञान है ॥ अर प्रारब्धकर्मदा जो भोग है ॥ एन्ना दुहांदा परस्पर विरोध है जिसतें प्रारब्धकर्मदा जगतदी सत्ताकों चाहिता है तातें जगतविषे मिथ्यारूपतादे ज्ञान होयांहोयां प्रारब्धकर्म करके भोग सिद्धि नहि बनदी ।

उत्तर—भोगविषयांदी सत्यतानू नहि चांहिदा इसते तत्वज्ञानदा अर प्रारब्धदा विरोध नहि एह संपूर्ण जगत इंद्रजालविषे प्रतीत होते जो पदार्थ है ॥ तिनकी न्यांई मिथ्या हैं ॥ जिसते इनकी उत्पत्तिका स्वरूप चिंतन नहि कीया जाता इस प्रकार जगतदी मिथ्यारूपता जिसकों कदींभी नहि भुल्दी ॥ तिस पुरुषकी प्रारब्धकर्मदे भोगकरके कुछ हानि नहि ॥ अर्थ एह ज्ञानवान्को सुखदुखदे अनुभवकरके जगतदी मिथ्या रूपतादा अभाव नहि होता ॥ अरजगतदी मिथ्यारूपता जानने करके प्रारब्धकर्मदा फल जो है सुखदुःख तिसदा अभाव होता जिसते एन्ना दुहांदा विषे भिन्नभिन्न है ॥ अर्थ एह प्रारब्धदाविषे तो एह है ॥ जीवकों सुखदुःख देना अर तत्वज्ञानदाविषे एह है ॥ जगतकों मिथ्या जनाय देना ॥ ब्रह्मज्ञानदा इतने मात्र में आग्रह है ॥ जो मैंने जगतकों मिथ्या दिखलावना इंद्रजालके पदार्थांकी न्यांई अर जीवकों सुखदुःखरूप भोगदे दूरकरणेविषे हठनहि अर प्रारब्धकर्मदा

इस विषे हठ है जो मैंने जीवकों सुखदुःख भुगावना ॥ अर इस वार्ता में तिसका हठ नहि ॥ जो मैंने जगत्कों सत करणा ॥ तांते ब्रह्मविद्यादा अर प्रारब्धकर्मदा परस्पर विरोध नहि जिसते तिन्नादाविषे भिन्न है ॥ रसना घ्राणकी न्यांई जैसे एकशरीरविषे रसना अर घ्राण वास कर्ते हैं ॥ तिन्नाका विरोध नहि ॥ रसना तौ रसकोई ग्रहण कर्ती है ॥ गंधकों नहि ग्रहण कर्ती॥अर घ्राण इंद्रिय गंध ग्रहण कर्ता है रसको नहि ग्रहण कर्ता ।

शंका—भोगने योग्य पदार्थांविषे मिथ्या रूपतादा ज्ञान जो है ॥ सो सुखदुःखदे भोगनूं दूर नहि कर्ता एह वार्ता तुसां कहां देखी है ।

उत्तर—हमने इंद्रजाल करके रचेहोये पदार्थांविषे मिथ्या रूपतादे ज्ञान होयांहोयां हर्ष शोक रूप भोगदेखीता है ॥ अर्थ एह दोपुरुष मदारीदी खेडनूं देखने लगे हैं ॥ अर दुहांपुरुषां को तिसविषे ज्ञान है ॥ जो एह पदार्थ संपूर्ण मिथ्या हैं ॥ अर तिसने एक पुरुषके हथमैं स्वर्णकी मोहर दिती॥ अर तिसकों कहिया एह मोहर मेरेको तूं वेच देह अर एक रूपैयाविच्चों तूं लयलइ ओ तव ओहपुरुष इसवार्ताकों सुनकरके हर्षकों प्राप्त होता है ॥ अर दूसरे पुरुषके कपडयांकों अगलगाई तव ओह पुरुष शोक कों प्राप्त होता है ॥ जैसे ईहां मोहरका देना अर अगका लगावना दोनो मिथ्या हैं ॥ पर हर्षशोककों देते हैं ॥ तैसे मिथ्यारूप पदार्थभी ज्ञानवानकों सुखदुःख देते हैं ॥ कुछ होरभी श्रवणकर ॥ प्रारब्धकर्म अर ब्रह्मविद्या एन्ना दुहादाविरोध है ॥ ऐसे कहिने वालेनूं हम पुछते है ॥ प्रारब्ध कर्म ब्रह्मविद्यादा नाश करणेवाला

है ॥ अथवा ब्रह्मविद्या प्रारब्ध कर्मदे नाश करणेवाली है ॥ पहला पक्ष तो नहि बनता॥प्रारब्धकर्म ब्रह्मविद्यादे नाश करणेवाला तद होवे जेकर जगतदी सतानूं पहलो सिद्ध करके जीवको भोग भुगावे ॥ सो ऐसा तो प्रारब्ध कर्म नहि कर्ता किंतु जीवको भोग-मात्र देता है ॥ अर जगतदी सतानूं नहि बनावता इसते प्रारब्ध कर्म ब्रह्मविद्यादा विरोधी नहि ।

शंका—प्रारब्धकर्म भोगको भुगावता है ॥ एह तुम कहिते हो तो भोगदे बलते भोगने योग्य पदार्थादी सत्यतानूंभी करवावो ।

उत्तर—भोगमात्रतें भोगने योग्य पदार्थादी सत्यता नहि होती जिसते इसविषे दृष्टांत कोई है नहि अर मिथ्या पदार्थासें भोग होता है ॥ इस विषे दृष्टांत बहुते हैं। भोगदा अर्थ सुखदुःखदा अनुभव ।

शंका—मिथ्यापदार्थां करके भोग होता है इसविषे दृष्टांत कोई नहि ।

उत्तर—मिथ्यारूप स्वप्नदे पदार्थां करके भोग सिद्ध होता-है जैसे तैसे जाग्रत् अवस्थादे पदार्थां करके भोग सिद्ध होता है ॥ जाग्रत् अर स्वप्नके भोगविषे न्यूनता अर अधिकता कुछ न-हि मिथ्या जो है सिप्पीदा रुप्पा तिसकरके हर्षशोककलहारूप भोग देखीता है ॥ मिथ्या जो है रस्सीविषे सर्प तिसकरके भयदी प्राप्ति रूप भोग देखीता है अर जेकर तूं कहें ब्रह्मविद्या प्रारब्धदे नाश करणेवाली है तो एहभी वार्ता नहि बनती ब्रह्मविद्या प्रार-

ब्धदे नाश करणेवाली तद होवे जेकर भोगने योग्य जगत्दे पदार्थानूं दूर करे जैसे सिप्पीविषे रुप्पेके भ्रमसें अनंतर एह रुप्पा नहि एह ज्ञान रुप्पेदे स्वरूपनूं दूर करदेताहै तैसे ब्रह्मविद्याभी भोगने योग्य पदार्थांदे स्वरूपनूं दूर करे जेकर तद प्रारब्धकर्मदा भोग जो है सुखदुःखका अनुभव तिसदे साधनदे अभाव होनेते ॥ प्रारब्धदे नाश करणेवाली होवे सो तौ ब्रह्मविद्या जगत्दे स्वरूपनूं नाश नहि कर्ती किंतु जगत्दी मिथ्यारूपतानूं जनावती है ॥ तांते प्रारब्ध कर्मदे नाश करणेवाली ब्रह्मविद्या नहि ।

शंका—ब्रह्मविद्या जगत्कों मिथ्यारूप जनावती है जिसकारणते तिसीकारणते जगत्दे स्वरूपनूंभी नाश करो ।

उत्तर—ब्रह्मविद्या जगत्कों मिथ्यारूपही जनावती है ॥ अर जगत्दे स्वरूपनूं नाश नहि कर्ती जैसे मदारि करके रचेहोये जो पदार्थ हैं ॥ तिन्नाको तत्वज्ञान मिथ्या जनावता है ॥ अर तत्वज्ञान ओन्नादे स्वरूपनूं नहि नाश कर्ता ॥ अर मदारीदी खेडदे देखनेवाले जो लोक हैं ॥ सो तिन्ना पदार्थांदे स्वरूपनूं दूर नहि कीया चाहिते अर ओन्नाकों मिथ्या जान लेते हैं ॥ तैसे ब्रह्मविद्या भोगने योग्य पदार्थांदे स्वरूपनूं दूर नहि कर्ती किंतु जगत्कों मिथ्या जनाव देती है ।

शंका—(श्रुतिको आश्रयकरके) श्रुति एह वार्ता कहिती है जिस अवस्था विषे ज्ञानवान्कों संपूर्ण जगत् आत्मरूप होजाताहै। तिस अवस्थाविषे किसनेत्र इंद्रियकरके किसवस्तुनूं देखे। इस प्रकार द्रष्टादर्शन दृश्यके अभावकों बोधन कर्ती है इसते जा-

जाता है ब्रह्मविद्या उत्पन्न होईहोई जगतदे स्वरूपनूं नाश कर्ती है ॥ त्रिपुटीके अभाव होयांहोयां ज्ञानवानकों प्रारब्ध कर्मदा भोग सिद्ध नहि होता॥ इसीप्रकार किस घ्राण इंद्रियकरके किसगंधनूं कौन सुंघे ॥ अर किसवाक्य इंद्रियकरके किस वचननूं कथन करे किस श्रोत्रइंद्रियकरके किसवचननूं सुने इसीतरां सर्व त्रिपुटीयांदा अभाव जानना ॥ इसप्रकार श्रुतिविषे बहुतवार कथन कीताहै तिसते एह जानीता है ब्रह्मविद्या उदय होईहोई द्वैतदे स्वरूपनूं नाश कर्ती है विना द्वैतदे नाशकीतेसें ब्रह्मविद्या उदय नहि होती द्वैतके नाश होयांहोयां ज्ञानवानकों प्रारब्धभोग सिद्ध नहि होता ।

उत्तर—तैंने जो कथन कीती है श्रुति तिसका अर्थ तेरकों नहि आवता जिसकारणते सूत्रकार भगवान् व्यासजी इस श्रुतिका अर्थ कथन कर्ते भये है सो श्रवण कर ॥ सुषुप्ति अवस्थाविषे अर विदेह मुक्ति अवस्थाविषे किसी इंद्रियकरके किसी विषेनूं नहि जानदा पुरुष अर जेकर इस श्रुतिकों सुषुप्ति अवस्था अर विदेह मुक्ति अवस्थाविषे द्वैतके अभाव कथन पर न मानो ॥ किंतु ज्ञानवानकों द्वैतके दर्शनके अभाव कथन पर मानो तो याज्ञवल्क्य आदिकांकों आचार्यता न बनेगी काहेते जो जेकर याज्ञवल्क्यकों द्वैत नजर आवता है ॥ तद याज्ञवल्क्यकों अद्वैत ज्ञान न भया ॥ तो आचार्य कैसे होवेगा ॥ अर जेकर कहो याज्ञवल्क्य आदिक द्वैतको नहि देखते तो उपदेशके योग्य शिष्यकी प्रतीतिके अभाव होनेते गुरुका उपदेश किसके तांई होवेगा उपदेश तो बनता है जे शिष्यदी प्रतीति होवेगी उपदेशदे अभाव होयांहोयां ब्रह्मविद्यादी संप्रदायदा अभाव होवेगा ।

शंका—याज्ञवल्क्य आदिकांको आचार्यतासमयविषे विद्यमान जो ज्ञान है तिसकों ब्रह्मविद्या रूपता तौ है ॥ परंतु अपरोक्ष ब्रह्मविद्या रूपता नहि द्वैतकी प्रतीति होनेते अर जब याज्ञवल्क्यआदिक निर्विकल्प समाधिविषे स्थित होते हैं ॥ तव द्वैतदी प्रतीतिदा अभाव होता है तिन्नाकों तव द्वैतदी प्रतीतिदे अभावका नाम अपरोक्ष ब्रह्मविद्या है।

उत्तर—द्वैतकी प्रतीतिके अभावकानाम जेकर अपरोक्ष ब्रह्मविद्यानूं मानेगा तद सुपुप्ति विषे द्वैतकी प्रतीतिका अभाव होता है ॥ तांते सुपुप्ति अपरोक्ष ब्रह्मविद्या होई चाहीये।

शंका—केवल द्वैतकी प्रतीतिके अभावका नाम अपरोक्षब्रह्मविद्या मैं नहि कहिता किंतु आत्मज्ञान अर द्वैत प्रतीतिदा अभाव एन्ना दुहांका नाम मैं अपरोक्ष ब्रह्मविद्या कहिताहां तांते सुपुप्ति अवस्थाविषे आत्मज्ञानदे अभाव होनेतें सुषुप्ति अवस्थाकों ब्रह्मविद्या रूपता नहि।

उत्तर—द्वैतदी प्रतीतिदे अभाव होयांहोयांभी सुषुप्ति अवस्थाविषे आत्मज्ञानदे अभावते जेकर सुषुप्ति अवस्थाकों अपरोक्ष ब्रह्मविद्या रूपता नहि तद आत्मज्ञानकों अपरोक्ष ब्रह्मविद्या रूपता कहिया चाहीये अर द्वैतदी न प्रतीति होनेका नाम अपरोक्ष ब्रह्मविद्या न कहिया चाहीये।

शंका—एकएकको अपरोक्ष ब्रह्मविद्या रूपता नहि किंतु द्वैतदा न प्रतीत होना अर आत्मज्ञान एन्ना दुहांके मिलयां होयांका नाम अपरोक्ष ब्रह्म विद्या है।

उत्तर–तेरे मतविषे द्वैतदी प्रतीति न होनी अर्धविद्याता एह है अर अर्धविद्या आत्मज्ञान है ॥ घटादिकाकों आत्मज्ञान नहि अर द्वैत प्रतीतिदा अभाव है ॥ तांते घटादि अर्धविद्या वाले भये जिसतें घटादिकांकों कदाचितभी किसी प्रकारका द्वैत नहि प्रतीत होता अर तेरे मतविषे समाधिवाल्यां पुरुषांकों अर्धब्रह्मविद्याभी न भईचाहीये जिसकारणसें मछरदे शब्दसें आदिलेकरके विक्षेप बहुत है समाधिवालेयांकों ॥ अर घटादिकांकों कोई विक्षेप है नहि ॥ तांते घटादिकांको तेरे मतविषे द्वैतदी प्रतीतिदे अभावदी दृढता करके अर्धब्रह्मविद्या होई चाहीये ।

शंका–आत्मज्ञानहि विद्या है द्वैतदी अप्रतीति विद्या नहि ।

उत्तर–एह वार्ता तो इष्ट है ॥ तांते इस निश्चयकों धारकरके सुखी हो ।

शंका–आत्मज्ञानही विद्या है परंतु सो ब्रह्मविद्या दुष्ट चितविषे उत्पन्न नहि होती इसकारणते चितदे दोषांदे दूर करणवासते चितवृत्तिदा निरोध कीता चाहीता है ऐसे मैं कहितांहां ।

उत्तर–जेकर तेरा चित दुष्ट है सो तूं चितदा निरोध सुख पूर्वक कर असांनूंभी चितदा निरोध करणा इष्ट है किसते ऐसा पुछे तां श्रवण कर ॥ चितदे दोषां दूर होयांहोयां अद्वितीय आत्मज्ञानदेवासते जानने योग्य जो है जगतदी मिथ्यारूपता सो भलीप्रकार जानीतीहै जिसकारणते इसते चितदा निरोध हमारेकों इष्ट है इसप्रकार किसदी इछानूं करदा होया इसमंत्रदे अंशकरके कथन करणे योग्य जो अर्थसी सो कथन कीता अब तिसदे अर्थ-

दी समाप्ति करते है तांते एह सिद्ध भया ज्ञानवान् इच्छाकों कर्ता होया भी अज्ञानीकी न्यांई इछा नहि कर्ता इसकारणते श्रुतिने कथन कीया है किमिछन्।

प्रश्न—श्रुतिदे अक्षरांदा अर्थतां एह प्रतीत हुंदा सी ज्ञानवान् किसीपदार्थदी इछा नहि कर्ता तिस अर्थकों छोडकरके जो तुसां एह अर्थ कथन कीता ज्ञानवान् इछा कर्ता होयाभी अज्ञानीकी न्यांई इछा नहि कर्ता इसविषे कारण है।

उत्तर—इसप्रकार व्याख्यान करणेविषे एन्ना दूआं शास्त्रांदा परस्पर विरोध नहि आवता एक शास्त्रज्ञानवान्कों रागादिकांदे अभावदे कथन करणेवाला है सो एह है चितदी प्रवृत्तिदा स्थान जो हैं विषे तिन्नाविषे जो राग है सो अज्ञानदा चिन्ह है विषयांविषे रागवाले चित्तकों ज्ञान नहि होता जैसे जिसवृक्षकी पोडविषे अग्नि है तिसवृक्षविषे हरयाई नहि होती अर दूसरा शास्त्रज्ञानवानकों रागादिकांदा कथन करणेवाला है सो एह है जगत्दे मिथ्या जाननेते अर आत्मादी असंग निर्विकारता जाननेते शास्त्रदा उपदेश समाप्त होजाताहै॥अर्थ एह जो आगे शास्त्रनूं उपदेश करणे योग्य कुछ नहि रहिता इतने मात्र करके मोक्षदीप्राप्ति होजाती है॥अर रागद्वेष आदि चितविषे जैसे हैं तैसे ही रहें॥ रागद्वेष आदिकांकरके मोक्षदा अभाव नहि होजाता जेडा शास्त्र तत्ववेताकों राग कथन करणेवाला है॥ तिसका अर्थ एह है अज्ञानीकी न्यांई ज्ञानवान्कों रागद्वेष दृढ नहि होता किंतु रागाभास होता है अर जेडा शास्त्र रागदे अभावनूं कथन करणेवाला है तिसका अर्थ एह है ज्ञानवान्को जगत्दी सतालेकर राग नहि

होता इसप्रकार इथां शास्त्रांदा अविरोध होजाना है इस प्रकार इनने ग्रंथ करके किमिछन इसश्रुति वाक्यदा अर्थ कथन कीया आगे कस्यकामाय इसवाक्यदा अर्थ वर्णन करते हैं ज्ञानवान्कों जैसे जगतविषे मिथ्यारूपतादा ज्ञान होता है तिसकरके कामना करणे योग्यपदार्थ कोई नहि रहिता इसअर्थदे जनावने वास्ते एह कथन कीया किमिछन् ॥ इसीप्रकार आत्मादी असंगतादे ज्ञान करके वासतव भोक्ता कोई नहि रहिता इसअर्थदे जनावने वासते श्रुतिने कथन कीता है किसदी कामनावासते ।

शंका—आत्माकों भोक्तारूपतादा निषेध तद बने जेकर पहिले आत्माविषे भोक्ता रूपतादी प्राप्ति होवे । सो तो भोक्तारूपतादी प्राप्ति आत्माको कदी नहि बनती आत्माकों असंग होनेतें ।

उत्तर—आत्माकों भोक्ता रूपतादी प्राप्ति अज्ञानीआंदे अनुभव करके सिद्ध है इस अर्थनूं बृहदारण्य उपनिषददी श्रुतिभी कथन करती है । अर मैत्रेयी भर्तादी कामनादे वासते भर्तास्त्रीकों प्यारा नहि लगता।इहांसे लेकरके आत्मादी कामनादेवासते संपूर्ण प्यारे लगते हैं । इथां तोरोजो वाक्यसमुदाय है तिसकरके भर्ता अर स्त्रीसेंआदिलेकरके प्रपंचको आत्मादे भोगदी साधनता कथन करी है। तिसतें एह जानीता है आत्माकों अज्ञान करके भोक्तारूपतादी प्राप्ति है इसप्रकार बृहदारण्यक उपनिषदकी श्रुतिविषे बहुत योपन कीया है॥ अर्थ एह जो बहुतवारी कथन कीया है। अर आत्माविषे भोक्ता रूपतादे निषेधवासते भोक्ताविषे विकल्पकरके पुछते हैं॥ भोक्ता कौन है ॥ इह निर्णय कीया

चाहिये ॥ कूटस्थ भोक्ता है अथवा चिदाभास भोक्ता है अथवा चिदाभास अर कूटस्थ दोनो मिले होये भोक्ता हैं ॥ तिन्नाविच्चों कूटस्थ तो भोक्ता नहि वनदा असंग होनेते।

शंका—कूटस्थ असंगभी होवे अर भोक्ताभी होवे इसविषे क्या दोष है।

उत्तर—अंसगनाम है निर्विकारदा अर भोक्ता होता है विकारी काहेते जो सुखदुखका अभिमानरूप विकारका नाम भोग है ॥ निर्विकारता अर सविकारता एन्ना दुहांकी एकविषे प्राप्ति नहि होती जैसे एकसूर्यविषे अंधकार अर प्रकाश एन्नां दुहांदी प्राप्ति नहि होती । तैसे कूटस्थ निर्विकार असंगविषे भोगरूप विकारकी प्राप्ति नहि होती।

शंका—जेकर कूटस्थ भोक्ता नहि वनदा तौ विकारी चिदाभास भोक्ता होवे।

उत्तर—चिदाभास यद्यपि विकारी है तौभी अधिष्ठानते बिना चिदाभासकी सिद्धि नहि होती । तांते अधिष्ठानरूप कूटस्थनूं छोडकरके चिदाभासेकी स्थिति नहि बनती इसते केवल चिदाभासभी भोक्ता नहि वनता तांते चिदाभास अर कूटस्थ दोनोमिले होये भोक्ता हैं। एह व्यवहार दशाविषे कथन करीता है। परमार्थ दृष्टिकरके उभय आत्मकता नहि वनती।

शंका—उभयआत्मक भोक्ता व्यवहार दृष्टिकरके सिद्ध है॥ पारमार्थिक नहि । एह तुसाडा कहिना अयुक्त है। जिस कारणते वृहदारण्यक उपनिषदविषे एह कथन कीता है एह जो

पुरुष है जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिके प्रकाशनेवाला सो असंग है। ऐ-से असंग कूटस्थको कथन कीया जैसे। तैसे उभयात्मक चि-दाभासकोभी कथन कीया है ॥ प्राणांदे विद्यमान होयांहोयां जो एह विज्ञानमय हृदयविषे प्रतीत होता है ॥ इसवाक्यकरके। इसते बुद्धि उपाधिक चिदाभास वास्तव है ॥ कूटस्थकी न्याई श्रुति करके प्रतिपादित होनेते।

उत्तर—चिदाभासदी वास्तवताविषे श्रुतिका तात्पर्य नहि। जिसकारणते बुद्धि उपाधिक जो भोगता है उभयात्मक तिसदे आरंभनूं करके बुद्धिआदिकांदी कल्पनादा अधिष्ठानरूप कूटस्थ चिदात्माशेष स्थापन कीता है बुद्धिआदिक अनात्मवस्तुयांनूं नि-षेध करको बृहदारण्यक आदिक उपनिषदांविषे सो जिसप्रका-र स्थापन कीताहै सो श्रवण कर तिसविषे प्रथम बृहदारण्यक उ-पनिषदका प्रसंग राजा जनक याज्ञवल्क्य मुनीश्वरसें एह पुछदा भया आत्मा कौन है। तब याज्ञवल्क्यमुनीश्वर उत्तर कथन कर्ता भया। प्राणांदे विद्यमान होयांहोयां जो विज्ञानमय हृदय वि-षे प्रतीत होता है। ऐसे विज्ञानमयदे प्रारंभनूं करके पाछेसें क-हिता भया ॥ एह पुरुष असंग है तिसका बुद्धिआदिकांदे साथ संग नहि ॥ इस प्रकार असंगकूटस्थनूं शेष स्थापन कर्ता भया याज्ञवल्क्य मुनीश्वर ॥ अब ऐतरेय उपनिषदका प्रसंग।

प्रश्न—(शिष्यदा)कौनहै एह आत्मा जिसदी हम उपासना क-रे देह इंद्रियां प्राणमन बुद्धि कूटस्थ एन्नाविच्चों आत्मा कौन है इस प्रकार अंतःकरण उपाधि सहित आत्मादे आरंभनूं करके।सनका-दि मुनीश्वर गुरु कहिते भये॥चैतन्यमात्र स्वरूप आत्मा है ॥इस-

प्रकार कूटस्थ शेष स्थापन कीया है इसी प्रकार होरणा उपनिषदांविषेभी कहिया है॥ इसप्रकार श्रुतीयां अर युक्तीयांदे विचार करके उभयात्मक भोक्तादी मिथ्यारूपता सिद्ध भई। अर सत्यरूप कूटस्थ असंगदी अभोक्ता रूपता सिद्ध भई।

शंका—तुसाडे करके कथन कीतीयां जो श्रुतीयां अर युक्तीयां है॥ तिन्नाकरके भोक्तादी मिथ्यारूपतादे सिद्ध होयांहोयां लोकांकों भोक्ताविषे सत्यरूपतादी बुद्धि करणते होरही है।

उत्तर—लोकप्रसिद्ध जो भोक्ता है सो कूटस्थदे विवेकज्ञानदे अभाव करके॥ कूटस्थदी सत्यतानूं आपनेविषे कल्पकरके तिसद्वारा आपनेविषे भोक्तारूपदी सत्यतानूं मानकरके कदाचित् भोग्यदे त्यागनेदी इच्छा नहि कर्ता।

शंका—जेकर आत्मा भोक्ता नहि तौ आत्मादी कामना वासते संपूर्ण प्यारे होते हैं। इसप्रकार बृहदारण्यक उपनिषदविषे आत्मादा शेष रूपता करके भोग्यकों किउँ कथन कीया है।

उत्तर—श्रुतिने कूटस्थ आत्मादा शेष रूपताकरके भोग्यनूं नहि कथन कीया। किंतु अज्ञानीयांदे अनुभवकरके सिद्ध जो उभयआत्मक भोक्ता है तिसदा शेष रूप संपूर्ण भोग्य है॥ ऐसा श्रुतिने अनुवाद कीया है अर्थ एह जो अज्ञानीयांदे अनुभवनूं श्रुतिने कथन कीया है। आपने हृदयसें नहि कथन कीया॥ तांते लोकप्रसिद्ध जो भोक्ता है। सो आपने भोगवासते भर्ता स्त्रीपुत्रादिरूप जो भोगदे साधन हैं॥ तिसदी इछा कर्ता है॥ एह जो अज्ञानीयांदा अनुभव है॥ सो श्रुतिने प्रकट कीता है॥ अर कूटस्थ आत्मानूं भोक्ता रूप करके नहि कथन कीया।

शंका—अज्ञानीयांदे अनुभव सिद्ध आत्मादी भोक्ता रूप-तानूं श्रुतिने किसवासते कथन कीया ।

उत्तर—इसवासते श्रुतिने कथन कीया । अज्ञानीयांदा भोग्यविषे प्रेम बहुतसा तिसकरके अज्ञानी दुःख पावनेसे ॥ तिस-दुःखनूं देखके श्रुतिनूं दया आई॥ तब श्रुतिने अज्ञानीयांके तांई एह उपदेश कीता ॥ हेलोको! तुसी भोग्य विषे प्रीति मत करो । जिस भोक्तादेवासते भोग्य है तिस भोक्ताविषे प्रीति करो । इस-वासते अज्ञानीयांदे अनुभव सिद्ध आत्मादी भोक्ता रूपतानूं श्रु-तिने कथन कीया ॥ भोग्यविषे प्रेमनूं त्याग करके आत्माविषे प्रे-म करणा चाहीता है ॥ इसविषे दृष्टांतरूपताकरके ईश्वरविषे प्रे-म प्रार्थना सहित पुराण वचननूं श्रवण कर हेलक्ष्मीपते! हेपरमे-श्वर! आत्मज्ञानसें रहित अज्ञानीयांदी जो विषयांविषे दृढप्रीति है सो प्रीति मेरे हृदयसें दूर होजावे तेरा स्मरण करणे लगयां ॥ अर्थ एह जो मेरा मन विषयांविषे प्रीतिनूं त्यागकरके सदा तेरे-विषे स्थित होवे अथवा अविवेकीयांदी विषयांविषे जैसी दृढ प्रीति है तैसी दृढप्रीति मेरी तेरेविषे होवे॥अर्थ एह तेरे भजनविषे लगाहोया जो मैं हां ॥ सो मेरीप्रीति तेरे भजनतें मत दूर होवे । सदाही मेरे हृदयविषे तेरे भजनदी प्रीति बनी रहे । सर्वकार्यांको कर्तयां होयांजी ।

शंका—होवे इसप्रकारका वचन पुराणविषे अर श्रुतिविषे क्या आया ।

उत्तर—एह जो पुराणविषे कथन कीति है युक्ति तिसकरके संपूर्ण स्त्रीपुत्र धनादिरूप भोग्यसें विरक्त होगया है चित्त जिस-

का ऐसा जो पुरुष है सो भोगांविषे प्रीतिनूं त्याग करके भोक्ता आत्माविषे प्रीतिनूं दृढ कर्ता हूया भोक्तादे तत्वदे जाननेदी इछा कर्ता है अर भोक्ताविषे प्रमाद कदी नहि कर्ता ॥ सदा तिसदे स्वरूपकों विचारता रहिता है ॥ जैसे पामर जीव माला चंदन स्त्रीवस्त्र सुवर्ण आदिकांविषे तत्पर रहिता है ॥ तिनका प्रमाद नहि कर्ता कदीभि अर जैसे विद्यार्थि सभाविषे होरणांदे जितनेदी इछावाला काव्य नाटक तर्क आदिकांदा निरंतर अभ्यास कर्ता है ॥ तैसे जन्ममरणदे जित्तनेदी इछावाला जो जिज्ञासी है सो सदा निरंतर आत्मादा विचार करे ॥ अर जैसे स्वर्गदी प्राप्तिदी इछावाला जो पुरुप है सो जप यज्ञ उपासना आदिकांनूं श्रद्धाकरके कर्ता है ॥ तैसे मुमुक्षु आत्मज्ञानदेवासते सदा आत्मादा विचार करे ॥ अर जैसे अणिमा महिमाआदिक सिद्धीयांदी प्राप्तिदी कामनावाला योगी अतियत्नकरके समाधि कर्ता है ॥ तैसे जिज्ञासी मोक्षदी प्राप्तिवासते यत्न करके आत्मादा विचार करे॥ अर्थ एह जो आत्मानूं देहआदिकांसें भिन्न जाने इसप्रकार सदा अभ्यासविपे लगेहोये जो हैं विद्यार्थी स्वर्गार्थी अर योगी तिन्नाकों आपोआपने कार्यविषे चतुराई वधती जाती है दिनदिनविपे ॥ तैसे मुमुक्षुदा विवेकभी दिनदिनविषे निर्मलतानूं प्राप्त होताजाता है ॥ अभ्यासदी दृढता करके विवेकदी निर्मलतादे प्राप्त होयांहोयां क्या फल होता है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ भोक्तादे वास्तव स्वरूपदे विवेक करणेवाला जो जिज्ञासी है ॥ तिसने साक्षीदी असंगता जाग्रत् आदिकांविषे जानीती है ॥ अन्वय व्यतिरेक करके । अर्थ एह जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तिविषे साक्षीकी एकरसता जानीती है । अर जाग्रत्का स्वप्नविषे अभाव अर स्व-

ग्रका सुषुप्तिविषे अभाव अर सुषुप्तिका जाग्रतविषे अभाव जा-नीता है एह अन्वय व्यतिरेक श्रुतिनें स्पष्ट दिखलाये हैं ॥ जाग्र-त अवस्थाविषे जो स्थूल प्रपंच देखीता है सो जाग्रत् अवस्था-विषेहि रहिता है ॥ स्वप्न अर सुषुप्ति अवस्थाविषे नहि प्राप्त हो-ता॥ अर स्वप्नअवस्थाविषे जो सूक्ष्म प्रपंच वासनामय देखीता है॥सो स्वप्न अवस्थाविषेही रहिता है॥जाग्रत् अर सुषुप्तिअवस्था विषे नहि प्राप्त होता॥अर जिस द्रष्टाने जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति एन्ना तिन्ना अवस्थाकों अनुभव करीता है ॥ सो द्रष्टा एन्ना तिन्ना अव-स्थाविषे एकहै इस प्रकार द्रष्टादे अन्वयनूं अर जाग्रत् आदिक अ-वस्थादे व्यतिरेकनूं सभीलोक आपने अनुभवकरके जानते हैं ॥ केवल अनुभवहि इस अर्थविषे प्रमाण नहि किंतु वेदभी प्रमाण है ॥ सो वेद एह है॥ द्रष्टा जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तिविषे जो कुछ देखता है॥तिसकों ग्रहण करके अवस्थांतरविषे नहि जाता इसी कारणते एह द्रष्टा पुरुष असंग है ॥ सो एह आत्मा सुषुप्ति अवस्थाविषे गमन करके अर रमन करके देखकरके सुखनूं अर देखकरके द्वै-ताभावनूं फेर जाग्रत् अवस्थानूं प्राप्त होता है ॥ जाग्रत् अर स्वप्न अर सुषुप्तिरूप प्रपंचनूं जो सच्चिदानंद ब्रह्म प्रकाशता है सो ब्रह्म मैंहां ॥ बुद्धि अर चिदाभासरूप मैं नहि ॥ इसप्रकार श्रुतिकरके अर आपने अनुभवकरके निश्चयकों प्राप्त भया जो पुरुष है ॥सो संपूर्ण बंधनाते रहित होजाता है॥एकहि आत्मा जानने योग्य है॥ जाग्रत् स्वप्न अर सुषुप्ति अवस्थाविषे तिन्ना अवस्थाते असंग जो साक्षीहै सो मैंहा इसप्रकार जाननेवाले पुरुषकों फेर जन्म-कीप्राप्ति नहि होती है ॥ जाग्रतआदिक तिन्ना अवस्थाविषे जो भोग्य रूपतानूं प्राप्त होता है ॥ अर्थ एह जाग्रत् अवस्थाविषे

स्थूल भोग्यरूपतानूं जो प्राप्त होता है अर स्वप्नअवस्थाविषे वासनामय सूक्ष्म भोग्यनूं जो प्राप्त होता है अर सुषुप्ति अवस्थाविषे आनंदरूप भोग्यनूं जो प्राप्त होता है अर तिन्ना अवस्थाविषे विश्वतैजस प्राज्ञरूपतानूं जो प्राप्त होता है अर तिन्ना अवस्था विषे जो भोगरूपतानूं प्राप्त होता है ॥ अर्थ एह जाग्रत् अवस्थाविषे जो स्थूलपदार्थांदे अनुभवरूप भोगनूं प्राप्त होता है ॥ अर स्वप्न अवस्थाविषे वासनामय सूक्ष्मपदार्थांदे अनुभवरूप भोगनूं प्राप्त होता है ॥ अर सुषुप्ति अवस्थाविषे आनंद अनुभवरूप भोगनूं जो प्राप्त होता है ॥ अर वास्तवते जो जाग्रत्आदि बारांपदार्थांते भिन्न है ॥ अर्थ एह जाग्रत् आदि बारांपदार्थांकी कल्पनाका जो अधिष्ठान है चैतन्यमात्ररूप साक्षी निरतिशयानंद रूपताकरके शोभमान जो परमात्मा है सो मैंहां ॥ इसप्रकार विवेककरके आत्म तत्वदे असंग निश्चय कीतया होयां। भोक्तारूपता किसकों भई ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर । विज्ञानमय है नाम जिसका ऐसो जो चिदाभास है । सो भोक्ता है दिकारी होनेते ।

शंका—जेकर चिदाभास भोक्ता अंगीकार करोंगे तद एह जो पिछे तुसां कथन कीतासी किसदी कामनादेवासते एह वचन भोक्तादे अभावनूं कहिनेवास्ते है तिसका विरोध प्राप्त होवेगा ।

उत्तर—तिसवचनका विरोध नहि प्राप्त होता ॥ जिसते तिसवचनका अर्थ एह है सत्यभोग ता कोई नहि जिसभोक्ता चिदाभास मिथ्या है चिदाभासकी मिथ्यारूपता श्रुति भी कथन कर्ती है ॥ महामाया जीव ईश्वरनूं आभासरूप कर-

के कर्ता है अर अनुभवतेंभी चिदाभास मिथ्या जानीता है ॥ द्रष्टा दर्शन दृश्यरूप त्रिपुटीके अंतर्गतता करके अनुभव होता है चिदाभासदा ॥ इसतें चिदाभास मिथ्या है ॥ जैसे मदारीके रचे होये पदार्थ मिथ्या होते हैं ॥ तैसे जगत् मिथ्या है अचिंत्यरचनारूप होनेतें तिस मिथ्यारूप जगतदे अंतर्गत होनेतें चिदाभासभी मिथ्या है ॥ ऐसा ज्ञानवान् जानते हैं ॥ अर जैसे जगतका अभाव होजाता है। तैसे सुषुप्ति अर मूर्छा अवस्थाविषे चिदाभासकाभी अभाव होजाता है ॥ सो साक्षीने अनुभव करीता है॥ इसतें चिदाभास मिथ्या है।

शंका—होवे चिदाभास मिथ्या तिसतें सिद्ध क्या भया।

उत्तर—जद चिदाभास आत्मा जो है कूटस्थ तिसतें भिन्न आपनेआपकों वारंवार मिथ्यारूप निश्चय कर्ता है। अर आपने नाशकों निश्चय कर्ता है। तद फेर भोगांदी वांछा नहि कर्ता ॥ जैसे अतिरोगी पुरुषकों जद पृथिवीपर उतारीता है। तद ओह विवाहदी इछा नहि कर्ता ॥ तैसे चिदाभासभी भोगांदी इछा नहि कर्ता ॥ अर चिदाभास अज्ञानदशाकी न्यांई मैं भोक्ताहां इस व्यवहार करणेविषेभी लज्जाकों प्राप्त होता है ॥ जैसे न कवड्यापुरुष सभाविषे वार्ता कर्ताहोयां लज्जाकों प्राप्त होता है। अजपर्यंतभी मेरा कर्म क्षय नहोया। ऐसे क्लेशको प्राप्त हूयाहूया प्रारब्धकर्मके फलनूं भोक्ता है ॥ अर आपनी भोक्ता रूपतानूं ज्ञानसें उपरंत साक्षी विषे कलपनेकों समर्थ नहि होता ॥ जिसतें आपनेविषेहि भोक्तारूपतादे मंननेविषे लज्जानूं प्राप्त होता होता है। अर आपनी भोक्तारूपतानूं साक्षीविषे कलपे एह

तो कथाही व्यर्थ है ॥ इस अभिप्रायको लेकरके किसदी कामना-
वासते एह जो श्रुति वचन है सो भोक्तादे निषेधनूं करे है ॥ शंका-
सें रहित होयकरके ॥ तिसते शरीरदे तापकरके तापकी प्राप्ति न-
हि होती ॥ तत्ववेताको जिन्नाशरीरांविषे ताप हैं ॥ सो शरीर ति-
न्नप्रकारके हैं ॥ एकस्थूल दूसरासूक्ष्म तीसराकारण ॥ अर ति-
न्नाविषे जोजो उचित ताप है सो श्रवण कर ॥ स्थूलदेहविषे वा-
तपित्तकफते उत्पन्न होयेहोये करोडां रोग है ॥ अर दुर्गंधता अर
कुरूपता अर दाह अर अंगभंगसें आदिलेकरके अनेक प्रकारके
ताप हैं॥ अर सूक्ष्मशरीरविषे कामक्रोध आदि ताप हैं ॥ अर शां-
तिदांति आदि ताप हैं जिसते कामक्रोध आदि प्राप्त हूयेहूये पुरु-
कों दुःख देते हैं ॥ अरशांतिदांति आदिक न प्राप्त हूयेहूये पुरुष-
कों दुःख देते हैं ॥ इसते दोनोप्रकारके तापही हैं ॥ जिसते दुःख-
दा कारण हैं ॥ कारण शरीरविषे जो ताप हैं सोछांदोग्य उपनि-
षदविषे कथन कीये हैं ॥ देवराज इंद्र जो ब्रह्माजीका शिष्य है ति-
सने ब्रह्माजीके तांई कथन कीया है ॥ हेभगवान्! सुषुप्तिअव-
स्थाविषे एह पुरुष आपने आपनूं नहि जानता । एह मैंहां जैसे
जाग्रत् अवस्थाविषे जानता है ॥ अर सुषुप्ति अवस्थाविषे होर-
णां भूतांकोंभी नहि जानता । अर मृतहोयेकी न्यांई होजाता है ॥
अर सुषुप्तिअवस्थाविषे मैं भोगने योग्यपदार्थ किसीकोंभी नहि
देखता इसप्रकार स्वपरदे ज्ञानदे अभावनूं अर अज्ञानविषे मर-
ण तुल्यतानूं अर अगलेदिनविषे होनेवाले जो दुःख हैं ॥ तिन्ना-
दा कारण वासनादे सदभावनूं इंद्रने आपने गुरु ब्रह्माजी आगे
कथन कीआ है ॥ एह जो तिन्ना शरीरांविषे ताप है ॥ सो स्वाभा-
विक है इसते किसीप्रकार करके शरीरांविच्चों ताप दूर नहि होते॥

जिसकारणते एन्हा तापांकेसाथ शरीरांदे वियोग होयांहोयां शरीर स्थित नहि रहिते इसकारणते शरीरांविषे ताप स्वभाव सिद्ध हैं ॥ तिसविषे दृष्टांतानूं श्रवण कर। जैसे तंतूआंसे रहित वस्त्र नहि होता। जैसे वालांसें रहित लोई नहि होती। अर जैसे मृत्तिकासे रहित घट नहि होता ॥ तैसे तापांसे रहित शरीर नहि होते ॥ एह ताप जो हैं सो शरीरांविषे है । चिदाभासविषे वास्तवमें ताप कोई नहि ॥ जिसते चैतन्यका प्रकाश एक स्वभाव देखीता है। और स्वभाव नहि देखीदा । तांते चैतन्यका प्रतिबिंबरूप चिदाभासकाभी और स्वभाव नहि ॥ जेकर चिदाभासविषेभी ताप नहि बनते तो साक्षीविषे ताप नहि बनते एह तौ क्या कहिना है।

शंका—जेकर चिदाभासविषे ताप नहि। तौ मैं तापकों प्राप्त होयांहा इस अनुभवदी क्या व्यवस्था है ।

उत्तर—वास्तवते चिदाभासविषे तापदे अभाव होयांहोयांभी तापांवाले शरीरांदे साथ अविद्याकरके आपनी एकतानूं मानता हैं चिदाभास आपने करके सहित शरीरां तिन्नाविषे साक्षीदी सत्यतानूं कल्प करके। तापांवाले शरीरां तिन्नानूं आपना वास्तवरूप मंनताहै चिदाभास इसप्रकार चिदाभासकों भ्रमदीप्राप्तिदे होयांहोयां शरीरांदे तापांकों प्राप्त होयांहोयां मैं तापकों प्राप्त होयाहां ऐसे चिदाभास मानता है॥ कुटुंबीकी न्याई। जैसे कुटुंबीपुरुष स्त्रीपुत्रआदिकांके तापांकों प्राप्त होयांहोयां मैं तापकों प्राप्त होयाहां । ऐसे व्यर्थहि मानता है॥ तैसे चिदाभासभी शरीरांके तापकों प्राप्तहोयांहोयां मैं तापकों प्राप्त भयाहां ऐसे

व्यर्थ मानता है॥ इसप्रकार अविवेक कालविषे चिदाभास भ्र-मकरके आपनेविषे तापानूं मानता है॥ अर जद चिदाभासकों विवेक प्राप्त होता है तद भ्रांतिनूं त्याग करदेता है अर आपने आपनूं मिथ्यारूपता करके कुच्छभी न गिणता होया आपना वास्तवरूप तापासें रहित जो साक्षी है तिसनूं सदा चिंतन कर्ता होया तापावाले शरीरकेसाथ तादात्म्याध्यासनूं प्राप्त होकरके शरीरदे तापानूं आपनेविषे नहि मानता ॥ भ्रांतिज्ञान तापादा कारण है॥ अर तत्वज्ञान तापांदे अभावदा कारण है । इसविषे दृष्टांत श्रवण कर। रसीविषे सर्पदे ज्ञानकरके पुरुषकों भय अर भजनाआदि दुखप्राप्त होता है । अर स्थाणुविषे चोरज्ञानकरके-भी भयआदिक दुख प्राप्त होता है। अर जद रसीका यथार्थ ज्ञान होता है। तद सर्पज्ञान दूर हो जाता है॥ सर्पज्ञानके दूर होयां प्रथम कीता जो सी भयआदिक तिसकरके लज्जाकों प्राप्त हो-ता है ॥ व्यर्थ मैंने भयआदिक कीता है । ऐसे मानता है ॥ चिदाभास साक्षीकी शरणकों प्राप्त होता है। आपने दोषांदी क्ष-मा करावता होयाहोया जैसे कोईपुरुष भ्रमकरके किसी उत्तम-पुरुषनूं कहदेवे तूं चोरहैं अर पाछेसें होर पुरुषके पासों तिसदा प-दार्थ निकसआवता है॥ तब तिस उत्तमपुरुषके पासों बहुत क्षमा करावता है ॥ जैसे कोईपुरुष वारंवार कीता जो पाप है तिसदे दूरकरणेदेवास्ते वारंवार गंगास्नान व्रत जप आदिकानूं कर्ता है॥ तैसे चिदाभासभी साक्षीविषे आरोप्या जो सी संसाररूप दोष सोई भया पाप तिसदे दूर करणे वासतेसदा साक्षीविषे तत्पर होता है॥ साक्षीके ध्यानकों कर्ता होया ॥ अर चिदाभास आपने गुणांकों प्रकट करणेविषे लज्जाकों प्राप्त होताहै॥जैसे गुह्यस्थान-

विषे कुरूपवाली वेश्या जाननेवाले पुरुषके साथ हास्यविलास कर-णविषे लज्जाकों प्राप्त होती है ॥ अर चिदाभास विवेककरके तिन्हा शरीरतें आपनूं भिन्न जानता होया फेर शरीरकेसाथ ता-दात्म्य भ्रमकों नहि प्राप्त होता जैसे म्लेच्छोंकेसंगकरके दोषकों प्राप्त होया जो ब्राह्मण है सो तिसदोषदे दूरकरणेवासते प्रायश्चि-तनूं कर्ता होयाहोया ॥ फेर म्लेच्छोंके साथ संग नहि कर्ता ॥ अर एह जो कथन कीयासी चिदाभास साक्षी शरणकों प्राप्त होता है॥ सो केवल आपने अपराधदे दूर करणेवासते नहि होता ॥ किंतु साक्षीकी शरणविषे चिदाभासकों महत फलप्राप्त होता है ॥ जैसे यौवराजविषे स्थित जो राजादा पुत्र है ॥ सो चक्रवर्तीराजदी प्रा-प्तिदेवासते राजाका अनुसारी होता है ।

शंका—युवराजकों राजाका अनुसारी होनेविषे चक्रवर्ति राजरूप फलप्राप्त होता है जैसे तैसे चिदाभासकों साक्षीदी शर-णाविषे फल कुछ नहि ॥ इसकारणते चिदाभास साक्षीदी शरण-कों किउं कर प्राप्त होता है।

उत्तर—चिदाभासने साक्षीदी शरणविषे बहुत फलश्रुतीयां विषे श्रवण कीये हैं ॥ तिन्हा फलांके वासते साक्षीकी शरणकों प्राप्त होता है॥सो फल कौन हैं ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥जो पुरु-षब्रह्मकों जानता है सो ब्रह्मरूप होजाता है ॥ अर जिसकों ब्रह्मवेत्ता उपदेश कर्ता है तिसका अज्ञान नष्ट होजाता है अर ब्रह्मवेत्ता शोकनूं तरजाता है अर पापनूं तर जाता है॥अर्थ एह जो शोकसें अर पापसें रहित होजाता है अर ब्रह्मवेत्ता पंजां कोशांके साथ तादात्म्याध्यासते रहित होयाहोया मोक्षकों प्राप्त होजाता

है ॥ इसप्रकार ब्रह्मरूपतादी प्राप्तिसें आदिलेकर फल जो श्रवण कीये हैं ॥ तिन्नाको प्राप्तिदेवास्ते चिदाभास साक्षीकाही सदा चिंतन कर्ता है ॥ अर मिथ्यारूप जगत्‌का चिंतन नहि करता।

शंका—ब्रह्मज्ञानकरके ब्रह्मरूपतादी प्राप्तिदे होयांहोयां चिदाभासकी चिदाभासरूपता नाश होजावेगी तांते आपने नाशवास्ते ब्रह्मज्ञानके यत्नकों कैसे करेगा।

उत्तर—जैसे देवतारूपदी प्राप्तिदी कामनावाले मनुष्य अ-ग्निआदिकांविषे प्रवेश करजाते हैं जो आपनेनाशदा कारण है ॥ अर्थ एह अनेक प्रकारके क्लेशांवाले मनुष शरीरनूं त्याग करके ॥ अनेकप्रकारके सुखांयुक्त देवभावकी प्राप्तिवास्ते आपने नाशदे कारणविषे प्रवृत्त होते हैं मनुष्य तैसे चिदाभासभी साक्षीरूपता करके स्थितिदे वास्ते ॥ आपने नाशदे कारण ब्रह्मज्ञानविषे प्रवृत होता है।

शंका—ब्रह्मज्ञानकरके चिदाभासदी चिदाभासता जेकर दूरहोजाती है॥ तौ ज्ञानवानांविषे जीवव्यवहार कैसे होता है।

उत्तर—जैसे अग्निविषे प्रवेश कीता है जिसपुरुषने उसपुरु-षविषे पुरुष व्यवहार तितनाकालपर्यंत रहिता है ॥ जितनाका-लपर्यंत तिसदा देहदाह आदिकांकरके अदृश्यभावनूं प्राप्त नहि होता॥तैसे ज्ञानवान्‌विषेभी प्रारब्धक्षयपर्यंत चिदाभास व्यवहार रहिता है । अर शरीरके अदृश्यभावकों प्राप्त होयां विदेहमुक्ति विषे चिदाभास व्यवहार दूर होजाता है।

शंका—मैं भोक्ताहां इस भ्रमका कारण जो है अज्ञान। ति-

...नाश होनेते ज्ञानवान्कों भोगादी प्रतीति कैसे होती है ॥
...में मनुष्यहां एह विपरीतज्ञान कैसे होता है।

उत्तर—जैसे रसीविषे सर्पज्ञानसें पुरुषका शरीरमें भयकरके
...पने लगजाता है। तिसकंपनेका कारण रसीका अज्ञान है॥ति-
...के नाशहोयांभी कंपना तिसी क्षणविषे नाश नहि होजाता।
...किंतु होलीहोली नाश होता है ॥ अर मंद अंधकारविषे स्थित
...ईहोई रसी फेरभी सर्परूपकर प्रतीत होय आवती है। तैसे
...प्रारब्ध भोगभी अज्ञानके नाशमात्रसें नाश नहि होता किंतु
...प्रारब्धदे फल भोगनेसें नाश होता है तिसका हठकरके नाश न-
...हि होता ॥ अर कदाचित भोगकालविषे मैं मनुपहां एह कथन
...भी कर्ता है ज्ञानवान् ।

शंका—जेकर ज्ञानवान्कों मैं मनुष्यहां इसबुद्धिका उदय
...भया ॥ तिसकरके तत्वज्ञानका नाश हो जावेगा।

उत्तर—कदाचित् व्यवहार कालविषे मैं मनुपहां इसबुद्धिदे
उदयमात्रकरके वेदप्रमाणते उत्पन्न होया जो ज्ञान है ॥ सो ना-
शकों प्राप्त नहि होता ॥ जिसते मैं मनुपहां इसबुद्धिदे दूरकरण-
रूप जीवन्मुक्ति व्रत नहि जैसे रसनाकेसाथ अन्नदे संबंध दूरक-
रणरूप एकादशीका व्रत होता है ॥ तात्पर्य एह जैसे रसनाके
साथ अन्नके संबंध होयांहोयां एकादशीका व्रत नष्ट होजाता है ॥
तैसे कदाचित् व्यवहारकालविषे मैं मनुपहां ॥ इसबुद्धिदे उदय
होनेकरके ज्ञाननाश नहि होता ॥ किंतु सम्यक्ज्ञान करके भ्रम-
ज्ञानका नाश होता है ॥ एह ज्ञानका स्वभाव है ॥ इसकारणतें
कदाचित् व्यवहारकालविषे मैं मनुपहां इस बुद्धिदी उत्पत्ति हो-

यांहोयांभी । मैं ब्रह्महां इसवृत्तिदे उत्पन्न होनेकरके मनुषबुद्धिका अभाव होजाता है ।

शंका—रसीआदिकांविषे सर्पआदिकांदे भ्रमस्थानविषे सर्पआदिकांदे ज्ञानदे अभाव होयांहोयांभी भ्रमदा कार्य शरीरदा कंपनाआदिक कुछकाल रहिते हैं ॥ एहवार्ता तां यथार्थ है । परंतु दशमपुरुषके दृष्टांतविषे जद दशमपुरुषनूं एह किसीपुरुषने उपदेश कीआ दशमा तूं हैं ॥ इसवाक्यदे विचारकरके दशमेंकों उत्पन्न भया जो एह ज्ञान दशमा मैंहां ॥ तिस ज्ञानकरके भ्रमके नाश होयांहोयां भ्रमका कार्य रहिता नहि देखीता ।

उत्तर—दशमपुरुषने दशमा नदीविषे मरगिया है ॥ इस भ्रमकालविषे दशमेने आपने हथांकरके आपने शिरनूं ताडन कितासी । तिसकरके तिसके शिरविषे घाउपैगयेसे ॥ पाछेसें जब दशवेंका भ्रम निवृत्त भया अर एह जानयां दशवां मैंहां तब भ्रमदा कार्य शिरदी ताडना अर रोणा दूर होजाता है ॥ अर ताडनाते उत्पन्न भया जो घाउ है॥सो शतादी नहि दूर होता तैसे ज्ञानवान्का प्रारब्धकर्मभी अज्ञानके नाश होनेते नाश नहि होता ।

शंका—ज्ञानकीप्राप्ति होयांहोयांभी जेकर संसारकी प्रतीति भई ॥ तौ मोक्षकों पुरुषार्थता कैसे सिद्धभई ।

उत्तर—ज्ञानकी प्राप्तिदे होयांहोयां ज्ञानवान्कों संसारदी प्रतीतिविषे क्लेश नहि भासता । मोक्षदी प्राप्तिरूप हर्षने संसार प्रतीतिरूप दुःखकों तिरोधान कर लईदा है॥ जैसे दशवें पुरुषकों दशवेंपुरुषके न मरणदे ज्ञानकरके उत्पन्न भया जो हर्ष है॥ सो

गिरदेघावांदी पीडानूं आछाद लेना है। अर जेकर जीवन्मुक्ति प्रत-भया ॥ तद जद अभ्यास प्राप्त होवे। अर्थ एह जो मैं मनुष्य हां ॥ जद एह बुद्धि उदय होवे अर प्रारब्धभोगदी प्रतीति होवे। तद फेर विचार करणा ॥ जैसे रसदे भक्षण करणेवाले क्षुधादे क्लेशदे दूरकरणेवास्ते एकदिनविषे वारंवार भोजन करीता है। तैसे अभ्यासदी निवृत्तिवासते वारंवार विचार करणा।

शंका—ज्ञानकरके जिसका नाश नहि भया। ऐसा जो प्रारब्धकर्मदा फल तिसकानाश किसकरके होता है।

उत्तर—भोगकरके प्रारब्धकर्मदे फलदा नाश होता है॥ जैसे दशवेंदे शिरदा घाउ औषधकरके दूर होता है।इतने ग्रंथकरके किसदी इच्छानूं करदा होयां अर किसदी कामनादेवासते तत्त्ववेत्ता शरीरदे तापांकरके तापनूं प्राप्त होवे इस श्रुतिवाक्यने कथन किया जो है ज्ञानवानकों शोकका अभाव। सो कथन कीता एह शोकदी निवृत्ति रूप चिदाभासदी छिवीं अवस्था है ॥ अब चिदाभासदी सतवीं अवस्था जो है तृप्तिरूप। तिसनूं श्रवण कर। विषयांकरके जो तृप्ति होति है सो अंकुशसहित होती है। जिसते होरविषेदी कामनाकरके तिसतृप्तिदा नाश होजाता है॥ अर अपरोक्ष ज्ञानजन्य जो तृप्ति है सो निरंकुश है ॥ जिसते तिसका अभाव किसीकरके नहि होता ॥ तृप्तिदा अभाव दोप्रकारसें होता है ॥ एकतां जद कोई कार्य करणे योग्य प्रतीत होता है। तद तृप्तिदा अभाव होजाता है ॥ अर दूसरा जद प्राप्त होने योग्यवस्तु अप्राप्त प्रतीत होती है ॥ तद तृप्तिदा अभाव होता है ॥ सो ज्ञानवानकों करणे योग्य कार्य कोई नहि प्रतीत होता। संसार-

विषे मिथ्याबुद्धि होनेते संसारके व्यवहार कार्य नहि करणे योग्य प्रतीत होते। अर मोक्षकी प्राप्ति होनेते मोक्षवासते कोई साधन करणे योग्य नहि प्रतीत होता निरतिशय आनंददी तिसकों प्राप्ति होनेते अप्राप्तवस्तु प्राप्त होने योग्य कोई नहि रहिती ॥ इसते ज्ञानवानकी तृप्ति निरंकुशा है ॥ ज्ञानकी प्राप्तिसें प्रथम इसलोकविषे इष्टदी प्राप्तिदेवासते। अर अनिष्टदे दूर करणेदेवासते कृषीवणजसेवाते आदिलेकर अनेक कार्य करणे योग्य प्रतीत होते भये। अर स्वर्गब्रह्मलोकआदिकांदी प्राप्तिदेवासते अर नर्कदी न प्राप्तिदे वासते ॥ यज्ञयोग्य उपासना आदिक अनेककार्य करणे योग्य प्रतीत होते भये अर मोक्षके वासते श्रवण मनन आदिअनेक साधनज्ञानके करणे योग्य प्रतीत होते भये। अर अवज्ञानकी प्राप्तिदे होयांहोयां कोई साधन करणे योग्य प्रतीत नहि होता जिसतें संसारकों तिसने मिथ्या जानया हैं ॥ तिसते संसारसुखांदी इच्छा नहि रहिती अर जिसते तिसकों मोक्ष प्राप्त होगई है तिसते तिसकों मोक्षसाधनभी करणे योग्य नहि रहे एह ज्ञानवान्की कृतकृत्यतारूप निरंकुशा तृप्ति है॥ अब इस तृप्तिका फलरूप जो तृप्ति है॥ तिसनूं श्रवण कर। ज्ञानवान् इस कृतकृत्यतारूप तृप्तिनूं चिंतनकर्ता होया प्रतियोगीआंदे चिंतन सहित। इसप्रकार नित्यही तृप्तिनूं प्राप्त होता है। अज्ञानी जो दुखी है सोपुत्रआदिकांदी इच्छाकरकेकुते अर शूर आदिकांदे जन्मानूं प्राप्त होवें। परमानंदकरके पूर्ण जो मैं हैं ॥ सो किसदी इच्छाकरके जन्मानूं प्राप्त होवां॥ अर परलोकदे जानेदी इच्छावाले जो पुरुष हैं। सो कर्मांनूं करें। संपूर्ण स्वर्गआदिकलोकांदा आत्मा जो मैं हा सो किस कारणते अर किसप्रकार कर्मांनूं करां।

शंका—आपने अर्थवासते कर्म नहिभी परंतु परउपकार-केवासते वेदशास्त्रका उपदेश तुसी लोकानूं करो ॥

उत्तर—जो वेदशास्त्रदे उपदेशकरणेदा अधिकारी है ॥ सो उपदेश करे ॥ अर मेरेको तो उपदेश करणेदा अधिकार नहि। अक्रिय होनेते ।

शंका—अक्रिय तां तूं नहि ॥ जिसते आपने शरीरदेवासते भिक्षाआदि कर्म कर्ता प्रतीत होता हैं । अर परलोकदेवासते स्नानआदि कर्ता प्रतीत होता है ॥

उत्तर—निद्रा अर भिक्षा स्नान शौचआदिक कर्मांकों में कदाचित् नहि कर्ता। अर तिनकी इच्छाभी में नहि कर्ता मूर्ख अज्ञानी मेरेविषे स्नान आदिकर्मांकों कल्पते है॥ तिसकरके में क्रियावाला नहि होजाता ॥ जैसे बांदरांने रत्यकांदे समूहविषे अग्निदी कल्पना करीती है। तिसकरके रत्यकां दग्ध नहि होय जातीयां तैसे अज्ञानीआंने मेरेविषे क्रियादी कल्पना करी तों तिसकर में क्रियावाला नहि होय जाता ।

शंका—संसारसुखांदी इच्छादे अभाव होयां यज्ञआदिक-मांदी कर्तव्यता तेरेको मत होवे । परंतु ब्रह्मसाक्षातकारदेवासते श्रवणादिक कीते चाहीये ॥

उत्तर—जिसनूं जिसवस्तुका अज्ञान है तिसपुरुषने अज्ञा-नदे दूरकरणेवासते श्रवण कीता चाहीये ॥ अर जिसपुरुषको संशय है जिसवस्तुविषे तिससंशयके दूर करणेकेवासते तिस पुरुषको मनन कीता चाहीये अज्ञान अर संशयते रहित जो मेंहां

सो श्रवण अर मनन किसकारणते करां अर जिसको देह आदि-कांविषे आत्मताबुद्धिरूप अर जगत्‌विषे सत्यबुद्धिरूप विपर्य-य है ॥ सो पुरुष इसविपर्ययकी निवृत्तिवासते निदिध्यासन करे। अर मेरेकों तो विपर्यय है नहि मैं निदिध्यासन किसवासते करां।

शंका—जेकर तेरेको विपर्यय नहि । तो मैं मनुषहां मैं ब्राह्मणहां इत्यादि व्यवहार तेरा कैसे होवेगा ॥

उत्तर—विपर्ययदे अभाव होयांहोयांभी चिरकालदी वासनाकरके मैं मनुपहां इत्यादि व्यवहार वन जाता है ।

शंका—जेकर वासनाकरके मैं मनुषहां एह व्यवहार होता है तो इस व्यवहारकी निवृतिवासते ध्यान कीता चाहीता है।

उत्तर—प्रारब्धकर्मपर्यंत इसव्यवहारने रहिणा है। प्रारब्ध-के नाश होयां मैं मनुपहां इस व्यवहारका नाश होता है ॥ प्रार-ब्धके नाशसें विना मैं मनुपहां एह व्यवहार हजारां ध्यानांकर-केभी दूर नहि होता ॥ एक ध्यानकी क्या कहिनी है ।

शंका—मैं मनुपहां इसव्यवहारदी विरलतादेवासते ध्यान कीता चाहीता है ।

उत्तर—जिसकों व्यवहार बाधक प्रतीत होता है ॥ तिसकों ध्यान कीता चाहीता है । अर मेरेकों तो एह व्यवहार क्लेशका कारण नहि प्रतीत होता ॥ इसते इसदी निवृतिदेवासते मेरेकों ध्यान करणा योग्य नहि ।

शंका—विक्षेपके दूर करणेवासते समाधितां तेरेकों अवश्य कीती चाहीये।

उत्तर—विक्षेप अर समाधि दोनो मनका धर्म है मेरेविषे नो विक्षेप नहि। ताते विक्षेपका निवारक समाधिभी मेरेकों करणे योग्य नहि।

शंका—समाधिदा फल जो अनुभव है॥ तिसके वासते तेरेकों यत्न कीता चाहीता है।

उत्तर—अनुभव तो मेरा स्वरूप है ताते तिसके वासते यत्न कुछ नहि कीया चाहीता॥ ताते जो करणे योग्य सी सो करलीया मैंने। अर जो प्राप्त होने योग्यसी सो प्राप्त होगया है मैनूं॥ एह तत्ववेतादा निश्चय होता है।

शंका—जेकर किसीप्रकारभी तत्ववेताकों कुछ करणे योग्य नहि तो शास्त्र निषिधा प्रवृत्ति तिसदी होवेगी।

उत्तर—मैं कर्ता हां मैं भोक्ता हां इस अभिमानसें रहित जो तत्ववेता है॥ उसदा जैसा प्रारब्धकर्म है तैसे व्यवहार होवे। भावें भिक्षा मंगन आदिरूप लौकिक व्यवहार। भावें शास्त्रकरके कथित जप समाधि आदि व्यवहार। भावें शास्त्र निषिध्य हिंसादी व्यवहार होवे तत्ववेतादा। परंतु तत्ववेताकों किसी व्यवहारका स्पर्श नहि होता॥ जैसे स्वप्नते जागे पुरुषकों स्वप्नदा कोई व्यवहार स्पर्श नहि कर्ता॥ एह वेदांतोंका असल सिद्धांत कथन कीता अब युक्ति करके कुछ कथन कर्ते है सो श्रवण करो। तत्ववेता एह कहिता है॥ संपूर्ण जगत् मेरी दृष्टिविषे मिथ्या है अर कर्तव्य मेरेकों कुछ नहि तथापि जितनाकाल शरीरदी स्थिति है॥ तितनाकाल कुछ करणाहि होता है। ताते लोकांदे कल्याण-

वासतें शास्त्रविहित व्यवहारनूं मैं करां । इसकरकेभी मेरी कुछ हानि नहि ॥ सो शास्त्री व्यवहार तिन्नप्रकारका है । एक शरीरदा एक वाणीदा एक मनदा । देवतयांदा पूजन करणा अर स्नान शौचभिक्षा आदिकांदा करणा । एह शरीरदा शास्त्री व्यवहार है । अर प्रणवदा जप करणा अर उपनिपददां पडना एह वाणीदा शास्त्रीव्यवहार है।अर वुद्धि भावें नारायणदा ध्यान करो अर भावे निर्विकल्प समाधिकरके ब्रह्मानंद मैं लीन होजावो एह मनका शास्त्रीव्यवहार है ॥ इसप्रकार इसव्यवहारकों कर्ता होयाभी, तत्ववेत्ता इस दृढनिश्चयविषे स्थित रहिता है । मैं साक्षीरूपहां न में कुछ कर्ताहां न करावताहां ऐसे होयांहोयां ज्ञानवानूदा अर अज्ञानीदा विवाद किसीवस्तुविषे नहि होता ॥ जिसते ज्ञानीदा विषा भिन्न है । अर अज्ञानीदा विषा भिन्न है ॥ जैसे जगन्नाथवासीयांका अर द्वारिकावासीयांका विवाद नहि होता । ज्ञानवान्का विषा क्या है । अर अज्ञानीदा विषा क्या है । जे ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ साक्षी असंग है अर शरीर वाणी मन मिथ्या हैं एह तो ज्ञानीदा विषा है । अर शरीर आदिक सत्य हैं । एह अज्ञानीदा विषा है । अर अज्ञानीको साक्षीदी कुछ खवर नहि ॥ ऐसे होयांहोयांभी जो ज्ञानी अर कर्मी विवाद कर्ते हैं ॥ सो तत्ववेतयांकरके हासीके योग्य हैं । जैसे दो डेरे परस्पर वृतांतकों न जानते होयेहोये कलह करें । एक डेरा वकरीयांके चरावणेवाला सी ॥ सो किसीवृक्षकी छाया मैं सोयगया ॥ अर तिसकीयां वकरीयां कहुं चलीयां गईयां ॥ जव वहु उठ्यां तव तिसकों वकरीयां न नजर आईआं ॥ सो वकरीयांकों लभने लगा ॥ एक राहिडोरापुरुप उसकों मिलया ॥ तिसको लो तिसने पुछ्या ॥

वकरीयां तेने किथेर देखीयां हैं । तव उस गहीडोरेने समझया जो मैनूं पुछदा है तूं कियों आया हैं तव ओह जिसपाससें आ- यागी उसपासे हथकीना।तव वकरीयांदे चारणेवाले समझया जो एह कहिता है उसपासे तेरीयां वकरीयां हैं।।उसपासे ओह गया दे वयोगसें तिसकों वकरीयां प्राप्तहोगईयां तव वहु एक लडी वकरी तिसको देने लगा तिसका उपकार मानकरके तव ओह गहीडोरा कहिने लगा मैं तां तेरी वकरीदौलतनहि भन्नी । तां वकरीयांवाले समझया जो एह कहिता है मैं लडी वकरी नहि लैता ॥इसप्रकार- परस्पर वृतांतकों न जानके वडी कलह कर्ते भये तिसते हासा- करणे के योग्य हैं जिसते निविषे कलह करणेवाले है ॥ कर्मी जि- स साक्षी आत्मानूं नहि जानता॥कैसाभी साक्षी आत्मा है देहइं- द्रियां मनआदिकांते भिन्न है॥तिससाक्षीनूं तत्त्ववेताने जेकर ब्रह्म- रूप जानियां । तिसकरके कर्मीदा कुछ घटता नहि ॥तांते कर्मीदी कलह व्यर्थ है । अर ज्ञानीने मिथ्या जानकरके त्यागे जो हैं शरीर इंद्रियां मनआदिक तिन्नाकरके कर्मकरे तिसकरके ज्ञानवान्- दा कुछ नहि घटता । तांतेज्ञानी जो कर्मीके साथ कलह कर्ता है सो व्यर्थ है ॥ इसते कलह करणेवाले दोनोकर्मीते ज्ञानी बुद्धिमाना- करके हसनेके योग्य हैं ।

शंका—ज्ञानवान्कों कर्मोंके करणेविषे फल कुछ नहि इसते कर्मोंका त्याग कीता चाहीता हैं।

उत्तर—कर्मोंदा त्याग करणेविषेभी ज्ञानवान्कों कुछ फल नहि । तांते कर्म कीते चाहीदे हैं ।

शंका—कर्मांदा त्याग निष्फल नहि ॥ तिसते बोधदी प्राप्ति होती है।

उत्तर—कर्मांदा करणांभी निष्फल नहि तिसते बोधकी इछा उत्पन्न होती है।

शंका—ज्ञानवान्कों बोधकी इछा नहि होती जिसते बोध प्रात होयाहोया है।

उत्तर—ज्ञानवान्कों फेर बोधभी प्राप्त नहि होता ॥ जिसते प्रथम प्राप्त होयाहोया है ॥ तांते बोधवासते कर्मांदा त्याग ज्ञानवान्कों नहि बनता।

शंका—एक वादी उत्पन्न भया। जो बोध है तिसकी स्थिरतादेवासते कर्मांदा त्याग कीता चाहीदा है ज्ञानवान्कों।

उत्तर—बोधकी स्थिरता तां बाधकदे अभावनूं चाहिती है और साधनकों नहि चाहिती। जैसे चूहयांदा खेडना बिल्लीदे अभावनूं चाहिता है ॥ होर कपडयांदे त्यागनूं नहि चाहिता । वेदवाक्यरूप प्रमाणते उत्पन्न भया जो ज्ञान है तिसदा होर किसी प्रबल प्रमाण करके अभाव नहि होता जिसते वेदप्रमाणको लों होर कोई प्रबल प्रमाण नहि । तांते बोधकी स्थिरतावासते होर कोई साधन करणे योग्य नहि।

शंका—होरप्रमाणकरके बोधदा अभाव मत होवे । पर अविद्या अर अविद्याका कार्य जो मैं कर्ताहां एह अध्यास तिसकरके बोधदा अभाव होजावेगा।

उत्तर—अविद्या अर अविद्यादाकार्य बोधके नाश करणेको समर्थ नहि ॥ जिसकारणतें प्रथमहि बोधने दोनों नाशकर छोडेहैं।

शंका—अविद्यादा अभाव तों होता है ॥ अर अविद्यादे का र्यका अभाव नहि होता जिसते बोधके होयांहोयांभी अविद्याका कार्य नजर आवता है ॥ तांते अविद्यादे कार्य करके बोधका नाश होजावेगा ॥

उत्तर—अविद्यादे कार्यदा अविद्या उपादान कारण है ॥ अविद्याके नाश होयांहोयां अविद्याके कार्यको सता नहि रहिती ॥ जैसे आकाशदी निराकारतादे ज्ञान होयांहोयां आकाशदी कडाहाकारतादी सता नहि रहती ॥ पर कडाहाकारता नेत्रांकरके प्रतीत होती है ॥ तिसकरके रसते नहि रुकजाते तैसे अविद्यादा कार्य सतासे रहित मिथ्या होयांहोयां प्रतीत होके तिसकरके बोधदे नाशदी शंका नहि बनती । जद अविद्यादे कार्यविषे सत्यता प्रतीति सी तब तों ओह बोधदी उत्पतिदा प्रतिबंधक नहि होया अर अब बोधकरके मिथ्यारूपतानूं प्राप्त होययाहोयया अविद्यादा कर्मबोधदेनाशनूं करेगा एह कथनकरणा तां ऐसा है ॥ जैसे कोई कहे जीवदे चूहेने बिल्लेनूं नहि मारया तौभी मोयया होया चूया बिल्लेनूं मारलयेगा जोपुरुष शिवजीदे अस्त्र करके घायाल होयाहोयाभी न मरता भया सो लोहेसें रहितकानामात्ररूप बालकने चलाया जो तीर है। तिसकरके मरेगा इसविषे प्रमाण कोई नहि जैसे तैसे अनेक प्रकारके विचित्र जो आपने कार्य हैं। ओन्नाकरके विस्तारको प्राप्त होईहोई जो अविद्या है ॥ तिसअविद्याके साथ बोधरूप राजा श्रवण मनन निदिध्यासन

समेविषे युध कर्ता भया अर तिसअविद्यानूं अर अविद्यादे कार्यानूं मारदेता भया॥ अर्थ एह जो अविद्यादा स्वरूपसें नाशकरदेता भया अर अविद्यादे कार्यानूं मिथ्या करदेताभया सो बोध अज्ञ अभ्यासदी दृढता करके अविद्यादे नाशनूं करके अत्यंत दृढतानूं प्राप्त होयाहोया सतासें रहित मिथ्यारूप जो अविद्यादा कार्य है अध्यास तिसकरके कैसें बाधको प्राप्तहोवे ॥ अर्थ एह जो नाशकों नहि प्राप्त होता ॥ अज्ञान अर अज्ञानका कार्य रूपजो मुरदे हैं । सो बोधरूपी राजाकरके मारेहोये प्रारब्धकी स्थितिरूप मदानविषे पडेरहें। तिसकरके बोधरूप चक्रवर्ती राजाकी हानि नहि होती। किंतु सगों तिसदी कीर्ति होती है ॥ होवे ऐसे प्रसंगविषे क्या आया ऐसे पुछें तां श्रवण कर जो अविद्या अर अविद्यादे कार्यदे नाशकरणेवाला बोधरूप सूरमा है । तिसके साथ जो पुरुषवियोगकों नहिप्राप्त होता ॥ अर्थ एह जो मैं ब्रह्महां एह ज्ञान सदा जिसके हृदयविषे दृढ है तिसकों शरीर इंद्रियांआदिकांदी प्रवृति करके अर निवृत्ति करके कुछ इष्ट अनिष्टकी प्राप्ति नहि होती ।

शंका—जेकर ज्ञानवान्‌का प्रवृतिविषे आग्रे नहि। तौ अज्ञानीकाभी प्रवृतिविषे आग्रे नहि चाहीता।

उत्तर—अज्ञानीकों प्रवृतिविषे आग्रे करणा चाहीता है सदा ॥ जिसते मनुषजन्मकों धारकरके स्वर्गवासते वा मोक्षवासते यत्नकरणा योग्य है॥अरजेकर मनुषशरीरकों पापकर स्वर्गवासते अथवा मोक्षवासते यत्न न करे तौ मनुष शरीरभी गधे कुत्ते आदिकांके तुल्य भया।

प्रश्न—ज्ञानवानदा प्रवृत्तिविषे आग्रह नहि होता एह तुमांने कहिया तौ कर्मीआंदे मध्यविषे ज्ञानवान स्थित होवे तद तिसने की कीता चाहीता है ।

उत्तर—जद कर्मीआंदे मध्यविषे ज्ञानवान् स्थित होता है तद कर्मीयांके अनुसार ज्ञानवान् मनकरके वाणीकरके शरीरकरके संपूर्ण कर्मांनूं कर्ता है ॥ अर जद ज्ञानवान् जिज्ञासीयांदे मध्यविषे स्थित होता है ॥ तद जिज्ञासीआनूं बोधदी प्राप्तिदेवासते संपूर्ण कर्माविषे दोषनूं कथन कर्ता हूआ आपभी संपूर्ण कर्मानूं त्याग देता है ॥ किसकारणते ज्ञानवान् इसप्रकार वर्तता है ऐसा पुछें ता श्रवण कर॥जैसे बालकके अनुसार पिता तिसका वर्तता है ॥ तैसे अज्ञानीयांके अनुसार तत्त्ववेताका वर्तना योग्य है ॥ सो जैसे बालककरके उलांबेको प्राप्त होयाहोया अर ताडनाकों प्राप्त होयाहोया तिसका पिता क्लेशकों अर क्रोधकों नहि प्राप्त होता ॥ सगों बालककों लडावता है ॥ तैसे ज्ञानवान्भी अज्ञानीयाकी निंदानूं सुनकरके निंदा नहि कर्ता अर अस्तुतीनूं सुनकरके अस्तुती नहि कर्त्ता ॥ किंतु तिन्ना अज्ञानीयाकों जैसें ज्ञानदी प्राप्ति होवे तैसे करता है ॥ जिसकारणते तत्त्ववेताकों इतना कर्तव्य है अज्ञानीकों बोध करवावणा तांते जिस प्रकार करके अज्ञानीकों बोध होवे सोई प्रकार कीता चाहीदा है ज्ञानवानकों । अज्ञानीकों बोध करवावणेसे भिन्न होर कर्तव्य कोई नहि ज्ञानवानकों ॥ इसप्रकार कृतकृत्यताकरके तृप्तहुयाहुया अर जो प्राप्त होने योग्य वस्तु है तिसदी प्राप्तिकरके तृप्त हूयाहूया ज्ञानवान् आपने मनकरके सदा ऐसे मानता है ॥ की मा-

नता है ऐसा पुछें तां श्रवण कर। धन्योहंधन्योहं जिसते मैं सदाही देशकालवस्तुके परिछेदसें रहित आत्माकों अनुभव कर्ताहां विनाहि यत्नसें इसकारणते मैं कृतकृत्यहां इसप्रकार आत्मज्ञानंद लाभ करके तृप्तिको प्राप्त होता है ॥ अव आत्मज्ञानदे लाभदा जो फल है ॥ तिसफलदी प्राप्तिकरके जो भई है तृप्ति तिसनूं श्रवण कर धन्योहंधन्योहं जिसते ब्रह्मानंद मेरेकों स्पष्ट प्रतीत होता है इसते मैं कृतकृत्यहां एह दोप्रकारकी तृप्ति इष्टदी प्राप्ति करके होती है ॥ अव अनिष्टकी निवृतिकरके जो होती है तृप्ति तिसकों तूं श्रवण कर। धन्योहं धन्योहं जिसते दुःखरूप संसारकों मैं नहि देखता अव तिसते मैं कृतकृत्य हां दुःखरूप संसारदी प्रतीति तैनूं किउं नहि होती ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ अनेक वासनावाला अज्ञान मेरा नाश होगया है ॥ इस कारणते दुःखरूप संसारकी प्रतीति मेरेकों नहि होती इसते धन्योहंधन्योहं अर अज्ञानकी निवृत्ति होनेते मेरेकों करणे योग्य अव कुछ नहि रहया । इसते धन्योहंधन्योहं अर प्राप्त होने योग्य मैनूं अव प्राप्त होगया है ॥ अप्राप्त कुछवस्तु नहि रहि ॥ इसते धन्योहंधन्योहं ॥ अर मेरेकों जो प्राप्त भई है तृप्ति तिसदा दृष्टांत कोई नहि संसारविषे नजर आवता इसते धन्योहं धन्योहं इसते परे होर कथन करणे योग्य कुछ नहि ॥ अव तृप्तिही सभनां पास्यांसें नजर आवती है ॥ इसते धन्यहांमैं धन्यहांमें ॥ धन्यहांधन्यहां वारंवार धन्यहांमैं एह जो सर्वप्रकारकी कृतकृत्यतां कथन कीती है मैं॥ तिसका कारण जो पुण्यदे संमूहदा फल है ॥ तिसनूं याद कर्ता होया ज्ञानवान् तृप्तिनूं प्राप्त होता है॥ वडे उत्तम मेरे पुण्य है वडे उत्तम मेरे पुण्य हैं ॥ जिन्नापुण्य-

करा फल मेरकों ऐसी तृप्तिरूप प्राप्त भया है ॥ अर इसपुरुषके
करणेवाला जो मैंहों सोभी उत्तमहों उत्तमहों धन्य हैं शास्त्र धन्य
हैं शास्त्र अर धन्य हैं शास्त्रादि उपदेश करणेवाले गुरु धन्य हैं
शास्त्रादि उपदेश करणेवाले गुरु ॥ अर धन्य है ज्ञान धन्य है ज्ञा-
न अर ज्ञानकरके जो प्राप्त भया है सुख सो आश्चर्यरूप है सो
आश्चर्यरूप है ॥ जिसते तिसके तुल्य सुख होर कोई हैनहिं ॥
इस तृप्तिदीपके अभ्यास करणेवालेकों जो फल प्राप्त होता है ॥
सो श्रवण कर ॥ इस तृप्तिदीपनाम ग्रंथका जो सदा विचार क-
रणेवाले पुरुष हैं ॥ सो ब्रह्मानंद में मग्न होयेहोये इस तृप्तिकों
प्राप्त होते हैं जैसे पिछे कथन करी है।

॥ इति श्रीतृप्तिदीपःसमाप्तः ॥

श्रीः

पञ्चदशी भाषा

अथ कूटस्थदीपप्रकरणम्

॥ ओंनमः सतगुरुप्रसाद ॥ अथ कूटस्थदीपनाम जो ग्रंथ है तीसरादीपआदीसें पंचदशीका अठवाँ ग्रंथ तिसका आरंभ कर्ते है॥ जिज्ञासीआनूं मोक्षका कारण ब्रह्म अर आत्मादी एकतादा ज्ञान है सो ज्ञान त्वंपदार्थ शोधनसें उत्पन्न होता है ॥ इसकारणते त्वंपदार्थका शोधन कीता चाहीये ॥ शोधननाम है वाच्यअर्थ अर लक्ष्यअर्थ निर्णय करणेदा ॥ सो लक्ष्यअर्थ त्वंपदका कूटस्थ है अर वाच्यअर्थ चिदाभास है सो दोनौ भिन्नभिन्नकरके वर्णन कर्ते है इस स्थूलशरीरदे प्रकाशक चैतन्य दो हैं एक कूटस्थ अर एकचिदाभास कूटस्थने सामान्यरुपता करके प्रथम शरीरको प्रकाशीता है ॥ अरचिदाभास जो है अंतःकरण मै चैतन्यका प्रतिबिंबरूप ॥ तिसने पश्चात् विशेष रूपताकरके प्रकाशीदा है जैसे आकाशविषे स्थित जो प्रसिद्ध सूर्य्य है तिसने कंधनूं प्रथम सामान्य रूपता करके प्रकाशीता है अर जलविषे जो सूर्यका प्रतिबिंब है तिसने विशेषरूपता करके कंधनूं प्रकाशीता है।

शंका—कंधविषे प्रतिबिंबरूप सूर्यदे प्रकाशते भिन्न आकाशविषे स्थित सूर्यदा प्रकाश नहि देखीता।

उत्तर—कंधविषे दशवीश प्रतिबिंबरूप सूर्यांका प्रकाश देखीता है दशां प्रतिबिंबरूप सूर्यांके कंध उपर प्रकाशांदी संधिदे

स्थानतों हैं अर तीस प्रतिबिंबरूप सूर्यांके कंध उपर प्रकाशदी संधिदे स्थान उर्ना हैं तिन्हा संधिरूप स्थानांको प्रकाशनेवाला आकाशविषे स्थित सूर्यका सामान्यप्रकाश प्रतीत होता है जेकर संधीयांके स्थानविषे आकाशविषे स्थित सूर्यका प्रकाश न होवे तौ संधिआंके स्थानके रूपकी प्रतीति न होवे जिसतें विना प्रकाशते रूपकी प्रतीति नहि होती अर प्रतिबिंबके सूर्यांके अभाव होआंहोआं आकाशविषे स्थित सूर्यका प्रकाश कंधविषे प्रतीत होता है इसीप्रकार बुद्धिविषे चैतन्यदा प्रतिबिंबरूप चिदाभासदे प्रकाशकरके युक्त जो अनेक बुद्धिदीआं वृत्तीआं हैं घटज्ञान पटज्ञानादिरूप तिन्हादी संधिनूं जाग्रत् अवस्थाविषे अर स्वप्नअवस्थाविषे प्रकाशनेवाला अर बुद्धिवृत्तीआंदे अभावनूं सुषुप्ति अर समाधिअवस्थाविषे प्रकाशनेवाला जो कूटस्थ चैतन्य है तिसनूं चिदाभासते भिन्नकरके जानना जैसे देहके बाहर घटादिकांदे प्रकाशक चिदाभास अर ब्रह्म भिन्नभिन्न हैं तैसे देहके अंतर देहके प्रकाशक चिदाभास अर कूटस्थ भिन्नभिन्न हैं सो जैसे हैं तैसे श्रवण कर ॥ घटएकदे प्रकाशनेवाला जो बुद्धिविषे स्थित चिदाभास है ॥ सो घटमात्रदे प्रकाशनूं कर्ता है ॥ अर घटविषे जो ज्ञाततारूप धर्म है ॥ चिदाभास करके उत्पन्न होआहोआ ज्ञातोघट इस व्यवहारदा कारण ॥ तिस ज्ञाततारूपधर्मको घटदी कल्पनादा अधिष्ठान जो ब्रह्म चैतन्य है ॥ तिसने प्रकाशीदा है।

शंका—बुद्धिविषे चिदाभास हैं ॥ तिसको अंगीकार करणा व्यर्थ है ॥ जाते घटदी ज्ञाततादे प्रकाशनेवाले ब्रह्मचैतन्य करके घटदी प्रतीति बनजाती है।

उत्तर—जेकर बुद्धि वृत्तिविषे प्रतिबिंबरूप चिदाभासको न मानेंगा॥ तौ घटदा ज्ञातता अर अज्ञाततारूप भेद सिद्ध न होवेगा ॥ सो जिसप्रकार है सो श्रवण कर ॥ घटविषे ज्ञातता रूपधर्म अर अज्ञाततारूप धर्म रहिता है कालभेद करके ॥ जिसते सभीलोक कहिते हैं ॥ मैं घटनूं नहि जानता अर मैं घटनूं जानिया है ॥ तांते एह भेद तेरे मतविषे कैसे सिद्ध होवेगा जेकर बुद्धिकी वृत्तिविषे चैतन्यका प्रतिबिंबरूप चिदाभास न मानेंगा ॥ तांते जद बुद्धिदी वृत्तिविषे चैतन्यके प्रतिबिंबरूप चिदाभासकी घटविषे प्रकटता होती है तब घटविषे ज्ञातता रूपधर्मदी उत्पत्ति होतीहै॥अर तिसदी प्रकटतासे प्रथम घटविषे अज्ञातता रूपधर्म रहिता है ॥ तांते ज्ञातता अर अज्ञाततारूपधर्मदे भेदवास्ते घटदा प्रकाशक बुद्धिदी वृत्तिविषे चैतन्यदा प्रतिबिंबरूप चिदाभास आवश्य मन्नना चाहीदा है।

शंका—एक घटविषे ज्ञातता अर अज्ञातता रूप विरुद्ध धर्मदो कैसे रहिते हैं।

उत्तर—घटविषे ज्ञाततादी स्थितिदा कारण ज्ञान है अर अज्ञाततादी स्थितिदा कारण अज्ञान है सो ज्ञान किसनूं कहिते हैं अर अज्ञान किसनूं कहिते हैं ऐसा पुछें तां श्रवण कर बुद्धिदी वृत्तिदे अग्रभागविषे चैतन्यदा प्रतिबिंबरूप चिदाभास सहित जो बुद्धिदी वृत्तिहै सो ज्ञान है।जैसे अग्रभागविषे लोहेसहित कानावाण होता है तिस ज्ञानकरके व्याप्त हूआहूआ घटज्ञात कहिता है अर जडताका नाम अज्ञानकरके व्याप्त हूआहूआ घट अज्ञात कहीता है इसते एक घटविपेही ज्ञातता अर अज्ञातता रूप-

विरुद्ध धर्म बनजाते हैं ज्ञान अर अज्ञानरूप कारणकरके अर्थ एह ज्ञातताका कारण ज्ञान है अर अज्ञातताका कारण अज्ञान है।

शंका—अज्ञान घटको अज्ञानकरके व्याप्त होनेते होवे ब्रह्मकरके प्रकाश्यता पर ज्ञानकरके व्याप्त जो ज्ञातघट है उसको ब्रह्मकरके प्रकाश्यता किसकारणते है।

उत्तर—जैसे अज्ञातघटविषे अज्ञातताकूं उत्पन्न कर्ता है अर अज्ञातताकूं प्रकाशता नहि तैसे ज्ञानभी घटविषे ज्ञातताकूं उत्पन्न करदेता है ज्ञातताकूं प्रकाशता नहि तांते जैसे अज्ञात घटका प्रकाशक ब्रह्मचैतन्य है तैसे ज्ञात घटका प्रकाशकभी ब्रह्मचैतन्य है जिसते ज्ञातताकूं उत्पन्न करके ज्ञाननाश होजाता है।

शंका—जैसे अज्ञान अज्ञातताकूं उत्पन्न कर्ता है तैसे बुद्धि-ज्ञातताकूं उत्पन्न करो॥ चिदाभाससहित बुद्धिज्ञातताकूं उत्पन्न कर्ता है ऐसे किउं कहिते हो।

उत्तर—चिदाभासते रहित जो बुद्धि है सो ज्ञातताकूं उत्पन्न करणेविषे समर्थ नही तिसकूं अप्रकाशरूप होनेते जैसे मिटीआदिक अप्रकाश रूपहैं विकारीहोनेते तैसे विकारी बुद्धिभी चिदाभासते रहित होईहोई अप्रकाशरूप है तांते ज्ञातताके उत्पन्न करणेविषे समर्थ नहि॥ जैसे लाल कालीआदिक मिटीकरके लिम्प्या होआ घट किसीदेशविषे किसीकालविषे ज्ञातताकूं प्राप्त नही होता तैसे बुद्धिमात्रकरके युक्त घट ज्ञात नहि होता जिसते केवल बुद्धिको ज्ञातताके उत्पन्न करणेकी समर्थ नहि इसते घटविषे चिदाभासरूप फलकी जो प्रकटता है सोई घटविषे ज्ञातता है।

शंका—केवल बुद्धि जेकर ज्ञातताद उत्पन्न करणेनूं समर्थ नहि तोभी चिदाभास नहि मान्या चाहिता ब्रह्मचैतन्यरूप फलदे विद्यमान होनेते।

उत्तर—फलनाम है घटादिकांदी प्रतीतिदा सो फल ब्रह्मचैतन्य नहि होता जिसते नेत्रआदिका प्रमाणदी प्रवृत्तिदे प्रथमभी ब्रह्मचैतन्य विद्यमान है इसते ब्रह्मचैतन्य फल नहि होता फलको उत्तर कालविषे होनेते तांते नेत्रआदिक प्रमाणदी प्रवृत्तिसे उत्तर घटविषे प्रकट भया जो चिदाभास है सोई फल है तांते चिदाभास आवश्य अंगीकार कीता चाहीता है।

शंका—एह जो तुसां कहिआ ब्रह्मचैतन्य फल नहि सो तुमारा कहिना सुरेश्वराचार्यके वचनसे विरुद्ध है। कैसे विरुद्ध है ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ अनात्म पदार्थांविषे प्रमाणदी प्रवृत्तिदे होआंहोआं प्रमाणदा फलरूपता करके अंगीकार कीता जो चैतन्य वस्तु है सोई वेदांतवाक्यरूप प्रमाणकरके जानने योग्य अर्थ है एह सुरेश्वराचार्यदा वचन है तिसकरके ब्रह्मचैतन्य फलरूप प्रतीत होता है जिसते वेदांतवाक्य प्रमाणकरके जानने योग्य ब्रह्म है।

उत्तर—सुरेश्वराचार्यके वचनका एह अर्थ है फल ब्रह्मचैतन्य जैसा होता है।

शंका—एह सुरेश्वराचार्यदे वचनदा तात्पर्य तुसां कैसे जानआ।

उत्तर—सुरेश्वराचार्यदे गुरु जो है श्रीमत् शंकरार्य तिन्नाने

उपदेशसहस्रीनाम ग्रंथविषे ब्रह्मचैतन्य अर फलचैतन्यदा भेद कथन कीता है इसते हम जानते हैं जो सुरेश्वराचार्यदा एह तात्पर्य है जे इसप्रकार व्यवस्था सुरेश्वराचार्यके वचनकी न करोगे तौ तब गुरुके वचनसाथ सुरेश्वराचार्यदे वचनदा विरोध आवेगा जिसकारणते ब्रह्मचैतन्य अर फलचैतन्यका भेद है तिसकारणते घटविषे प्रकट होआहोआ चिदाभास घटविषे ज्ञाततानूं उत्पन्न करे है॥ अर उत्पन्न होईहोई ज्ञाततानूं फेर ब्रह्मचैतन्य प्रकाशता है॥ जेसे ब्रह्मचैतन्य अज्ञाततानूं प्रकाशता है ब्रह्मचैतन्य किसनूं प्रकाशता है अर चिदाभास किसनूं प्रकाशता है ऐसा पुछे तो श्रवण कर बुद्धिदी वृत्ति अर चिदाभास अर घट एनादे समूहनूं ब्रह्मचैतन्य प्रकाशता है अर चिदाभास एकघटमात्रनूं प्रकाशता है जिसते चिदाभास एक घटमात्रविषे फलरूपता करके प्रकट भयाहै घट चिदाभास अर ब्रह्म दोनोकरके प्रकाशता है इसविषे कारण श्रवण कर॥ घटको ब्रह्म अर चिदाभास एना दोनोकरके प्रकाशमान होनेते घटविषे ज्ञाततारूपकरके द्विगुणचैतन्य प्रतीत होता है घटदि ज्ञाततादा प्रकाशक जो ब्रह्मचैतन्य है तिसनूं नैयायिक अनुव्यवसाय कहिते हैं॥ अर्थ एह जो ज्ञानांतर कहिते हैं घटविषे दोप्रकारका व्यवहार होता है एक अयंघट अर दूसरा ज्ञातोघट अयंघट एह व्यवहार चिदाभासकरके सिद्ध होता है अर ज्ञातोघट एह व्यवहार ब्रह्मचैतन्यकरके सिद्ध होता है देहसे बाह्यघटादिक पदार्थोंविषे चिदाभास अर ब्रह्म जैसे भिन्नभिन्न प्रकाशक वर्णन कीते हैं तैसे देहके अंतर चिदाभास अर कूटस्थ विवेककरके भिन्नभिन्न जानने योग्य हैं।

शंका—देहसे बाहर घटादिकांविषे चिदाभाससहित घटा-

कार वृत्तिदी न्यांई देहके अंतरविषे विषेवृत्ति तौ नहि होती इसते वृत्ति सहित चिदाभासनूं तुभी कैसे अंगीकार कर्तेहो ।

उत्तर—अंतरविषे विषेवृत्तिदे अभाव होआहोआंभी अंतर वृत्तीआं तौ होतीआं हैं सो कौन हैं ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ अहं वृत्ति कामवृत्ति क्रोधवृत्ति लोभवृत्ति ॥ तिन्नाविषे चिदाभास व्याप्या होआ है जैसे तप्ते लोहेविषे अग्नि व्यापी होई है तप्ते लोहेविषे जो अग्नि है सो तिस लोहेके प्रकाशनेको समर्थ है होरणा पदार्थांके प्रकाशनेको समर्थ नहि ॥ इसीप्रकार चिदाभास सहित अंतर वृत्तीआं आपने आपदे प्रकाशनेनूं समर्थ हैं होरपदार्थांदे प्रकाशनेनूं समर्थ नहि इसप्रकार अंतर वृत्तीआंविषे चिदाभास सिद्ध भया । अव अंतरकूटस्थकी सिद्धके प्रकारनूं श्रवण कर॥ वृत्तीआं संपूर्ण एककालविषे उत्पन्न नहि होतीआं क्रमकरके हौलीहौली उत्पन्न होतीआं हैंअर संपूर्ण वृत्तीआं सुषुप्ति अर मूर्छा अर समाधिविषे लीन होजातीआं हैं ।

शंका—होवे इसप्रकारकरके समाधि आदिकांविषे वृतीआंका अभाव पर तिसकरके कुटस्थ कैसे जानीता है ।

उत्तर—संपूर्णवृत्तीआंदीआं संधीआंनूं अर संपूर्ण वृत्तीआंदे अभावनूं जिस निर्विकार चैतन्यने प्रकाशीता है सो कूटस्थ जानने योग्य है ऐसे होआंहोआं एह सिद्ध भयी जैसे शरीरतें बाहर घटादिकांविषे दुगुण चैतन्य है एक घटमात्रदा प्रकाशक चिदाभास दूसरा घटदी ज्ञाततादा प्रकाशक ब्रह्मचैतन्य तैसे शरीरदे अंतर अहंआदि रूप वृत्तीआंविषेभी कूटस्थ चैतन्य अर वृत्तीआंदा प्रकाशक चिदाभास इसप्रकार दुगुण चैतन्य है

तिसीकारणते वृत्तीआंविषे संधीआं वालो प्रकाश अधिक दे-खीता है।

शंका—जैसे घटादिकांविषे ज्ञातता अर अज्ञाततादा प्रका-शक ब्रह्मचैतन्य मान्या है तैसे वृत्तिआंविषेभी ज्ञानता अर अ-ज्ञानतादा प्रकाशक कूटस्थ चैतन्य किउँ नहि मानते।

उत्तर—वृतीआंविषे ज्ञातता अर अज्ञातता हैनहि इसते वृ-तिआंविषे ज्ञातता अर अज्ञानतादा प्रकाशक कूटस्थचैतन्य हम नहि मानते अर घटादिकांविषे ज्ञातता अर अज्ञातता अ-नुभव सिद्ध है तांते तिसदा प्रकाशक ब्रह्मचैतन्य हम मानते हैं वृतिआंविषे ज्ञातता अर अज्ञातता किउं नहि ऐसे पुछें तां श्रवण कर॥ वृतीआं विषेज्ञान अर अज्ञानकी प्राप्ति हैनहि इ-सते वृतीआंविषे ज्ञातता अर अज्ञातता है नहि॥ ज्ञानदी प्रा-प्ति तिसविषे होता है ॥ जो चिदाभास सहित वृतिदाविषे हो-ता है अर वृति तो वृतिदाविषे नहि होती ॥ इसते वृतिविषे ज्ञा-तता नहि ॥ अर अज्ञातता अज्ञानदी प्राप्ति करके होती है अ-ज्ञानकी प्राप्ति वृतीआंविषे है नहि जिसते वृतिदी उत्पत्ति-मात्रते वृतिविषे अज्ञान नाश होजाता है अर जेकर वृतीआं-विषेभी अज्ञान होवे तो वृतीआंकरके घटादिकांका अज्ञान न नाश होआ चाहीये॥ तांते वृतीआंविषे अज्ञानताभी नहि इसी कारणते वृतीआंविषे ज्ञातता अर ज्ञाततादा प्रकाशताकरके कू-टस्थ चैतन्यको हम नहि मानते।

शंका—कूटस्थ अर चिदाभास दोनोंको चैतन्यरूपतादी

समानताके होआंहोआं एकको कूटस्थता अर दूसरेको अकूट-स्थता किसकारणते है।

उत्तर—चिदाभासको उत्पत्ति अर विनाशका अनुभव होता है इसकारणते चिदाभासको अकूटस्थता है अर कूटस्थदी उत्पति विनाशविषे प्रमाणकोई हैनहि इसकारणते कूटस्थकी कूटस्थताहै।

शंका—चिदाभासते भिन्न कूटस्थ आपने मुखकरके तुसी कल्पते हो तांते तिसको हम अंगीकार नहि कर्ते।

उत्तर—वडिआं आचार्यांने कूटस्थदा निरूपण कीता है अं-तःकरण अर अंतःकरणदीआं वृतीआंदा जो साक्षी है चैतन्यरू-प अर आनंदरूप अर सत्य आत्मा तिसकों तूं किउँ नहि प्राप्त होता॥इत्यादिवाक्यविषे तांते ऐसे मतकहो कूटस्थको तुम आ-पने मुखकरके कल्पतेहो॥ अर कूटस्थते भिन्न चिदाभासभी व-डियां आचार्य्यांने वर्णन कीता है जैसे मुख अर मुखदा प्रतिबिं-बरूप मुखभास अर आभासदा आश्रय दर्पणआदि एह तिन्ने प्र-त्यक्ष जानीते हैं तैसे आत्मा जोहै कूटस्थ अर चिदाभास अर चि दाभासदा आश्रय अंतःकरणआदिक एह तिन्नेभी शास्त्रकरके अ-र युक्तीयांकरके जानीते हैं इस वाक्यविषे आभासनामकरके कू-टस्थते भिन्न चिदाभास वर्णन कीता है मनदा साक्षी है बुद्धिदा साक्षी है एह कूटस्थदे कथन करणेवाला शास्त्र है अर जैसीजैसी उपाधि है तैसेतैसे चैतन्य प्रतिबिंबभावनूं प्राप्त होता है एह चि-दाभासदे कथन करणेवाला शास्त्र है अर कूटस्थ उत्पति विनाश-रूप विकारसे रहित है अर चिदाभास उत्पति विनाशरूप विका-रवाला है इसते आदिलेकर युक्तीयां तां पिछे कथन कर आये हैं।

शंका—चिदाभासदा अंगीकार करणा व्यर्थ है जिसते यु-क्तिअवच्छिन्न कूटस्थकरके लोकांतरविषे गमनागमन सिद्ध हो-जाता है जैसे घटावच्छिन्न आकाशका देशांतरविषे गमनाग-मन होता है।

उत्तर—असंगकूटस्थको बुद्धिदे अवच्छेद मात्रकरके जीव रू-पता नहि बनती अर जेकर असंगको बुद्धिदे अवच्छेद मात्रकरके जीवरूपता मानोगे तो घट अर कंधआदिकांकरकेभी अवच्छि-न्नको जीवरूपता होई चाहीए।

शंका—बुद्धि स्वच्छ है इसते बुद्धिअवच्छिन्नकों जीवरूपता ब-नती है अर घटकंधआदिक अस्वच्छ हैं तिसते घटकंधआदिकां-करके अवच्छिन्नको जीवरूपता नहि बनती।

उत्तर—होवो बुद्धिविषे स्वच्छता अर घटकंध आदिकां-विषे अस्वच्छता पर स्वच्छतापरिच्छेदविषे कारण नहि होती जैसे दो पुडोपे किसीने बनाये अन्नके मापनेवास्ते एककाठका अर एक कैंहदा काठका अस्वच्छ है अर कैंहका स्वच्छ है तां काठके पुडोपेसाथ मापया अन्न घट नहि होजाता अर कैंहके पुडोपेसाथ मापया अन्न वद नहि होजाता तैसे स्वच्छबुद्धि अवच्छिन्नताकरके चैतन्य जीवरूप होजाता है अर अस्वच्छ घटकंधआदिकांकरके अवच्छिन्न जीवरूप नहि होता इसविषे युक्ति कोई नहि।

शंका—कैंहके पुडोपेविषे चावलादी अधिकतादे अभाव होआंहोआंभी कैंहदे पुडोपेविषे चावलादा प्रतिबिंब पडता है इतनी अधिकता है।

उत्तर—तौ बुद्धिविषे चिदाभास तैने अंगीकार कीआ ॥ जिसते कँहेके पुडोपेविषे चावलाके प्रतिबिंबकी न्यांई बुद्धिविषे चैतन्यदे प्रतिबिंबनूं तूं मानता हैं प्रतिबिंबका अर आभासका अर्थ एक है बिंबलक्षणते रहित अर बिंबकी न्यांई जो प्रतीति होवे सो प्रतिबिंब कहीता है ॥ अर आभासकाभी अर्थ एह है जो थोडासा भासे सो आभास कहिता है चिदाभास संगवाला है अर विकारी है इसते बिंबरूप असंग अर अविकारी कूटस्थ चैतन्यके लक्षणते रहित है अर प्रकाशरूप होनेते बिंबरूप कूटस्थचैतन्यकी न्यांई प्रतीत होता है जैसे हेतुलक्षणसें रहित अर हेतुकी न्यांई प्रतीत होनेवाले हेत्वाभास कहीते हैं तांते चिदाभासदा अंगीकार करणा व्यर्थ नहि ।

शंका—होवे चिदाभास पर ओह बुद्धिते भिन्न नहि ॥ जिसते बुद्धिके होआंहि होता है ।

उत्तर—एह तौ अल्प शंका तैने कीती है जिसते तेरेको एह शंका किती चाहीदी सी बुद्धि देहसे भिन्न नहि ॥ जिसते देहके होआंहोआंहि बुद्धि होती है ।

शंका—देहके नाश होआंभी बुद्धि होती है जिसते शास्त्र एह कहिता है देहको त्यागकरके बुद्धिसहित जीव होता है ।

उत्तर—जेकर शास्त्रप्रमाणसे देहसे भिन्न तूं बुद्धिनूं मानता है तौ देहविषे प्रवेशदे कथन करणेवाली श्रुतिकरके बुद्धिसे भिन्न चिदाभासभी मान्या चाहीये ।

शंका—बुद्धियुक्तदाहि प्रवेश बनता है बुद्धिसें भिन्नदा प्रवेश नहि बनता।

उत्तर—ऐतरेय उपनिषद्‌विषे बुद्धिसे भिन्नदा प्रवेश कथन कीता है आत्मा प्रवेशदे संकल्पनूं करके शरीरविषे प्रवेश कर्ता भया॥ ताते ऐसे मत कहो बुद्धि युक्तदाहि प्रवेश होता है इंद्रियां बुद्धिआदिकांकरके सहित एह शरीर मेरी चैतन्यरूपताते विना व्यवहार करणेको समर्थ नहि इसते मैंने शरीरविषे प्रवेश कीता चाहिए ऐसे विचारकरके शिरदे कपालां तिन्नादे मध्यदेशनूं फोडकरके शरीरविषे प्रवेशनूं कर्ता हूआहूआ जाग्रत्‌आदिक अवस्थानूं अनुभव कर्ता है।

शंका—असंगआत्मादा प्रवेश नहि बनता।

शंका—(सिद्धांतीदी) असंगको जगत्‌कारणता नहि बनती।

उत्तर—(पूर्वपक्षीदा)जगत्‌दाकारणजो है सो मायावाला है।

उत्तर—(सिद्धांतीदा) प्रवेशकर्ताभी मायावाला है जिसते सृष्टिकर्ता अर प्रवेशकर्ता दोनोका विनाश होजाता है याज्ञवल्क्य मुनीश्वरने मैत्रेयीके तांई एह कथन कीता है॥ हेमैत्रेयि! आत्मा वास्तवसे चैतन्य घनरूप है॥ भूतांदा कार्यदेह इंद्रियअंतःकरणविषे प्रवेशरूप निमितते जीवरूपतानूं प्राप्त होजाता है॥ अर जद अंतःकरणादि नाश होजाते है तब जीव संज्ञानाश होजाती है उपाधिदे त्यागकरणेकरके जीव संज्ञा नहि रहिती इस प्रकार उपाधिवाला जो जीवरूपसी उसदे विनाशनूं कथन की-

ता है अर कूटस्थदी अविनाशतानूं कथन कीता है।अरे मैत्रेयि! एह आत्मा अविनाशी है जिसते इसदा धर्मदे नाशते नाश नहि होता इसप्रकार चिदाभासते भिन्न कूटस्थ कथन कीता है कूटस्थदी नित्यतादा कारण कूटस्थका देह इंद्रियअंतःकरणते असंगता है।

शंका—छांदोग्य उपनिषदविषे चिदाभासकी नित्यता कथन कीती है चिदाभास जद शरीरनूं त्याग देता है तद शरीर मर्ता है अर चिदाभासरूप जीव नहि मर्ता।

उत्तर—छांदोग्यश्रुतिका एह तात्पर्य नहि जो चिदाभासरूप जीव नित्य है किंतु एह अर्थ है जद शरीरका नाश होता है तद चिदाभासका नाश नहि होता अर मोक्षअवस्थाविषे जीवका नाश होता है जिसते चिदाभासरूप जीवकी उपाधि लिंगशरीरका नाश होजाता है संचितकर्मके नाश होनेते ब्रह्मज्ञानकरके॥ तांते चिदाभासरूप जीव अनित्य है।

शंका—जेकर जीव विनाशी है तव तिसका अविनाशी ब्रह्मकेसाथ समानाधिकारणतारूप अभेदज्ञान न होवेगा॥ जिसते विनाशी अर अविनाशी एकता नहि बनती।

उत्तर—अहंब्रह्म एह जो समानाधिकरण है सो मुख्य समानाधिकरण नहि जैसे सोयं देवदत्त एह मुख्य समानाधिकरण है किंतु बाधविषे समानाधिकरण है जैसे किसे पुरुषको स्थाणुविषे चौरविषे भ्रम भया अर पाछेसे तत्त्वज्ञानदे होआंहोआं ओह पुरुष कहिता है जो चौरसो सो स्थाणु है इस वाक्यविषे समाना-

धिकरण बाध है॥ अर्थ एह जो चोरदा बाधाकरके स्थाणु शेष र-हिंदा है तैसे भ्रमकरके प्रतीत भई जो जीवरूपतासी तिसके बाधनूंकरके ब्रह्मरूपता शेष प्रतीत होती है इसप्रकारके नैष्कर्म सिधिनाम ग्रंथविषे सुरेश्वराचार्यने स्पष्ट कथन कीता है तांते अहंब्रह्म इसवाक्यविषे बाधविषे समानाधिकरण होवे।

शंका—नैष्कर्मसिद्धिविषे सुरेश्वराचार्याने बाध समानाधि-करणदा कथन कीतीआं होआंभी श्रुतीआंविषे बाध समानाधि-करण किधरे नहि प्रतीत होता।

उत्तर—संपूर्ण एह ब्रह्म है इस श्रुतिवाक्यविषे जगत्का अर ब्रह्मका समानाधिकरण बाधविषे देखीता है तैसे अहंब्रह्म एह जीवके साथ ब्रह्मका समानाधिकरण है।

शंका—जेकर बाध समानाधिकरणभी बनता है तौ विवर्णा-चार्याने बाधसमानाधिकरणदा खंडन किउँ कीता है बहुत यत्नकरके।

उत्तर—विवर्णाचार्यने अहंशब्दका अर्थ कूटस्थ मान्या है इसते बाध समानाधिकरणदा खंडन कीता है शोधन कीता हूआ जो त्वंपदार्थका अर्थ कूटस्थ है तिस कूटस्थदी ब्रह्मरूपतादे क-हिनेनूं तैसे होरणा ग्रंथाविषेभी कथन कीआ है अर असांने अहंशब्दका अर्थ चिदाभास मानकर बाध समानाधिकरण कथ-न कीता है॥ चिदाभास बाधके योग्य है मिथ्या होनेते इसते हमारा कथन यथार्थ है अर कूटस्थ सच्चिदानंदरूप है तिसते ति-सदा बाधा नहि होता इसते विवर्णाचार्यका कथन यथार्थ है

तांते विवर्णाचार्य्यके वचनका अर हमारे वचनका विरोध नहि ॥ कूटस्थको ब्रह्मकेसाथ एकता वन सक्ति है इसदे निश्चय करणेवास्ते कूटस्थशब्ददा अर्थ श्रवण कर॥ स्थूलसूक्ष्मरूप शरीर दोनो सहित चिदाभासरूप भ्रमदा अधिष्ठान जो चैतन्यहै सो कूटस्थ है अर संपूर्ण जगत्दी कल्पनादा अधिष्ठान जो चैतन्य है सो ब्रह्म है।

शंका—जीव भ्रमदा अधिष्ठान चैतन्य कूटस्थ है एह कथन अयुक्त है जिसते जीवको कल्पितता नहि।

उत्तर—जेकर चैतन्यविषे संपूर्ण जगत् कल्पित है तद जगत्दा एक अंशरूप चिदाभास कल्पित है इसवार्तादा किआ कथन करणा है जैसे जिस जलविषे बकरी नहि डुबदी तिस जलविषे हाथी नहि डुबदा तिसदा किआ कहिना है।

शंका—जगतदी कल्पनाका अधिष्ठान चैतन्य एक है इसते तत्पदके अर्थदा अर त्वंपदके अर्थका भेद नहि॥ तांते महावाक्यविषे तत्पद अर त्वंपद एह दोन कथन कीते चाहीए पुनरुक्ति प्रसंगते।

उत्तर—तत्पदकेअर्थका अर त्वंपदकेअर्थका औपाधिक भेद है वास्तव एकताहै सो उपाधि कौनहै ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ संपूर्ण जगत्दी कल्पनादा अधिष्टान तत्पदार्थब्रह्म है अर जगत्दा एकदेश चिदाभासदी कल्पनादा अधिष्ठान त्वंपदार्थ कूटस्थ है इसप्रकार उपाधिकरके तत्वंपदार्थदा भेद है तांते पुरुनक्ति नहि वास्तवते चैतन्य एक है।

शंका—चिदाभास कल्पित नहिं मिथ्याविषे कल्पितकी ज्यांईं जिसतें अधिष्ठान अर आरोप दुहां धर्मांवाला प्रतीतहोता।

उत्तर—चिदाभास दोनो धर्मांवाला प्रतीत होता है इसते कल्पित है बुद्धिरूप उपाधिद्वारा मैं कर्ताहां मैं भोक्ताहां मैं प्रमाताहां इसतें आदिलेकर कल्पितधर्मांवाला प्रतीत होता है अर प्रकाशरूप आत्मादे धर्मवाला प्रतीत होता है चिदाभासरूप भ्रमदा की कारण है ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ बुद्धि अर चिदाभास अर आत्मा अर आत्माविषे जगत् कैसे है एन्ना चारांपदार्थांदा निर्णय न होता तिसते जो प्राप्त भया अज्ञान सो चिदाभासरूप भ्रमका कारण है अर जन्ममरणरूप अनर्थांका कारण है तांतें पुरुषार्थ करके अज्ञानका नाश कीता चाहीता है अज्ञानदे नाशता कारण कौन है ऐसे पुछें तां श्रवण कर ॥ बुद्धि अर चिदाभास अर कूटस्थ आत्मा अर जगत् एन्ना चारांदे स्वरूपका विवेक अज्ञानदे नाशदा कारण है अर एन्नादे स्वरूपदे विवेकदे जाननेवाला ज्ञानी है अर ज्ञानते जन्ममरणरूप अनर्थदा अभाव होजाता है अर मोक्षकों पुरुष प्राप्त होजाता है एह वेदांतशास्त्रका सिद्धांत है ऐसे होआंहोआं नैयायिक आदिकांने कुतर्कांको लेकर जो कीते हैं हास्य अनेकप्रकारके सो हास्य कौन हैं ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ बंधमोक्षको अविवेक कार्यतादे होआंहोआं अद्वैतवादविषे किसको बंध है अर किसको मोक्ष है अर कौन गुरु है अर कौन शिष्य है इसते आदिलेकरके हास्य हैं सो नैयायिकादे हास्य खंडन ग्रंथविषे कथन कीतीआं जो युक्तिआं हैं तिन्ना युक्तिआंकरके नैयायिकानूं निरुत्तर करके निवारण

करणा एह कूटस्थदा जो बुद्धिआदिकासे विवेक है श्रुतीआंकरके अर युक्तीआंकरके कथन कीता सो पुराणांविषेभी कथन कीता है कामक्रोध आदिरूप वृतीआदी उत्पत्तिदे होआंहोआं वृत्ती-आंदा साक्षीरूपताकरके स्थित है कूटस्थ ॥ अर वृत्तीआंदी उ-त्पत्तिसे पहलां वृत्तीआंदे प्रागभावदा साक्षीरूपताकरके स्थित है कूटस्थ ॥ अर वृत्तीआंदे नाश होआंहोआं वृत्तीआंदे ध्वंसदा साक्षीरूपता करकेस्थित है कूटस्थ अर आत्मजिज्ञासादी प्रा-प्तिदे होआंहोआं जिज्ञासादा साक्षीरूपताकरके स्थित है कू-टस्थ ॥ अर जिज्ञासासे प्रथम मैं अज्ञानीहां ऐसे अनुभव क-रीता जो है अज्ञान इस अज्ञानदा साक्षीरूपताकरके स्थित है कूटस्थ ॥ सो कूटस्थ असत्य जगत्दा अधिष्ठान होनेते सत्य है अर जड संपूर्णदा प्रकाशक होनेते चैतन्यरूप है अर सदा प्रेमदा-विषे होनेते आनंदरूप है ॥ अर सर्वअर्थांदी प्रकाशकता करके सर्ववस्तूआंके साथ संबंधवाला है अर सर्वकेसाथ संबंधवाला होनेते पूर्ण है ईहां एह अनुमान जानने कूटस्थ वृत्तिआदिकांते भिन्न है वृत्तिआदिकांदा साक्षी होनेते जो वृत्तिआदिकांते भिन्न नहि होता सो वृत्तिआदिकांदा साक्षीभी नहिहोता जैसे वृत्तिआ दिक वृत्तिआदिकांते भिन्न नहि तौ वृत्तिआदिक वृत्तिआदिकांदा साक्षीभी नहि ॥ कूटस्थ सत्य है मिथ्यावस्तुदा अधिष्ठान होनेते मिथ्या रुप्पेदा अधिष्ठान सिप्पीकी न्यांई कूटस्थ चैतन्यरूप है संपूर्ण जडवस्तुका प्रकाशक होनेते जो चैतन्यरूप नहि होता सो संपूर्ण जडवस्तुका प्रकाशकभी नहि होता जैसे घट चैतन्यरूप नहि तौ संपूर्ण जडवस्तुका प्रकाशकभी नहि अर कूटस्थ परमा-नंदरूप है परम प्रेमदाविषे होनेते जो परमानंदरूप नहि होता

सो परम प्रेमदाविषैभी नहि होता जैसे घट परमानंदरूप नहि तो परमप्रेमदाविषैभी नहि कूटस्थ पूर्ण है संपूर्ण पदार्थके साथ संबंधवाला होनेते आकाशकी न्याई कूटस्थ संपूर्णपदार्थोंके साथ संबंधवाला है सर्वदा प्रकाशक होनेते जो सर्वदे संबंधवाला नहि सो सर्वदा प्रकाशकभी नहि जैसे दीपक सर्वदे साथ संबंधवाला नहि तो सर्वदा प्रकाशकभी नहि इस प्रकार शैवपुराणविषे कूटस्थदा विवेक कीता है सूत संहिताकानाम ग्रंथविषे सो कूटस्थ कैसा है जीवरूप अर ईश्वररूप कल्पनाते रहित है अर अद्वितीय है अर स्वयंप्रकाश चैतन्यरूप है॥अर शिव है अर्थ एह जो परमानंदरूप है कूटस्थ जीव ईश्वररूप ताते रहित कैसे है ऐसा पुछें तां श्रवण कर जिसते श्रुतिने जीव ईश्वरके मिथ्या कथन करीता है इसते कूटस्थ जीव ईश्वररूपताते रहित है सो श्रुति कौन है जीवईश्वरको मिथ्या कथन करणेवाली ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ श्वेताश्वतर उपनिषदकी श्रुति एह कहिती है तिन्ना गुणादी साम्यावस्थारूप जो महामाया है सो मायारूपता अर अविद्यारूपतानूं प्राप्त होती है मायाविषे जो चैतन्यदा प्रतिबिंब है तिसनूं ईश्वररूपताकरके दिखलावती है अर अविद्याविषे जो चैतन्यका प्रतिबिंब है तिसनूं जीवरूपताकरके दिखलावती है तांते मिथ्यारूप मायाके अधीन जो चिदाभास रूप ईश्वर अर मिथ्यारूप अविद्याके अधीन जो चिदाभासरूप जीव है सो मिथ्यारूप है एह श्वेताश्वतर उपनिषदकी श्रुति जनावती है ।

शंका—जेकर जीव ईश्वर मिथ्या हैं तो जीव ईश्वरका देहआदिकांसे भेद न होआ चाहीए॥अर्थ एहजो जडपदार्थोंदी प्रेरकता अर प्रकाशकता न होई चाहीए ।

उत्तर—जैसे पृथिवीकार्यताकरके तुल्य होआंहोआंभी मिटीदे घटको अर कच्चदे घटको पर कच्चदे घटविषे प्रतिबिंबदे ग्रहण करणेदा समर्थ है अर मिटीदे घटविषे नहि तैसे मायाकार्यताकरके जीव ईश्वर अर जगत्‌की मिथ्यारूपतादे तुल्य होआंहोआंभी जीव ईश्वरको चेतनता अर प्रेरकता हैं अर शरीर घटादि जगत्‌को चेतनता अर प्रेरकता नही।

शंका—मृन्मयघटका कारण जो मिटी है सो कच्चदे घटदा कारण नहि होता अर कच्चदे घटदा कारण जो मिटी है सो मृन्मयघटदा कारण नहि। तांते मृन्मयघटदा अर कच्चदे घटदा कारण मृत्तिकादे भेद होनैते मृन्मयघटदी अर कच्चदेघटदी विलक्षणता वन सकति है पर जीव ईश्वर अर जगत्‌दाकारण माया तौ एक है तांते जीव ईश्वरदी जगत्‌से विलक्षणता नहि बनती।

उत्तर—जैसे एकअन्नते उत्पन्न होवे मन अर शरीरदी विलक्षणताहै मन संकल्पविकल्पदा कारण है अर शरीर संकल्पविकल्पदा कारण नहि तैसे एकमाया कार्यतादे होआंहोआंभी जीव ईश्वरदी शरीर घटादिरूप जगत्‌से विलक्षणता है।

शंका—होवे कच्चदे घटदी न्यांई जीव ईश्वरदी स्वच्छता परंतु चैतन्यरूपता किसकारणते है।

उत्तर—जीव ईश्वरकी चैतन्यरूपताविषे विवाद कुछ नहि जिसते चैतन्यरूपताकरके जीव ईश्वरका अनुभव होता है।

शंका—मिथ्यारूप जीव ईश्वरदा चैतन्यरूपताकरके अनुभव किउं होता है।

उत्तर—जिस मायाने जीव ईश्वरको कल्पया है तिस माया-दा एहभी स्वभाव है जो कल्पितांनूंभी चेतन्यरूपकरके दिख-लाइ देना इसमें आचर्य कुछ नहि जिसते माया सर्वकल्पना क-रणेको समर्थ है जीवविषे स्थितजो निद्रा है सो स्वप्नविषे जीव ईश्वरनूं चेतनकल्प देती है जेकर निद्राविषेभी ऐसी समर्थ भई तों माहामाया जीव ईश्वरचेतनकल्प देती है इसविषे तेरेको क्या आचर्य है।

शंका—जेकर ईश्वर मायाकरके रचिआहोआ मिथ्या है तों जीवकी न्यांई सर्वज्ञतादिक ईश्वरविषे न होई चाहीए।

उत्तर—सर्वज्ञतादिक ईश्वरविषे मायाकल्पकरके दिखला-इ देती है जो माया ईश्वरनूं कल्पसक्ति है तिसको ईश्वरविषे स-र्वज्ञता आदिक कल्पनेविषेकी भार है।

शंका—जेकर जीव इश्वर माया कल्पित है तों कूटस्थभी मा-याकल्पित होवो।

उत्तर—ऐसीआं अतिशंका नहि कीतीआंचाहीआं जिसते हठकरके किसीअर्थकी सिद्धि नहि होती किंतु प्रमाणकरके अर्थ-की सिद्धि होती है कूटस्थदी मिथ्यारूपता विषे तों प्रमाण कोई नहि तांते कूटस्थ मिथ्या नहि।

शंका—कूटस्थदी सत्यताविषेभी तों प्रमाण कोई नहि।

उत्तर—कूटस्थदी सत्यताविषे संपूर्णश्रुतीआं प्रमाण हैं अर कूटस्थदी सत्यतादा विरोधि कोई होरवस्तु श्रुतीआं नहि सहा-

रतीआं जैसे सूर्य आपणी प्रकाशरूपतादे विरोधी तमको नहि सहारता ।

शंका—कूटस्थदी सत्यताविषे अर जीवईश्वरदी मिथ्यारूपताविषे श्रुतीआंही तुसी पडतेहो अर युक्तीआंकरके कुछ अर्थ सिद्ध नहि कर्ते ।

उत्तर—जिज्ञासीआंको श्रुतीआंदे अर्थदी प्रकटतावास्ते हमारा उद्यम है इसते युक्तीयांदा असी कथन नहि कर्ते इसकरके नैयायिकआदिकांदी शंकादा इहां अवसर कुछ नहि तांते मोक्षदी इछावाले पुरुषको खोटीआं तर्कांनूं त्यागकरके श्रुतीदा आश्रय करणायोग्य है श्रुतीआं तां जीव ईश्वरको मिथ्या कथन कर्तीआं है जिसते माया अर अविद्याविषे प्रतिबिंबरूप जीव ईश्वर है ऐसा श्रुति मैं कथनकीता है मैं एकते बहुतरूप होवां इसइछासे आदिलेकरके शरीरविषे प्रवेशपर्यंत सृष्टि ईश्वरकरके रचीहोई है अर जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिबंधमोक्षरूप संसार जीवकरके रचिआ होआ है अर कूटस्थ असंगनिर्विकार है अर जन्ममरणआदिरूप संपूर्ण व्यवहार मिथ्या है एह श्रुतीआंविषे कथन कीता है तांते मुमुक्षु एह जो श्रुतीआंदा अर्थ है इसनूं सदा विचारे ।

शंका—कूटस्थ जन्मआदिकविकारांसे रहित है इसवार्तानूं तुसी कैसे जानतेहो

उत्तर—श्रुतिवाक्यते हम जानते हैं सो श्रुतिवाक्यको श्रवण करो॥ परमार्थदृष्टिविषे स्थित होकरके देखआं होयां न उत्पति है न विनाश है न कोईबंधनको प्राप्त होयाहोया है अर न कोई

मुक्त है न कोई शमदमआदिक साधनावाला है नकोई मुमुक्षु है।

शंका—जेकर वास्तवसे उत्पत्तिविनाशआदिक नहि ॥ तो श्रुतिआंविषे नहाँतहाँ जीव ईश्वर अर जगतआदिकांदे स्वरूप-नूं कथन किउं कीआ है।

उत्तर—मनवाणीते परे जो आत्मादा स्वरूप है इसदे ज्ञान-वास्ते श्रुति जीवअर ईश्वर अर जगतदे स्वरूपनूं कथन करीं है ॥ जिसते जीव ईश्वर जगतदा स्वरूप अज्ञान दशाविषे प्रतीत होता है मनवाणीकरके तिसदी मिथ्यारूपतानूं कथन करके ॥ मनवाणीते परे जो आत्मतत्वहै तिसको श्रुति जनावे है।

शंका—जेकर वास्तव तत्व एकरूपश्रुतीयां बोध न करीयां हैं तो श्रुतीयांविषे परस्पर विवाद किउँ है ।

उत्तर—तत्वविषे तां श्रुतीयांदा विवाद नहि किंतु तत्वबोध-नके प्रकारविषे विवाद है सोभी जिन्ना पुरुषांको तत्वबोधन क-रणा है तिन्नापुरुषांदे चित्तदी विषमताके अनुसार है ऐसे सुरेश्व-रांचार्यने कथन कीया है सो सुरेश्वराचार्यदा वाक्य श्रवण क-र ॥ जिसजिस प्रक्रियाकरके जिज्ञासीयांनूं आत्मज्ञान होवे सो-ईसोई प्रक्रिया तिसतिस जिज्ञासीको श्रेष्ठ है इसीकरके श्रुतीयां-ने अर आचार्यांने अनेक प्रक्रिया कथन करीयां हैं तांते प्रक्रि-याविषे विवाद है तत्वविषे विवाद नहि जैसे सठामुद्रादे ग्रहणक-रणवाले जो पुरुष हैं तिन्नादा लेखेविषे विवाद अनेक प्रकारका है सठांमुद्राविषे विवाद कुछ नहि कोई चारांपंजे सठ कहिता है

कोई छिद्दाके सठ कहिता है कोई पंद्राचौके सठ कहिता है कोई तिन्ना वीहांको सठ कहिता है।

शंका—जेकर श्रुतीयांका अर्थ एक रूप है तौ श्रुतीयांदे कथन करणेवाले पुरुपांदां परस्पर विवाद किउं है कोई कहिता है भेद श्रुतीयांका अर्थ है कोई कहिता है अभेद श्रुतीयांका अर्थ है।

उत्तर—मूर्खपुरुप संपूर्णश्रुतीयांदे तात्पर्यनूं न जानकरके भ्रमेहूये विवादपडे कर्ते हैं अर विवेकीपुरुष श्रुतीयांदे तात्पर्य संपूर्णनूं जानकरके आनंददे समुद्रविषे स्थित होते हैं अर किसीके साथ विवादको नहि कर्ते जेकर विवेकी आनंददे समुद्रविषे स्थित हैं तौ विवेकीयांका निश्चय कैसा है ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ मायारूप मेघ है सो जगतूरूप जलकी वर्षा जैसे होवे तैसे करो तिसकरके चिदाकाशदी हानि नहि अर चिदाकासको कुछ लाभ भी नहि अव कूटस्थदीपदे अभ्यासदा फल श्रवण कर॥ जो पुरुप इस कूटस्थदीपग्रंथदा निरंतर विचार कर्ता है सो निरंतर कूटस्थरूपताकरके प्रकाशता है॥ अर्थ एह जो आपनू सदा कूटस्थरुप जानता है।

इतिश्रीकूटस्थदीप समाप्त॥ ८॥

श्रीः

पञ्चदशी भाषा

अथ ध्यानदीप प्रकरणम्

॥ ॐसतगुरुप्रसाद ॥ ॥ अथ ध्यानदीपनाम जो चौथा दीप है आदिसें नवां ग्रंथ तिसदा आरंभ कर्ते हैं ॥ श्रवण कीतीआं हैं उपनिषदां जिसपुरुषने ॥ उस पुरुषकों बुद्धिदी मंदताआदिक किसी प्रतिबंधकरके ॥ ब्रह्मदा अपरोक्षज्ञान जेकर न होवे तौ तिसपुरुषने ज्ञाननूं उत्पन्नकरके मोक्षदा कारण जो उपासना सो कीतीचाहीये ॥ जिसते निर्गुण ब्रह्मदी उपासनाकरकेभी मोक्षदी प्राप्ति होती है ॥ जैसे संवादी भ्रमकरके प्रवृतहोये पुरुषको वांछितपदार्थकी प्राप्ती होती है ॥ तैसे भ्रमरूपभी उपासना है ॥ पर तिसकरके जिज्ञासीकों वांछित जो ब्रह्मरूपताकरके स्थितिरूप मोक्ष है ॥ तिसकी प्राप्ती होती है ॥ उपासना करके मोक्षदी प्राप्ती होती है इसविषे की प्रमान है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ नरसिंहतापनी उपनिषददी श्रुति इसविषये प्रमाण है ॥ जिसते निर्गुणब्रह्मदी उपासनाकरकेभी मोक्ष होता है ॥ इसीकारणते नरसिंहतापनी उपनिषदविषे अनेकप्रकारकरके ब्रह्मतत्वदी उपासना कथन कीतीहै ॥ संवादी भ्रम किसनूं कहीता है ऐसा पुछे तां श्रवण कर ॥ भ्रम दोप्रकारका होता है एक संवादी एक विसंवादी ॥ जिस भ्रमसें वांछितअर्थकी प्राप्ती होवे ॥ सो संवादी भ्रम है ॥ अर जिसभ्रमसें वांछितअर्थकी प्राप्ती न होवे सो विसंवादी भ्रम है ॥ जैसे दोपुरुषसे ॥ ओन्हा दुहां पुरुषां-

विखे एकको मणिदी प्रभाविषे मणिभ्रम होताभया ॥ अर दूसरेको दीपककी प्रभाविषे मणि भ्रम होताभया ॥ तब ओह दोवें पुरुष मणिके लेनेवासते जातेभये भ्रमकरके ॥ जिसते मणिविषेमणिज्ञान दोनोकों नहि भया ॥ मणिदी प्रभाविषे अर दीपकदी प्रभाविषे मणिज्ञान भया है ॥ परंतु तिसपुरुषकों मणिकी प्रभाविषे मणिज्ञान भया है तिसपुरुषकों उदम कीतीआं होआं मणिका लाभ होता है सो संवादीभ्रम है ॥ अर तिसपुरुषकों दीपकदी प्रभाविषे मणिभ्रम है तिसपुरुषका उदम निःफल है ॥ जिसते तिसकों लाभ कुछ नहि होता ॥ तैसे ब्रह्मतत्त्वविषे मनका लगावनारूप जो उपासना है सो भ्रमरूप है ॥ जिसते ब्रह्म मनवाणीते परे है॥ पर तिसकरके ब्रह्मसाक्षात्कारद्वारा मोक्षदी प्राप्ती होती है ॥ इसते ब्रह्मकी उपासनाभी संवादीभ्रम कहीता है ॥ अर धनपुत्र स्त्रीआदिकांविषे जो मनका लगावना है तिसते लाभ कुछ नहि होता ॥ तिसते सो विसंवादी भ्रम कहीता है ॥ इसप्रकार प्रत्यक्षकरके जानी जो वस्तु है तिसविषे संवादीभ्रम होता है॥ अर अनुमानकरके जो जानी वस्तु तिस विषेभी संवादीभ्रम होता है सो श्रवणकर ॥ किसी पुरुषनूं अग्निदी लोडसी तिसपुरुषने दूरसें जलदी हवाड देखी ॥ अर तिसनूं जानिआ एह धूंआं है ॥ तिसस्थानविषे अग्निका अनुमान कीआ एहस्थान अग्निवाला है ॥ धूंएवाला होनेते ॥ भोजनवाले स्थानकी नियांई ॥ इसप्रकार अग्निदा अनुमान करके प्रवृत्तहोये पुरुषनूं दैवयोगकरके जेकर अग्निदीप्राप्ती होजाए तब ओह संवादीभ्रम है ॥ तिसते जलदी हवाड विषे धूएंदा ज्ञान यथार्थ नहि ॥ अर शास्त्रने कथन कीया जो अर्थ है तिसमैंभी संवादीभ्रम होता

है ॥ जैसे किसीपुरुषनें भ्रमकरके गोदावरीदे जलनूं गंगाजल जानकरके स्नानकीआ पानकीआ तिसकरके ओह शुद्धिकों प्राप्त होजाता है ॥ जिसते गंगाजलकी निआंई॥गोदावरीका जलभी शुद्धिदा कारण है परंतु गोदावरीदे जलविषे जो गंगाजलज्ञान है सो भ्रम है ॥ अर जैसे कोई पुरुष तापकरके सन्नपातनूं प्राप्त होआहोआ बकवाद करणे लगा तिस बकवादविषे तिसदे मुखनें नारायणका नाम उच्चारण भया ॥ नारायणकों निकासो ॥ नारायण मैंनूं मारता है नारायणकों आसन देवो ॥ नारायणदी पूजाकरो ॥ इसते आदिलेकरके जो तिसदा कथन है सो भ्रमरूप है ॥ जिसते तिसकों एह ज्ञान नहि जो नारायणका नाम मेरेकों स्वर्गके देनेवाला है केवल सन्नपातकरके भ्रमकों प्राप्त होआंहोआं नारायणकास्मरण तिसने कीआ है होरणापुरुषांके स्मरणकी निआंई ॥ परंतु भ्रमकरभी नारायणका नाम स्मरण करणेते ओह पुरुष मरकरके स्वर्गकों प्राप्त होता है ॥ भावें मलनचितभी तिसकों स्मरण करे तोभी पापांकानाश कर्ता है हरिकानाम ॥ जैसे अग्निकों न जानकरकेभी अग्निके ऊपर चरण रक्खआ अग्निदाह करदेती है तैसे परमेश्वरके नामके महात्मदे नजानिआंहोआंभी परमेश्वरका नाम पापादा नाश करदेता है ॥ उच्चारण कीताहोआ अर पुराणाविषे कथन कीता है ॥ अजामिल वडा पापी सी सो पुत्रनूं नारायणनामकरके बुलावता होआ मरकरके मोक्षनूं प्राप्तभया ॥ ताते भ्रमरूपभी नारायणदे नामदा स्मरण मोक्षदा कारण है ॥ जिसते अजामिलकों नारायणदे नामविषे पुत्रनामतादा ज्ञान भ्रम है ताते एह सिद्ध भया ॥ कथनकीते जो दृष्टांत तिन्नाकरके संवादी भ्रम करोडां प्रकारका

है ॥ जिसते प्रत्यक्षप्रमाणदे विषेविषेभी संवादी भ्रम हैं ॥ अर अनुमानप्रमाणदे विषेविषेभी संवादी भ्रम हैं ॥ अर शास्त्रप्रमाणदे विषेविषेभी संवादी भ्रम हैं अर जेकर संवादीभ्रमनूं न अंगीकार करेंगा तौ मृत्तिका अर काष्ठ अर शिला अर कागतांदीआं मूर्तां फलसिद्धिकेवासते पूजनेयोग तेरे मताविषे कैसेहोवेंगीयां ॥ स्वत्ते देवतारूपतातां तिनको है नहि ॥ छांदोग्यउपनिषद अर बृहदारण्यक उपनिषदविषे पंचाग्निविद्या है ॥ तिसविद्याविषे प्रवाहणनाम राजाने गौतमनाम ऋषिके तांई कथन कीता है ॥ स्त्री अर पुरुष अर पृथिवी अर मेघ अर स्वर्गलोक एना पंजानूं अग्निरूपजानके उपासना कीतिआं होआं ब्रह्मलोकदी प्राप्ति होती है ॥ सो संवादीभ्रमते फलदी प्राप्ति न अंगीकार कीतिआंहोआं कैसे होवेगी स्त्रीआदिकांविषेअग्निज्ञानतौ भ्रमरूप प्रसिद्ध है ॥ और विषे औरदा ज्ञान होनेते अर मननूं ब्रह्मरूप जानकें उपासना करणी ॥ सूर्यनूं ब्रह्मरूपजानके उपासनाकरणी इसते आदिलेकरके जो उपासना हैं सो संवादी भ्रमरूप हैं ॥ शास्त्रकरके कथन कीता होआ और विषे और वस्तुदा ज्ञान जैसे शालग्रामविषे विष्णुज्ञान अथवा लोकप्रसिद्ध जो और वस्तुविषे और ज्ञान जैसे मणिप्रभाविषे मणिज्ञान तिस भ्रमरूपज्ञानते जद वांछितफलदी प्राप्ति होजावे दैवयोगकरके सो संवादीभ्रम है ।

शंका—ब्रह्मदी जो उपासनाहै भ्रमरूप तिसकों यथार्थ ज्ञानकरके जो प्राप्तहोने योग्य मोक्षहै तिसदी कारणता कैसे है ।

उत्तर—संवादी भ्रमकी निआंई तिसकों मोक्षप्राप्तिविषे कारणता है ॥ जैसे संवादीभ्रम आप भ्रमरूपभी है ॥ पर सम्यक्

ज्ञानसें जो फलप्राप्त होता है तिसफलकों देता है ॥ तैसे ब्रह्मतत्व-
दी उपासना भ्रमरूपभी है ॥ पर मुक्तिरूपफलके देनेवाली है।

शंका—ब्रह्मतत्वनूं जानकरके उपासना करीती है ब्रह्मत-
त्वदीके न जानकरके ॥ जेकर कहो जान करके करीती है ॥ तो
एह वार्ता नहि बनती ॥ जिसते जाननेकरकेदी मोक्षदीप्राप्ती
होजाती है ॥ तिसते उपासनाकरणी व्यर्थ है ॥ अर जेकरकहो
विना ब्रह्मतत्वके जानीआं ब्रह्मतत्वदी उपासनाकरीती है ॥ तो
एहभीवार्ता नहि बनती ॥ जिसते उपासनानाम है चित्तदी तदा-
कारतादे करणेदा ॥ तो जेकर ब्रह्मतत्वजानिआही न तद तिस-
विषे चित्तदी तदाकारता करणी नहि बनती।

उत्तर—ब्रह्मदी आत्मरूपतादे अपरोक्ष ज्ञानकरके मोक्षदी
प्राप्ति होती है ॥ ऐसा अपरोक्षज्ञान जिसकों नहि प्राप्तभया
उसकों उपासना व्यर्थ नहि ॥ अर वेदांतशास्त्रांते परोक्षरूपता-
करके ब्रह्मतत्वनूं जानकरके अखंड एकरस ब्रह्मतत्व मैं हां ऐ-
सी उपासना बनसक्ती है ॥ जिसब्रह्मतत्वदी उपासना करणी है
तिसब्रह्मविषे परोक्षज्ञानदा किआरूप है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण
कर ॥ बुद्धिआदिकांदा साक्षीआनंदरूप ब्रह्म है ॥ ऐसा न जान-
करके सच्चिदानंद ब्रह्म है ॥ ऐसा जो शास्त्रते उत्पन्नभया ज्ञान
सो उपासनादा कारण परोक्षज्ञान है ॥ जैसे शालग्रामआदिरूप
प्रतिमाविषे शास्त्रद्वारा विष्णुरूपतादा परोक्षज्ञान होता है ॥ व्या-
पकतानूं न अनुभवकरके।

शंका—शास्त्रकरके विष्णुनूं चतुर्भुज जानीता है ॥सो विष्णु

चतुर्भुज यथार्थ है ॥ तांतेशास्त्रकरके विष्णुदा परोक्षज्ञान होता है ॥ एह कैसे कहितेहो ।

उत्तर—शास्त्रकरके विष्णुनूं चतुर्भुजरूप जानिआं होआं-भी नेत्रांकरके विष्णुदी चतुर्भुजतानूं न अनुभवकर्ता हूआहूआ पुरुप विष्णुदे अपरोक्ष ज्ञान वाला नहि होता ॥ जिसते उपासनाकालविपे विष्णुदी प्रत्यक्षतानूं नहि अनुभवकर्ता नेत्रांकरके इसते परोक्षज्ञानी कहीता है ।

शंका—विष्णुआदिकांदा जो परोक्षज्ञान है सो भ्रमरूप है ॥ जिसते विष्णुज्ञानविष्णुरूप पदार्थविषे नहि मनदी कल्पना-रूप है ।

उत्तर—ज्ञानको परोक्षरूपताकरके भ्रमरूपता नहि होती ॥ किंतु तिसज्ञानदाविपे असत्यरूप होवे सो ज्ञान भ्रमरूप होता है ॥ अप्रमाणते उत्पन्न होआहोआ अर विष्णुविपे परोक्षज्ञान तौ शास्त्ररूप प्रमाणसें उत्पन्नभया है शास्त्रकरके जैसा विष्णुदा-स्वरूप है तैसा प्रतीत होता है परंतु प्रत्यक्ष नहि प्रतीत होता ॥ तांते विष्णुआदिकांदे परोक्षज्ञाननूं भ्रमरूपता नही ॥ जेकर प-रोक्षज्ञाननूं भ्रमरूपता मानोंगे॥ तौ पर्वतआदिकामें अग्निआदि-कांदे ज्ञानकोंभी भ्रमरूपता होई चाहिए ॥ तांते संपूर्णव्यवहार-दा अभाव सिद्ध होवेगा ।

शंका—सच्चिदानंदरूपतादे जनावनेवाले शास्त्रते उत्पन्नभ-या जो ब्रह्मज्ञान तिसकों परोक्षरूपता किसकारणते ।

उत्तर—जिसते सर्वअंतःकरण वृत्तीआंदा साक्षी आत्मरू-

पनाकरके ब्रह्मनूं नहि जानिया ॥ तिसते तिसज्ञानकों परोक्षरू-पता है ॥ अर ब्रह्म सच्चिदानंदरूप है ॥ अर देशकालवस्तुदे प-रिच्छेदसें रहित है ॥ अर नित्य है शुद्ध है चैतन्यरूप है सत्य है मु-क्त है निरंजन है अर जो इदंताकरके प्रतीत होता है स्थूल अथवा सूक्ष्मभाव अथवा अभाव सों संपूर्ण सत्य अर जो एह संपू-र्ण प्रतीत होता है सो चैतन्यरूप है ॥ इसते आदि लेकरके शास्त्र-ते सच्चिदानंदरूप ब्रह्मदी प्रतीति होआंहोआंभी आत्मरूपतादे न जाननेते तिस ब्रह्मकों साक्षात् नहि अनुभव कर्ता ।

शंका—जेकर ब्रह्मदी आत्मरूपतानूं नहि जानता परोक्ष-ज्ञानी तों परोक्ष ब्रह्मज्ञानकों तत्वज्ञानता कैसे है ।

उत्तर—परोक्षभी ब्रह्मज्ञानशास्त्रने कथन कीआ जो प्रकार तिसकरके ब्रह्मदी सच्चिदानंदरूपतानूं निश्चय करावता है ॥ तां-ते तत्वज्ञान है भ्रम नही।

शंका—जैसे शास्त्रकरके ब्रह्मदी सच्चिदानंदरूपतानूं जा-नीता है ॥ तैसे महावाक्यांकरके ब्रह्मदी साक्षी आत्मरूपतानूंभी जानीता है तिसते शास्त्रते उत्पन्न भया जो ब्रह्मज्ञान हैं तिसकों अपरोक्षरूपता किउँ न होवे ।

उत्तर—ब्रह्म यद्यपि शास्त्रांविषे महावाक्याने आत्मरूपता-करके कथन कीता है ॥ पर तौभी अन्वय व्यतिरेककरके तत्प-दार्थ अर त्वंपदार्थदे विवेकसें रहित पुरुषने ब्रह्मनूं आत्मरूप-ताकरके नही जान सकीता इसकारणते केवल शास्त्रते अपरो-क्षज्ञान नही होता ।

शंका—सम्यक्ज्ञानदा कारण प्रमाण अर वस्तु हैं सो प्रमाणभी महावाक्यरूप विद्यमान् है ॥ अर ब्रह्मआत्मरूप वस्तुभी विद्यमान है ॥ तांते विचारसें विना अपरोक्षज्ञान नही होता एह किउँ कहिते हो ।

उत्तर—ब्रह्म अर आत्मादी एकतादे अपरोक्षज्ञानदा विरोधी देह इंद्रियादिकांविषे आत्मताभ्रम है ॥ तिसके विद्यामान होआंहोआं हठकरके पुरुष ब्रह्मनूं आत्मरूपतादे जाननेकों समर्थ नही होता मंदबुद्धि होनेते ॥ तांते देह इंद्रियादिकांविषे आत्मभ्रमदे निवारणवासते विचार अवश्य कीता चाहीता है जिसते विचारसें विना भ्रम दूर नहि होता ।

शंका—जेकर देह इंद्रियादिकांविषे आत्मता भ्रम अपरोक्षब्रह्मआत्मज्ञानदा प्रतिबंधक है ॥ तो द्वैतभ्रमकों अद्वितीयब्रह्मदे परोक्षज्ञानदीभी प्रतिबंधकता होवे ।

उत्तर—अपरोक्षद्वैतभ्रम अपरोक्षअद्वैतज्ञानदा प्रतिबंधक है अर परोक्षअद्वैतज्ञानदा प्रतिबंधक नहि ॥ तांते शास्त्रविषे श्रद्धावाले पुरुषकों शास्त्रते परोक्षज्ञान होता है ॥ जैसे अपरोक्षशिलाज्ञान परोक्षईश्वरज्ञानका प्रतिबंधक नहि प्रतिमाआदिकांदी विष्णुरूपताविषे किसीका विवाद नहि ॥ अर्थ एह जो प्रतिमाविषे परोक्ष विष्णुज्ञान होजाता है ।

शंका—कोईइक श्रद्धासें रहित पुरुष प्रतिमाविषे विष्णुदी परोक्षज्ञानताविषे विवाद कर्ते हैं ॥ तांते तुम कैसे कहितेहो ॥ प्रतिमादी विष्णुरूपताविषे कोई विवाद नही कर्ता॥

उत्तर—श्रद्धासें रहित पुरुषका विचार दृष्टांतके योग नहि जिसतें वेदकरके कथन कीते होए कर्मांविषे अर उपासनाविषे श्रद्धावालेका अधिकार है ॥ तातें श्रद्धावालेपुरुषकों यथार्थ वक्तादे एकवारी उपदेशतें परोक्षज्ञान होता है शिलाविषे विष्णुरूपतादा उपदेश नहीं विचारकों चाहता ।

शंका—जेकर कर्मउपासनादा उपदेश नही विचारकों चाहता ॥ तों शास्त्रांविषे कर्मांदे अर उपासनादे विचार किउं कीतेहैं।

उत्तर—करणेयोग्य कर्म अर उपासनाविषे अनेक संशय होते है ॥ तातें तिन्नादे निर्णयवासते विचार कीता है ॥ कर्म अर उपासनाविषे संशय किउं होते हैं ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ अनेकवेददीआं शाखाविषे तहांतहां कथन कीता जो कर्म अर उपासना है तिसनूं एकस्थानविषे एकठियांकरके निर्णयकरणेनूं अल्पबुद्धि पुरुष समर्थ नहि होता ।

शंका—जेकर कर्म अर उपासनादा स्वरूप निर्णय नहि होता तों कर्म अर उपासनादी अकर्तव्यता प्राप्त भई ।

उत्तर—जैमनिसें आदिलेकरके मुनीश्वरांने कर्म अर उपासनादे करणेदा प्रकार निश्चय करके कल्पसूत्रांविषे लिखिआ है तिन्नादे लिखेविषे श्रद्धावाला जो पुरुष है सो विचारसें विनाभी कर्मांदे करणेनूं भलीप्रकार समर्थ होता है।

शंका—जैमिनिआदिक मुनीश्वरांने उपासनादा विचार तों कल्पसूत्रांमें नहि कीता ॥ तातें उपासनादा करणा कैसे बने ।

उत्तर—ब्रह्मवसिष्ठआदि मंत्रकल्पनाम ग्रंथांविषे उपासनादी कर्तव्यतादा प्रकाश कथन कीता है॥ तिसदे विचारविषे जो असमर्थपुरुप है अस्मदादिक सो कल्पग्रंथांविषे कथनकीआ जो उपासनादा प्रकार तिसनूं गुरुदे मुखते जानकरके उपासनादे करणेनूं समर्थ होवीता है।

शंका—जेकर कल्पग्रंथांविषे कथन कीए प्रकारकरके उपासना करणेकों समर्थ होवीता है॥ तौ अज्जकल्पग्रंथांके बनावनेवाले पुरुपांने वेदवाक्यांदा विचार किंउँ करीता है।

उत्तर—आपनीवुद्धिदे परचावनेवासते करीता है अर उपासनादी कर्तव्यता सिद्धिवासते नहि करीता॥ उपासनादी कर्तव्यता तां यथार्थ वक्तादे उपदेशकरके सिद्ध होती है।

शंका—ब्रह्मदी उपासनादी नियांई ब्रह्मसाक्षात्कारभी उपदेशमात्रतेही सिद्ध होवे।

उत्तर—जैसे उपासनाविचारसें विना उपदेशमात्रकर सिद्धहोती है तैसे ब्रह्मसाक्षात्कार उपदेशमात्रकरके विचारसें विना कदीभी सिद्ध नही होतां पुरुपांको॥अर्थ एह सत्ययुगविषेभी विचारकरके ब्रह्मदा अपरोक्षज्ञान होता है अर कलियुगविषेभी विचारकरके ब्रह्मदा अपरोक्षज्ञान होता है काशीविषेभी विचारकरके ब्रह्मदा अपरोक्षज्ञान होता है॥ अर कुरुक्षेत्रविषेभी विचारकरके ब्रह्मदा अपरोक्षज्ञान होता है॥ किसीकालविषे किसीदेसविषे विचारसें विना ब्रह्मदा अपरोक्षज्ञान नही होता॥ जिसकारणते अश्रधा परोक्षज्ञानदा प्रतिबंधक है अविचार प्र-

निबंधक नहीं ॥ इसीकारणतें अश्रधाके निवृत्त होआंहोआं य-थार्थ वक्तादा एक वारी उपदेशतें परोक्षज्ञान होता है ॥ अर अ-परोक्षज्ञानदा प्रतिबंधक अविचार है ॥ सो अविचार विचारसें निवृत्त होता है ॥ तांतें अपरोक्षज्ञानवासतें विचार कीता चा-हीता है ।

शंका—विचारके कीतिआंहोआंभी जेकर अपरोक्षज्ञान न होवे तों की करणे योग्य है ।

उत्तर—फेरभी विचारकरणे योग्य है विचारसें भिन्न होर कोई अपरोक्षज्ञानका कारण नहीं जितनाकालपर्यंत अपरोक्ष-ज्ञान न प्राप्त होवे ब्रह्मआत्मादी एकतारूप ॥ तितनाकालपर्यंत वारंवार विचार करणा ।

शंका—वारंवार विचारकरकेभी जेकर इसजन्मविषे अपरो-क्षज्ञान न होवे तों विचारकों व्यर्थता प्राप्त भई ।

उत्तर—मरणपर्यंत विचारकों कर्तांहोआ पुरुष जेकर आ-त्मादे अपरोक्षसाक्षात्कारनूं न प्राप्त होवे तों जन्मांतर विषे आ-त्मादे साक्षात्कारनूं प्राप्त होता है प्रतिबंधदे नाश होआंहोआं एह वार्ता तुमने कैसें जानी जो इस जन्मविषे विचार कीए ते ज-न्मांतरविषे आत्मसाक्षात्कार होता है प्रतिबंधदे नाश होआंहो-आं ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ व्यासजीदे वचनतें हमने जानि-आ है व्यासजीने आपने ब्रह्मसूत्रविषे एह कथन कीता है ब्रह्म आत्मादे विचार करणेवाला जो पुरुष है तिसको जेकर इसजन्म-विषे ज्ञानदी उत्पत्तिविषे प्रतिबंध कोई न होवे तां इसीजन्मविषे

ब्रह्मसाक्षात्कार होताहै जैसे जनकआदिकांकों इसीजन्मविषे ब्र-ह्मसाक्षात्कार होता भया विचार करके ॥अर जेकर इसजन्मविषे ब्रह्मसाक्षात्कारविषे कोई प्रतिबंध होवे तद इस जन्मविषे कीता जो विचार है तिसकरके जन्मांतरविषे ब्रह्मसाक्षात्कार होता है॥ जैसे वामदेवकों इसजन्मदे विचारकरके जन्मांतरविषे ब्रह्मसाक्षा-त्कार होता भया प्रतिबंधके होआंहोआं इसजन्मविषे ब्रह्मसाक्षा-त्कार नही होता ॥ इसविषे कठवली उपनिषददी श्रुतिभी प्रमा-ण है सो कहिती है ॥ श्रवण कर्तेहूएभी विचारकर्ते होएहोएभी ब्रह्मनूं अपरोक्ष नही जान सक्ते ॥ प्रतिबंधदे वशते इसजन्मविषे श्रवण मनन निदिध्यासन करणेवाले पुरुषकों प्रतिबंधके होआं-होआं जन्मांतरविषे अपरोक्षज्ञान होता है॥ इसअर्थविषे ऐत-रेयउपनिषददी श्रुतिभी प्रमाण है॥ तिसविषे एह कथन कीआ है ॥ वामदेव नाम ऋषी गर्भविषे वास कर्ता हूआ ऐसे जानता भया॥ एन्ना देवतिआंके संपूर्ण जन्म मैं जानताहां॥ अर्थ एह जो देवतिआंके जन्मसें प्रथम विद्यमान् है सो देवतिआंके जन्मकों जानता है देवतिआंके जन्मसें प्रथमविद्यमानतां ब्रह्मतत्व है॥ सो ब्रह्मतत्व मैंहां तांते प्रथमजन्मविषे जो विचार कीता सी ति-स विचारकरके गर्भविषे वामदेवकों ब्रह्मसाक्षात्कार होता भ-या॥ इस जन्मविषे ज्ञानदी न उत्पति अर जन्मांतरविषे उत्पति इसविषे दृष्टांत श्रवण कर॥ जैसे किसीपुरुषने वेदकी ऋचा कं-ठकरणेका आरंभ कीता है तिस दिनविषे बहुत वारी घोषिआं-होआंभी जेकर ऋचाकंठ नही भई॥ तौ दूसरे दिनविषे ऋचा-कंठ होजाती है विना घोषिआंते प्रथमदिनदे घोषणदे प्रभाव-ते॥ अर जैसे खेती अर गर्भादिक कालकरके परिपक्क होते है

एकदिनविषे परिपक्व नहीं होते तैसे आत्मविचारभी एक दिन-विषे परिपक्व नहीं होता ॥ होलीहोली परिपक्व होता है ॥ बहुत-वारी आत्मतत्वदे विचार कीतिआंहोआंभी प्रतिबंधदे वशते आ-त्मसाक्षात्कार नहीं होता ॥ एह वार्ता वार्तिककार सुरेश्वराचार्य-जीनेभी कथन करी है वारंवार विचारदे कीतिआंहोआंभी तिन्न-प्रकारदे प्रतिबंधते पुरुष तत्वदे साक्षात्कारकों नहीं प्राप्त होता प्रथम विचारदे कीतिआंहोआं ब्रह्मज्ञानदी उत्पति नहि होती अर अब उत्पति होती है इसविषे कारण की हैं इस प्रश्नका एह उ-त्तर है ॥ प्रथम प्रतिबंध सी तिसकरके विचारदे कीतिआंहोआं-भी ज्ञान न भया ॥ अब प्रतिबंधनाश होगया है इसते अप-रोक्षज्ञानदी उत्पति होई है सो प्रतिबंध तिन्न प्रकारका है ॥ एक भूत दूसरा भावी तीसरा वर्तमान ॥ इस तिन्नप्रकारके प्रति-बंधदे विद्यमान होनेते पडिआ है वेद अर वेददा अर्थ जिसने सोभीपुरुष मोक्षको नहि प्राप्त होता ॥ प्रतिबंधदे होआंहोआं ज्ञान नहीं होता एहवार्ता छांदोग्य उपनिषदविषेभी कथन करी है तिसकों श्रवण कर ॥ जैसे किसीपुरुषदे घरविषे बहुत सारास्व-र्ण दबिआ होआ है परंतु उसपुरुषकों उसका ज्ञान है नहीं ॥ तो ओह पुरुष उसदे उपरविचिरता होआभी तिसस्वर्णकों नहीप्राप्त होता ॥ कंगाल रहिता है तिस स्वर्णके न ज्ञानका कारण तिस-स्वर्णके उपर मिटीरूप प्रतिबंध है तैसे एह संपूर्ण प्रजा दिनदि-नविषे ब्रह्मलोकनूं प्राप्त होतीआं हैं ॥ परंतु इस ब्रह्मलोकनूं नहीं जानतीआं ॥ मिथ्यारूप अज्ञानकरके आवरीआं होइआं अब अतीत प्रतीत प्रतिबंधकों श्रवण कर ॥एककोई संन्यासी संन्या-सग्रहणते प्रथम गृहस्थअवस्थाविषे एकमैंहविषे स्नेहवाला हो-

ता भया ॥ पिछों ओहपुरुप संन्यासनूं ग्रहण करके श्रवण करणे लागा तब तिसदा चित्त महविपेही लगा रहें ॥ आत्मतत्वका मन न तिसकों न होवे ॥जो गुरुने उपदेश तिसकों कीता सी तिसमोहते उत्पन्न भया जो प्रतिवंध तिसते आत्मसाक्षात्कारकों न प्राप्त भया ऐसी कथा लोकविपे श्रवण करीती है ॥ जेकर अतीतपदार्थभी प्रतिवंध कर्ता है तो अतीत पदार्थविषे मोहवाले पुरुषकों ज्ञानदी उत्पत्ति कैसे होती है ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ तिस संन्यासीदा जो गुरु आत्मतत्वदे उपदेशकरणेवाला सो अति दयालुसी तिससंन्यासीकों पुछदा भया हमारेकरके उपदेश कीए होए आत्मतत्वका तेरेकों साक्षत्कार नही भया इसते हम जानते हैं जो तैंने तिसका मनन नही कीआ॥ तेरेमनविषे किसी होरपदार्थका चिंतन होता है ॥ तब ओह संन्यासी कहिता भया ॥ मँहविषे मेरा चित लगा होया है तब तिसके गुरु तिसदा मँहविषे स्नेह जानकरके एह कहिने भए तूं एह उपासना कर एह मँहब्रह्म मैंहां ॥ तिसविषे तिसदा चित एकाग्र होजाता भया ॥ तिसकरके तिसदे चितविपे एह भावना दृढ हो गई मैं मँहहां तब तिसके गुरु तिसकों कहिते भए हे मँहरूप ब्रह्म असाडीवार्ताकों श्रवण कर ॥ कुटीआसें वहिर्निकसकर तब ओह संन्यासी आपने गुरुकों कहिता भया ॥ मेरा शरीर वडास्थूल है अर मेरे सिंग वडे हैं अर कुटीआकादर्वाजा छोटा है ॥ तांते मैं कैसे कुटीआते बाहिर्निकसों ॥ तब तिसकों तिसके गुरु कहिते भये तूं महर्षीं रूप नही॥ महपीदी भावनाकरके तूं आपकों महर्पीरूप मंनने लगागियां हैं॥ वास्तवते तूं मनुपरूप हैं ॥ जलके पात्रविषे आपनेमुखकों देख ऐसे कहकरके तिसकों जलदा दिता ॥ तिसजलदे पात्रविषे

तिस संन्यासीनें आपना मुख देखआ ॥ अर जानता भया जो मैं मनुष्य हां मैं महषा नही ॥ तब तिससंन्यासीदा गुरु तिसकों कहिता भया हे शिष्य! जैसे महैंदी भावनाकरके तूं मैंहरूप आपको मानता भया है तैसे ब्रह्मदी भावना करके तूं ब्रह्मरूपतानूं प्राप्त होवेंगा ॥ ऐसे उपदेशके करणेंते तिससंन्यासीका महषीविषे स्नेहरूप प्रतिबंधनाश होगया ॥ तिसते ओह संन्यासी गुरुने उपदेश कीआ जो ब्रह्मतत्व सी तिसनूं अपरोक्षरूपकरके जानता भया ॥ तात्पर्य एह ॥ उपासनासें भूतप्रतिबंधका अभाव होता है ॥ अब वर्तमान प्रतिबंधनूं श्रवण कर ॥ वर्तमानप्रतिबंध चार प्रकारका है ॥ एक चितदी विषयांविषे आसक्ति ॥ दूसरा बुद्धिदी मंदता॥ अर्थ एह जो गुरु अर शास्त्रके उपदेशकों न समझसकना ॥ तीसरा श्रुतिविरुध युक्तीआंकरके श्रुतीआंदे अर्थानूं अन्यथा चिंतन करणा ॥ अर्थ एह जो पूर्वपक्षकीआं युक्तीआंविषे रुची बहुत होती इसका नाम कुतर्क है ॥ अर चौथा दुराग्रह ॥ अर्थ एह जो आत्मा कर्ता है भोक्ता है अर जगत् सत्य है तिसविषे युक्तिसें रहित हठ रखणा ॥ एन्हा चवांप्रतिबंधांविच्चो एकदे होआंहोआंभी ब्रह्मसाक्षात्कार नही होता ॥ इसवर्तमान चारप्रकारके प्रतिबंधकी निवृति किसकरके होती है ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥शम दम उपरति तितिक्षा समाधि इसकरके विषयासक्तिरूप प्रतिबंधका नाश होता है अर वारंवारदे श्रवणकरके बुद्धिदी मंदता नाश होती है॥ अर आत्ममननसें कुतर्करूप प्रतिबंधका नाश होता है ॥ अर निदिध्यासनकरके विपर्यय दुराग्रहरूप प्रतिबंधका नाश होता है ॥ एन्हा साधनाकरके प्रतिबंधके दूर होआंहोआं आत्मादी ब्रह्मरूपतानूं अपरोक्ष अनुभव कर्ता

है ॥ अब भावी प्रतिबंध श्रवण कर ॥ अवश्य जन्मांतरदे देनेवाला जो प्रारब्धकर्म है सो भावी प्रतिबंध है सो वामदेवकों अर जडभरतकों होताभया है ॥ तिसका भोगसें विना नाश नही होता ॥ तांते तिसदे नाशविषे कालदा नियम नही जिसते वामदेवका एक जन्मकरके ॥ अर जडभरतका तिन्ना जन्मांकरके भावी प्रविबंध नाश होआ है ।

शंका—एक जन्मकरके वामदेवका अर तिन्ना जन्मांकरके जडभरतका भावी प्रतिबंध नाश होता भया एह कालका नियमतां तुसी आप कर्तेहों ॥ तांते एह कैसे कहितेहो जो भावीप्रतिबंधदे नाशविषे कालदा नियम नही ।

उत्तर—गीताविषे एह कथन कीता है ॥ बहुते जन्मांदे वीतिआंहोआंभी प्रतिबंधदे नाश होआंहोआं योगभ्रष्टकों मोक्षदी प्राप्ति होती है ॥ योगभ्रष्टनाम तिसका है ॥ जो पुरुष ब्रह्मसाक्षात्कारदे वासते विचारविषे प्रवृत भया है अर ब्रह्मसाक्षात्कारपर्यंत विचारसें रहित होनेते ब्रह्मसाक्षात्कारकों न प्राप्त हूआहूआ मृत्युकों प्राप्त होगिया है ।

शंका—जेकर योगभ्रष्टकों बहुते जन्मांके वीतिआं होआंहोआं मोक्षकीप्राप्ति होती है ॥ तौ तिसने प्रथम कीता जो तत्वविचार है सो निःफल भया ।

उत्तर—तत्वविचार निःफल नही ॥ प्रतिबंधके नाशहोनेते पाछै अपरोक्ष ज्ञानरूपफल तिसविचारका है ॥ सो गीताविषे जैसे कथन कीया है तैसे श्रवण कर ॥योगभ्रष्ट पुरुष आत्मतत्ववि-

चारके प्रभावते ऐसे उनसम्वर्गको प्राप्त होता है जिसस्वर्गको अश्वमेधआदियज्ञांकों करणेवाले पुरुष प्राप्त होते हैं तिसस्व- र्गविषे बहुतकाल सुखकों अनुभवकरके अंतविषे मनुष्यजन्मकों प्राप्त होता है ॥ स्वर्गते गिडिया जो योगभ्रष्ट हैं सो दोप्रकारका है ॥ एक विषयांदी कामनावाला ॥ एक विरक्तचित्त विषयांदी कामनावाला जो योगभ्रष्ट है सो मातापिताकरके शुद्ध अर अतिधनवाले राजेआदिकांदे ग्रहविषे जन्मपावता है ॥ अर जे- कर योगभ्रष्ट विरक्तचित होता है ॥ तो ब्रह्मविचारके प्रतापसें आत्मज्ञानवान् अर चित्तदी एकाग्रतावाले विरक्त मुनीश्वरोंके घरविषे जन्मकों लेता है एह जन्म अति दुर्लभ है ॥ थोरियां पु- ण्यांकरके नही प्राप्त होता ॥ किसते दुर्लभ है ऐसा पुछें तां श्र- वण कर ॥ जिसकारणतें तिसजन्मविषे पिछले जन्मविषे कीता जो सो ब्रह्मअभ्यास तिसनूं शीघ्रही प्राप्त होजाता है ॥ केवल ब्रह्मअभ्यासही कों नही प्राप्त होता ॥ किंतु पिछले जन्मना लों अधिक कर्ता है पुरुषार्थ ब्रह्मअभ्यासविषे ॥ तिसकारणते एह जन्म दुर्लभ है पिछले जन्मदे अभ्यासदे पुरुषार्थते इसजन्मदे अभ्यासदे पुरुषार्थदी अधिकताविषे कारण श्रवण कर॥ योगभ्र- ष्टपुरुष आपनेचित्तविषे एह विचारताहै जेकर मैं ऊनअभ्यासवि- षे प्रमाद करांगा तद जन्मआदि दुखांदी प्राप्ति होवेगी ॥ इसते अभ्यासविषे अधिक पुरुषार्थ कर्ता है ॥ अर जिसयोगभ्रष्टका विषयासक्त चित्त है तिसनूं पूर्वअभ्यासने जोराजोरी ब्रह्मअभ्या- सविषे जोर देंदा है तिसदा जेकर ब्रह्मअभ्यासविषे इच्छा न होवे तांभी जैसे नदीदे प्रवाहविषे तरणेवाला जो पुरुष है तिसने रुडनेदी इच्छा नहीभी करीतो पर नदीदे वेगने तिसनूं जोराजो-

रि रोडीता है ॥ इस प्रकार अनेकजन्मांविषे कीता जो है ब्रह्मअ-भ्यासका प्रयत्न तिसकरके ब्रह्मसाक्षात्कारनूं प्राप्त होआहोआ तिसब्रह्मसाक्षात्कारते मोक्षनूं प्राप्त होजाता है एक भावी प्रति वंध होरभी है तिसनूं श्रवण कर ॥ जिसपुरुषकों प्रथम ब्रह्मलो-कदी कामना सी तिसकरके ब्रह्मलोकदी प्राप्तिवासते उपासना कीती तिस उपासनाकरके चित्तदी एकाग्रता होनेते ॥ ब्रह्मलो-कविषे वैरागहोआ तौ ओह ब्रह्मलोकदी दृढकामनादे निरो-धनूं करके आत्मादे विचारनूं करणे लगा ऐसा जो पुरुष है ति-सनूं आत्मसाक्षात्कार नहि होता ।

शंका—जेकर ब्रह्मलोकदी कामनावाले पुरुषकों कामनादे त्यागनूंकरके आत्मविचार कीतिआं होआंभी आत्मसाक्षात्कार नहीं होता ॥ तौ तिसदी मोक्ष कदीभी न होई चाहीए ।

उत्तर—ब्रह्मलोकविषे उसनूं ज्ञानप्राप्त होता है ॥ कल्पकेअं-तविषे ब्रह्माजीके साथ ओह विदेहमुक्तिनूं प्राप्त होजाता है॥जिस ते शास्त्रविषे एह कथन कीताहै ॥ वेदांतांदे विचारकरके एह ज्ञान जिनांको निश्चित भया है॥जगत्‌मिथ्याहै आत्मा ब्रह्मरूप है।ऐसे जो पुरुष हैं त्यागतें अर योगतें शुद्ध भया है अंतःकरण जिन्नाका ऐसे जो संन्यासीहैं सो ब्रह्माजीके विदेहहोनेसमेविषे ब्रह्म लोक विषे ब्रह्मसाक्षात्कारकों प्राप्त होएहोए संपूर्णही विदेहमुक्तिकों प्रा-प्त होजाते हैं॥अर स्मृति भी कहीती है॥जेरे पुरुष वेदांतांदे विचा-र अर त्याग अर योगके बलसें ब्रह्मलोकविषे प्राप्त भये हैं सो सं-पूर्णपुरुष ब्रह्मलोकविषे ब्रह्मसाक्षात्कारकों प्राप्त होएहोए तिसकर-के कृतकृत्य होएहोए महाप्रलयदे प्राप्त होयांहोयां ब्रह्माजीके विदे-

क्रमुक्तिके समेविषे ब्रह्माजीके साथही विदेहमुक्तिकों प्राप्त होजाते हैं॥तात्पर्य एह ब्रह्मलोककी वांछाही तिन्हाको ब्रह्मज्ञानविषे प्रतिबंधक थी॥अर ब्रह्मलोकके भोग देनेवाला प्रारब्धकर्म प्रतिबंधक थी॥सो वांछा अर प्रारब्धकर्म दोनो ब्रह्मलोकके प्राप्त होआंहोआं निवृत्त होजाते हैं ॥ ताते ब्रह्मलोकविषे तिसकों पिछले विचारते अर ब्रह्माजीके उपदेशते ब्रह्मसाक्षात्कार होता है ॥ ब्रह्मसाक्षात्कारकों प्राप्त हूआहूआ जीवन्मुक्तिकों भोक्ता है ब्रह्मलोकविषे ॥ अर अंतमें विदेहमुक्तिकों प्राप्त होजाता है ॥ इतने करके एह कथन कीना ॥ विचारदे कीतीआंहोआंभी प्रतिबंधदे प्रभावते ब्रह्मसाक्षात्कार इसजन्मविषे नहि होता ॥ अर आगे एह श्रवण कर ॥ तीव्रपापांवाले पुरुषांको ब्रह्मविचारभी दुर्लभ है ॥ अर्थ एह जो ब्रह्मविचारभी तिनकों नहि प्राप्त होता ॥ इसी अर्थकों कठवल्ली उपनिषद्विषे कथन कीआ है अनंतपापांदे प्रभावकरके श्रवणारूप विचारवासतेभी परमात्माका लाभ नही होता ।

प्रश्न—विचारविषे जिसदी समर्थ नहि अर मोक्षकी इच्छा है तिसकों की कर्तव्य है ।

उत्तर—इसका उत्तर तो पिछे हमने कथन कीना है ॥ विचारविषे असमर्थ जो पुरुष है सो गुरुते श्रवण करके निर्गुणब्रह्मदी उपासना करे ॥ तिसदे उत्तरकों विस्तारकरके अब कथन करते हैं विचारदी न प्राप्तिविषे कारण दो हैं एक बुद्धिदी अत्यंत मंदता ॥ अर दुसरा समग्रीदा अभाव सो समग्रीदा अभाव एह है ॥ ब्रह्मतत्वदे उपदेशकरणेवाले गुरुदी प्राप्ति न होनी ॥ अर अध्यात्मशास्त्र प्राप्त न होना ॥ अर गुरुशास्त्रदे प्राप्त होआंहोआंभी शरी-

रविषे रोग लगजाना। शिष्यदे अथवा गुरुदे ॥ अथवा गुरुशिष्य-का विवाद होजाना ॥ जैसे याज्ञवल्क्य अर वैसंपायनका ॥ अथ-वा शिष्यकी गुरुविषे दोष दृष्टि होजानी॥ जैसे इंद्रकी दध्यंगाथ-र्वण ऋषिविषे ॥ अथवा गुरुदीशिष्याविषे अनधिकारी बुद्धिहोजा-नी अथवा देशविषे राजआदिकांदा उपद्रव होनेते ॥ अथवा शि-ष्यकों उपदेशश्रवणका काल न मिलना ॥ अथवा गुरुकों उपदे-श करणेका काल न मिलना॥ तिस समग्रीदे अभावते जो विचा-रनूं नही प्राप्त होसक्ता सो पुरुष निर्गुणब्रह्मदी उपासना करे ।

शंका—निर्गुणब्रह्मदी उपासना नहि बनती ॥ जिसते निर्गु-ण ब्रह्म गुणांते रहित है।

उत्तर—उपासना नाम तौ चित्तवृत्तीआंदा नदीधारावत् प्रवाहाकारतादा है ॥ सो चित्तवृत्तीआंदी नदीधारावत् प्रवाहा-कारता जैसे सगुणब्रह्ममैं होती है ॥ तैसे निर्गुणब्रह्मविषेभी हो-इसक्ती है।

शंका—निर्गुणब्रह्मदी उपासना नहि वन सक्ती ॥ काहेते जो चित्तका विषे होता है ॥ उपासना उसकी होती है ॥ अर ब्रह्म तौ मनवाणीदा विषे नहि।

उत्तर—एह दोष तौ ज्ञानपक्षविषेभी समान है ॥ जिसते ज्ञान तिसीवस्तुका होता है जो मन वाणीकाविषे है ॥ अर ब्रह्म तौ मन वाणीकाविषे नहि ॥ तांते ब्रह्मका ज्ञानभी नहि होता।

शंका—ब्रह्मका ज्ञान तौ बनता है जिसते ब्रह्म मनवाणीका विषे नहि एह जाननेकों समर्थ होवीता है।

उत्तर—ब्रह्म मनवाणीकाविषै नहि ऐसे उपासना करणेकोंभी समर्थ होवीता है।

शंका—ब्रह्म जेकर उपासनाके योग्य होवेगा तौ तिसकों सगुणता प्राप्त होवेगी।

उत्तर—ब्रह्म जेकर जाननेके योग्य होवेगा तौ तिसकों सगुणता प्राप्त होवेगी।

शंका—जहत् अजहत् लक्षणादे अंगीकारकरणेते ब्रह्मकों ज्ञान करके ज्ञेयतादे होआंहोआंभी सगुणतादी प्राप्ति नहि होती।

उत्तर—लक्षणाकरके जो लक्ष्य है तिसकी उपासनाभी बनती है।

शंका—ब्रह्मकों उपासना योग्यतादा श्रुतिने निषेध करीता है॥ जो मनकरके मनन नहि होता॥ अर जिसकरके मन जानीता है तिसनूं ब्रह्म जान॥ अर जिसदी जीव उपासना कर्ते हैं सो ब्रह्म नहि॥ इस प्रकारके न उपनिषदकी श्रुति उपासना योग वस्तुको ब्रह्मरूपतादा निषेध कर्ती है॥ इसते ब्रह्मउपासनाके योग नही।

उत्तर—उपासनायोगकों ब्रह्मरूपतादा निषेध करीता है जैसे केनउपनिषदकी श्रुतिने॥ तैसे ज्ञानयोगकोंभी ब्रह्मरूपतादा निषेध करीता है केनउपनिषददी श्रुतिने॥ ज्ञानदा जो विषै है तिसते ब्रह्मभिन्न है अर अज्ञानदा जो विषै है तिसतेभी ब्रह्म भिन्न है।

शंका—ज्ञान अर अज्ञानदेविषेते जो भिन्न है ॥ सो ब्रह्म है ऐसे जेकर श्रुति कथन कर्ती है ॥ तौ तैसेही ब्रह्म जानने योग्य है तांते ब्रह्मज्ञान सिद्ध भया।

उत्तर—ऐसे ब्रह्मकों जानकरके उपासनाभी करणी वनती है।अर्थ एह ब्रह्मज्ञान अर अज्ञान अर उपासनादेविषेते भिन्न है॥ ऐसे जानकरके नदीदे प्रवाहकी निआंई ब्रह्माकार चित्तवृतिदा प्रवाह करणा इसका नाम उपासना है ॥ सो जैसे श्रुतिने कथन कीती है तैसे करसकीती है।

शंका—ज्ञानविषयता ब्रह्मकों वास्तव नहि अज्ञानकी निवृ-तिवासते ज्ञानवानाने कल्पकरके जिज्ञासीआंको कही है ।

उत्तर—उपासनाविषयताभी ब्रह्मकों वास्तव नहि ॥ चित्त-दी एकाग्रताद्वारा ज्ञानदी उत्पतिकरके अज्ञानदे नाशवासते ब्र-ह्मवेतिआंने कल्पकरके जिज्ञासीआंकों कही है

शंका—ज्ञानपक्षविषे वृत्तीकों ब्रह्माकारता बन सक्ती है॥अर उपासनापक्षविषे नहि वनती।

उत्तर—शब्दप्रभावते वृत्तिकों ब्रह्माकारता ज्ञान अर उपा-सना एना दुहांपक्षाविषे वनसक्ती है ॥ अर जेकर युक्तिसें रहित उपासनापक्षविषे उलाँभा तूं देएगा ॥ सो उलाँभा ज्ञानपक्षविषे भी समान है तिसउलाँभेका एह स्वरूप है की तेरी उपासनावि-षे भक्ति है॥ जिसते उपासनादी तूं ऐसी खिचकर्ता हैं ॥ दूसरे उलाँभेका स्वरूप एह की तेरा उपासनापिषे वैर है॥ जिसते तूं उपासनाका निषेध कर्ता हैं सो कहो ।

शंका—निर्गुणउपासनाविषे प्रमाण कोई नही इसते में निर्गुण उपासनादा निषेध कर्ताहां होर मेरा उपासनाकेसाथ वैर कोई नहि ।

उत्तर—निर्गुणउपासनाविषे प्रमाणदा अभाव नहि जिसते बहुतीयां श्रुतीआंविषे निर्गुणउपासना देखीती है ॥ नरसिंहतापनीके उतरखंडविषे देवतिआंने एह ब्रह्माजीके आगे प्रश्न कीता है ॥ हे भगवन्! जो सूक्ष्महै एह आत्मा ओंकारकरके जानते योग्य तिसदे उपदेशनूं करो ॥ तब ब्रह्माजीने अनेकप्रकारकरके निर्गुणब्रह्मदी उपासनाका उपदेश कीया ॥ अर प्रश्नउपनिषददे पंजवे प्रश्नविषे शैवनाममुनीश्वरने पिपलादगुरुके आगे प्रश्न कीता ॥ जो पुरुष मरणपर्यंत ओंकारदी उपासना कर्ता है तिसकरके किसफलनूं प्राप्तहोता है तब तिसके गुरु पिपलादमुनीश्वर कहिते भये हे सत्य काम! जो पुरुष ओंकारनूं सगुण ब्रह्मरूपजानके उपासना कर्ता है तिसकों सगुणब्रह्मकी प्राप्ति होती है ॥ अर जो ओंकारविषे निर्गुणब्रह्मकी उपासना कर्ता है सो निर्गुणब्रह्मको प्राप्त होता है॥ एह जो तिन्ना मात्रावाला ओंकार है तिसकरके परमपुरुष जो निर्गुण परमात्मा है तिसदे ध्याननूं कर्ता है ॥ सो पुरुष ब्रह्मलोकविषे प्राप्त होइकरके निर्गुणपरमात्मादे अनुभवनूं कर्ता है ॥ अर कठवल्लीउपनिषदविषे यमने नचिकेताके तांई कथन कीआ है ॥ संपूर्णवेद जिसवस्तुकों कथन कर्ते हैं सो वस्तु में तेरे तांई कथन करांगा ऐसा आरंभकरके पाछे एह कथन कीया ॥ ओंकाररूप अक्षर जो है ॥ सो ब्रह्म है ॥ ओंकारका आश्रय करणा

जिज्ञासीकों श्रेष्ठ है ॥ तात्पर्य एह ओंकारकों निर्गुणब्रह्मरूप जानके उपासनाकरणेते निर्गुणब्रह्मदा साक्षात्कार होता है ॥ अर मांडूक उपनिषदविषे ॐ एह अक्षर सर्वरूप है ॥ इतिआदि-वाक्यकरके अवस्था तिन्नासें रहित तुरीयारूप निर्गुणब्रह्मदी उ-पासना कथन कीती है ॥ अर तैतरीय उपनिषद अर मुंडक उप-निषद आदिकांविषे सर्वत्र निर्गुण उपासना कथन करी है।

प्रश्न—निर्गुण उपासना किसप्रकार करीती है।

उत्तर—निर्गुणउपासनादे करणेदा प्रकार पंचीकरणविषे क-थन कीता है।

शंका—निर्गुणउपासना ज्ञानका साधन है मोक्षका साधन नही।

उत्तर—होवो ज्ञानका साधन निर्गुण उपासना ॥ इसविषे कुछ हमारेकों अनिष्ट नही।

शंका—सगुणउपासनाही संपूर्ण पुरुषांने करीती है ॥ अर निर्गुनउपासना तां किसीने नही करीती ॥ तांते एह हम जानतें हैं जो निर्गुनउपासना है नही।

उत्तर—अनेक प्रमाणांकरके सिद्ध जो निर्गुनउपासना है ॥ तिसदा जेकरके मूर्ख नही अनुष्ठान कर्ते तौ भी उत्तम जिज्ञासी-आंने तिसदा त्याग नही करीतां ॥ तांते तिस निर्गुनउपासनादा निषेध नहीबनता ॥ जिसतें निर्गुनउपासनादा न करणा पुरुषदा अपराध है॥इसकरके निर्गुनउपासनादा अभावनही सिद्धहोता। जो प्रमाण सिद्धउपासना है तिसदा मूर्खांने जेकर अनुष्ठान नहि

करीता ॥ तौभी तिसका बुद्धिमानांने त्याग नहि करीता ऐसे स-गुण उपासना जो है बहुतकाल पिछे फलके देनेवालीआं तिन्ना-नूं त्यागकरके मूर्खपुरुष शताबी फलके देनेवाले वशीकारकरणे-वाले मंत्रांदा जपकर्ते हैं ॥ तौभी विवेकीआंने तिन्नाकों देखकर-के सगुणउपासनाका त्याग नहि करीता ॥ अर जैसे नेमदी है अपेक्षा जिन्नाविषे ॥ ऐसे जो वशीकारआदि मंत्र हैं तिन्नानूंभी त्यागकरके नेमदी अपेक्षा नहि ॥ जिसविषे ऐसे जो खेतीआदी व्यापार हैं तिन्नाविषे अतिमूर्ख प्रवृत होते हैं ॥ पर तिन्नामंत्रांदे अनुष्ठानदा सज्जनाने त्याग नहि करीता ॥ तैसे संसारदे सुखांदी कामनावालिआंने निर्गुणउपासनादा त्याग करीता है पर जि-ज्ञासीआंने निर्गुणउपासनादा त्याग नहि करीता ॥ मूर्खांदा नि-र्णय रहो ईहांही स्थित अब निर्गुणउपासना कथन कर्ते है तिस-कों श्रवण कर॥ निर्गुणउपासना जिसते संपूर्णउपनिषदांविषे ए-क है तिसते संपूर्ण उपनिषदांविषे कथन कीते जो हैं निर्गुण ब्र-ह्मदे गुण तिन्नागुणां संपूर्णानूं एकठिआंकरके एकस्थानविषे निर्गुणब्रह्मदी उपासना करणी सो गुण दोप्रकारके हैं ॥ एक वि-धिरूप एक निषेधरूप तिन्नाविचों जेरे विधिरूप गुण हैं तिन्नानूं एकस्थानविषे एकठिआं करणा ॥ तिन्ना संपूर्ण गुणांसहित ब्रह्म-दी उपासना करणी ॥ एह वार्ता व्यासजीने आनंदने आदिलेके ब्रह्मदे गुण हैं इस सूत्रविषे कथन कीती है ॥ विधिरूप गुण कौ-न हैं ऐसा पुछें तो श्रवण कर ॥ ब्रह्म आनंदरूप है अर ब्रह्म चै-तन्यरूप है अर आनंदरूप है ॥ अर ब्रह्म नित्य शुद्ध बुद्ध सत्य मुक्त निरंजन विभु एक आनंदरूप है अर सर्वते परे है अर आत्मा है एकरस इसते आदिलेकरके विधिरूप गुण हैं ॥ तात्पर्य

एह जिसउपनिषदविषे ब्रह्मकों आनंदरूप कथन कीआ है अर चैतन्यरूप नहि कथन कीया तिस उपनिषददे पडनेवाले जिज्ञासीने केवल आनंदरूप जानकरके ब्रह्मदी उपासना नहि करणी ॥ किंतु दूसरी उपनिषदविषे जो चैतन्यरूप कथन कीआ है तिस चैतन्यरूप गुणकों ग्रहण करके ॥ इसीतरां होरणां उपनिषदांविषे जेरे गुण कथन कीते हैं नित्य शुद्धबुद्धआदिरूप तिन्नाकोंभी ग्रहण करके सर्वगुणांवाले ब्रह्मदी उपासना करणी ॥ अर जेरे निषेधरूप गुण है तिस तिस उपनिषदविषे श्रवण कीते जैसे बृहदारण्यकविषे एह सुनिआ है ॥ ब्रह्म स्थूलनहि अणु नहि मधरा नहि लंबा नहि ॥ अर मुंडकविषे एह सुनिआ है ब्रह्म दृश नहि हथांकरके ग्रहणकरणे योग नहि ॥ अर कठवलीविषे एह सुनिआ है ब्रह्मशब्द नहि स्पर्श नहि रूप नहि रस नहि गंध नहि ॥ तिन्ना संपूर्ण गुणांनूं एक स्थानविषे एकठियाकरके ब्रह्मदी उपासना करणी तात्पर्य एह ॥ जितनिआं गुणादा जिस उपनिषदविषे निषेध कीता है तितनिआं गुणांते रहितहि ब्रह्मदी उपासना नहि करणी ॥ किंतु संपूर्ण उपनिषदांविषे जितनिआं गुणादा निषेध कीता है ॥ तिन्ना सबनागुणांसे रहित ब्रह्मदी उपासना करणी ॥ एह व्याासजीने कथन कीता है परमात्माविषे संपूर्ण निषेध गुणांनूं अकठिआंकरके उपासना करणी जिसते द्वैतप्रपंचदे निषेधनूंकरके ब्रह्मदा उपदेश सभना उपनिषदांविषे समान है ॥ अर शिष्यकों जनावने योग जो ब्रह्म है तिसदी सभना उपनिषदांविषे एकरूपताकरके विद्यमानता है इस सूत्र विषे।

शंका—निर्गुण ब्रह्मविद्याविषे गुणांदा एकठा करणा नहि

बनता गुणांदे एकठिआं कीतियां होआं बिषाकी निर्गुणरूपता नहि रहिंदी ।

उत्तर—एह शंका तां तैंने व्यासजीके आगे कीती चाहीए ॥ मेरे आगे न कीती चाहीये जिसते मैं व्यासजीके कथन कीते होएकों कथन कर्ता हां इतने कहिनेते सूक्ष्महासीकों कर्ता हो ॥ आशंका करणवालेकी मूर्खतानूं जनावता है सिद्धांती पूर्वपक्षी सूक्ष्महासीद्वारा मूर्खतानूं जनाआ जो है सिद्धांतीने तिसदे निवारणनूं कथन कर्ता हैं एन्ना उपासनाको निर्गुणरूपता बनती है ॥ जिसते एन्ना उपासनाविषे स्वर्णदी है दाडी जिसदी ॥ अर स्वर्णदे हैं केश जिसके ऐसी सूर्यआदिकांकी मूर्ति कथन नहि कीती ॥ तब सिद्धांती कथन कर्ता भया ॥ इस प्रकार एह उपासना जेकर निर्गुण है तो संतोषकर मत शंका कर।

शंका—आनंदआदिरूप गुणांका अर स्थूलतादे अभाव आदिगुणांदा उपास्यवस्तुदे अंदर प्रवेश नहि होता ॥ इसते आनंद आदिगुणायुक्त ब्रह्मदी उपासना नहि बनती।

उत्तर—आनंद आदिगुणांदा तत्वदे अंदर प्रवेशदे न होआं-होआंभी आनंद आदिगुण तत्वदे लखावणेवाले हैं ॥ तांते तिन्नागुणाकरके लखिआ जो ब्रह्मतत्त्व है तिसदी उपासना करणी योग्य है ॥ सो उपासना जिस प्रकार करणी योग्य है सो श्रवण कर ॥ आनंदआदिगुणांकरके अर स्थूलतादे अभाव आदिगुणां करके जो अखंड एकरस आत्मा जानिआ है सो अखंड एकरस आत्मा मैंहां ॥ ऐसे जिज्ञासी उपासना कर्ते हैं।

शंका—ऐसे होआंहोआं ज्ञान अर उपासनादा भेद कैसे है

उत्तर—उपासना कर्ताके अधीन होती है ॥ अर ज्ञान वस्तुदे अधीन होता है ॥ इसते उपासना अर ज्ञानदा भेद है ॥ होरभी उपासना अर ज्ञानके भेददे कारणानूं श्रवण कर आत्मतत्वदे विचारते ज्ञानदी उत्पत्ति होती है॥अर उत्पन्न होएहोए ज्ञाननूं बोध मत होवे एह है रूप जिसका ऐसी जो अनिच्छा सो दूर नहि करसक्ती ॥ अर ज्ञान आपनी उत्पतिमात्रते संसारदी सत्यतानूं नाश करदेता है ॥ अर ज्ञानदी उत्पतिमात्रकरके पुरुष कृतकृत्य होआहोआ निरतिशयसुखनूं प्राप्त होता है ॥ अर जीवन्मुक्तिनूं प्राप्त होकरके प्रारब्धकर्मदे नाशपर्यंत शरीरकों धारता है ॥ प्रारब्धकर्मके नाश होआंहोआं फेर शरीरकों नहि धारता ज्ञानवान् ॥ किंतु विदेहमुक्त होजाता है अर उपासना श्रद्धावान् पुरुषकों यथार्थ वक्ता गुरुदे उपदेशदे उपर विश्वासनूं करके विचारते विनाहि उत्पन्न होती है ॥ सो उपासनादा स्वरूप एह है ॥ विजातीय प्रत्ययांदा तिरस्कार करके सजातीय प्रत्ययादा प्रवाह करणा ॥ अर्थ एह उपास्य वस्तुदा सदा चिंतन करणा होर घटपटआदिक पदार्थांदा चिंतन न करणा ॥ कितनाकालपर्यंत उपास्यवस्तुके स्वरूपनूं चिंतन करणा ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ जितना काल पर्यंत उपास्यवस्तुदे स्वरूपदा अभिमान उपासना करणेवाले पुरुषकों न प्राप्त होवे तितना कालपर्यंत उपास्यवस्तुदे स्वरूपदा चिंतन करणा ॥ अर पिछेभी मरणपर्यंत तैसेही धारणा करणी॥ उपासना करणेवाले पुरुषकों उपास्यवस्तुके स्वरूपका अभिमान प्राप्त होता है॥ एह वार्ता छांदोग्य उ-

पनिषद्‌विषे कहा है सो कथा श्रवण कर ॥ एक ब्रह्मचारी संव-
र्गता गुणयुक्त प्राणदी उपासना कर्ता सो॥संवर्गदा अर्थ एह है ॥
सूर्य चंद्रमा अग्नि जल एन्हा चवानूं समष्टि प्राणग्रास करलेता
है ॥ अर सुषुप्तिकालविषे वाणी नेत्र श्रोत्रमन एन्हा चवानूं व्यष्टि-
प्राण ग्रास करलेता है ॥ तांते प्राणसंवर्ग है सो ब्रह्मचारी भिक्षा-
कों जाता भया ॥ अभिप्रतारी नाम राजाके आगे एह वाक्य क-
थन कर्ता भया ॥ अभिप्रतारीनाम राजा अर तिसका पुरोहित
दोनो भोजन करणे लगे से अर तिस ब्रह्मचारीकों तिन्नाने भि-
क्षा न दिती ॥ तब ब्रह्मचारी कहिता भया हेअभिप्रतारिन! हेका-
पेय! जो एक चवां महात्मानूं ग्रास करलेता है अर संपूर्ण भुवन-
की जो रक्षा कर्ता है तिसनूं मनुष नहि जानते ॥ बहुतप्रकारक-
रके बसते होएहोएनूं जिस देवासते एह अन्न है तिसनूं अन्न तु-
सांने नहि दिता ॥ इसमंत्रकरके ब्रह्मचारी आपनी संवर्गरूप-
तानूं प्रकट कर्ता भया जो चितविषे धारी होई सी अर एह जो पि-
छे कथन कीआसी मरणपर्यंत उपासनाकों धारण करे ॥ तिसवि-
षे कारणनूं श्रवण कर ॥ जिसकारणते उपासना उपासनाकर-
णवाले पुरुषदी इच्छाकरके करणेनूं अर न करणेनूं अर होर प्र-
कारकरके करणेनूं शक्य है ॥ तिसकारणते पुरुषदी इच्छादे अ-
धीन होनेते मरणपर्यंत उपासनानूं करे ॥ इस प्रकार सदा उपा-
सनादे कीतिआंहोआं की फल होता है ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥
सदा उपासनादे करणेते उपासनादी दृढता होती है तिसते जा-
ग्रतकी निआंई स्वप्न विषेभी उपासनाकी प्राप्ति होती है जैसे प्र-
मादसे रहित होके वेदके पढनेवाला पुरुष दृढवासनाकरके स्वप्न-
विषेभी वेदको पढता है ॥ अर जैसे सदा गायत्रीआदिकांदे जप-

करणेवाला पुरुष दृढवासनाकरके स्वप्नेविषेभी गायत्रीआदि-कदि जपनूं कर्ता है ॥ स्वप्नआदिकांविषे ध्यानदी प्राप्तिविषे कारण श्रवण कर ॥ उपासकपुरुष उपासनादा विरोधी चित्त-वृत्तीआंदे त्यागनूं करके निरंतर उपास्य वस्तुदी भावनाको कर्ता है ॥ तिसकारणते उपासनाकी भावना दृढ होजाती है ॥ तिसते स्वप्नविषेभी तिसकों उपासनाकी प्राप्ति होती है ।

शंका—प्रारब्धकर्मते विषयांदे अनुभवकरणेवाला उपासक जो पुरुष है तिसकी निरंतरताकरके उपासना सिद्ध नहि होती ।

उत्तर—प्रीतिदे अधिक होआंहोआं विषयाके अनुभव स-मेविषेभी उपासना दूर नहि होती ॥ जैसे दुराचारणी स्त्रीकी घरदे कंम कर्तिआंहोआंभी धारविच्चों चित्तदीवृत्ति दूर नहि होती।

शंका—दुराचारणीका यारदे चिंतन करणेविषे गृहदे कार्यां-दा अभाव हो जाएगा।

उत्तर—यारदे संगदे सुखनूं अनुभव करणेवाली स्त्रीदे घरदे कंमनिवृत्त नहि होजाते ॥ किंतु स्वभावक परे होते हैं पतिव्रता-स्त्री भर्ताकी सेवाविषे तत्पर जैसे घरदे कंमानूं कर्ती है बनायबना-यकरके सुंदर तैसे कार्य दुराचारणीसें नहि होते ॥ अर्थ एह जैसे रसोईके समे किसीचीजमैं लून अधिक पै जाता है किसीमैं थोरा पैजाता है अर किसीमैं जल अधिक परजाता है कोई चीज क-ची रहजाती है कोई सरजाती है ॥ ऐसे उपासनाविषे लगाहो-आ जो पुरुष है सो संसारसुखांविषे जैसा कैसा रहित है ॥ अर्थ एह जो संसारसुखविषे तिसदी प्रीत नहि रहिती ॥

इसते कोई संसारदा कंम सौंर जाता है कोई बिगरजाता है अ-
र घतानन्द तां संसारके व्यवहारांनूं इच्छी नहीं कर्ता है ॥
जिसते संसारदे व्यवहारांदाते ज्ञानदा विरोध नहि ॥ ज्ञान
क्या जनावता है संसार मिथ्या है ॥ अर आत्मा चेतन्यरूप है ॥
तांते ज्ञानदा संसारदे व्यवहारांसाथ विरोध नहि ॥ व्यवहार सं-
सारदी सत्यतानूं अर आत्मादी जडतानूं नहि चाहता ॥ किंतु
आपनिआ साधनानूं चाहता है तांते व्यवहारका तत्वज्ञानके-
साथ विरोध नहि व्यवहारके साधन कौन हैं ऐसा पुछें तां श्र-
वण कर ॥ मन इंद्रियां शरीर गृहक्षेत्रादि पदार्थ व्यवहारदा सा-
धन हैं तिन्नानूं तत्वज्ञानी नाश नहि कर्ता इसते ज्ञानीका व्यव-
हार यथावत् पूरा होता है ।

शंका—ज्ञानी यद्यपि विषयांको नाश नहि कर्ता पर चितदे
नाशनूं कर्ता है इसते ज्ञानीदा व्यवहार यथावत् नहि होता ।

उत्तर—जो चित्तदे नाशनूं कर्ता है सो जिज्ञासी है ज्ञानी
नहि ।

शंका—तत्वज्ञानीने चित्तदा नाश नहि करीता एह कहां तु-
सा देखआ है ।

उत्तर—घटदे तत्वजाननेवाले पुरुषने चित्तदा नाशरूप चि-
त्तदी एकाग्रतानूं नहि करीता एह असांने देखया हैं ।

शंका—घटस्थूल होनेते अति प्रकट है इसते तिसदे जानने-
विषे चित्तदी एकाग्रता नहि चाहीती अर ब्रह्मतां अतिसूक्ष्म है ॥
इसते तिसदे ज्ञानविषे चित्तदी एकाग्रता चाहीती है ।

उत्तर—ब्रह्मकी स्वप्रकाश आत्मरूपताकरके घटतेवी अतिप्रकटता है जिसते घटके जाननेविषे सूर्यनेत्र आदिक चाहीते हे ॥ सूर्यनेत्रआदिकांसें विना घट नहि दृष्ट आवता ॥ अर आत्मादेजाननेविषे किसीकी अपेक्षा नहि ॥ तांते आत्मज्ञानी चित्तदे निरोधनूं नहि कर्ता ॥ एकवारी वृत्तिदे उदय होनेकरके घट जेकर भासता है तो स्वप्रकाश आत्मा एकवारी वृत्तिदे उदय होनेकरके क्या घटकी नियांई प्रतीत नहि होता ॥ किंतु प्रतीत होताही है ।

शंका—ब्रह्मदी स्वप्रकाशतादे होआंहोआंभी ब्रह्माकार बुद्धिदी वृत्तिकों तत्वज्ञान होनेते अर बुद्धिदी वृत्तिनूं क्षणक्षणविषे नाशवाला होनेते वारंवार बुद्धिदी वृत्ति ब्रह्मविषे एकाग्र कितीं चाहीती है ।

उत्तर—एह तो शंका घटादिकां विषेभी तुल्य है ॥ जिसते घटाकार बुद्धिदी वृत्तिदा नाम घटज्ञान है सो बुद्धिकी वृत्ति क्षणक्षणविषे नाश होजाती है ॥ तांते घटदे जाननेवासते घटविषे बुद्धिदी वृत्ति एकाग्र कीती चाहीये सो तो बात अयुक्त है ॥ जिसते कोईभी पुरुष घटके जाननेवासते घटविषे बुद्धिदी वृत्तिनूं एकाग्र नहि कर्ता तैसे ब्रह्मदे ब्रह्मविषे बुद्धिदीवृत्तिनूं एकाग्र नहि कर्ता ।

शंका—घटादिकांदे ज्ञानकों क्षणिक होआंहोआंभी एकवारी निश्चय कीता है जिसघटदा तिसघटदा व्यवहार सदा करणेकों समर्थ होवीता है ॥ तिसकारणते घटविषे चित्तदी एकाग्रता कीती नही चाहीदी ।

उत्तर—यह तौ वार्ता आत्माविषेभी तुल्य है जैसे एकवारी देखिआ जो है घट तिसविषे चित्तदी एकाग्रतादे अभाव होआंहो-आंभी जद इच्छा होवे पुरुषदी तब तिसविषे जलदा स्थापन करणा अर तिसकों होर स्थानविषे लैजाना ॥ इसते आदिलैकरके पुरुष व्यवहारकरणेकों समर्थ होता है ॥ तैसे एकवारी आत्मादे निश्चय कितिआं होआं जद ज्ञानीदी इच्छा होती है ॥ तद उपदेश करणेनूं मनन करणेनूं ध्यान करणेनूं समर्थ होता है ॥ उपदेश आदिकांदे करणेविषे चित्तदी एकाग्रतादी लोर नहि ।

शंका—तत्ववेताभी उपासककी न्याई आत्मादे ध्याननूं जद कर्ता है तब जगतदे पदार्थांदे चिंतनसें रहित देखीता है ।

उत्तर—तत्ववेताकों जगतके पदार्थोंके चिंतनका अभाव-ध्यानकरके होता है ज्ञानकरके नहि होता ।

शंका—तत्ववेतानेभी मोक्षकी सिद्धिवासते ब्रह्मध्यान कीता चाहीता है ।

उत्तर—मोक्षकी सिद्धिवासते तत्ववेताकों ध्यान नहि कीना चाहीता ॥ जिसते ज्ञानसें मोक्षकी प्राप्ति होती है ध्यानसें नहि होती शास्त्रविषे ढंडोरारूप एह कथन है ज्ञानतेही विदेहकैवल्यकी प्राप्ति होती है ॥ अर ज्ञानकरकेही जीवन्मुक्तिकीप्राप्ति होती है आत्मानूं जानकरके मृत्युनूं उलंघ जाता है ज्ञानसें भिन्न होर कोई मार्ग नहि मोक्षदा ॥ स्वप्रकाश आत्मानूं जानकरके संपूर्ण-बंधनाते रहित होजाता है ॥ अर ध्यानतत्ववेताकी इच्छाहोवे तां करे न इच्छाहोवे तां न करे ।

शंका—तत्ववेतानूं ध्यानदी कर्तव्यता जेकर न मानोंगे तौ तत्ववेताकी सदा वहिर्मुखप्रवृत्ती होवेगी।

उत्तर—तत्ववेताकी वहीर्मुखप्रवृत्ती ज्ञानकों अथवा मोक्षकों नाश नही कर्ती इसते वहिर्मुख प्रवृत्ती होती है तौ होवे तिसकरके कुछ तत्ववेताकी हानि नही।

शंका—तत्ववेतादी जेकर वहिर्मुखप्रवृत्ती मानोंगे तौ अतिप्रसंग आवेगा।

उत्तर—तत्ववेताविषे प्रसंग नही कुछ कथन किता जांदा॥ तौ अतिप्रसंग तिसकों कैसे आवेगा।

शंका—प्रसंगनाम विधिनिषेध शास्त्रका है।

उत्तर—तौ विधिनिषेधशास्त्ररूप प्रसंग अज्ञानी उपर है॥ तत्ववेताके उपर नहि वर्ण अर आश्रम अर वय अर अवस्था एन्ना चवांका अभिमान जिसको है तिसीके उपर विधिनिषेय शास्त्र है जैसे मालकेउपर जगात होती है ॥ अर तत्ववेताकों वर्णआश्रम आदिकांदा अभिमान है नहि ॥ इसते तिसपर विधिनिषेधशास्त्र नहि॥जैसे मालते रहित जो पुरुष है। तिसके उपर जगात नहि।

शंका—जो देहधारी है तिसकों वर्णआश्रमका अभिमान होता है॥ तत्ववेताभी देहधारी है तिसते तिसकोंभी वर्णआश्रमका अभिमान है।

उत्तर—तत्वतेताको वर्णआश्रम आदिकांदा अभिमान न-

हि ॥ जिसतें तत्ववेत्ताका एह निश्चय है ॥ वर्णआश्रमआदिक देहविषे होते हैं मायाकरके कल्पित ॥ अर चैतन्यरूप आत्मा जो मैं हां इसविषे वर्णआश्रमआदिक कोई नहि ।

शंका—ब्रह्मवेत्तादा निश्चय रहो परंतु शास्त्रतां तिसकों कर्तव्य कथन कर्ता है ।

उत्तर—शास्त्रभी तत्ववेत्ताकों कर्तव्यदे अभावनूं कहिता है सो श्रवण कर ॥ हृदयकरके त्याग दितीआं है संपूर्ण आस्था जिसने ॥ अर्थ एह अहंता ममता राग द्वेष ईर्षा दंभसें आदिलेके जगतनूं मिथ्या जानके त्याग दिते हैं तिसने अर संशयविपर्यय-सें रहित दृढपरोक्षज्ञान है जिसनूं ऐसा जो पुरुष है सो समाधि अर कर्म एन्नानूं करो भावें न करो सो पुरुष मुक्तरूप है ॥ और भी शास्त्र श्रवण कर ॥ कर्मांदे त्यागसाथ अर कर्मांसाथ अर समाधिसाथ अर जपसाथ तिसपुरुषदा प्रयोजन कुछ नहि ॥ जिसदा मन वासनासें रहित है ।

शंका—ज्ञानवान्कों भी वासनाके दूर करणेवासते ध्यान कीता चाहीता है ।

उत्तर—दृढ अपरोक्षज्ञानवान्के मनविषे वासना नहि रहितीआं ॥ जिसते ज्ञानवान्ने एह भलीप्रकार निर्णय करके संशय विपर्ययसे रहित जानिआ है ॥ आत्मा असंग है अर आत्माते भिन्न संपूर्ण दृश्यवाजीगरदीखेडवांगु मिथ्या है ॥ होवे ऐसे प्रसंगविषे क्या आया ऐसा पुछेंतां श्रवण कर ॥ एह प्रसंगविषे आ आ तत्ववेत्ताकों प्रसंग है नहि जिसतें इसतें तत्ववेत्ताविषे अ-

तिप्रसंग कैसे होवे ॥ किसकों अतिप्रसंग होता है ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ जिसकों प्रसंग होता है तिसीविषे अतिप्रसंगदी शंका बनती है ॥ जैसे विधिनिषेधते रहित होनेते बालककों अतिप्रसंग नहि होता ॥ तैसे तत्ववेताकोंभी विधिनिषेधते रहित होनेते अतिप्रसंग नहि होता ।

शंका—बालककों विधिनिषेधते रहित होनेविषे कारण अज्ञान है ॥ अर ज्ञानवान्का तां अज्ञान नष्ट होगआ है ॥ तांते तिसकों विधिनिषेधका अधिकार है ।

उत्तर—ज्ञानवान्कों अज्ञानसें रहित होआंहोआंभी संपूर्ण जानने योग्य वस्तु तिसने जानलई है तिसते तिसकों विधिनिषेधशास्त्रका अधिकार नहि ॥ किसकों विधिनिषेधशास्त्रका अधिकार नहि अर किसकों है ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥जेरापुरुष कुछ जानता है कुछ नहि जानता तिसीकों विधिनिषेधशास्त्रका अधिकार है बालककों अर ज्ञानीकों विधिनिषेधशास्त्रका अधिकार नहि ।

शंका—जिसकों वरशापदे देनेदी समर्थहै सो ज्ञानी है व्यास आदिकांकी नियांई अर जिसकों वरशाप देनेकी समर्थ नहि सो ज्ञानी नहि ।

उत्तर—वरशापदेनेकी समर्थ ज्ञानदा फल नहि ॥ किंतु तपदा फल है ।

शंका—व्यासआदिक ज्ञानीआंविषे वरशापदा समर्थ देखीता है ॥ इसते एह कैसे कहितेहो वरशाप ज्ञानदा फल नहि ।

उत्तर—व्यासआदिकोंविषे वरशापदा समर्थज्ञानदा फल नहि ॥ किंतु तपदा फल है ।

शंका—तपसें रहितकों तो ज्ञान नहि होता जिसतें श्रुति कहिती है ॥ तपकरके ब्रह्मदे जाननेदी इच्छाकर ।

उत्तर—जिस तपकरके ज्ञानदी प्राप्ति होती है सो तप भिन्न है ॥ अर वरशापदा कारण तप भिन्न है ।

शंका—जेकर ज्ञानदे कारण तपते वरशापदा कारण तप भिन्न है तो व्यासआदिकोंविषे वरशापका समर्थ अर ज्ञान दोनो किउं देखीते हैं ।

उत्तर—दोनो प्रकारका तप व्यासआदिकोंने कीआ है ॥ इसतें व्यासआदिकोंविषे ज्ञानभी देखीता है ॥ अर वरशापका समर्थभी देखीता है अर जिसपुरुषने एकतप कीता है तिसकों एकफलदी प्राप्ति होती है ॥ अर्थ एह जिसने वरशापदे कारण तपनूं कीता है तिसकों वरशापदी समर्थ प्राप्त होती है ज्ञान नहि होता ॥ अर जिसने ज्ञानदे कारण तपनूं कीता है जिसकों ज्ञानदी प्राप्ति होती है ॥ अर वरशापका समर्थ नहि होता ।

शंका—जो वरशापदे समर्थसें रहित है तिसदे उपर शास्त्रदी विधिनिषेधदे अभाव होआंहोआंभी वरशापदे समर्थ वालिआं संन्यासीआं करके तिसदी निंदा होवेगी ।

उत्तर—वरशापदी समर्थदे प्राप्त होआंहोआंभी निंदा दूर नहि होती जिसतें वरशापदी समर्थ वालिआं संन्यासीआंदीभी निरंतर विषे लंपटाने निंदा करीती है ।

शंका—वरशापदी समर्थ वालियां संन्यासीआंने भोगीऊं-करके आपनी निंदादे निर्वाणवासते अन्नवस्त्रआदि सुंदरभोग भोगे चाहीए।

उत्तर संन्यासीआंने विषयिआंदी प्रसन्नतावासते विषयां-नूं भोगिआ चाहीए॥ ऐसा कथन करणेवाला जो तूं हैं तिस ते-री बुद्धिकी महिमा कुछ नहि कही जाती॥ जिसते तेरी बुद्धि सूक्ष्म है अर जेरे संन्यासी विषयिआंदी प्रसन्नतावासते सुंदरवस्त्रआदि-क भोगांनूं भोक्ते हैं तिनके संन्यासकी महिमा नहि कही जांदी॥ जिसते तिन्नादा संन्यास वैराग्यदे भारकरके पृथिवीविषे बहुत धसता जाता है॥ जैसे पारेदी भरीहोई गडीदे पैए पृथिवीविषे धसते जाते हैं।

शंका—विषेलंपट पामरपुरुषांने शाप अर अनुग्रहविषेसम-र्थ वर्णआश्रमदे धर्मविषे तत्पर उत्तम संन्यासीआंदी निंदादे कीतिआंहोआं तिन्नादी कुछ हानि नहि होती।

उत्तर—तैसे देहअभिमानी वर्णाश्रमदे दास संन्यासीआंक-रके कीती होई जो तत्ववेताकी निंदा है॥ तिसकरके तत्ववेतादी कुछहानि नहि होती॥ यह प्रसंगसें प्राप्त होई जो वार्तासी सो ईहांही रहे अव प्रसंगनूं श्रवण कर॥ जिसकारणते तत्ववेता व्यवहारके साधन मनइंद्रियांदे नाशनूं नहि कर्ता तिसकारणते राजपालन आदिरूप जगत्व्यवहार भलीप्रकार करणेनूं समर्थ होता है।

शंका—तत्ववेतादी राजपालनआदि व्यवहारविषे इच्छाही

नहि होती ॥ जिसने तत्ववेत्ताने जगतको मिथ्या जानिआ है ॥ जैसे मृग तृष्णाकी नदीनूं मिथ्या जानिआं होआं तिसविषे स्नानदी इच्छा नहि होती ।

उत्तर—जो मत होवो ज्ञानवानको राजआदि व्यवहारविषे इच्छा जैसा तिसदा प्रारब्धकर्म है तैसे वनो ध्यान कर्ताहोआ भावें व्यवहार कर्ताहोआ अर उपासक पुरुषतो निरंतर ध्यान कर्ता हूआहूआही स्थित होवे जिसकारणते उपासकदी ब्रह्मरूपता ध्यानने कीती है वास्तव तिसदी ब्रह्मरूपता ज्ञानने प्रकट नहि कीती इसकारणते उपासकने सदा ध्यान कीता चाहीता है जैसे आपनेविषे ध्यानकरके कीतीजो विष्णुरूपता है सो वास्तव नहि।

शंका—ध्यानकरके कीती होई जो विष्णूरूपता है सो वास्तव किउँ नहि ।

उत्तर—ध्यानकरके कीती होई विष्णुरूपतादा ध्यानदे अभाव होआंहोआं अभाव होजाता है ॥ जैसे किसे पुरुषने वाणीविषे कामधेनु गौका ध्यान कीता सो वाणीदी कामधेनु रूपता तितनाकाल रहिती है जितनाकाल ध्यान है ध्यानके नाश होआंहोआं वाणीदी कामधेनुरूपता नाश होजाती है ॥ अर ज्ञानने प्रकट कीती जो ब्रह्मरूपता है सो वास्तव है ॥ तिसका ज्ञानके नाश होनेते नाश नहि होता ॥ जैसे दीपकने दिखलाआ-जो घरविषे पदार्थ तिसका दीपकदे बुझियाहोआं अभाव नहि होता ॥ तिसकारणते ब्रह्मतत्व नित्य है॥ इसी कारणते ज्ञान ब्रह्मतत्वनूं उत्पन्न नहि कर्ता ॥ प्रथम वियमान जीवदी ब्रह्मरूपतानूं जनावंदेता है ॥ एह तात्पर्य है ब्रह्मतत्व जेकर ज्ञानने उत्पन्न करीए

तौ ज्ञानदे नाश होआंहोआं ब्रह्मतत्वदा नाश होजाए जैसे तंतूआने उत्पन्न कीता जो वस्त्रहै तिसवस्त्रका तंतूआंदे नाश होआंहोआं नाश होजाता है ॥ पर ब्रह्मतत्वका तां नाश नहि होता ॥इसकारणते ब्रह्मतत्व ज्ञानने उत्पन्न नहि करीता॥ज्ञान ब्रह्मतत्वदे जनावनेवाला है ॥ जैसे शीशा मुखके जनावनेवाला है ॥ तांते ज्ञानदे अभावकरके ब्रह्मतत्वदा अभाव नहि होता ॥ जैसे शीशेदे अभावकरके मुखदा अभाव नहि होता ।

शंका—जैसे ज्ञानीदी वास्तव ब्रह्मरूपता है तैसे उपासकदीभी वास्तव ब्रह्मरूपता है ।

उत्तर—पामरांदी अर सर्पआदिकांदीभी वास्तवी ब्रह्मरूपता है ॥ तांते अतिथोरी शंका तैने कीती है ।

शंका—पामरआदिकांदी वास्तव विद्यमान ब्रह्मरूपता है ॥ पर तिन्नाको आपनी ब्रह्मरूपतादा ज्ञान नहि ॥ तिसते तिन्नाका मोक्ष नहि होता ।

उत्तर—तैसे उपासकांदी ब्रह्मरूपता विद्यमान है ॥ पर उपासकांनू आपनी ब्रह्मरूपतादा ज्ञान है नहि इसते उपासकांदा मोक्ष नहि होता ।

शंका—जेकर उपासनासें मोक्ष नहि होता तौ शास्त्रउपासना करणी किउँ कहिता है ।

उत्तर—होरणांकायांते उपासनादा करणा श्रेष्ठ है ॥ इसवासते शास्त्रउपासना करणी कहिता है ॥ जैसे भुखेमरणेते भंगखाना श्रेष्ठ है ॥ इसते वुद्धिमान् निर्धनकों भंगखाना कहिते हैं ॥ पर

गतकोंभीम अंगम्बाना नहि करता ॥ तैसे ध्यानभी ज्ञानदीगीम नहीं करता पामयंदे व्यवहारते कर्मादा कारण श्रेष्ठ है ॥ अर कर्मांदे करणेते सगुणब्रह्मदी उपासना श्रेष्ठ है अर सगुणब्रह्मदी उपासनाते निर्गुणब्रह्मदी उपासना श्रेष्ठ है ॥ जितनीजितनी ज्ञानदी निकटता अधिक है तितनीतितनी श्रेष्ठता अधिक है ॥ अर निर्गुणउपासना होलीहोली परिपक होईहोई ब्रह्मज्ञान जैसी होजाती है ॥ जैसे संवादी भ्रम मणिप्रभाविषे मणिरूप मणिदी प्राप्ति रूप फलकालविषे यथार्थ ज्ञान जैसा होजाता है तैसे निर्गुणउपासनाभी अति दृढ होईहोई मुक्तिरूप फलकालविषे ब्रह्मविद्या जैसी होजाती है ।

शंका—संवादीभ्रम आप तो यथार्थ ज्ञानरूप नहि होता ॥ किंतु संवादी भ्रमकरके प्रवृत्त होएपुरुषदे नेत्रांदा मणिनालसंबंध होता है ॥ तिसते यथार्थ ज्ञानदी उत्पत्ति होती है ।

उत्तर—तैसे निर्गुणउपासनाभी निदीध्यासनरूप होईहोई महावाक्यजन्यअपरोक्षज्ञानविषे कारण होजावेगी ।

शंका—जेकर निर्गुणउपासना चित्तदी एकाग्रताद्वारा निदिध्यासनरूपतानूं प्राप्त होईहोई अपरोक्षज्ञानविषे कारण होवेगी तो मूर्तिध्यान अर मंत्रजपआदिकांकोभी चित्तदी एकाग्रताद्वारा अपरोक्षज्ञानविषे कारणता होई चाहीए ।

उत्तर—मूर्तिध्यान अर मंत्रजपआदिकांकोभी चित्तदी एकाग्रता द्वारा अपरोक्षज्ञानविषे कारण हम मानते है ॥ तांते यह शंका हमारेको अनिष्ट नहि ।

शंका—जेकर मूर्तिध्यानआदिकांकोंभी चितदी एकाग्रता-द्वारा अपरोक्षज्ञानविपेकारणता है तौ निर्गुणउपासनाविषे अधिकता कुछ भई।

उत्तर—यद्यपि चित्तदी एकाग्रताद्वारा मूर्तिध्यानआदिकां-कों अपरोक्षज्ञानाविषे कारणता है ॥ पर तथापि निर्गुणउपासनाविषे ब्रह्मज्ञानदी निकटता अधिक है॥तांते निर्गुणउपासना स्त्रेष्ठ हैसो निकटतादे प्रकारनूं श्रवण कर॥निर्गुणउपासना जद दृढ होती है तदसविकल्पसमाधि होती है तिस सविकल्प समाधि-ते निरोध है नाम जिसदा ऐसी जो निर्विकल्पसमाधि सो विना-ही यत्नते प्राप्त होती है जिसने पतंजलिमुनीश्वरने योगशास्त्रविषे ऐसा कथन कीआ है सविकल्पसमाधिविषे जो ब्रह्माकार वृत्ति है तिसवृत्तिके निरोध होआंहोआं सर्ववृत्तीयांदे निरोध होनेते निर्बीज समाधि होती है॥नि र्जिदा अर्थ निर्विकल्प होवो इसप्रकार निर्विकल्प समाधिदा लाभ तिसते किआभया ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥निर्विकल्पसमाधिदे लाभ होआंहोआं पुरुषदे अंतर असंगवस्तुशेप रहिती है॥असंगवस्तुदे शेष रहिआंहोआं किआभया ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥असंगवस्तुदे वारंवार चिंतन कीतिआं होआं तत्वमसिआदि महावाक्यते मैं ब्रह्महां ऐसा तत्त्वज्ञान उदय होता है ॥ तिसतत्त्वज्ञानदे स्वरूपनूं श्रवण कर॥आत्मादी निर्विकारता असंगता नित्यता स्वप्रकाशता एकता पूर्णता शास्त्रकरके कथन कीती होई शीघ्रबुद्धिविषे दृढ होजाती है संशयसे रहित ।

शंका—निर्विकल्प समाधिसें अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान उत्पन्न होता है इसविषे कि आप्रमाण है।

उत्तर—अमृतबिंदुआदिक उपनिषदांदीआं श्रुतीयां प्रमाण हैं॥ निर्विकल्पसमाधिकरके अपरोक्षज्ञानदी प्राप्तिदेवासते अमृतबिंदुआदिक उपनिषदांविषे योगअभ्यास कथन कीता है॥ इसप्रकार निर्गुण उपासनाकों अपरोक्षज्ञानदी निकटतादे होआं-होआं निर्विकल्पसमाधिदे लाभद्वारा अर पुण्यदी उत्पत्तिद्वारा निर्गुणउपासनाकों ज्ञानदा कारण होनेते निर्गुणउपासना सगुण उपासनाआदिकांते श्रेष्ठ है इसप्रकार निर्गुणउपासनाकों अपरोक्षज्ञानदी कारणतादे सिद्ध होआंहोआं निर्गुणउपासनानूं त्यागकरके तीर्थयात्रा अर जपादिकांदे करणेवाले पुरुषांकों व्यर्थश्रमदी प्राप्ति होता है जैसे कोई पुरुष हथ विच्चों पक्वदे पेडेनूं त्यागकरके सुकेहथनूं चटे,तिसकों व्यर्थ श्रमदी प्राप्ति होती है

शंका—आत्मतत्वदे विचारनूं त्यागकरके निर्गुणउपासनादे करणेवालिआं पुरुषांकोंभी इसी दृष्टांतदी प्राप्ति होती है।

उत्तर—तेरा कहणा यथार्थ है जिसकारणते कथन कीते दृष्टांतकी प्राप्ती होती है तिसकारणते विचारदी असमर्थतादे होआंहोआं उपासना करणे योग्य है अतिव्याकुल चित्तवालियां पुरुषांकों विचारते ब्रह्मसाक्षात्कार नहि होता जिसकारणते चित्तदी व्याकुलतादे नाशकरणेवाली उपासनाकरणे योग्यहै॥ उपासनाकरके बुद्धिदी व्याकुलता नाश होजाती है तिसते तिनाकों उपासना मुख्य है॥ अर चित्तदी व्याकुलताते जो रहित

हैं ॥ अर अज्ञानमात्रकरके आछादिआ होआं है स्वरूप जिनका ओन्नाकों सांख्य है नाम जिसदा ऐसा जो विचार है ॥ सो मुख्य है जिसते विचार शीघ्र आत्मसाक्षात्कारदे करावणेवाला है निर्गुणब्रह्मदी उपासना अर विचार एन्ना दोनोको तत्वज्ञानद्वारा मोक्षसाधनताविषे गीतादा वाक्यभी प्रमाण है पंचमअध्यायविषे भगवान्ने अर्जुनकेतांई कथनकीता है जिस मोक्षरूपस्थाननूं विचारवालिआंने प्राप्त होवीता है तिसी मोक्षरूपस्थाननूं निर्गुणउपासनावालिआंनेभी प्राप्तहोवीता है तांते विचारका अर निर्गुणउपासनाका फल एक है ऐसे जो जानता है सोई शास्त्रदे अर्थनूं यथार्थ जानता है श्रुतिभी इस-अर्थविषे प्रमाण है मोक्षदा कारण ज्ञान है सो विचारते उत्पन्न होता है अर निर्गुणउपासनाते उत्पन्न होता है ऐसे श्रुति कथन कर्ती है।

शंका—सांख्य है नाम तिसका ऐसा जो है विचार अर योग है नाम जिसका ऐसी जो है निर्गुणउपासना तिन्ना दोनोकों तत्वज्ञानदी कारणतादे अंगीकार कीतिआंहोआं सांख्यशास्त्र अर योगशास्त्रविषे कथन कीए जो तत्व हैं तिन्नाकाभी अंगीकार कीता चाहीए।

उत्तर—श्रुतिसें विरुद्ध जो सांख्यशास्त्रविषे अर योगशास्त्रविषे कथन कीआ है सो श्रुतिकरके बाधकों प्राप्त होता है अर्थ एह सो मिथ्या कथन है।

शंका—उपासनादे करणेवालेदा तत्वज्ञानदी प्राप्तिसें प्रथम शरीर छुटगिआंहोआं मोक्ष न होवेगा।

उत्तर—उपासनादे कर्तयां होआंसी जिसकों इसजन्मविषे ज्ञान प्राप्त नहि भया ॥ तिसपुरुषकों दूसरेजन्मविषे मनुष्यशरीरनूं धारकरके अथवि मरणकालविषे अथवि ब्रह्मलोकविषे ज्ञान होवेगा ॥ अर ज्ञानसों मोक्ष होवेगा मरणकालविषे ज्ञानते मोक्षकी प्राप्तिविषे गीता वचन प्रमाण है अंतकालविषे जिसजिसवस्तुनूं चिंतनकर्ता हूआ जीवशरीरनूं त्यागता है ॥ तिसीतिसीवस्तुनूं प्राप्त होता है ॥ अर श्रुतिभी कहिती है जिसवस्तुविषे इसजीवका चित्त है तिसचित्तकरके सहित एह जीवप्राणांकों प्राप्त होता है अर प्राण जठरअग्निकरके संयुक्त मनकरके सहित जिसवस्तुदा इसने संकल्प कीतासी तिसवस्तुनूं प्राप्त करवायदेता है जीवनूं ।

शंका—कथन कीते जो हैं तुसां श्रुति स्मृतिदे वाक्य तिन्नाकरके एह प्रतीत होता है अंतकालविषे जैसा जिसजीवका संकल्प होता है तैसा तिसकों आगे जन्म होता है॥ अर एह तो नहि प्रतीत होता ॥ जो अंतकालविषे ज्ञानते मोक्ष होता है ।

उत्तर—श्रुतिस्मृतिदे अक्षरांते एही प्रतीत होता है ॥ जो तूं कहिता है ।

शंका—जेकर श्रुतिस्मृतिदा अर्थ एही है जो मैं कहिता हां॥ तो मरणकालविषे ज्ञानते मोक्ष होता है ॥ इस अर्थविषे तिस श्रुतिस्मृतिदे वाक्यनूं तुसी प्रमाण कैसे कहितेहो ।

उत्तर—मरणकालविषे अंतदे संकल्पते आगे जन्म होता है॥ इस अर्थदा निश्चय होआंहोआं जैसे सगुणब्रह्मदी उपासना क-

रणेवालेकों मरणकालविषे सगुणब्रह्मदा संकल्प होता है ॥ प्रथमदे अभ्यासते तैसे निर्गुणब्रह्मदी उपासना करणेवालेकोंभी निर्गुणब्रह्मका संकल्प होता है तिससंकल्पते तिसकों निर्गुणब्रह्मकी प्राप्ति होती है ।

शंका—होवो निर्गुणउपासककों निर्गुणब्रह्मकी प्राप्ति निर्गुणविषे संकल्पदी दृढताते पर मोक्षदी प्राप्ति तौ नहि होती ।

उत्तर—निर्गुणब्रह्मदी प्राप्ति अर मोक्ष एन्नादा नाममात्रते भेद है ॥ अर्थ ते भेद नहि जैसे घट अर कलश एन्ना दोनोंका नाममात्रसों भेद है ॥ अर्थतेभेद नहि ॥ अर्थ एक ही है स्वरूपविषे स्थितिका नाम मोक्ष है ऐसे शास्त्रविषे कथन कीया है ॥ जैसे संवादीभ्रम नाममात्रकरके भ्रम कहीता है ॥ वास्तवसें सो तत्वज्ञान है ।

शंका—निर्गुणउपासना मानसक्रियारूप है ॥ तांते तिसकों मोक्षकारणता अयुक्त है ॥ जिसते शास्त्र कहिता है ज्ञानते मोक्ष है क्रियाते नहि ।

उत्तर—मानस क्रियारूप निर्गुणउपासनाते ज्ञानदी उत्पति होती है ॥ ज्ञानकरके मूलाविद्यादा नाश होता है मूलाविद्याके नाशका नाम मोक्ष है ॥ जैसे अविमुक्तरूप सगुणब्रह्मदी उपासनाते तार्कब्रह्मदा ज्ञान होता है ॥ उपासनारूप मानसक्रियाज्ञानदा कारण है ।

शंका—निर्गुणउपासनादा मोक्षफलहै इसविषे की प्रमाणहै।

उत्तर—नरसिंहतापनी उपनिषदादीआं श्रुतीयां इसविषे प्रमाण है ॥ जो पुरुष निर्गुणब्रह्मनूं आपनास्वरूप जानता है तिसपुरुषदे मनविषे कामना उत्पन्न नहि होतीआं। अर प्रथम विद्यमान जो कामना है सो नष्ट होजातीआं है जिसते कामना योग्य अनात्मपदार्थ मिथ्या भासते हैं इसतें तिसकों आप्तकाम कहीता है जैसे जिसकों सिप्पीदे रूप्पेदा मिथ्याज्ञान भया है॥सो पुरुष उलासकरके कहिता है ॥ मैनूं रूप्पाप्राप्त होगिया है तिसका तात्पर्य यह होता है जिसवस्तुकी प्राप्ति होती है तिसवासते फर यत्न नहीं करीता तैसे सिप्पीदे रूप्पेवासतेभी मेरेकों यत्न करणा नहि रिहा ॥ इसते सिप्पीदारूप्पा मेरेकों प्राप्त होगिआ है तैसे निर्गुणब्रह्मकों आत्मरूप जाननेवाले पुरुषकाभी अनात्मपदार्थांदी प्राप्तिवासते यत्न नहि रहिता ॥ इसते कहीता है तिसकों संपूर्णकामना करणे योग्य पदार्थ प्राप्त होगये हैं ॥ इसते तिसका नाम आप्तकाम है ॥ अर आत्माविषेही है काम जिसका सो कहीता है आत्मकाम ॥ अर्थ यह जो सदा आत्मविषे है निष्ठा जिसकी तिसपुरुषदे प्राण मरणसमेविषे शरीरते बाहर नहि निकसते ॥ इसीशरीरविषे लीन होजाते हैं जैसे अतितते लोहे उते जलदी बूंद पाई होई तिसके विचही लीन होजाती है सो पुरुष प्रथम निर्गुणब्रह्माकारवृत्तिकरके निर्गुणब्रह्मरूप हूआहूआ निर्गुणब्रह्मनूं प्राप्त होता है ॥ अर शरीरइंद्रियां प्राणादे अभिमानसें रहित अर अज्ञानसे रहित सच्चिदानंदमात्ररूप हूआहूआ सो पुरुष स्वप्रकाश ब्रह्मरूप होजाताहै। चैतन्यरूप एह ओंकार है॥अर चैतन्यरूप यह संपूर्ण जगत् है ॥ तिसते जगत् परमेश्वररूप है सो परमेश्वर परब्रह्म एक है ॥

अमृत है अभय है निश्चयकरके ब्रह्म जो ब्रह्मनूं आत्मरूप जानता है सो अभयब्रह्मरूप होता है॥ एह अर्थ होरणा उपनिषदांविषेभी प्रसिद्ध है ॥ ब्रह्माजी कहिते हैं हे देवति ओ एह रहस्य मैं तुसाडे ताई कथन कीता है ॥ इसते आदिलेकरके जो वाक्य हैं तिन्नाकरके नरसिंहतापनी उपनिषदविषे निर्गुणउपासनादा मोक्ष फल श्रवण करीता है।

शंका—जेकर निर्गुणउपासनाकरकेभी मोक्ष होवेगा ॥ तौ मोक्षकेवासते ज्ञानसें भिन्न होर कोईमार्ग नहि॥ इसश्रुतिदा विरोध प्राप्त होवेगा।

उत्तर—निर्गुणउपासना ब्रह्मज्ञाननूं उत्पन्न करके मोक्ष कर्ती है एह हम कथन कर्ते हैं इसते श्रुतिविरोध नहि॥निर्गुणउपसनाते मोक्ष नरसिंहतापनी उपनिषदविषे कथन कीती है निःकाम पुरुषकों ॥ अर सकामपुरुषकों ब्रह्मलोकदी प्राप्ति प्रश्न उपनिषदविषे कथन कीती है ॥ सो प्रश्न उपनिषदका वाक्य श्रवण कर॥ जो पुरुष तिन्नामात्रवाले ओंकाररूप अक्षरकरके निर्गुण परमात्मादा ध्यान कर्ता है॥ सो पुरुष प्रथम तेजो रूप सूर्य्यनूं प्राप्त होता है सूर्य्यनूं प्राप्त होकरके संपूर्ण पापानूं त्याग देता है जैसे सर्प कुंजनूं त्याग देता है॥ तिसपापासें रहित पुरुषनूं सामवेद अभिमानी देवतीआंने ब्रह्मलोकविषे लैजाइता है ॥ सो ब्रह्मलोकविषे प्राप्त होआहोआ निर्गुणब्रह्मदा उपासक पुरुष समष्टिलिंगशरीरांदे अभिमानी हरण्यगर्भते परे जो निर्गुणब्रह्म है ॥ सर्व शरीरांविषे समस्थित अज्ञानते परे निर्गुण परमात्मा तिसदे अनुभवको कर्ता है इसवाक्यकरके सकाम निर्गुणब्रह्मदी उपा-

सना करणेवाले पुरुषकों ब्रह्मलोककी प्राप्ति श्रवण करीती है ।

शंका—प्रश्न उपनिषद्‌विषे सकामको ब्रह्मलोककी प्राप्ति श्रवण करीती है ॥ मोक्ष तौ तिसका नहि श्रवण करीता ।

उत्तर—ब्रह्मलोकविषे तिसको ब्रह्मसाक्षात्कार श्रवण करीता है ॥ ब्रह्मसाक्षात्कारतें मोक्षकी प्राप्ति अर्थ सिद्ध है ॥ अर व्यासदेवजीनेभी एह कथन कीआ है सूत्रविषे अहंग्रह उपासनावाले जो पुरुष हैं निर्गुणब्रह्म मैंहां ऐसी जो उपासना है सो अहंग्रह उपासना है ॥ तिन्नापुरुषांकों ब्रह्मलोकतें आनकरके अमानवपुरुष ब्रह्मलोकविषे लेजाता है ॥ अर प्रतीकउपासकांनूं नहि लेजाता ॥ जिसतें अहंग्रह उपासनावालियांदा ब्रह्मलोकविषे संकल्प दृढ होजाता है ॥ जैसा जिसदा संकल्प है तैसा तिसको फलप्राप्त होता है तांतें ब्रह्मलोकदी कामनावाला जो निर्गुणब्रह्मदा उपासक है तिसको ब्रह्मलोकदी प्राप्ति रूप फल होता है ।

शंका—जेकर सकामनिर्गुण उपासनादे करणेवालेकों ब्रह्मलोकदीही प्राप्ति होती है ॥ तौ तिसको तत्वज्ञान किसतें प्राप्त होता है ।

उत्तर—निर्गुणउपासनाके समर्थतें तिसकोब्रह्मलोकविषे तत्वज्ञानकी प्राप्ति होती है जिसतें शास्त्रविषे एह कथन कीता है ॥ निर्गुणउपासनादे प्रभावतें ब्रह्मलोकविषे प्राप्तभया जो उपासक सो मनुकरके रचिया होया जो एह जन्ममरणरूप चक्र इसविषे नहि भ्रमता उपासक पुरुष ब्रह्मलोकविषे प्राप्त होआहोआ

फेर जन्मकों नहि प्राप्त होता ॥ ब्रह्मलोकविषे प्राप्त होएहोए निर्गुणब्रह्मदे उपासक ब्रह्माकेसाथ विदेहमुक्तिकों प्राप्त होजाते हैं ॥ तांते निर्गुणब्रह्मदी उपासना करणेवाले पुरुषकों फेर जन्मदी प्राप्ति नहि होती ॥ किंतु तिसदा मोक्ष होजाता है कथनकीतीयां जो प्रणवदीयां है वेदविषे उपासना सो वहुलनिर्गुण होतीआं हैं ॥ अर किदरेकिदरे प्रणवदीउपासना सगुणभी है ॥ प्रणवदा अर्थ ओंकार तात्पर्य एह ओंकारनूं निर्गुणब्रह्मरूप जानके उपासना करणी अर सगुणब्रह्मरूप जानकेभी उपासना करणी पिप्पलादमुनीश्वरने आपने शिष्य सत्यकामके तांई एह कथन कीता है ॥ हेसत्यकाम! ओंकार निर्गुणब्रह्मरूप है ॥ अर सगुणब्रह्मरूपभी है ॥ जिसकारणते तिसकारणते उपासक पुरुष इसओंकारदी उपासनाकरके निर्गुणब्रह्मनूं भावें सगुणब्रह्मनूं प्राप्त होता है कठवली उपनिषदविषे यमनेभी कथन कीआ है नचकेताके तांई ओंकारदी उपासनानूं जानकरके जेकर पुरुषकों निर्गुणब्रह्मदी प्राप्तिदी इच्छा होती है तद निर्गुणब्रह्मनूं प्राप्त होजाता है ॥ अर जेकर सगुणब्रह्मदी प्राप्तिदी इच्छा होती है ॥ तद सगुणब्रह्मनूं प्राप्त होजाता है ॥ तांते एह सिद्ध भया भलीप्रकार निर्गुणब्रह्मदी उपासना करणेवाले पुरुषको इसीजन्मविषे ब्रह्मसाक्षात्कार होता है ॥ भावें मरणकालविषे भावें ब्रह्मलोकविषे भावें होरमनुष शरीरनूं धारकरके पृथिवीलोकविषे ब्रह्मसाक्षात्कार अवश्य होता है ॥ विचारते तत्वज्ञाननूं प्राप्त होनेविषे जो असमर्थ है तिसकों निर्गुणब्रह्मदे ध्यानदा अधिकार है एह अर्थ आत्मगीताविषे भलीप्रकार कथन कीआ है सो आत्मगीतादे वाक्य श्रवण कर ॥ विचारकरके मेरे साक्षात्कारकरणेकों जो

असमर्थ है सो मेरी उपासना करे ॥ अर मनविषे एह शंका न लिआवे ॥ मेरेको परमात्मादा साक्षात्कार होवेगा के न होवेगा॥ कछुकाल उपासनादा करणेकरके उपासनादे फल प्राप्ति समेविषे मैं तिसको साक्षात्कार होवांगा अवश्य मेरा ध्यान मेरे साक्षात्कारदा साधन है ॥ जैसे पृथिवीकेनीचे दब्याहोआ जो धन है तिसदे लाभविषे पृथिवीदा पटनाही उपाय है होर उपाय नहि ॥ तैसे मेरीप्राप्तिविषेभी विचारते रहित पुरुषको मेरी उपासना ही उपाय है होर कोई कारण नहि ॥ मनरूपतां पृथिवी है ॥ अर बुद्धिरूप कही है तिसकरके मनरूप पृथिवीनूं खोदना॥ अर्थ यह जो मनदी एकाग्रतानूं करणा अर देहअभिमानरूप शिलानूं आत्म रूप धनदे उपरो दूरकरके धनरूपजो मैं हां उसनूं पुरुष ग्रहण करे ॥ ज्ञानविषे असमर्थ पुरुषको ध्यानदा अधिकार है॥इसविषे होरभी शास्त्रदा वाक्य श्रवण कर ॥ब्रह्मदे अपरोक्ष अनुभवदे न होआंहोआंभी मैं ब्रह्महां ऐसे उपासना करे देवतादी उपासना करके प्रथम अविद्यमानभी देवतारूपतानूं प्राप्त होता है ॥ जेकर तौ आत्मरूपताकरके नित्य प्राप्त जो सर्वात्मा ब्रह्म है सो उपासनासें प्राप्त होता है इसको तौ किआ कहिणा है ॥ ब्रह्मध्यानदा फल प्रत्यक्ष सिद्ध है तिसते ध्यानकरणे योग्य है ध्यानते अनात्मरूप देहआदिकांविषे अहंबुद्धिदी शिथिलतारूप फलनूं दिनदिनविषे देखता हूआहूआभी जेकर ध्यानको न करे ॥ तौ तिसपुरुषसे होर अधिक पशु कौन है एह कहो तात्पर्य एह ध्यानदे फलनूं प्रत्यक्षदेखदाहोआभी जो ध्यान नहि कर्ता सो पशु है देह अभिमाननूं दूरकरके ध्यानते अद्वितीयात्मादे अनुभवनूं कर्ताहूआ ॥ मरणस्वभाववाले शरीरविषे अहंअभिमानदे त्यागते आपपुरुष

अमृतब्रह्मरूप हूआहूआ इसीजन्मविषे आपना वास्तव स्वरूपं जो है सच्चिदानंदरूप ब्रह्म तिसनूं प्राप्त होता है पुरुष इस ध्यान-दीपनाम ग्रंथनूं जो पुरुष भलीप्रकार विचारता है सो संपूर्ण संशयांसे रहित हूआहूआ सदा ब्रह्मदे ध्याननूं कर्ता है।

इतिश्री ध्यानदीपःसमाप्तः

श्रीः

पञ्चदशी भाषा

अथ नाटकदीप प्रकरणम्

॥ ॐ सतगुरुप्रसाद ॥ अथ पंजवां नाटकदीप आदिसें पंचदशीका दसवां ग्रंथ तिसदा आरंभ कर्ते हैं॥ मंदबुद्धिवाले जिज्ञासीयांकों यत्नसें विना निष्प्रपंच ब्रह्मदा आत्मरूपतादे ज्ञानवास्ते ब्रह्मवेतिआंने अध्यारोप अर अपवाद कल्पया है॥ इसते प्रथम परमात्माविषे जगतदे अध्यारोपनूं कथन कर्ते हैं॥ जगतदी उत्पतीसे प्रथम जो सजातीय विजातीय स्वगतभेदसे रहित आनंदचैतन्यस्वरूप पूर्ण परमात्मा होता भया॥ सो परमात्मा आपही आपनी मायाकरके जगतरूपनूं प्राप्त होयकरके जीवरूपनूं धारकरके शरीरांविषे प्रवेश कर्ता भया॥ जगतदी उत्पतिसें प्रथम परमात्माको सजातीय विजातीय स्वगतभेदसें रहित छांदोग्य उपनिषदविषे आपने पुत्र श्वेतकेतुके तांइ उद्दालक मुनीश्वर कथन कर्ता भया है हेसौम्य! हेपुत्र! एह जितना जगत तूं देखता हैं सो संपूर्ण आपनी उत्पतिते प्रथम परमात्मरूप होता भया जैसे घट आपनी उत्पत्तिसें प्रथम मृतिकारूप होता है सो परमात्मा सजातीय विजातीय स्वगतभेदसे रहित है बृहदारण्यक उपनिषद विषे परमात्मा चैतन्यरूप अर आनंदरूप अर पूर्णकथन कीया है ऐसा जो परमात्मा है सो आपनी मायासक्तिकरके जो सक्तिश्वेताश्वतर उपनिषदविषे प्रकृतिनामकरके कथन कीती है॥ तिसप्रकृतिकरके परमात्मा

जगत रूप हूयाहूयाभी निर्विकार रहिता है इसवासते परमात्मा-का नाम महेश्वर कहीता है ॥ सो परमात्मा आपही शरीरआदि संघातरूप जगतनूं रचकरके तिसविषे प्रवेश कर्ता भया जीव-रूपकरके।

शंका—जेकर एकपरमात्मानेही संपूर्ण शरीरांविषे प्रवेश कीता है तौ एह पूजाकरणेके योग्य है तांते उत्तम है ॥ अर एह पूजा करणे वाला है ॥ तांते तिसते अधिम है॥ ऐसा भेद न प्रतीत होया चाहीए।

उत्तर—एह जो उत्तम अधिम भाव प्रतीत होता है ॥ सो परमात्माके स्वभावकरके नहि प्रतीत होता॥ किंतु शरीररूप उपाधिकरके प्रतीत होता है॥ जेकर देवताआदिक उत्तमशरीर-विषे प्रवेश कर्ता है परमात्मा तौ उत्तम देवतारूप होजाता है ॥ अर जेकर अधिम मनूंष शरीरविषे प्रवेश कर्ता है परमात्मा ॥ तौ मनुष्यरूप होजाता है अव जगतदे अपवादनूं श्रवण कर॥ सहितसाधनादे प्रथम अपवाददा साधन कहिते हैं ॥ अने-कजन्मांविषे जो कीता है ईश्वरदा भजन ॥ अर्थ एह आपने वर्णाश्रमदे कर्मांदा श्रद्धाकरके कीतियां होयांदा परमेश्वरविषे अर्पण करणा ॥ तिसते आत्मादी ब्रह्मरूपतादे ज्ञानदा साधन जो विचार है॥ श्रवण मनन निदिध्यासन रूप तिसदे करणेदी इच्छा कर्ता है ॥ तिस श्रवण मनन निदिध्यासनरूप विचार क-रके ज्ञानदी उत्पति होती है ॥ ज्ञानकरके आत्मादी अद्वयानंद-तादा आच्छादक अज्ञाननाश होजाता है ॥ अज्ञानदे नाश हो-यांहोयां अद्वयानंदरूप परमात्मा शेष रहिता है ॥ तांते एह सिद्ध

भया प्रथमसाधन ईश्वरका भजन है ॥ अर दूसरा साधन श्रव-णादिकोंविषे रुची ॥ तीसरा साधन श्रवण मनन निदिध्यास-नोंविषे प्रवृत्ति तिसतें उत्पन्नभया जो ज्ञान तिसकरके जगतदा अपवाद ॥ जगतदे अत्यंताभावदी प्रतीति करके परमात्मादी अद्वैतरूपतादा ज्ञान ।

शंका—कैवल्य उपनिषदविषे एह कथन कीता है जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिरूप पंचनूं जो प्रकाशता है सो ब्रह्म मैंहां इसज्ञान-करके पुरुष सर्व बंधनांसे रहित होजाता है ॥ तांते बंधनांदा अभावरूप जो मोक्ष है सो ज्ञानदा फल है तुसी परमात्मादा शेष रहिणा ज्ञानदा फल कैसे कथन करते हो।

उत्तर—अद्वितीय ब्रह्मविषे वास्तव बंध मोक्षदा निरूपण नहि होसक्का ॥ परमात्माको मैं दुखीहां मैं द्वैतनूं अनुभव कर्ता-हां एह जो भ्रम है सो बंध है ॥ अर अद्वितीय परमानंद स्वरूप-करके जो स्थिति है सो बंध निवृत्तिरूप मोक्ष है ॥ इसते कैवल्य उपनिषददी श्रुतिके साथविरोध नहि।

शंका—मोक्षकेवासते विचारकरके उत्पन्न होया जो ज्ञान ॥ तिसदी लोड नहि ॥ जिसते गीताविषे एह कथन कीता है कर्म करकेही जनकादिक राजे संसिद्धिको प्राप्त भये हैं।

उत्तर—बंध जो है सो अज्ञानसे होता है तिस अज्ञानका विचारसे उत्पन्न होये ज्ञानसें बिना नाश नहि होता तांते ज्ञानदी अवश्यलोड है अर गीताविषे जो कर्मोंकरके जनक आदिकांको संसिद्धिकी प्राप्ति कथन कीती है ॥ सो संसिद्धिनाम अंतःकरण

की शुद्धिदा है ॥ मोक्षका नहि ॥ तांते गीतावाक्यदा विरोध नहि ॥

प्रश्न—विचारकरके बंधदी निवृत्ति तुसां कथन कीती है ॥ सो किसदे विचारकरके होती है एह कृपाकरके कहो ।

उत्तर—जीव अर परमात्मादे विचारकरके बंधदा अभाव होता है तिसते जिज्ञासी जीव ब्रह्मदी एकतादे साक्षात्कार पर्यंत सदाही जीव अर परमात्मादे विचारनूं करे तांते प्रथम जीवदे स्वरूपनूं कथन करें हैं चिदाभास सहित जो अहंकार है व्यवहारकालविषे देहआदिकांविषे अहं अभिमानदे करणेवाला ॥ अर पुण्यपापरूपकर्मांदे करणेवाला अर सुखदुखरूप फलदे भोगने वाला सो जीव है तिसदा सुखदुखदे भोगणेविषे की साधन है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवणकर॥कामादिवृत्तिआंवाला अंतः करणदा अंशमन सुखदुखरूप भोगदा साधन है॥ तिस मनदीयां दो क्रिया है॥ एक अंतर्वृत्ति अर एक वाह्यवृत्ति॥सो वृतीयांक्रमकरके उत्पन्न होतीआं हैं एन्नावृतीयां दोनेदे स्वरूपनूं अर विषेनूं भिन्नभिन्न श्रवण कर ॥ अंतर्मुख वृत्ति अहं है सो कर्ता जो जीव है तिसनूं विषे करे है अर इदं एह वाह्यवृत्ति हैं सो देहते वाहर इदंताकरके ग्रहण करणे योग्य पदार्थांनूं विषे कर्ती है ।

शंका—जेकर मनकरकेही सर्वव्यवहारकी सिद्धि होती है तौ श्रोत्र नेत्रआदिक इंद्रियांकों व्यर्थता भई ॥

उत्तर—मनने इदं ऐसे सामान्यरूप वस्तुनूं विषे करीता है अर इदंताकरके ग्रहण करणे योग्य पदार्थांविषे जो विशेष है शब्दस्पर्शरूप रसगंध तिन्नानूं भिन्नभिन्नकरके श्रोत्रआदिक

इंद्रियांकरके ग्रहण करीता है इनते श्रोत्रआदिक इंद्रियांदी व्य-
र्थता नहि ॥ इनेकरके जीवदा स्वरूप कथन कीता॥अथ परमा-
त्मादा स्वरूपनूं श्रवण कर॥अहंकाररूप कर्तानूं अर अहंरूप अर
इदंरूप मनदी वृत्तिरूप क्रियानूं अर संपूर्ण विषयांनूं जो घ्राण
आदिक इंद्रियांकरके ग्रहण करणे योग्य हैं ॥ एना संपूर्णनूं एक-
ठियां हि जो चैतन्य प्रकाशता है ॥ सो वेदांतशास्त्रांविषे साक्षी
कथन करीता है मैं रूपनूं देखताहां इसप्रतीतिविषे द्रष्टा दर्शन
दृश्यरूप त्रिपुटी अकठी भासती है ॥ मैं इसदा अर्थ है अहं-
काररूप द्रष्टा ॥ देखताहां इसदा अर्थ है दर्शनरूप क्रिया ॥
रूपनूं इसदा अर्थ है दृश्य ॥ इसीतरां मैं सुनताहां मैं गंधले-
ताहां मैं स्वादलेताहां इसते आदिलेकरके त्रिपुटीयां भासती-
यां हैं तिना त्रिपुटीयांनूं प्रकाशनेवाला जो साक्षी है ॥ सो प-
रमात्मा है साक्षी विकारते रहित हूयाहूया अनेकपदार्थांनूं ए-
कठा प्रकाशता है ॥ इसविषे दृष्टांत श्रवण कर ॥ जैसे किसी-
स्थानविषे वेश्या नृत्य कर्ती है उसस्थानविषे नाचकरावणेवाले
धनीनूं अर तमासा देखनवालियांनूं अर वेश्यानूं दीपक अक-
ठाहि प्रकाशता है एक जैसा आपन विकारको प्राप्त होकरके अ-
र जेकर सभी उसस्थानते चलेजावें तां संपुर्णादे अभावनूं प्रका-
शता है तैसे साक्षी अहंकाररूप कर्तानूं अर बुद्धिदिवृत्तिरूप
क्रियानूं अर विषयांनूं प्रकाशता है जाग्रत् अर स्वप्नविषे अर सु-
षुप्तिविषे एना संपूर्णदे अभाव होयांहोयांभी आप प्रकाशता है
प्रथमकी निचाई ।

शंका—प्रकाशरूप बुद्धिकोही अहंकारआदि सर्वपदार्थांदो

प्रकाशकता वनजाती है ॥ इसते बुद्धिसे भिन्न साक्षीको मानियां न चाहीये ।

उत्तर—निर्विकारसाक्षी चैतन्यदी स्वप्रकाशता करके सदा प्रकाशमान होई होई बुद्धि अनेक प्रकारकरके नृत्यको कर्ती है ॥ अर्थ एह जो कदी घटाकार होती है कदी पटाकार होती है ॥ तात्पर्य एह बुद्धि विकारी होनेकरके जड है ॥ तिसते बुद्धिविषे स्वतेप्रकाश नहि ॥ तांते बुद्धिसे भिन्न बुद्धिआदिक संपूर्णांदा प्रकाशक साक्षी अवश्य मंनियां चाहोता है ॥ एह जो कथन कीता है अर्थ तिसको श्रोता पुरुषदी बुद्धिविषे यत्नसे विना स्थितिदेवास्ते ॥ नाटकरूपताकरके वर्णन कर्ते हैं ॥ अहंकार जो है सो नाच कर्वांदणेवाले धनीके तुल्य है । जैसे धनी नाचदे हछे न हछे होनेकरके हर्षशोकको प्राप्त होता है अभिमानकरके ॥ तैसे अहंकारभी भोगांदे हछे मंदे अभिमानकरके हर्षशोकको प्राप्त होता है ॥ अर विषे जो हैं सो तमाशा देखनेवाले पुरुषांके तुल्य हैं॥ तमाशेदे देखनेवाले पुरुषांको निकट स्थित होयांहोयांभी तमाशेदे हछे मंदेकरके हर्षशोक नहि होता ॥ तैसे विषयांको भोगदे हछे मंदेकरके हर्षशोक नहि होता ॥ तांते विषे तमाशा देखनेवाले पुरुषांके तुल्य हैं ॥ अर बुद्धि नचनेवाली वेश्याके तुल्य है जैसे वेश्या अनेकप्रकारांके विकारांको प्राप्त होती है तैसे बुद्धिभी अनेक प्रकारांके विकारांको प्राप्त होती है अर इंद्रियां वेश्याके पिछे खलोते होये सारडी कैसोयां ढुकरांदे बजावनेवाले ऊमांदे तुल्य हैं ॥ जैसे ऊम वेश्यादे विकारांदे अनुसार व्यापारको कर्ते हैं तैसे इंद्रियां भी बुद्धिदे विकारांदे अनुसार व्यापारको कर्तीयां हैं अर साक्षीदीपकदी नियांई प्रकाशक है ।

शंका—साक्षीकों अहंकारआदिकोंदा प्रकाशकहोनेतें होयां-होयां अहंकारआदिकोंके साथ कदी संबंध होना अर कदी संबंध न होना रूप विकारदी प्राप्ति होवेगी।

उत्तर—जैसेदीपक जानेआवनेरूप विकारसे रहित आपने स्थान विषे स्थित हूयाहूया आपने निकटवर्ती संपूर्ण पदार्थांनूं प्रकाशता है तैसे साक्षी विकारसे रहित हूयाहूया आपने निकट स्थित संपूर्णपदार्थांको प्रकाशता है।

शंका—एह जो तुसां कथन कीता है साक्षी बाहरलियां अर अंदरलियां संपूर्ण पदार्थांनूं प्रकाशता है सो अयुक्त है जिसतें श्रुति साक्षीविषे बाहर अंतरभेददे अभावनूं कथन कर्ती है बृहदारण्यकविषे एह कहिया हैं साक्षीरूप ब्रह्म न किसीका कारण है न किसीका कार्य हैं न किसीके बाहर है न किसीके अंतर हैं।

उत्तर—एह बाहर अंदर भेद शरीरदी अपेक्षाकरके है शरीरदे जो बाहर पदार्थ हैं सो बाहर कहीते हैं अर शरीरदे अंतर जो पदार्थ हैं सो अंतर कहीते हैं अर साक्षीविषे बाहर अंतरदी कल्पना कोई नहि शरीरदे बाहरकौन पदार्थ हैं अर शरीरदे अंदर कौन पदार्थ हैं ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंध एह पांचोंविषे तां शरीरके बाहर हैं अर अहंकार अंदर है।

शंका—एह तुसां कथन कीता है स्थिरस्थितिको प्राप्त हूयाहूया साक्षी बाहरलियां अंदरलियां पदार्थांनूं प्रकाशता है विकारसे रहित हूयाहूया सो तुसाडा कहना अयुक्त है जिसतें मैं घटनूं

देखताहां इस अनुभवविषे एह प्रतीत होता है प्रथम साक्षी अहंकारनूं प्रकाशता है पिछों घटाकार वृत्तिदी प्रकाशरूपताकरके साक्षी बाहर आवता है ऐसे अनुभवकरके प्रतीत होता है।

उत्तर—अहंकारदे ग्रहणकरणेवास्ते देहके अंतर स्थित होईहोई बुद्धि रूपादिक विषयांदे ग्रहणकरणेवास्ते नेत्रआदिकांद्वारा वारंवार बाहर आवती है॥ तिसते मूर्खपुरुष बुद्धिदी अंतर बाहर आवनेजाने रूप चंचलतानूं बुद्धिदे प्रकाशक साक्षीविषे कल्प लेते हैं॥ तांते साक्षीविषे अंतर बाहर आवनाजाना रूपचंचलता वास्तव नहि।

शंका—प्रकाशने योग्यवस्तुदी चंचलता प्रकाशकविषे मूर्खांने कल्पीती है एह वार्ता कँहूँ देखीतां नहि।

उत्तर—घरविषे झरोखेद्वारा धुप प्राप्त होती है थोडीजेही तिथे बालक आपने हथको चंचल कर्ते हैं तिस हथदे चंचल करणेकरके अचलभी धुप बालकांकों चंचल प्रतीत होती है इसस्थानविषे जैसे प्रकाशने योग्य हथकी चंचलता प्रकाशक धुपविषे कल्पीती है बालकांने तैसे बुद्धिदी चंचलता बुद्धिदे प्रकाशक साक्षीविषे कल्पीती है अज्ञानीयांने वास्तवसे साक्षी आपने स्वरूपविषे स्थित है बाहर अंतर्गमनागमन नहि कर्ता पर बुद्धिदे जानेआवने करके बाहर अंदर जांदांआवदां प्रतीत होता है अज्ञानीयांको आपने स्थानविषे स्थित है साक्षी इसका क्या अर्थ है किसी बाहरस्थानविषे स्थित है साक्षी अथवा अंतरस्थानविषे स्थित है ऐसा पुछें तां श्रवण कर साक्षी बाहरस्थानविषे स्थितहै न अंतरस्थानविषे स्थित है जिसते बाहर अंतरस्थान दोवे बुद्धि-

ने हैं तौ फर साक्षी किथे स्थित है ऐसा पुछैं तां श्रवण कर ॥ मन-बुद्धि इंद्रियांआदिकां संपूर्णांदी वर्तीतिद अभाव होयांहोयां नि-र्थं साक्षी प्रकाशदा है तिथेही स्थित है ।

शंका—सर्वव्यवहारदे अभाव होयांहोयां देशतां कोई नहि प्रतीत होता इसतें निर्देशविषे साक्षीकों स्थित कैसे कथन करते हो।

उत्तर—हमारा एह तात्पर्य है सर्वदेशआदि कल्पनादा अधिष्ठान जो साक्षी है तिसको आपने स्वरूपसे भिन्न आपनी स्थितिवास्ते किसीदेश आदिकांदी लोड नहि ।

शंका—जेकर साक्षीका देश कोई नहि तौ शास्त्रांविषे साक्षीको सर्वगत सर्वसाक्षी किउँ कथन कीया है सर्वगतदा अर्थ सर्वदेशांविषे स्थित ।

उत्तर—सर्वदेशकी कल्पनाकरके साक्षीको सर्वगत कहीता है वास्तव साक्षीविषे सर्वगतता नहि जिसते साक्षी अद्वितीय है अर असंग है जैसे साक्षीविषे सर्वगतता वास्तव नहि तैसे साक्षीविषे सर्व साक्षिताभी वास्तव नहि बुद्धि जिसजिसदेशनूं अर जिसजिस पदार्थनूं अंतरनूं अर बाहरनूं अर सर्वनूं कल्पदी है तिसदेशविषे साक्षी स्थित कहीता है अर सर्वको बुद्धि जद कल्पदी है तद सर्वदा साक्षी कहीता है तैसेही संपूर्ण पदार्थांविषे जानना अर्थ एह जद बुद्धिरूपको कल्पती है तद रूपका प्रकाशक हूयाहूया परमात्मारूपदा साक्षी कहीता है इसीप्रकार जद बुद्धिरसादिक पदार्थांको कल्पती है तद परमात्मा रसादिकांनूं प्रकाशता हूया रसआदिकांदा साक्षी कहीता है।

शंका—जेकर साक्षीरूपता वास्तव नहि तौ परमात्मादा वास्तव की रूप है।

उत्तर—वास्तव परमात्मादा स्वरूप मनवाणीते परे है।

शंका—जेकर वास्तव परमात्मादा स्वरूप मनवाणीदा विषा नहि तौ तिसनूं मैं कैसे ग्रहण करां।

उत्तर—मत तिसनूं तूं ग्रहण कर।

शंका—जेकर परमात्मा मेरेकरके ग्रहण करणेके योग्य नहि तौ एह जो तुसां कथन कीतासी विचारकरके अविद्यादे नाश होयांहोयां परमात्माशेष रहिता है एह तुमारा कहिना न बनेगा।

उत्तर—जोजो तैने ग्रहण कीता होया है आत्माते भिन्न द्वैत तिसदी मिथ्यारूपतादे निश्चयकरके तिसदे त्याग कीतियांहोयां तेरा स्वरूप आत्माही सत्यरूपताकरके शेष रहेगा।

शंका—कथनकीती जो तुसां युक्ति है तिसकरके आत्मा यद्यपि शेष रहिता है तौभी तिसदी अपरोक्षतादेवास्ते कुछक प्रमाण चाहीता है।

उत्तर—तिसदी अपरोक्षतादेवास्ते कुछ प्रमाण नहि चाहीता जिसते तिसका स्वरूप स्वप्रकाश है प्रमाणदी अपेक्षातां अनात्मवस्तूयांदी अपरोक्षतावास्ते होती है।

शंका—आत्मा स्वप्रकाशताकरके आपनी अपरोक्षता वास्ते प्रमाणको नहि चाहीता इसज्ञानदी सिद्धिदेवास्ते प्रमाण चाहीता है।

उत्तर—इसज्ञानवास्तै जेकर प्रमाण चाहीता है तौ गुरूके मुखतें श्रुतीयांनूं पढ़। श्रुतीयां इस ज्ञानदी सिद्धिविषे प्रमाण हैं अर जेकर तूं सर्व ग्रहण कीती होई अनात्मवस्तुके त्याग करणे-विषे असमर्थ हैं तां ज्ञानदे कारण विचारदी शरणनूं प्राप्तहो वि-चारविषे तत्पर हूयाहूया अंतर बाहर परमात्मादे अनुभवनूं कर बुद्धिने जोजो कल्पीताहै अंतर अथवा बाहर वस्तु तिसतिस-दा साक्षीरूपताकरके तिसतिस वस्तुदे अधीन परमात्मानूं अं-तर बाहर अनुभव कर ।

इति श्रीनाटकदीप समाप्त

श्रीः

पञ्चदशी भाषा

ब्रह्मानन्देयोगानन्दप्रकरणम्

॥ ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीसतुगुरुप्रसाद ॥ दोहा ॥ श्रीमत्‌गंगारामगुरु चरणकमलकोंध्याय ॥ ब्रह्मानंदभाषाकरों ब्रह्मानंदहदिपाय ॥ १ ॥ अथ ब्रह्मानंदनाम ग्रंथका आरंभ कर्ते हैं ॥ इस ब्रह्मानंदके पंचअध्याय हैं ॥ प्रथमाध्यायका नाम योगानंद है ॥ सो पंचदशीका आदिसें ग्यारवां ग्रंथ है ॥ इसविषे ब्रह्मानंदनूं कथन करेंगे ॥ सो ब्रह्मानंद एक ग्रंथका नाम है ॥ अर एक ब्रह्मका स्वरूप जो आनंद है तिसका नाम है ॥ तिस दोप्रकारके ब्रह्मानंदनूं संपूर्ण जानकरके इसलोकदे तापांदे समूहनूं जो शरीरविषे अहंता अभिमानकरके प्राप्त होते है ॥ अर पुत्रादिकांविषे ममता अभिमानकरके प्राप्त होते हैं अर शत्रुआदिकां विषे जो क्रोधसे प्राप्त होते हैं ॥ अर परलोकदे जो संपूर्ण ताप हैं॥ नरकांदा भय अर स्वर्गादिकांदी अभिलाषारूप ॥ तिन्ना तापांदे संमूहनूं त्यागकरके सुखरूप ब्रह्म होजाता है ॥ ब्रह्मज्ञान संपूर्ण अनर्थांदे अभावदा कारण है॥ अर संपूर्ण वांछितअर्थांदी प्राप्तिदा कारण है ॥ इसवार्ताविषे अनेक श्रुतीयां स्मृतीयांदे वचन प्रमाण हैं ॥ तांते प्रथम तैत्तिरीय उपनिषदके वचनकों श्रवण कर ॥ ब्रह्मवेतापुरुष ब्रह्मानंदनूं प्राप्त होता है ॥ ब्रह्मवेताका अर्थ एह है ॥ देशकालवस्तुदे परिछेदसें रहित परमात्मानूं जो आत्मरूपताकरके जाने ॥ सो कहीता है ब्रह्मवेता ॥ इसक-

रके ब्रह्मज्ञानकों वांछितअर्थकी प्राप्तिदी कारणता सिद्ध भई ॥ अब ब्रह्मज्ञानकों अनर्थोंके अभावदी कारणता छांदोग्य उप-निषद्‌विषे जो कथन कीती है ॥ तिसकों श्रवण कर ॥ भूमा है नाम जिसका ऐसा जो देशकालवस्तुदे परिच्छेदसें रहित आत्मा-है सुखरूप ॥ तिसकों जाननेवाला जो पुरुष है सो शोकसें रहि-त होजाता है ॥ शोकनाम अज्ञानते उत्पन्नभया जो संसार ति-सका है ॥ तिस संसारनूं आत्म वेत्ता तरजाता है ॥ तात्पर्य एह अज्ञानी संसारनूं सत्य जानकरके तिसदी चिंताविषे डुबजाता है ॥ अर ज्ञानी तिसनूं मिथ्या जानकरके तिसदी चिंताविषे डुबदा नहि ।

शंका—कथन कीता जो तुसां तैतिरीय उपनिषद्‌का वाक्य तिसविषे ब्रह्मज्ञानकों परप्राप्तिविषे कारणता प्रतीत होती है ॥ आनंदप्राप्तिविषे कारणता नहि प्रतीत होती ।

उत्तर—ब्रह्मज्ञानकों आनंददी प्राप्तिदी कारणता कथन क-रणेवाले तैतिरीय उपनिषद्‌के वाक्यनूं श्रवण कर ॥ ब्रह्म सत्य है ब्रह्म चेतन्यरूप है अनंत है ब्रह्मवेत्तियांकरके प्राप्त होने यो-ग्य सच्चिदानंदरूप आत्मातें आकाशदी उत्पत्ति भई इसप्रकार-करके कथन कीता जो है आत्मा सो रसरूप है ॥ अर्थ एह जो आनंदरूप है तिस आनंदरूप ब्रह्मनूं ब्रह्म अहंअस्मि इसज्ञान-तें प्राप्त होयकरके अपरिछिन्न निरतिशय सुखवाला होता है ॥ ब्रह्म अर आत्मादी एकता ज्ञानसें विना होरणा साधनाकरके अपरिछिन्न निरतिशय सुखकों नहि प्राप्त होता ॥ जिसकाल विषे जिज्ञासीगुरुके निकट जाकरके श्रवण कर्ता है ॥ अर

तिसके मनन निदिध्यासनको करके ब्रह्म अहंअस्मि ऐसो दृढ संशय विपर्ययसें रहित स्थितिनूं प्राप्त होता है ब्रह्मविषे ॥ तद भयतें रहित होजाता है ॥ भयके कारणदे नाशहोयां भयतें रहित होता है ॥ भयदा कारण आपनेसें भिन्न दूसरी वस्तु होती है ॥ तात्पर्य एह संपूर्ण जगतनूं मिथ्या जाननेतें भयनाश होजाता है ॥ जैसे स्वप्नते जागेपुरुषकों स्वप्नदे सिंह सर्प चोरआदिकांते भयनाश होजाता है ॥ जिस ब्रह्मविषे स्थितितें भयका नाश होता है ॥ तिस ब्रह्मका स्वरूप श्रवण कर ॥ ब्रह्म इंद्रियांदा विषे नहि ॥ अर जैसे मन प्राणआदिक ममतादा विषे होते हैं ॥ मेरेप्राण मेरामन इसप्रतीतिकरके ॥ तैसे ब्रह्म ममतादा विषे नहि ॥ जिसतें ब्रह्म आपना स्वरूप है ॥ अर ब्रह्मदा शब्दकरके कथन नहि होता ॥ अर ब्रह्मदा आधारभी कोई नहि ॥ ब्रह्म आपनी महिमाविषे स्थित है ॥ इस अर्थविषे ज्ञानवानांदा अनुभव प्रमाण है ॥ ऐसे ब्रह्मविषे जब जिज्ञासी स्थितिनूं प्राप्त होता है ॥ तिसीकालविषे मोक्षरूप ब्रह्मस्वरूप होजाता है ॥ ब्रह्मवेता ब्रह्मरूप होता है ॥ ऐसे श्रुतिभी कथन कर्ती है ॥ अर जिसकालविषे एह पुरुष अदृश्यतादि गुणांवाले आत्मरूपब्रह्मविषे थोडासाभी भेद देखता है एह मेरेकरके उपासनाकरणे योग्य है इसदी मै उपासना करणेवालाहां ॥ ऐसे भेदनूं जद परमात्माविषे देखदा है ॥ तिसी कालविषे तिसभेद देखणेवाले पुरुषकों भय प्राप्त होताहै ॥ भेद देखणेवालियांकों भय प्राप्त होता है ॥ इस अर्थदे दृढकरणेवासते ब्रह्म अर आत्मादी एकतादे ज्ञानसें रहित वडे प्रतापवालियां देवतियांकोंभी भयदी प्राप्ति होती है ॥ इस अर्थकों

त्रिस्कधावलनपासनें तैतिरीय उपनिषद्‌विषे पवन. सूर्य. अग्नी. इंद्र. यम. इन्हाकों भय कथन कीना है ॥ पिछले जन्मविषे एह पंजो-देवता परमात्मादा अर अपना भेद देखदे भये हैं ॥ तिसकरके इस पवनआदिजन्मकों धारकरके परमात्मादे भयकरके विच-रते हैं ॥ धर्मकों जाननें होयहोयभी ॥ एह अर्थ कठवल्ली उप-निषद्‌विषेभी कथन कीया है ॥ जेकर देवतियांकोंभी भेद देख-णेतें भयकी प्राप्ति होती है ॥ तौ मनुष्यांको भेदके देखणेतें भय प्राप्त होता है ॥ इसका तौ क्या कहिना है ॥ तात्पर्य एह ब्रह्म-विषे भेद दृष्टिकों त्यागकरके मैं ब्रह्महां ॥ अर संपूर्ण जगत् ब्रह्म है ॥ ऐसी निष्ठा कीती चाहीये इसनिष्ठासें विना दुखांदा अभाव नहि होता ।

शंका—आत्मवेत्ता शोककों तरजाता हैं ॥ इसते आदिलैके कथन कीते जो तुसां वचन ॥ तिन्हाविषे ब्रह्मानंददे ज्ञानकों अनर्थांदे अभावदी कारणता प्रकट नहि प्रतीत होती ।

उत्तर—ब्रह्मानंददे ज्ञानकों अनर्थांदे अभावदी कारणता-दे प्रकट कथन करणेवाले वचनकों श्रवण कर॥ब्रह्मदा स्वरूप जो आनंद हैं ॥ तिसदे जाननेवाला पुरुष किसीतें भयकों प्राप्त नहि होता ॥ इसलोकविषे भयदा कारण सिंहसर्प चोरआदिक है ॥ अर परलोकविषे भयदा कारण पापादिक हैं॥सिंहसर्प चोरादिक भयदा कारण देहाध्यासकरके होते हैं ॥ सो देहाध्यास ज्ञानवान्-का ज्ञान करके नाश होजाता है ॥ अर पापांदा भय पापकरणेवा-लेकों होता है ॥ पापांदा करणा कामक्रोधादिकांकरके होता है ॥ कामक्रोधादिक द्वैत प्रतीतिसें होते हैं ॥ अर द्वैतप्रतीति अज्ञान-

में होती है ॥ तांते ज्ञानकरके अज्ञानदा नाश होनेने ज्ञानवान्‌-कों पापांदा भय नहि होता ।

शंका—ज्ञानवान्‌कों पापादिकांदा भय नहि होता ॥ एह वार्ता तुसां किसते जाती ।

उत्तर—एहवार्ता असांने बृहदारण्यक उपनिषदके वाक्यते जाती है ॥ तिसदा अर्थ एह है ॥ ज्ञानवान्‌को पुण्यपाप कर्मरूपाग्नि नहि तपावती ॥ सो पुण्यपाप दोप्रकारकरके तपावते हैं ॥ एक तो एह है मैं पुण्य किउँ न कर्ता भया ॥ इस प्रकार पुण्य न कीता होया तपावता है ॥ अर पाप कीता होया तपावता है ॥ मैं पापनूं किउँ कर्ता भया॥इसप्रकारकरके अज्ञानी चिंताकरकेसदा पडातप्ता है ॥ज्ञानवान्‌कों पुण्यपाप नहि तपावते इसविषे कारण क्या है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ ज्ञानवान् पुण्यपापनूं मिथ्या बुद्धिकरके त्याग देता है ॥ अर आत्मानूं सदा चिंतन कर्ता है ॥ इसते ज्ञानवान्‌कों पुण्यपाप नहि तपावते ॥ जो सच्चिदानंद वस्तु सूर्यविषे स्थित है ॥ अर जो सच्चिदानंदवस्तु पुरुषविषे स्थित है सो एक है ॥ इस प्रकार जानता हूआ स्थित जो पुरुष है आत्मा जो सर्व अंतःकरणवृतीयांदा प्रकाशक है ॥ तिसनूं सच्चिदानंद ब्रह्मरूपताकरके चिंतन कर्ता है ॥ ज्ञानवान् देह इंद्रियांमनदी प्रवृतिकरके उत्पन्न भये जो पुण्यपाप कर्म ॥ तिन्नाकों आत्मरूपताकरके देखता है ॥ जिसते ज्ञानवान्‌का एह निश्चय होता है जो द्रष्टाकरके प्रतीत होता है दृश्य ॥ सो संपूर्ण आत्मा है तिसकारणते आत्मरूपतानूं प्राप्त होयेहोये पुण्यपाप ॥ पुण्यपापदे अभिमानते रहित आत्मरूप ज्ञानवान्‌कों नहि

तपावते ॥ जैसे सूर्य सूर्यकों नहि तपावता ॥ अर ज्ञानीकों पुण्यपाप तपावते हैं ॥ जैसे सूर्य जेष्ठ आषाढविषे पृथ्वीकों तपावता है ॥ काहेते जो पृथ्वी सूर्यसें भिन्न है ॥ तैसे पुण्यपापकर्म देहाभिमानी अज्ञानीतें भिन्न हैं ॥ इसते अज्ञानीकों तपावते हैं ।

शंका—एह जो तुसां कहिया ज्ञानी आत्मरूप देखता है पुण्यपापनूं ॥ तिसते ज्ञानीकों पुण्यपाप नहि तपावते ॥ सो अयुक्त है ॥ जिसते पुण्यपाप प्रतीत होवें तो तिन्नाकों आत्मरूप देखणाभी बने ॥ सो तो पुण्यपाप अगिणत हैं ॥ जिसतें जीवांके जन्मभी अगिणत है ॥ अनादिसंसारविषे ॥ अर फलभोगसें विना पुण्यपापका नाश नहि होता ॥ भावें कल्पांदे करोडां सैंकडे वीतजावें तोभी ॥ ऐसे शास्त्र कथन कर्ता है ॥ इसते जो बहुतकालदे कीतेहोय कर्म हैं सो पुरुषनूं प्रतीत नहि होते ॥ तांते तिन्नादा आत्मरूपताकरके चिंतन नहि बनता ॥ इसते ओन्ना कर्मांविषे चिंताकरके ज्ञानवान्भी तपेगा ॥ ८ ॥

उत्तर—तत्वज्ञानकरके कारणसहित संपूर्ण कर्मांदा नाश होजाता है ॥ जैसे रसीदे ज्ञानकरके सर्पदी जो विषे है तिसदी चिंता नहि रहिती ॥ तैसे ज्ञानवान्कों कर्मांदी चिंता नहि रहिती कर्मांदी चिंतादाकारण आत्मा अर अनात्मादा तादात्म्याध्यासरूप हृदयदी गंड खुलजाती है ॥ आत्माकों असंग जाणनेते ॥ अर अनात्मादा अत्यंताभाव जाणनेते ॥ इसींतें कर्मांदा नाश होजाता है ॥ कर्म तिन्नप्रकारके होते हैं ॥ संचित ॥ आगामी ॥ प्रारब्ध ॥ तिन्ना तिन्नप्रकारके कर्मांविच्चों संचितकर्म पुण्यपापरूप नाश होजाते हैं ॥ जिसते कर्मांदा कारण अज्ञान नाश होगिया

है ॥ ज्ञानवान्दा ॥ अर संशय संपूर्णज्ञानवान्के क्षीण होजाते है॥ तिन्ना संशयांदा स्वरूप श्रवण कर ॥ आत्मा देहआदिरूप है अथवा देह आदिकांसें भिन्न है॥ तौ विचारकरके यह जाता आत्मा देह आदिकांसें भिन्न है ॥ जिसते जाग्रत्अवस्थादे शरीरनूं त्यागकरके स्वप्नशरीरनूं ग्रहणकरके तिसविषे अहंअभिमानकों प्राप्त होता है ॥जैसे जाग्रत्शरीरविषे अहंअभिभमान सी॥ तांते दोनोशरीरांविषे अहंअभिमानकों प्राप्त होता है ॥ भिन्नभिन्न कालविषे ॥ तांते किस शरीरसाथ आत्मादा अभेद है अर किसशरीरतें भेद है ॥ यह विचारकरके कहो ॥ तब विचारकीत्यांसे यह निर्णय भया आत्मा दोनोशरीरांते भिन्न है ॥ जिसते जाग्रत्शरीरदे अभाव होयांहोयांभी स्वप्नविषे आत्माविद्यमान है ॥ अर स्वप्नशरीरदे अभाव होयांहोयांभी जाग्रत् अवस्थाविषे आत्मा विद्यमान है ॥ तांते यह सिद्ध भया आत्मा देहतें भिन्न है ॥इसीतरां आत्मा इंद्रियां प्रानआदिकांतें भिन्न है॥ ऐसे निश्चय होयांहोयांभी अज्ञानीकों होर संशय उत्पन्न होता है॥ आत्मा कर्ता भोक्ता है अथवा असंग निर्विकार है॥ आत्मा असंग निर्विकार है ॥ यह निश्चयहोयांहोयांभी ॥ ज्ञानीकों होर संशय उत्पन्न होता है ॥ आत्मा ब्रह्मरूप है अथवा ब्रह्मते भिन्न है ॥ आत्मा ब्रह्मरूप है॥ ऐसे निश्चय होयांहोयांभी अज्ञानीको होर संशय उत्पन्न होतां है आत्मादे ज्ञानते मोक्ष होता है अथवा नहि होता ॥ आत्मज्ञानसें मोक्ष होता है॥ इस निश्चयदे होयांहोयांभी अज्ञानीको होर संशय उत्पन्न होताहै ॥ आत्मज्ञान कर्म उपासनासहित मोक्षदा कारण है अथवा केवल मोक्षका कारण है ॥ इसते आदिलेकरके संपूर्ण संशय छेदे जाते हैं ॥ जैसा

जिसवस्तुका स्वरूप है ॥ तैसा तिसवस्तुके ज्ञानयांहोयां तिसव-स्तुविषे फेर संशयविपर्यय नहि होता ।

शंका—एह जो तुसीं कहिते हो केवल ज्ञानते मोक्ष होताहै॥ सो अयुक्त है ॥ जिसते श्रुतिस्मृतिरूप शास्त्र केवलकर्मांको अ-थवा ज्ञानउपासनासहित कर्मांको ॥ मोक्षकारणता कथन कर्ता है ॥ केवल कर्मांनूं मोक्षदी कारणतादे कथन करणेवाली ईशावा-स्य उपनिषद्की श्रुति है ॥ सो एह कहिती है सौ वर्षपर्यंत पुरुष-दी आरवला है ॥ सो सौ वर्षपर्यंत कर्मांनूं कर्ता होया जीवणेदी इच्छानूं करे ॥ इसप्रकार कर्मांदे करणेवाले पुरुषनूं कर्म लिपायमान नहि होते ॥ अर्थ एह जो पुरुष मोक्षकों प्राप्त होजाता है ॥ कर्मांदे करणेसें विना होर किसीसाधनकरके कर्मांदे लेपदा अ-भाव नहि होता ॥ इस श्रुतिकरके केवल कर्म मोक्षका कारण प्रतीत होते हैं ॥ अर गीताविषे कथन कीता है ॥ केवल कर्मां-करके राजाजनकसें आदिलेकरके बहुते संसिद्धिको प्राप्त भये हैं ॥ संसिद्धिनाम मोक्षका है ॥ ज्ञान सहित कर्मउपासना मोक्ष-दा कारण है ॥ इसविषेभी ईशावास्य उपनिषद्की श्रुति प्रमाण है ॥ तिसविषे एह कथन कीता है ॥ विद्यानूं अर अविद्यानूं वि-द्यादा अर्थ ब्रह्मविद्या है ॥ अर अविद्यादा अर्थ कर्मउपासना है॥ एन्हा दुहांनूं जो अकठ्यां जाणता है ॥ अर्थ एह ज्ञानकी प्राप्ति होयांहोयांभी जो पुरुष कर्म उपासनाकों कर्ता है ॥ सो पुरुष कर्मउपासना करके पापांनूं अर विक्षेपनूं तर जाता है॥ अर ब्रह्म-विद्याकरके विदेहकैवल्यकों प्राप्त होता है ॥अर स्मृतिविषे एह क-थन कीता है॥ जैसे अन्नके साथ मिलिआहोया सहित अर सहित के साथ मिलियाहोया अन्न॥ सो बहुत उत्तम औषद है॥तैसे तप

अर ब्रह्मविद्या दोनो मिलेहोये परम औषद हैं ॥ तपदा अर्थ एह है मन अर इंद्रियांदी एकाग्रतारूप उपासना अर वर्णाश्रमका धर्मरूप जो कर्म हैं ॥ तांते केवल ज्ञानकों मोक्षकारणता कहिणी अयुक्त है।

उत्तर—केवल ज्ञानते मोक्ष होता है ॥ ज्ञानसहित कर्म-उपासनातें मोक्ष नहि होता ॥ जैसे दीपकसें अंधकार नाश होता है ॥ दीपकसहित कर्मउपासनातें अंधकार नाश नहि होता ॥ अर श्रुतिस्मृतिशास्त्रदा विरोधभी नहि ॥ जिसते श्रुतिस्मृतिदा अर्थ और है ॥ श्रुतिविषे जो कहा है कर्म लियायेमान नहि होते ॥ तिसदा अर्थ एह है ॥ पाप कर्म लियायेमान नहि होते ॥ तात्पर्य एह जो पुरुष सारी आरबला कर्मांनूं कर्ता है॥ तिसनूं नरक प्राप्त नहि होते ॥ एह नहि तिसका अर्थ जो मोक्षदो प्राप्ति होजाती है ॥ जिसते जीवदे संचितकर्म बहुत हैं ॥ तिनकरके अज्ञानोकों जन्मदी प्राप्ति अवश्य होवेगी ॥ अर गीताविषे संसिद्धि शव्दकर ज्ञानदा साधन चितदी शुद्धि कथन कीती है ॥ तांते केवल कर्म मोक्षका कारण नहि ॥ अर ज्ञानसहित कर्मउपासनाभी मोक्षका कारण नहि ॥ जिसतें विद्याशब्दकरके उपासनादा कथन है ॥ निर्गुणब्रह्मदेसाक्षात्कारदा कथन नहि ॥ तांते निर्गुण ब्रह्मसाक्षात्कार कर्मांकेसाथ मिलकरके मोक्षका कारण नहि ॥ जिसतें शास्त्रविषे ज्ञानसे भिन्न होर साधनांकों मोक्षकारणतादा निषेध कीआ है ॥ सो शास्त्र श्रवण कर ॥ श्वेताश्वतर उपनिषददी श्रुति कहिती है एक आत्मादे जाननेकरके मृत्युनूं उलंघ जाता है ॥ अर्थ एह जो मोक्षनूं प्राप्त होजाता है ॥ मोक्षदो प्राप्ति वासते ज्ञानसें भिन्न होर कोई मार्ग नहि ॥ तात्पर्य

एह केवल कर्मोंसेंभी मोक्ष नहि होता ॥ अर ज्ञानसहित कर्मोंसें-भी मोक्ष नहि होता ।

शंका—तुसां जो कथन कीतीयां हैं श्रुतीयां तिन्हाविषे एह अर्थ प्रतीत होता है प्रधानता करके ॥ ब्रह्मज्ञानके प्राप्त होयांहोयां इसलोकविषे दुखांदा अभाव होजाता है ॥ अर ब्रह्मज्ञानते विना इसलोकविषे दुखप्राप्त होते हैं पर परलोकके दुखांदा अभाव तां नहि प्रतीत होता ब्रह्मज्ञानकरके ॥ तांते परलोकके दुःखांदी चिंता ज्ञानवान्कों तपावेगी ।

उत्तर—परलोकके दुखांदी चिंता ज्ञानवान्को नहि तपावती ॥ परलोकनाम है इसशरीरकों त्यागकरके होर जन्मकी प्राप्तिका ॥ अर होरजन्मकी प्राप्ति अज्ञानकरके होती है ॥ अर ज्ञानवान्कों होर जन्मकी प्राप्ति नहि होती ॥ जिसतें अज्ञान तिसका नाश होगिया है ॥ ज्ञानकरके ॥ ऐसे श्वेताश्वतर उपनिषद्की कथन कर्ती है ॥ तिसका अर्थ एह है ॥ देव जो है स्वप्रकाश ब्रह्म आपना आप तिसके अपरोक्ष अनुभवनूं करके स्थित होया जो ज्ञानवान् है ॥ तिसदीयां कामक्रोधादिरूप फासीयां सर्व नाश होजातीयां हैं ॥ कामक्रोधादि क्लेशरूप फासीयांदे नाश होनेकरके होर जन्मदा कारण कर्मांदा आरंभ नहि होता ॥ अर संचितकर्म ब्रह्मज्ञान करके नाश होजाते हैं ॥ तिसते ज्ञानवान होर जन्मकों प्राप्त नहि होता तांते ज्ञानवान्कों परलोकदे दुखांदी चिंताभी नहि होती ।

शंका—श्रोकतर्णआदिरूप फल श्रवण करीता है ॥ अर तिसका अनुभव नहि होता ॥ जिसतें ज्ञानवानांदीभी इष्टदे

प्राप्तिअर अनिष्टदे दूरकरणेवासते प्रवृति देखीतो है ।

उत्तर—दृढा परोक्षज्ञानीयांदी इष्टप्राप्ति अर अनिष्ट निवृति-वास्ते प्रवृति नहि होती ॥ ऐसे कठवली उपनिषददी श्रुति कहि-ती है ॥ तिसका अर्थ एह है ॥ ब्रह्मचर्यआदि साधना संयुक्तपुरु-ष सच्चिदानंदरूप परमात्मदेवनूं संशयविपर्ययसे रहित आत्मरू-प जानकरके ॥ हर्ष शोकनूं इसीजन्मविषे त्याग देता है ॥ अर एह जो पिछे कथन कीतासी ॥ कर्मरूपाग्नितें उत्पन्न होयीहोयी चिंता ज्ञानवान्कों नहि तपावती ॥ इसविषे कुछ अधिकतानूं क-थन करणेवाली वृहदारण्यक उपनिषदकी श्रुति है ॥ तिसदे अ-र्थनूं श्रवण कर ॥ पुण्यपापरूप कर्म अज्ञानीकों दोप्रकारकरके तपावता है ॥ कीताहूया पापकर्म शोककरके तपावता है ॥ अर न कीता होया पाप हर्षकरके तपावता है ॥ अर पुण्य न कीता होया शोककरके तपावता है अर पुण्य कीता होया हर्षकरके तपावता है तापनाम चितके विकारका है ॥ तांते जैसे शोकरूप चितका विकारताप है ॥ तैसे हर्षरूप चितदा विकारताप है ॥ एह दोनो-प्रकारका पापकर्मकरके ताप अर दोनोप्रकारका पुण्य कर्मकरके ताप ज्ञानवान्कों नहि तपावता ॥ जिसते ज्ञानवान् संपूर्ण विका-रासें रहित शुद्ध ब्रह्मरूप आपने आपकों जानता है ॥ अर केन-उपनिषदविषे एह कथन कीता है ॥ अतिदुर्लभ मनुष जन्मनूं पा-यकरके परमात्मानूं आत्मरूप जाने तद जन्ममरणसें रहित पर-मात्मरूप सत्य होजाता है ॥ अर जेकर मनुष शरीरनूं धारकरके प-रमात्मानूं आत्मरूप न जाने तव वडे कष्टांकों प्राप्त होता है ॥ अर्थ एह जो चौरासीलक्ष जोनिविषे भटकता फिरता है ॥ अर जेडे पुरुष ब्रह्मनूं आत्मरूप जानते हैं ॥ सो पुरुष मोक्षकों प्राप्त होजाते हैं ॥

अर जेडपुरुष ब्रह्मनूं आत्मरूप नहि जानते ॥ सो पुरुष दुखांनूं प्राप्त होते हैं ॥ सुखांनूं नहि प्राप्त होते ॥ अर तिस ब्रह्मनूं देवतयांविचों जोजोदेवता आत्मरूपताकरके जानता भया ॥ सोसो देवता ब्रह्मरूप होजाता भया ॥ तैसे ऋषीयांविचों जोजोऋषी ब्रह्मनूं आत्मरूपजानता भया ॥ सोसोऋषि ब्रह्मरूप होजाता भया तैसे मनुषांविचों जोजोमनुष ब्रह्मनूं आत्मरूप जानता भया॥ सोसोमनुष ब्रह्मरूप होजाता भया॥तिसपरमात्मानूं संशयविपर्ययसे रहित अपरोक्ष जानकरके पुरुष मृत्युदेमुखते छुटजाता है ॥ तात्पर्य यह जो जन्मकों प्राप्त होता है तो मृत्युदा भोजन होता है ॥ अर ज्ञानवान् वर्तमान शरीरकों त्यागकर फेर जन्मकों नहि प्राप्त होता ॥ तिसते मृत्युका भोजन नहि होता ॥ किंतु अविनाशी ब्रह्मरूप होजाता है ॥ जो मृत्युकोंभी ग्रास करलेता है ॥ उसते आदिलेकरके बहुतीयां श्रुतीयां स्मृतीयां पुराणांदे वचनासहित एह कथन कर्तीयां हैं ॥ ब्रह्मज्ञानदे होयांहोयां दुखशोक चिंतारूप अनार्थांदा अभाव होजाता है ॥ अर परमानंददी प्राप्ति होती है सो स्मृतीयां अर पुराणांदे वचनानूं श्रवणकर ॥ जेड कहिते हैं॥ आत्मज्ञानतें दुखांदे अभावनूं ते सुखांदी प्राप्तिनूं ॥ संपूर्णभूतांविषे सच्चिदानंद आत्मानूं अर सच्चिदानंद आत्माविषे कल्पित संपूर्ण भूतांनूं जो संशयविपर्ययसें रहित देखता है ॥ तिसकानाम आत्मयाजी है॥अर्थ एह सो पुरुष आत्मयज्ञदे करणेवाला है ॥ ऐसा जो आत्मयाजी पुरुष है सो चक्रवर्ति राजनूं प्राप्त होता है ॥ तात्पर्य एह जैसे चक्रवर्तिराजाके उपर किसेका हुकम नहि होता ॥ तैसे ब्रह्मवेताके उपर किसीदेवताका हुकम नहि होता जीवदी आत्मादे ज्ञानते परम शुद्धि होती है ॥ तात्पर्य

एह ॥ अज्ञानरूप मैलदा ज्ञानकरकेहि अभाव होता है ॥ अर जिचरतीकर अज्ञान है ॥ तिचरतीकर परम शुद्धि नहि होती।

शंका—ज्ञानसें ब्रह्मानंददी प्राप्ति होती है ॥ तांते जानीदा है होरभी कोई आनंद है ॥ जैसे चिट्टावस्त्र इस कहिणेतें होरभी लालपीलादिक वस्त्र प्रतीत होता है ॥ जेकर होर लालपीलाआदिकवस्त्र न होवे तौ वस्त्रकों चिट्टा कहिणा नहि बनता ॥ सो आनंदकितने प्रकारका है अर कैसा है।

उत्तर—आनंद तिन्न प्रकारका है ॥ एक ब्रह्मानंद दूसरा विद्यानंद ॥ तीसरा विषयानंद॥ विद्यानंद अर विषयानंद यह दोनो ब्रह्मानंदतें उत्पन्न होते है ॥ इसते ब्रह्मानंद प्रधान है ॥ तांते प्रथम तिन्ना अध्यायांकरके ब्रह्मानंदका निरूपण कर्ते है ॥ इस ब्रह्मानंददे निरूपणदे आदिविषे तैतरीय उपनिषददी श्रुतिदे विचार कीतयांहोयां ब्रह्मानंदरूप प्रतीत होता है ॥ सो तैतिरीय उपनिषददे विचारनूं श्रवण कर ॥ वरुणनामदेवतादा भृगुनाम पुत्र होता भया ॥ सो ब्रह्मजिज्ञासाकरके वरुणके पास आवता भया ॥ अर कहिता भया हेपिताजी ! मैनूं ब्रह्मदा उपदेश करो ॥ तब वरुण तिसके तांई ब्रह्मदा लक्षण कथन कर्ता भया हेपुत्र ! जिसतें एह संपूर्णभूत उत्पन्न होते हैं ॥ अर उत्पन्न होयेहोये जिसकरके जीवते हैं अर मोएहोए जिसविषे लयकों प्राप्त होते हैं ॥ तिसदे जाननेकी इच्छा कर सो ब्रह्म है ॥ ऐसे ब्रह्मदे लक्षणकों सुनकरके भृगु अन्नमयादिक कोशांविषे ब्रह्मदे लक्षणदेअभावनूं निश्चयकरके अन्न मयादिक कोशांदी अब ब्रह्मरूपतानूं निश्चयकर्ता भया ॥ पिछों आनंदम-

य कोशदा अधिष्ठान आनंदमय कोशदा पंजवां अवयव पुच्छ-रूप चिद्रूपानंदनूं ब्रह्मरूपकरके जानना भया ॥ जिसनें ब्रह्मदा लक्षण जगतदी उत्पत्तिस्थितिलयकारणरूप चिद्रूप आनंदविषे वरनना है आनंदमयकोशदे पंज अवयव एह हैं ॥ तिन्नानूं श्रवण कर ॥ वांछितविषेदे दर्शनते उत्पन्न भया जो सुख सो आनंदमयदा शिर है ॥ अर वांछितविषेदे लाभते उत्पन्न भया जो सुख आनंदमयदा संज्ञापर है ॥ अर वांछितविषेदे भोगनेते उत्पन्न भया जो सुख सो आनंदमयकोशदा खबापर है अर सामान्य सुख आनंदमयकोशदा शरीर है ॥ अर ब्रह्म आनंदमयकोशदा पुच्छ है ॥ तात्पर्य एह जो ब्रह्म आनंदमयकोशदा अधिष्ठान है ।

शंका—भृगु आनंदविषे ब्रह्मलक्षणनूं कैसे जानता भया ।

उत्तर—आनंदतेही संपूर्णभूत उत्पन्न होते हैं॥ अर्थ एह स्त्रीपुरुषदे संयोगरूप आनंदते प्राणी उत्पन्न होते हैं ॥ अर विषेभोग है कारण जिसदा ॥ ऐसा जो आनंद तिसकरके प्राणी जीवते हैं ॥ अर सुषुप्ती अवस्थाविषे स्वरूप आनंदविषे लीन होजाते हैं ॥ जिसते सुषुप्तिअवस्थाविषे आनंदसें भिन्न किसीपदार्थका अनुभव नहि होता ॥ इसते सुषुप्तिअवस्थाविषे आनंदविषे संपूर्णप्राणी लीन होजाते हैं एह जानीता है ॥ इसप्रकार आनंदविषे ब्रह्मदे लक्षणनूं भृगु जानता भया ॥ इसकारणते आनंदरूप ब्रह्म है ॥ सो सुषुप्तिकालविषे सभनादे अनुभवकरके प्रतीत होता है॥इसते तिसविषे संशय नहिकीता चाहीदा इसप्रकार तैतिरीय उपनिषददी श्रुतिदे विचारकरके ब्रह्मदी आ-

नंदरूपता प्रतीत होती है ॥ अर छांदोग्यउपनिषदी श्रुतिदे वि-
चारकरकेभी ब्रह्मदी आनंदरूपता प्रतीत होती है ॥ तिसनूं श्र-
वण कर ॥ छांदोग्योपनिषदद‍े सतावें अध्यायविषे सनत्कुमा-
रांदा अर नारददा संवाद है ॥ तिसविषे ब्रह्मकों भूमा कथन की-
आ है ॥ तिसभूमादा एह लक्षण है ॥ जिसविषे स्थित होयाहो-
या आपनेते भिन्ननूं न देखता है ॥ न सुणता है ॥ न जानता है॥
सो भूमा है ॥ तांते एह सिद्धभया जो भूमाआनंद है ॥ जिसते
सुषुप्तिअवस्थाविषे स्थित हूयाहूया ॥ आपनेते भिन्न न देखदा
है ॥ न सुणता है न जानता है ॥ आकाशादिक भूतांदी उत्पति-
से प्रथम ॥ अर आकाशादिक पजांभूतांदा कार्य जेरजअंडज-
आदिक भूतांदी उत्पतिसे प्रथम ज्ञाताज्ञानज्ञेयरूप त्रिपुटीके
अभावते भूमा होता भया ॥ भूमादा अर्थ देशकालवस्तुदे परि-
छेदसे रहित परमात्मा ॥ ज्ञाताज्ञानज्ञेयरूप त्रिपुटी जगत्‌दी
उत्पतिसें प्रथम प्रलयावस्थाविषे है नहि ॥ एह वार्ता सर्व वेदां-
तोकरके प्रसिद्ध है ॥ अब ज्ञाता ज्ञानज्ञेयदे स्वरूपनूं श्रवण क-
र ॥ परमात्माते उत्पन्न भया जो है बुद्धिउपाधिक जीव वि-
ज्ञानमय जिसका नाम है सो ज्ञाता है ॥ अर मनविषे जो चै-
तन्य प्रतिबिंबभावकों प्राप्त भया है ॥ अर मनोमय है नाम जि-
सदा सो ज्ञान है ॥ अर शब्दस्पर्शादि पंचविषे ज्ञेय हैं ॥ सो प्रकट
हैं ॥ ज्ञाताज्ञान ज्ञेय तिन्नेकार्यरूप होनेते आपनी उत्पत्तिसें प्रथ-
म कारणसे भिन्न न होते भये ॥ जैसे घट उत्पत्तिसे प्रथम मृति-
कासें भिन्न नहि ॥ ज्ञाताज्ञानज्ञेय तिन्नादे अभाव होयांहोयां द्वै-
तसें रहित पूर्ण आत्मा अनुभव करीता है ॥ ज्ञानवानांने समा-
धि अवस्थाविषे अर सर्वजीवांने सुषुप्ति अर मूर्छा अवस्थाविषे

त्रिपुटीसें रहित आत्मादा अनुभव करीता है ॥ जिसतें सुषुप्तितें उठकरके पुरुष एह कहिता है ॥ मेरेकों इतनाकाल किसीवस्तु-का कुछ खबर न रही ॥ तातें द्वैतदे न देखनेवाला द्वैतसें रहित आत्मा सुषुप्तिअवस्थाविषे अर मूर्छाअवस्थाविषे सर्वकों अनु-भव होता है ।

शंका—होवो सुषुप्ति अर मूर्छा अवस्थाविषे द्वैतसे रहित अ-द्वैत आत्मादा निश्चय पर प्रसंगमें क्या आया ।

उत्तर—प्रसंगविषे एह आया ॥ आत्मासुषुप्ति अवस्थाविषे ज्ञाताज्ञानज्ञेयरूप परिच्छिन्नतादे कारणते रहित पूर्ण है ॥ तैसे जगतदी उत्पत्तिसें प्रथमभी परिच्छेददा कारण जो त्रिपुटी है ॥ तिसदे अभाव होनेते आत्मा पूर्ण है ।

शंका—होवो ब्रह्मदी पूर्णता पर ब्रह्मदी आनंदरूपता कै-से सिद्ध भई ।

उत्तर—जो भूमा है सो सुख है ॥ परिच्छिन्नवस्तुविषे सुख न-हि॥ ऐसे अन्वयव्यतिरेककरके भूमादी सुखरूपता सनत्कुमारांने नारदके तांई कथन करी है ॥ जो पिछे कथन कीया है द्वैतसें रहि-त भूमा सो सुखरूप हैं ॥ जिसतें अद्वितीयविषे दुखदे कार-णदा अभाव है ॥ अर देशकालवस्तुदे परिछेदवाली जो परिछिन्न वस्तु है ॥ तिसविषे सुख नहि ।

प्रश्न—नारदको सनत्कुमारांदा शिष्य होनेविषे की कारण है।

उत्तर—शोकदे दूरकरणेवासते नारद सनत्कुमारांदा शिष्य

होया है ॥ नारदकों शोक किउँ होता भया ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ नारद आत्मज्ञानसें रहितसी इसते अतिशोकको प्राप्त होता भया ॥पुराणांनूं अर अनेकप्रकार कियां शास्त्रांनूं पडकरके- भी नारदको वहुत शोक प्राप्त होता भया ।

शंका—वेदशास्त्रदे ज्ञानको शोकदे नाशदी कारणता प्रसिद्ध है ॥ सो नारदकों अतिशोकदा कारण किउँ होता भया ।

उत्तर—आत्मज्ञानते रहितको वेदशास्त्रदा पडना अतिशोकांदा कारण है ॥ जिसते अज्ञानीकों वेदशास्त्रदे पडनेते प्रथम तिन्नताप होते हैं ॥ अध्यात्म अधिभूतर अधिदैवइ अर वेदशास्त्रदे पडनेते चारताप होर होते हैं ॥ एक ग्रंथदे पाठदा पडना ॥ अर दूसरा भूल जाणेदा ताप ॥ तीसरा आपते अधिक पडेहोयेते मानदे भंगदाताप ॥ अर चौथा आपते थोडा पडेहोयेनूं देखकरके अभिमानरूप ताप एह चारोताप पडियांहोयां बहिर्मुखांकों अधिक होते हैं जैसे घृतदुधआदिक पदार्थ अरोगीकों पुष्टिकरणेवाले हैं ॥ पर रोगीको सगों रोगदे वधावनेवाले हैं ॥ तैसे वेदशास्त्रदा पडना विवेकीकों तापांदे अभावदा कारण है ॥ पर वहिर्मुख अविवेकीकों तापांदे वधनेदा कारण है ।

शंका—सर्वअर्थांदे जाननेवाले नारदकों इसप्रकार अधिक शोक होता भया ॥ एह तुसी किसते जानते हो ।

उत्तर—नारददे वचनते हम जानते हैं ॥ एह नारदका वचन है ॥ सनत्कुमारांके आगे ॥ हेभगवन्! वेदशास्त्रांनूं पडकरकेभी आत्मज्ञानते रहित जो मैंहां ॥ सो शोकनूं कर्ता हांमैंनूं शोकदे

पारनूं प्राप्त करो अर्थ एह जो मैंनूं शोकसे रहित करो ॥ इसप्रकार शोकदी निवृत्तिदे उपायनूं पुछियां होयां ॥ सनत्कुमार ऋषि नारदके तांई एह कहिते भये ॥ हे नारद! सुखरूपब्रह्मदाज्ञान शोकनिवृत्तिदा उपाय है ॥ सो ब्रह्म कैसा है भूमा है ॥ अर्थ एह देशकालवस्तुदे परिछेदसे रहित है।

शंका—एह जो तुसां कहिया परिछिन्नवस्तुविषे सुख नहि सो अयुक्त है ॥ जिसते पुष्पमालादिक विषयांते उत्पन्न होयेहोये सुख बहुत प्रकारके देखीते हैं।

उत्तर—पुष्पामालासें आदिलेकरके विषयांको दुखदे संबंधवाला होनेकरके दुःखरूपता मुनि सनत्कुमारको निश्चित है ॥ जैसे विषयवाले लड्डूयांको विषरूपता है ॥ तांते अल्पवस्तु विषे सुख नहि ॥ जिसते विषयांते उत्पन्न हूयाहूया सुख हजारों शोकांकरके युक्त है ॥ इसते दुखरूप है ॥ ऐसा आपने मनविषे मानकरके सनत्कुमार मुनीश्वर कहिते भये हैं नारदके तांई अल्पवस्तु विषे सुख नहि ॥ अल्पदा अर्थ परिछिन्न।

शंका—जेकर द्वैतविषे सुख नहीं ॥ तो मत होवे ॥ पर अद्वैत विषे भी सुख नहि॥ अर जेकर अद्वैतविषेसुख होवे॥ तो विषसुखदी न्याई प्रतीत होवे ॥ जिसते नहि प्रतीत होता ॥ इसते अद्वैतविषे सुख हैनहि ॥ अर जेकर कहें अद्वैतविषे सुख प्रतीत होता है तौ त्रिपुटी प्राप्तहोवेगी ॥ एक प्रतीत होने योग्य सुख ॥ दूसरा जिसको प्रतीत होता है सुख सो पुरुष ॥ तीसरी सुखदी प्रतीति॥ ऐसे त्रिपुटीके होयां अद्वैतका अभाव होवेगा।

उत्तर—मतहोवे अद्वैतविषे सुख ॥ जिसकारणते अद्वैत सुखरूप है ॥ इसते अद्वैत सुख नहि ॥

शंका—अद्वैत सुखरूप है इसविषे प्रमाण कौन है।

उत्तर—प्रमाणदा प्रश्न तौ परप्रकाशवस्तुविषे होता है ॥ अर सुखरूप अद्वैत स्वप्रकाश है ॥ तिसते तिसविषे प्रमाणका प्रश्न नहि वनता।

शंका—अद्वैत स्वप्रकाश है ॥ इसविषेभी क्या प्रमाण है।

उत्तर—अद्वैतदी स्वप्रकाशताविषे तेरावचन प्रमाण है ॥ जिसकारणते तूं प्रमाणसें विना अद्वैतनूं अंगीकारकरके तिसविषे सुख नहि वनता एह कहिता है ॥ इसकारणते अद्वैत स्वप्रकाश है।

शंका—मैंने अद्वैतदा अंगीकार नहि करीता ॥ किंतु तेरेकरके कथन कीया होया जो अद्वैत है ॥ तिसनूं फेर कथनकरके तिसविषे दूषण कथन करीता है॥ इसकारणते मेरे बचनकरके अद्वैतदी सिद्धि नहि।

उत्तर—जेकर तू अद्वैतनूं नहि मानता ॥ तौ हम तेरेसें पुछते हैं ॥ तिसका उत्तर कहो ॥ द्वैतदी उत्पतिसे प्रथम क्या होता भया अद्वैत होता भया अथवा द्वैत होता भया ॥ अथवा द्वैतअद्वैत दोनोसें भिन्न कोई तीसरा पदार्थ होता भया ॥ द्वैत अर अद्वैतसें भिन्नतां कोई तीसरापदार्थ लोकविषे प्रसिद्ध नहि देखीता अर द्वैतदी उत्पत्तिसे प्रथम द्वैत नहि वनता ॥ जिसते द्वैतदी उत्पत्तिसें प्रथम द्वैत हैनहि ॥ इसते द्वैतदी उत्पत्तिसें प्रथम अद्वैत तेंने अवश्य मानया चाहीये।

शंका—इसप्रकार अद्वैतदी सिद्धि युक्तिकरके होती है ॥ पर
अनुभवकरके तां अद्वैतदी सिद्धी नहि होती ।

उत्तर—जिसयुक्तिकरके अद्वैतदी सिद्धी होती है सो युक्ति
दृष्टांतके सहित है ॥ के दृष्टांतसे रहित है ॥ एह वार्ता तूं कहो ॥
तीसरा प्रकारतां कोई बनता नहि ॥ अर जेकर कहें युक्ति दृष्टां-
तसे रहित है ॥ तो ओहयुक्ति तां बहुत सुंदर तैंने जानी है ॥ जि-
सविषे न तां दृष्टांत है ॥ अर न अनुभव है ॥ अद्वैत सिद्धि यु-
क्तिकरके होती है ॥ अनुभवकरके नहि होती ऐसा कहिणे करके
अनुभवका अभावतां तैंनें आपअंगीकार कीया है ॥ अर यु-
क्ति दृष्टांतसें विना किसी अर्थनूं सिद्ध नहि कर्ती ॥ इसते एह
जो तेरा कथन है ॥ युक्ति दृष्टांतसें रहित है ॥ सो तेरीबुद्धिदी
निर्मलतानूं जनावता है अर्थ एह जो एह कहिना परममूर्खोंका
है ॥ अर जेकर कहे युक्तिदृष्टांत सहित है ॥ तो तेरेको अर मेरे-
कों निश्चित जो दृष्टांत है सो कहो ।

शंका—जेकर तूं दृष्टांत सुनया चाहिता है ॥ तो मैं अद्वैतनूं
दृष्टांतकरके सिद्ध कर्ताहां ॥ सो दृष्टांत श्रवण कर ॥ जगतदी उ-
त्पत्तिसे प्रथम जो प्रलयावस्था है ॥ सो द्वैतसें रहित है ॥ द्वैत-
दी प्रतीतिसें रहित होनेते ॥ सुषुप्तिदी न्याई ।

उत्तर—इसप्रकार अद्वैतको आपनी सुषुप्तिदे दृष्टांत करके
तूं सिद्ध कर्ता हैं अथवा परपुरुषकी सुषुप्तिके दृष्टांत करके तूं
सिद्ध कर्ता हैं ॥ जेकर कहें आपनी सुषुप्तिदे दृष्टांतकरके मैं
सिद्ध कर्ताहां ॥ तो तेरीसुषुप्ति परपुरुषके तांई प्रसिद्ध है नहि ॥

तांते आपनी सुषुप्तिविषे अद्वैतदी सिद्धीदेवासते होर दृष्टांत कहिया चाहीये ।

शंका—मेरी सुषुप्ति अद्वैत है ॥ द्वैतदी प्रतीतिते रहित होनेते ॥ परपुरुषकी सुषुप्तिकी न्यांई ।

उत्तर—तेरीबुद्धिदी वडी चतुराई है ॥ जिसते तूं आपनी सुषुप्तिकों तो अनुभव सिद्ध मानता नहि ॥ जिसते कहिता हैं ॥ अद्वैत अनुभव सिद्ध नहि ॥ अर परपुरुषकी सुषुप्तिकों जानता हैं ॥ जिसते तूं कहिता हैं परपुरुषकी सुषुप्ति द्वैतसें रहित है ॥ इसते तेरीबुद्धिदी वडी चतुराई है ॥ अर्थ एह जिसको आपनी सुषुप्ति नहि प्रतीत होती ॥ तिसको परपुरुषकी सुषुप्ति प्रतीत होती है ॥ एह कहिना परममूर्खांदा है ।

शंका—अनुमानते परपुरुषकी सुषुप्तिदी सिद्धि होती है ॥ सो अनुमान एह है ॥ परपुरुष सुषुप्तिको प्राप्त होयाहोया है ॥ प्राणांसंयुक्त होयांहोयां चेष्टाते रहित होनेते ॥ मेरी न्यांई ।

उत्तर—जेकर इसप्रकार तूं जानता हैं ॥ परपुरुषदी सुषुप्तिनूं आपणी सुषुप्तिदे दृष्टांतकरके ॥ तौ तेरेको आपनी सुषुप्तिदी स्वप्रकाशता निश्चय भई जोराजोरी ।

शंका—कैसे जोराजोरी मेरीसुषुप्तिकी स्वप्रकाशता निश्चय भई मेरेको ।

उत्तर—ऐसे तेरीसुषुप्तिदी स्वप्रकाशता तेरेकों निश्चय भई॥ तेरीसुषुप्तिदे ग्रहण करणवालीयां इंद्रियांभी नहि ॥ जिसते इंद्रियां अज्ञानविषे ॥ लीन होईयांहोईयां होतीयां है सुषुप्तिअव-

स्थाविषे ॥ अर तेरीसुषुप्तिविषे दृष्टांतभी कोई नहि ॥ तेरको अ-
र मेरको निश्चित परपुरुषकी सुषुप्ति तौ तेरको प्रतीत नहि हो-
ती ॥ इसतें परपुरुषकी सुषुप्तितें दृष्टांत नहि बनता ॥ तौभी
तिस आपनीसुषुप्तिको तूं मानता हैं ॥ तातें जो तेरी सुषुप्ति है
द्वैतसें रहित अद्वैतरूप ॥ तिसकों स्वप्रकाशता सिद्ध भई ॥ जि-
सतें स्वप्रकाश तिसवस्तुको कहीता है ॥ जो वस्तु ज्ञानदे सा-
धनातें विना प्रकाशे ॥ तातें तेरीसुषुप्तिको स्वप्रकाशता जोरा-
जोरी सिद्ध भई ॥ इस अर्थविषे एह अनुमान है ॥ स्वप्रकाश पर
प्रकाश विवाददाविषे जो सुषुप्ति है सो स्वप्रकाश होनेको योग्य
है ॥ ज्ञानदे साधनासें विना प्रकाशमान होनेते ॥ सांख्यशास्त्र-
वालियांके मतविषे आत्माकी न्याईं ॥ अर प्राभाकर मीमांस-
कके मतविषे ज्ञानकी न्याईं अर बौधांके मतविषे स्वात्मकी न्यां-
ईं ॥ इसप्रकार प्रत्यक्षदा दृष्टांतरूपताकरके कथन कीती जो सु-
षुप्ति ॥ तिसदी अद्वैतरूपता अर स्वप्रकाशता सिद्ध भई ।

शंका—होवोसुषुप्तिकों अद्वैतरूपता अर स्वप्रकाशता ॥
पर सुषुप्तिविषे सुख कैसे है एह कहो ।

उत्तर—सुखदे प्रतियोगी दुखदा सुषुप्तिविषे अभाव है ॥
तिसतें सुषुप्तिविषे सुख है ॥ सुखदुखदा प्रकाश अर अंधकारकी
न्यांईं परस्पर विरोध है ॥ जैसें जिसस्थानविषे अंधकारदा अभा-
व है तिसस्थानविषे प्रकाश होता है ॥ तैसें सुषुप्तिविषे दुखदे अ-
भाव होनेतें सुषुप्तिविषे सुख है।

शंका—सुषुप्तिविषे दुख नहि इसविषे क्या प्रमाण है ॥

उत्तर—सुषुप्तिविषे दुख नहि इसविषे श्रुति अर अनुभव प्रमाण है ॥ श्रुतिविषे एह किहा है ॥ जिसकारणते देहाभिमानसे दुखांदी प्राप्ति होती है ॥ तिसकारणते देहाभिमानरूप पूलंनू लंघकरके अंधः पुरुष अनंधः होजाता है ॥ अर्थ एह अंधेको सुषुप्तिअवस्थाविषे मैं अंधःहां एह अभिमान नहि होता॥अर शास्त्रां करके घायलहोये पुरुषको सुषुप्ति अवस्थाविषे मैंघायल होयाहां एह अभिमान नहि रहिता ॥ अर तापादिका करके युक्तपुरुषको सुषुप्तिअवस्थाविषे मैं तापीहां एह अभिमान नहि रहिता ॥ यद्यपि एह शरीर अंधःहोता है ॥ तौभी इसजीवको सुषुप्तिअवस्थाविषे मैं अंधःहां एह अभिमान नहि होता॥ इसते आदिलेकरके श्रुति देहाभिमानकरके होनेवाले अंधताआदिक दोषांनूं सुषुप्तिविषे निषेध कर्ती है ॥ अर सर्व दुखांदे अभावनूं सुषुप्तिविषे सभीलोक आपने अनुभवकरके जानते हैं ।

शंका—जिथे सुखदा अभाव है तिथे सुख है ॥ यह नियम नहि बनता ॥ जिसते लोष्टशिलाआदिकांविषे दुखभाव तौ है ॥ पर सुख नहि ।

उत्तर—दार्ष्टांत दृष्टांतदी विषमता है ॥ तांते तेरा दृष्टांतरूपवचन दार्ष्टांतदे अनुसारी नहि ॥ जिसते लोष्ट शिलाआदिकांविषे सुखदुःखदी प्रतीति नहि बनती ॥ अर सुखदुःखदे अभावदी प्रतीतिभी नहि बनती ॥ आपनेसे भिन्नविषे सुखदुःखकों मुखदी प्रसन्नता अर मुखदी दीनता करके जानीता है ॥ अनुमानद्वारा॥ एह दुखी है ॥ दीनमुख होनेते ॥ अर एह सुखी है ॥ प्रसन्न मुख होनेते देवदतकी न्यांई ॥ अर लोष्टशिलाआदिकांविषे तौ सुखदुः

खदा जानना नहि बनना ॥ जिस्तें कोठसिलाआदिकांदे सुख-
दी दीनता अर प्रसन्नता हैं नहि ॥ इसतें कोठसिलाआदिकांविषे
पे दुखदा अभाव निश्चय नहि होना ॥ अर आपने सुखदुःखतों
अनुमानसें नहि जानीते ॥ किंतु आपने अनुभवकरके जानीते
हैं ॥ तांते आपने सुखदुःखदी विद्यमानता प्रत्यक्षकरके जानी-
दी है जैसे॥तैसे आपनेविषे सुखदुःखदा अभावभी प्रत्यक्षकरके
जानीता है ॥ अनुमानकरके नहि जानीता तांते सुषुप्तिविषे
दुखदा अभाव आपने अनुभवकरके जानीता है ॥ सुषुप्तिविषे
सुखविरोधी दुखदे अभावतें सुख है ॥ इसविषे बाधक कोई न-
हि ॥ अर्थ एह सुखदी विद्यमानताविषे विघन कोई नहि ॥ ऐसा
मानयां चाहीये ॥ अर सुषुप्तिदेवासतें कोमलसेजासिराणाआ-
दिक सुखदे साधनांनूं पुरुप अतियत्नकरके अकठा कर्ता है ॥
सो संपादन तद बने जेकर सुषुप्तिविषे सुख होवे तां अर जेकर
सुषुप्तिविषे सुख न होवे तों सुखदे साधनादा संपादन पुरुष कैसे
करे ॥ सुषुप्तिदेवासतें बहुते धननूं खर्चकरके अर शरीरदी खेच-
लनूं संहारकरके कोमलसेजा कोमलसराणा इसतें आदिलेकरके
सुखदे साधनानूं पुरुष कैसे संपादन करे ॥ जेकर सुषुप्तिविषे
सुख न होवे तां तांते अर्थापति प्रमाणकरके सुषुप्ति में सुख
सिद्ध भया ।

शंका—एह अर्थापति नहि बनती ॥ जिसतें कोमल सेजा-
आदिकांदा संपादन दुखदे नाशवासतें होता है ।

उत्तर—जिसको प्रथम दुःख है नहि ॥ ओहभी पुरुष सेजा-
आदिकांदा संपादन कर्ता है ॥ इसतें दुःखनिवृत्तिवासतें सेजा-

आदिकांदा संपादन नहि होता ॥ तांते रोगीपुरुष दुःखदे नाशवासते सेजाआदिकांदा संपादन कर्ता है ॥ एह कहिना भ्रमसे है।

शंका—एह जो तुसां कथन कीया सुषुप्तिविषे जो सुख है तिसदे वासते सेजाआदिक संपादन पुरुष कर्ता है ॥ इसकहिनेसे सुषुप्तिकालदे सुखको साधन जन्मता आई ॥ तांते सुषुप्तिदा सुखविषे सुख भया॥ तांते तिससुखको आत्मरूपता नहि बनती।

उत्तर—निद्रादी प्राप्तिसे प्रथम जो सुख है ॥ सेजाविषे शयन कीतयां होयां पुरुषकों प्राप्त भया ॥ सो सेजाआदिकांकरके जन्य है ॥ अर निद्राके प्राप्त होयांहोयां सुख है सो सेजाआदिकांते उत्पन्न नहि होता ॥ जिसते सुषुप्तिअवस्थाविषे सेजाआदिकांदी प्रतीति नहि होती।

शंका—सुषुप्तिविषे जेकर नित्य सुख होवे तौविषे सुखदी न्यांई तिसदा अनुभव किउँ नहि होता।

उत्तर—विषेसुखदे अनुभवकरणेवाले प्रमातादी सुषुप्तिकालमैं सुखमैं लिता होती है ॥ तिसते विषे सुखदी न्यांई सुषुप्तिकालदे सुखदी प्रतीति नहि होती ॥ निद्रादी प्राप्तिते प्रथमकालविषे सेजाआदिजन्य सुखदे अनुभवकरणेविषे तत्पर होईहोई है बुद्धि जिसकी ॥ ऐसा जो जीव सो निद्राके प्राप्त होयांहोयां परमसुखविषे लीन होजाता है ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे करीते जो हैं अनेकप्रकारके व्यापार ॥ तिन्नाकरके थकिया होया जीव कोमल सेजा आदिकांविषे शयननूं कर्ता है ॥ तिसते सुखविरोधी जो व्यापारजन्य दुख सी तिसदे निवारण होयांहोयां स्वस्तिचित्त

होकरके सेजाआदिविषे नन्यसुखनूं अनुभव कर्ता है जीवविषे सुखदा स्वरूप क्या है ॥ ऐसा पुछे तां श्रवण कर ॥ जिसविषेदी इसनूं प्राप्ति नहि होती ॥तिसविषेद निमित्त पुरुषको दुख प्राप्त होता है ॥ तिस दुखदे दूरकरणेवासते कोमल सेजाआदिकांविषे स्थित जो पुरुष ॥ तिसदी बुद्धिदी वृत्ति अंतरमुख होति है ॥ तिस अंतरमुखबुद्धिदी वृत्तिविषे आत्मादा स्वरूप जो है आनंद ॥ सो प्रतिबिंबभावको प्राप्त होता है ॥ बुद्धिदी वृत्तिको आत्मादे सन्मुख होयांहोयां ॥ जैसे मुखदेसामने दर्पणविषे मुखदा प्रतिबिंब पडता है ॥ एह जो अंतरमुख वृत्तिविषे सुखरूप आत्मादा प्रतिबिंब है सो विषयानंद है ॥ कोमल सेजाविषे स्थितिसमेंभी त्रिपयानंदनूं अनुभव करके जीव थकेवेंको प्राप्त होता है ॥ जिसते तिससमेंभी त्रिपुटी निवृत नहि होती ॥ एक तो अनुभवकरणे वाला अर एक अनुभव ॥ अर एक अनुभवकरणेयोग्य विषयसुख ॥ इस त्रिपुटीदे देखनेते उत्पन्न भया जो थकेवां तिसदे दूरकरणेदे वासते ॥ जीव आनंदरूप ब्रह्मविषे धावन कर्ता है ॥ तिस आनंदरूपब्रह्मविषे प्राप्त होयकरके ब्रह्मकेसाथ एकतानूं प्राप्त होयाहोया सुषुप्तिविषे स्थित ब्रह्मानंदरूप होजाता है ॥ जैसे आकाशते गिडी होई जलकी बूंद समुद्रविषे समुद्ररूप होजाती है॥इसअर्थविषे छांदोग्योपनिषददी श्रुतिभी प्रमाण है ॥ तिसविषे उद्दालकमुनीश्वरने आपने पुत्र श्वेतकेतुके प्रति एह कथन कीया है हेसौम्य जीव सुषुप्तिकालविषे सत्यरूप परमात्माके साथ अभेद होजाता है ॥ एह जो कथन कीता है अर्थ तिसविषे बहुते बुलबुलसें आदिलेकरके दृष्टांत श्रुतियांने कथन कीते है ॥ बुलबुलसें आदिलेकरके पंजां दृष्टांतांकरके सुषुप्त्यवस्थाविषे आ-

नंदकी सिद्धि करी है ॥तांते सुषुप्तिअवस्थाविषे सुख नहि कहिना अयुक्त है ॥ सो पंजदृष्टांत एह हैं॥एक बुलबुलता ॥ दूसरा बाज ॥ तिसरा कुमार ॥ चौथा चक्रवर्तीराजा ॥ पांजवां ब्रह्मज्ञानी ॥ तिन्ना दृष्टांतांविच्चों प्रथम जो बुलबुलका दृष्टांत है ॥सो छांदोग्योपनिषदृदी श्रुतिविषे कथन कीया है ॥ तीस छांदोग्यदी श्रुतिदे अर्थनूं श्रवण कर ॥ जैसे सूत्रकरके बधीहोयी बुलबुल दसो दिशावल उडर्ती है॥सो आपना जो आश्रय है हथ अथवा किली॥तिसते भिन्नस्थानविषे स्थितिको नहि प्राप्त होती ॥ तौ फेर भटकभटक के आपने बंधनका स्थान जो है हथ अथवा किली तिसको आश्रय कर्ती है ॥ तैसे हे सौम्य!जीवदी उपाधिमनभी दसोदिशाविषे भटकता है ॥ पर परमात्मासे विना किसीस्थानविषे विश्रामको नहि प्राप्त होता ॥ तिसते परमात्मानूं आश्रय कर्ता है ॥ जिसकारणते हे सौम्य मन परमात्माविषे बंधनको प्राप्त हूयाहूया है ॥ एह तिसका दार्ष्टांत है ॥ जीवदी उपाधि जो मन है॥ सो पुण्यपापदा पाल जो है सुखदुःख तिसदे अनुभववासते॥ जाग्रत्स्वप्नविषे तँहांतँहां भ्रमकरके जाग्रत्स्वप्नविषे भोगदेनेवाले कर्मदे क्षीण होयांहोयां ॥ मन आपने कारण अज्ञानविषे लीन होजाता है ॥ अर मनके लय होयांहोयां॥ मनरूप उपाधिसे रहित हूयाहूया जीव परमात्मा हो यजाता है ॥ अर दूसरा दृष्टांत वाजदा है सो बृहदारण्यक उपनिषदविषे कथन कीया है ॥ तिसका अर्थ एह है॥जैसे आकाशविषे सबनीपासीं एदरओदर उडिदाफिरदा जो बाज है॥ सो थकया होयाहोया थकेवेंदे दूरकरणेदेवासते आपने आलनेदी अभिलाषावाला होयाहोया परांनूं अकठयांकरके ध्यायकरके आलनेनूं प्राप्त होता है ॥ तैसे जीव जो

निद्राभासरूप सो मसी जाग्रत्स्वप्नविषे
है मनउपाधिवाला थकेंवेदे दुःख-
भटकता होया थकेवको प्राप्त होता है ॥ तिस थकेवदे दूरक-
रणेदेवासते सोनेके निमित्त ब्रह्मानंददी अभिलाषावाला है-
याहूया हृदयाकाशनूं धावन कर्ता है ॥ सो कैसा सोता है ॥
जिसविषे जाग्रतदे पदार्थांदी कामनानूं नहि कर्ता ॥ अर
स्वप्नदे पदार्थांनूं देखता नहि ॥ कुमार अर चक्रवर्ती राजा
अर ब्रह्मवेत्ता ॥ एह तिन्न दृष्टांत बृहदारण्यक उपनिषदविषे
बालाकी अर अजातशत्रुदे प्रसंगविषे कथन कीते हैं ॥ सो अ-
वण कर ॥ बहुत छोटा जो बालक है पंजचारमहीनेका सो गल-
तोरी मातादे दुधनूं पीकरके ॥ कोमल सेजाविषे स्थित रागद्वे-
षादिकांदे अभावते हसता होयाहोया ॥ एक आनंदस्वभाववा-
ला होता है जिसते तिसको मैं मेरा ज्ञान नहि होता ॥ अर
जैसे चक्रवर्ती राजा अतिनिर्मलबुद्धिवाला संपूर्ण मनुषांदे भो-
गांकरके युक्त मनुषकों प्राप्त होने योग्य संपूर्णपदार्थ जिसनूं प्रा-
प्त भये हैं ॥ सो रागद्वेषसे रहित आनंदरूप स्थित होता है ॥
अर जैसे कृतकृत्यतानूं प्राप्त हूयाहूया ज्ञानी ॥ ब्रह्मानंददी पर-
म अवधीरूप जीवन्मुक्तिनूं प्राप्त हूयाहूया ॥ परमआनंदस्वरूप
हूयाहूया स्थित होता है ॥ तैसे सुषुप्ति प्राप्त होयाहोया जीव प-
रम आनंदरूप होकरके स्थित होता है ।

शंका—बालकआदिक तिन्नदृष्टांत किउँ कीते ॥ अर होर
दृष्टांत किउँ न कीते ।

उत्तर—जगतविषे तिन्नाकों सुख होता है ॥ अविवेकीयां-
विषों बहुत छोटेबालकको सुख होता है॥ अर व्यवहारी विवेकी-

यांविखों चक्रवर्तीराजानूं सुख होता है ॥ अर ब्रह्मविवेकीयांवि-
च्चों आनंदरूप अद्वितीयआत्मादे साक्षात्कारवाला जीवन्मुक्त
सुखरूप है ॥ एन्ना तिन्नासें भिन्न संपूर्णजीव सदाहि रागद्वेषा-
दिकांकरके दुखी हैं ॥ इसते सुखदी प्राप्तिरूप सुषुप्तिविषे एह
तिन्न दृष्टांत कथन कीते हैं ॥ एन्ना तिन्नासें भिन्न संपूर्ण जीवां-
को दुःखी जानकरके तिनका दृष्टांत नहि दीआ ॥ जैसे बालक-
आदिक आनंदविषे तत्पर होते हैं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे ब्र-
ह्मानंदविषे तत्पर होयेहोये जीव ॥ जाग्रत्स्वप्नके पदार्थ जो हैं
अंतरबाह्यरूप तिनको नहि जानते ॥ जैसे कामीपुरुष अतिपि-
आरोस्त्रीके कंठकेसाथ लगाहोया गलीयांदा वृतांत अर घरदे
कार्य एन्नानूं नहि जानता ॥ तैसे परमात्माकेसाथ अभेद हूया-
हूया जीवभी नहि जानता॥ जाग्रत्स्वप्नदे पदार्थांनूं ॥ सुषुप्तिअ-
वस्थाविषे जीव ब्रह्मानंदरूप होकरके स्थित होता है ॥ इसविषे
युक्ति बृहदारण्यक उपनिषददी श्रुति कहिती है ॥ सुषुप्तिअवस्था
विषे जीवदी ब्रह्मरूपताही शेष रहिती है ॥ जिसते जीवदी जीव-
ता ओत्थे नहि प्रतीत होती जीवदीजीवता किया है ॥ परिछि
न्नाभिमाननूं करणा ॥ मैं पिताहां मैं पुत्रहां ॥ मै ब्राह्मणहां ॥ मैं
राजाहां ॥ मैं दाताहां ॥ इसते आदिलेकरके परिछिन्नाभिमान
सुषुप्तिविषे नहि रहिता तिसते अपरिछिन्नब्रह्मरूप होजाता है।

शंका—सुषुप्तिविषे सर्वसंसारकी निवृती तों नहि होती ॥
जिसते मैं पिताहां इसते आदिलेकरके अभिमानदे अभाव होयां
होयांभी ॥ मैं सुखीहां यह अभिमान होता है ॥ सो अभिमानक-
रणा जीवदा धर्म है ॥ तांते सुषुप्तिविषे जीवदी जीवरूपता नहि
दूर होती।

उत्तर—सुषुप्तिविषे सर्वसंसारकी निवृत्ति होती है जिसते सुषुप्तिविषे देहाभिमान नहि होता॥ मैं सुखीहां यह अभिमान तां देहाभिमान होवे तो होता है ॥ देहाभिमानते विना नहि होता॥ जैसे पिता पुत्ररूपतादा अभिमान देहाअभिमानसे बिना नहि होता ॥ तांते सुषुप्तिविषे मैं सुखी हां यह अभिमान है रूप जिसका ऐसा संसार नहि रहिता॥ इस अर्थविषे बृहदारण्यक उपनिषददी श्रुति प्रमाण है ॥ तिसका अर्थ यह है ॥ सुषुप्तिकालविषे देहाभिमानदे अभाव होयांहोयां ॥ संपूर्णशोकीनूं तरजाता है ॥ जो मनविषे स्थित से तात्पर्य यह ॥ जाग्रतस्वप्नावस्थाविषे परिछिन्नभिमानकरके शोकांकी नदी बगती सी ॥ तिसनदीको सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राप्त होयांहोयां जीव तर जाता है ॥ अर्थ एह जो किसीप्रकारका परिछिन्नाभिमान नहि होता ॥ परिछिन्न अभिमानही सुखदुखदा कारण है ॥ तिसके अभाव होयांहोयां जीवकी जीवता नहि रहिती ॥ जीव ब्रह्मरूप होजाता है।

शंका—यह जो कथन कीतीयां हैं तुसां अनेक श्रुतयां तिन्नाकरके सुषुप्तिअवस्थाविषे सुखदी प्राप्ति साक्षात् नहि प्रतीत होती ॥ जिसते शोकतरणादिरूप अर्थ साक्षात् प्रतीत होते हैं ॥

उत्तर—साक्षात् सुखदी प्राप्ति कथन करणेवाली कैवल्योपनिषददी श्रुति है ॥ तिसदे अर्थनूं श्रवण कर ॥ सुषुप्तिकालविषे जाग्रत्स्वप्नरूप प्रपंचदे लीन होयांहोयां ॥ अर्थ यह अज्ञानकेसाथ अभेदको प्राप्त होयांहोयां ॥जीव सुखरूप ब्रह्मको प्राप्त होता है।

शंका—जेकर, सुषुप्तिविषे जीवसुखरूपब्रह्मनूं प्राप्त होता है॥ तौ जीवकी विदेहमुक्ति होई चाहीये॥जिसते परिछिन्नाभिमानदा अभाव अर आनंदरूप ब्रह्मकी प्राप्तिका नाम विदेहमुक्ति है ।

उत्तर—तमोगुण प्रधान अज्ञानकरके आवरिया होया जीव सुखरूप ब्रह्मनूं प्राप्त होता है ॥ अर विदेहमुक्ति तौ आवरण भंगसें होती है ॥ तांते सुषुप्तिको प्राप्त हूयाहूया जीव विदेहमुक्ति को नहि प्राप्त होता ॥ एह जो अर्थ श्रुतीया कथन कर्तीयां हैं ॥ सो परोक्ष नहि ॥ किंतु सभना जीवांके अनुभवकरके सिद्ध है ॥ जिसकारणते सुषुप्तिते उठया होयाहोया पुरुष एह कथन कर्ता है ॥ सुषुप्तिविषे इतनाकालपर्यंत मैं सुखरूप होयाहोया सोता भया ॥ अर कुछ न जानताभया ॥ सो तिसका कहिणा ज्ञानसें विना नहि होता ॥ तांते सुषुप्तिविषे सुख है ॥ अर अज्ञान है ॥ एह वात मानणी ॥ तांते सुषुप्तिविषे सुख सभनादे अनुभवकरके सिद्ध भया ।

शंका—सुषुप्तिविषे सुख अर अज्ञानका कथन करणेवाला जो वचन है तिसका कारण ज्ञान स्मृतिरूप है अर स्मृतिप्रमाण नहि होती तांते स्मृतिरूप ज्ञानद्वारा सुषुप्तिविषे सुख नहि सिद्ध होता ।

उत्तर—स्मृतिरूप ज्ञान अप्रमाण है तिसकरके किसवस्तुकी सिद्धि नहि होती ॥ एहवार्ता यथार्थ है ॥ पर स्मृतिदा कारण जो अनुभव है सो प्रमाण है ॥ तिसकरके सुषुप्तिविषे सुख सिद्ध होता है ॥ स्मृतिदा कारण अनुभव होता है ॥ जिसकारणते

जिसवस्तुका अनुभव कीता है॥ तिसीदी स्मृति होती है॥जिस- दा अनुभव नहि कीया तिसदी स्मृति नहि होती ॥ इसकारणते स्मृतिदा कारण अनुभव सुपुप्तिअवस्थाविषे होता है ॥ तिस अनुभवकरके सुपुप्तिअवस्थाविषे सुख सिद्ध होता है।

शंका—सुपुप्तिविषे अनुभव तां नहि बनता ॥ जिसते सुपु- प्तिविषे मन सहित संपूर्ण ज्ञानइंद्रियां लीन होइयां होतीयां है।

उत्तर—सुपुप्तिविषे सुखदे अनुभवदा साधन नहि होता॥ए- ह कहिता है अथवा अज्ञानदे अनुभवदा साधन नहि होता॥एह क- हिता हैं ॥ सुख अनुभवदा साधन नहि रहिता तां न रहो॥जिसते सुपुप्तिअवस्थाविषे जो सुख है ॥ सो स्वप्रकाश चैतन्यरूप है ॥ इसते उसको अनुभवदे साधनादी अपेक्षा नहि ॥ अर सुपुप्ति- कालविषे जो अज्ञान हैं ॥ सुखदे आवरण करणेवाला ॥ सो स्व- प्रकाश चैतन्यरूप सुखकरके सिद्ध होता है

शंका—सुपुप्तिविषे जो सुख है ॥ तिसदी स्वप्रकाशतादे हो- यांहोयांभी ॥ तिसको ब्रह्मरूपता नहि बनती ॥ जिसते सुपुप्ति- विषे जो सुख है तिसदी ब्रह्मरूपताविषे प्रमाण कोई नहि।

उत्तर—सुपुप्तिविषे जो सुख है ॥ तिसदी ब्रह्मरूपता विषे बृहदारण्यक उपनिषददी श्रुति प्रमाण है सो श्रुति आनंदनूं ब्र- ह्मरूप कहिती है ॥ अर अनुभवको ब्रह्मरूप कहिती है ॥ इसते स्वप्रकाश सुख ब्रह्मरूप है ॥ ब्रह्मते भिन्न नहि।

शंका—सुपुप्तिते उठकरके जिसपुरुषनूं सुखदा स्मरण हो- ता है ॥ तिसीको तिसका अनुभव कहिया चाहीये॥जिसते अनु-

भव बिना स्मरण नहि बनता ॥ अर एकपुरुषदी अनुभव कीती होई वस्तुको दूसरा पुरुष स्मरण नहि कर्ता ॥ सुषुप्तिते उठयां-होयां विज्ञान मैं नाम जीवनेसुख अर अज्ञानका स्मरण करीता है ॥ इसते सुख अर अज्ञानदा अनुभवभी तिसीको कहीआ चाहीये ॥ सो तौ विज्ञानमय सुषुप्तिविषे रहिता नहि ॥ तांते सुख अनुभव सुषुप्तिविषे नहि बनता ।

उत्तर—विज्ञानमयदी उपाधि विज्ञानमन इंद्रियां बुद्धिरूप सुषुप्तिविषे लीन होजाती है तिसते विज्ञानमयको लीन कहीता है ॥ अर उपाधिसे विलक्षण चैतन्यरूपताकरके अनुभव कर्ता है ॥ अर उपाधि अज्ञानविषे लीन होजाती है॥अर अज्ञान सुते-उठे पुरुषदे इस स्मरणते जानीता है ॥ जो एह स्मरण कर्ता हैं मैं सुषुप्तिविषे कुछ न जानता भया ॥ ऐसा जो अज्ञान है तिस अज्ञानविषे प्रमाता विज्ञानमय अर प्रमाण मनोमय दोनो लीन होजाते हैं ॥ इसते विज्ञानउपाधिक विज्ञानमय प्रमाताको सुषुप्ति-अवस्थाविषे सुख अर अज्ञानका अनुभव नहि होता ॥जिसकारणते विज्ञानमय अर मनोमयदीलीनता अवस्थादा नाम निद्रा है।

शंका—जेकर विज्ञानमय अर मनोमयकी लीनताका नाम निद्रा है ॥ तौ निद्रा मैं विज्ञानमय अर मनोमय लीन भये एह कहा चाहोये ॥ तुम कैसे कहितेहो विज्ञानमय अर मनोमय अज्ञानविषे लीन होते हैं ।

उत्तर—निद्राका नामही अज्ञान है ॥ ऐसे ज्ञानवान् कथन कर्ते हैं ॥ तांते अज्ञानविषे लीन होते हैं ॥ विज्ञानमय अर मनोमय ॥ एह कहना यथार्थ है ।

शंका—जेकर सुषुप्तिअवस्थाविषे विज्ञानमय अज्ञानविषे लीन होजाता है ॥ तो सुषुप्तिकालविषे जो सुख अर अज्ञान है ॥ तिसदे अनुभवकालविषे अविद्यमान जो विज्ञानमय ॥ सो जाग्रतअवस्थाविषे सुख अर अज्ञाननूं स्मरण कैसे करेगा ।

उत्तर—लयावस्थाविषेभी विज्ञानमयदे स्वरूपदा अभाव नहि होता ॥ उपाधिमात्रदा लय होता है ॥ अर दूसरी उपाधिदा ग्रहण होता है ॥ तातें विलयावस्थारूप उपाधिवाला ॥ जो आनंदमयरूप है ॥ तिसकरके अनुभव होता है ॥अर विज्ञान नाम जो सघनउपाधि है ॥ तिसकरके स्मरण कर्ता है ॥ तातें एककोही स्मरण अर अनुभव दोनो बनते है ॥ उपाधि भेदकरके ॥ जैसे अग्निआदिकांदे संयोगकरकेपघरीया होया घृत पिछों वडी पवनादिकांदे संबंधकरके सघन होजाता है ॥ तैसे जाग्रतस्वप्नविषे भोगदेनेवाले कर्मदे नाश होनेते निद्रारूपताकरके लीन हूयाहूया जो अंतःकरण है॥ सो फेर भोगदेनेवाले कर्मांदे संबंधते विज्ञानमयरूपताकरके सघनतानूं प्राप्त होजाता है ॥ अंतःकरण जाग्रत्स्वप्नविषे ॥ एसते विज्ञानउपाधिवाला आत्माभी विज्ञानमय घन कहीता है ॥ अर सोईआत्मा विज्ञानरूप उपाधिदी लीनताकरके आनंदमय कहीता है ॥ सुषुप्तिदी प्राप्तिते प्रथम क्षणविषे जो अंतरमुख है बुद्धिदी वृत्ति ॥ सुखरूपआत्मादेप्रतिबिंबसहित सो बुधिदी वृत्ति आनंदंदे प्रति बिंबसहित लीन होजाती है जबतब तिसकानाम आनंदमय कथन करीता है॥ तिसआनंदमयकोही जाग्रतकालविषे स्मरण कारणता है॥ इसवास्ते सुषुप्तिकालमें सुख अनुभव होता है॥ सो जिसप्रकार होता है ॥ सो

श्रवण कर ॥ सुखदे प्रतिबिंबसहित जो अंतरमुख होयीहोयी बुधिदी वृति है ॥ तिसकरके उत्पन्न भये जो सुखदे संस्कार तिन्ना संस्कारांसहित अज्ञान है उपाधि जिसको ॥ ऐसा जो आनंदमय है ॥ सो सुषुप्तिअवस्थाविषे आपना स्वरूप जो ब्रह्मसुख है ॥ तिसनूं चिदाभास सहित अज्ञाते उत्पन्न होईयांहोईयां जो वृतीयां हैं सुखादिकांनूं विषेकरणेवालीयां ॥ सत्वगुणदा परिणामरूप तिन्नाकरके ब्रह्मसुखनूं अनुभव कर्ता है ।

शंका—जेकर सुषुप्तिविषे सुखनूं अनुभव कर्ता है अज्ञानदीयां वृतीयांकरके तो सुषुप्तिविषे मैं सुखनूं अनुभव कर्ताहां एह अभिमानभी होया चाहिये ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे मैं सुखनूं अनुभव कर्ताहां ॥ यह अभिमान होता है ।

उत्तर—सुषुप्तिअवस्थाविषे जिन्ना अज्ञानदीयां वृतियांकरके अनुभव कर्ता है ॥ सो अज्ञानदीयां वृतियां बुद्धिदीयां वृतियांते सूक्ष्म हैं ॥ इसते सुषुप्ति अवस्थाविषे सुखदा अभिमान नहि होता ॥ अर जाग्रत्अवस्थाविषे बुद्धिदीयां वृतीयांकरके सुखदा अनुभव कर्ता है ॥ सो बुद्धिदीयां वृतीयां अज्ञानदीयां वृतीयांते स्थूल हैं ॥ इसकारणते जाग्रत्अवस्थाविषे सुखदा अभिमान होता है ॥ ऐसा वेदांत सिद्धांतदे पारगामी ब्रह्मवेता कथन कर्ते हैं ।

शंका—सुषुप्तिअवस्थाविषे सूक्ष्म अज्ञानदीयां वृतीयांकरके ब्रह्मानंदनूं आनंदमय भोक्ता है ॥ इसविषे की प्रमाण है ।

उत्तर—मांडूक्योपनिषद अर नरसिंहतापनीयोपनिषदांदीयां श्रुतीयांविषे प्रकट कथन कीया है ॥ सुषुप्ति अवस्थाविषे आ-

नंदमय ब्रह्मानंदनूं भोक्ता है सो श्रुतीयांदे अर्थनूं श्रवण कर ॥सुषुप्ति है स्थान जिसका ऐसा जो आनंदमय ॥ सुषुप्ति अवस्थादा अभिमानी॥सो ब्रह्मके साथ एकतानूं प्राप्त होयाहोया॥ प्रज्ञानघनतानूं॥प्राप्त हूयाहूया ॥चैतन्यदे प्रतिबिंबसहित अज्ञानदीयां वृत्तीयांकरके आनंदनूं भोगता है ॥ अब इस श्रुतिदे अर्थनूं विस्तारसें श्रवण कर ॥ वास्तवसे एह आत्मा ब्रह्मरूप है ॥ सो जाग्रत्‌अवस्थाविषे विज्ञानमयरूप होता है ॥ मनोमय प्राणमय नेत्रमय श्रोत्रमय पृथ्वीमय जलमय पवनमय आकाशमय तेजोमय अतेजोमय काममय अकाममय क्रोधमय अक्रोधमय धर्ममय अधर्ममय तत्‌मय यत्‌मय एतत्‌मय इदंमय अदोमयरूप होता है ॥ अर जैसे कर्ता है अर जैसेविचरता है ॥ तैसेही रूपको पुरुष प्राप्त होता है ॥ अर पुण्यकर्मांदे करणेवाला पुण्यवान् होता है ॥ अर पापकर्मांदे करणेवाला पापी होता है ॥ इसते आदिलेकरके श्रुतीयांने कथन कीते जो रूप तिन्नाकरके युक्त होता भया ॥ सो आत्मा सुषुप्ति अवस्थाविषे विज्ञानमय आदिक उपाधीयांदे लय होने करके ॥ एकाकारतानूं प्राप्त होजाता है ॥ जैसे पोसे होयेदाने आटारूप एकतानूं प्राप्त होजाते हैं ॥ अब प्रज्ञानघन शब्ददा अर्थ श्रवण कर ॥ जाग्रत् अवस्थाविषे घटपटआदिक पदार्थांदे ग्रहण करणेवालीयां जो बुद्धिदीयां वृत्तीयां हैं ॥ तिन्नाकानाम प्रज्ञान है ॥ सो प्रज्ञानरूप बुद्धिदीयां वृत्तीयां सुषुप्तिकालविषे घटादिकविषयांदे अभाव होयांहोयां घन होजातीयां हैं ॥ जिसप्रकार बर्फदीयां बूंदां शीतल जलवाले स्थानविषे घन होजातीयां हैं ॥ जो एह वेदांतांविषे कथन करीता है ॥ साक्षीरूप प्रज्ञान घनता ॥ तिसनूं शास्त्रदे संस्कारांसें

रहित लोक अर शास्त्रवालियांविखों नैयायिक ॥ दुखाभाव कथन करते हैं ॥ जिसकारणते संपूर्ण दुखवृत्तीयां लय होजातीयां हैं ॥ अब चेतोमुख शब्ददे अर्थनूं श्रवण कर ॥ अज्ञानदीयां वृतीयांविषे प्रतिबिंबभावनूं प्राप्त होया जो चैतन्य है ॥ सो सुषुप्तिकालविषे जो ब्रह्मानंददा भोगना तिसविषे मुखदी न्यांई साधन है।

शंका—सुषुप्तिअवस्थाविषे आनंदमय रूपताकरके ॥ जीव ने जेकर ब्रह्मानंद भोगीता है ॥ तौ तिसब्रह्मानंदनू त्याग करके दुखांदे स्थान जाग्रत्नूं किउं प्राप्त होता है।

उत्तर—पुण्यपापकर्मरूप फासीकरके वधाहोया जीव ॥ पुण्यपापकरके प्रेरिया होया ब्रह्मानंदनूं त्यागकरके ॥ जाग्रत् अथवा स्वप्नअवस्थानूं प्राप्त होता है।

शंका—एह किसते तुसाने जानया पुण्यपापरूप कर्मकरके प्रेरिया होया जीव साक्षात् कीते होये ब्रह्मानंदनूं त्यागकरके जाग्रत् अथवा स्वप्नविषे आवता है।

उत्तर—जन्मांतरांविषे कीते जो हैं कर्म तिनके संबंधते जीव सुषुप्तिते जागता है ॥ ऐसा कैवल्योपनिषदविषे कर्मजन्य जाग्रत्अवस्था कथन कीती है ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे ब्रह्मानंदनूं जीवने अनुभव कीया है ॥ इसविषे हेतु श्रवणकर ॥ सुषुप्तिते जागेहोये पुरुषको कुछककाल ब्रह्मानंददे संस्कार रहिते हैं ॥ जिसकारणते विषयांदे संबंधसें विना सुखी कुछक काल चुपकीया रहिता है ॥ इसते जानीता है जो ब्रह्मानंददे संस्कार इसकों हैं ।

शंका—जेकर ब्रह्मानंददे संस्कारांकरके सुषुप्तिते उठयाहो-

सो पुरुष तूष्णीं रहिता है तौ सदाही तैसे तूष्णीं किउं नहि रहिता।

उत्तर—पुण्यपापरूप कर्मादा प्रेरियाहोया अनेकप्रकारके दुखांनूं चिंतन कर्ता होया॥होलीहोली ब्रह्मानंदनूं भुलजाता है॥ संपूर्णलोक सुषुप्तिकालमें ब्रह्मानंद होता है॥ इसविषे इसकारणतेंभी विवाद नहि कींता चाहीता॥ जिसकारणते दिनदिनविषे निद्रादीप्राप्तिसे प्रथम अर पाछे मनुष्यांदी ब्रह्मानंदविषे प्रीति होती है॥ जेकर ब्रह्मानंदविषे प्रीति न होवे॥ तौ निद्रादेवासते कोमल सेजाआदिकांनूं किउं संपादन करें लोक॥ अर निद्रादे अंतविषे सुषुप्तिविषे प्रतीत भया जो ब्रह्मानंद तिसदे त्यागनेनूं असमर्थ हूयेहूये॥ तूष्णीं किउं स्थित होवें लोक॥ निद्रादे आदिकोमल सेजाआदिकदे संपादन करणेकरके॥ अर निद्रादे अंत तूष्णीं स्थित होनेकरके॥ जानीता है सुषुप्तिविषे ब्रह्मानंद है॥ इसमें कोई बुद्धिमान् विवाह नहि कर्ता।

शंका—गुरुसेवा अर श्रवणआदिकांकरके॥ प्राप्त होने योग्य ब्रह्मानंदकों तूष्णीं स्थितिमात्रकरके प्राप्त होयांहोयां॥ संपूर्ण आलसीलोक कृतार्थ होये चाहीये॥ तांते गुरुसेवा अर श्रवणादिकांको व्यर्थता भयी।

उत्तर—तूष्णीं स्थितिसमेंविषे जो सुख है सो ब्रह्मानंद है॥ ऐसे ज्ञानके होयांहोयां कृतार्थता होती है॥ परंतु एह ज्ञान गुरुसेवाआदिकांसे बिना नहि होता॥ तांते मन वाणीदा अविषे सर्वज्ञ सर्वदे अंतर स्थित सर्वरूप ब्रह्मनूं गुरुशास्त्रते बिना होर उपायकरके नहि जानीता॥ तांते गुरुसेवाआदिक अवश्य करणे योग्य हैं।

शंका—तुसाडे वाक्यते तूष्णीं स्थितिकालविषे प्रतीत होये सुखको ब्रह्मानंद जाननेवाला जो मैं ॥ तिस मेरी कृतार्थता नहि प्रतीत होती ।

उत्तर—(हास्यसहित)इसविषे तेरे जैसा आपनेआपनूं बुद्धिमान मन्यनेवाला जो पुरुष॥तिसदी कथा श्रवण कर ॥ कोई तेरे जैसा बुद्धिमान पुरुषसी तिसने किसीदा ताहाकाशीविषे एह वचन श्रवण कीआ चवांविदादे जाननेवालेको एह वहता धन मैंने देना है तब तेरे जैसा बुद्धिमान् एह कथन कर्ता भया तेरे वचनते चवांविदाँनूं मैं जानताहां मेरेको एह धनदेदे जैसे ओह चवांवेदांदे जाननेवाला सी तैसे तूं ब्रह्मानंददे जाननेवाला हैं।

शंका—वेद चार हैं ऐसे जो जानता है सो वेदांदी गिणतीको जानता है अर वेद पड नही जानता।

उत्तर—तैसे तुंभी ब्रह्मानंद इसनामको जानता है पर संपूर्णब्रह्मको नहि जानता।

शंका—गिणतीसें भिन्न वेदांदे पाठकी न्यांई सजातीय विजातीय स्वगत्भेदसे रहित आनंदरूप ब्रह्मविषे अज्ञात अंश कोई बनता नहि तांते एह जेडा उलांभा दिता है॥ संपूर्ण ब्रह्मको तूं नही जानता सो उलांभा नही बनता ॥ जिसते अखंड एकरस आनंदरूप ॥ माया अर मायाकेकार्यसे रहित ब्रह्मविषे संपूर्ण जानना अर असंपूर्ण जानना इसवार्ताका अवसर नहि ।

उत्तर—ब्रह्मज्ञानविषेभी संपूर्णता अर असंपूर्णता बनती है

तिसको श्रवण कर ॥ इह जो तूं कहिता है में ब्रह्मको जानताहां ॥ उस तुझको हम पुछते हैं ॥ अखंड एकरस अद्वितीय सच्चिदानंद-रूप ब्रह्म इसते आदिलेकरके शब्दानूं तांतिको निआंई पडता है अथवा तिन्ना शब्दांदे अर्थनूं सजातीयादिक भेदांसे रहितनूंभी जानता हैं ॥जेकरके कहें शब्दानूं पडताहां तो तिन्नाशब्दाके अर्थ-कोंभी जानिआ चाहीताहै ॥ तांते संपूर्ण ब्रह्मको तूं नहि जानता॥ अर जेकरके कहें तिन्ना शब्दादे अर्थनूंमें व्याकरण आदिकांकरके जानताहां ॥ तो तिसका साक्षात्कार संशयविपर्यय रहित वाको करणा रहिता है॥तांते परोक्षज्ञानदे होवांहोयांभी अपरोक्षज्ञान-दे अभावते संपूर्ण न भया ज्ञानदी संपूर्णता कद होती है ऐसापुछें तां श्रवण कर ॥ जद कृतकृत्यतादी प्राप्ति होती है ॥ तद ज्ञानदी संपूर्णता जाननी ॥ तांते जितना काल कृतकृत्यता न होवे ॥ तितना कालपर्यंत गुरांदी सेवा अर श्रवणादिक करणे ॥ रहो स्थित एह प्रसंग ॥ जिसदा निर्णय करणे लगे हैं ॥ जिसदा श्रवण कर ॥ जिसजिस तूष्णीं स्थितिआदि-रूपकालविषे विषयांदे अनुभवसे विना सुख होता है ॥ तिस-तिस तूष्णीं स्थिति आदिरूपकालविषे ब्रह्मानंददी वासना जा-ननी जिसकारणते तिसकालविषे जो सुख है ॥ सो विषेसुख न-हि बनता ॥ जिसते सुखविषे जन्य नहि ॥ अर सामान्य अहंकार करके आवरिया होया होनेते ॥ सो सुख ब्रह्मानंदरूपभी नहि ॥ इसप्रकार ब्रह्मानंद अर वासनानंद दो सिद्धभये ॥ अर तिसरा विषयानंद है ॥ तिस विषयानंददा स्वरूप श्रवण कर ॥ जिस-जिसकालविषे पुरुषको किसी वस्त्रभूषणादिविषेदी कामना होती है ॥ तब पुरुषदा चित्त बहुत तपता है ॥ अर जद तिसविषेदी प्रा-

नि होती है ॥ तब चितविच्चों तिसविषेदा ताप दुर हो जाता है ॥ तापके दूरहोयां चित्तदी वृति अंतर्मुख होती है ॥ तिसवृत्तिविषे आत्मस्वरूप आनंददा प्रतिविंव पडता है ॥ तिसका नाम विषयानंद है ॥ जिसते विषेदीप्राप्ति होनेसे चित्तवृति अंतरमुख भइ है ॥ तिसते तिसकानाम विषयानंद है ॥ तांते जगत्‌विषे आनंद तिन्नप्रकारकाहि है ॥ एक ब्रह्मानंद ॥ दूसरा वासनानंद ॥ तिसरा प्रतिविंवानंद ॥ और चौथा आनंदजगत्‌विषे कोई नहि ॥ स्वप्रकाशताकरके सुषुप्तिअवस्थाविषे प्रतीत होता जो आनंद है सो ब्रह्मानंद है ॥ अर सुषुप्तिते उठयांहोयां तूष्णीं स्थितिसमे विषयांदे अनुभवविना प्रतीत होता जो आनंद है ॥ सो वासनानंद है ॥ अर वांछितविषे के लाभते अंतरमुख होया जो मन ॥ तिसविषे जो आत्मानंददा प्रतिविंव तिसका नाम प्रतिविंबानंद है ॥ तिस प्रतिविंवानंदको विषयानंदभी कहीता है ।

शंका—एह जो तुसी कहितेहो तिन्नप्रकारके आनंदते भिन्न होर कोई आनंद नहि ॥ सो तुसाडा कहिना अयुक्त है ॥ जिसते पाछे तुसांने और प्रकारकरके तिन्न प्रकारका आनंद कहिया है॥ एक ब्रह्मानंद ॥ दूसरा विद्यानंद ॥ अर तिसरा विषयानंद ॥ अर अब होर प्रकारकरके आनंददी तिन्न प्रकारता कहिते हो ॥ एक ब्रह्मानंद ॥ दूसरा वासनानंद ॥ तिसरा प्रतिविंवानंद इसकारणते तुसाडा कहिना परस्पर विरुद्ध है ॥ औरभी विरोध है आगे तुसां ग्रंथविषे एह कथन करणा है ॥ जितनी जितनी अभ्यासयोगते अहंकारदी विस्मृति होती है ॥ तितनीतितनी सूक्ष्मदृष्टिवाले पुरुषको निजानंददी प्राप्ति होती है ॥ ऐसा अनुमानसे जानीता है ॥ इसते निजानंदभी प्रतीत होता है ॥ सो पिछे कथन की-

निद्रा निद्रा आनंदासे भिन्न है ॥ अर होर तुसी आगे एह कथन करोगे श्रद्धा आदिकांकरके सहित एकवारी समाधिविषे ब्रह्मानंद अनुभवकरणेवाला जो पुरुष है ॥ सो पुरुष ॥ तुष्णींकालविषे आनंददी वासनादी उपेक्षा करके मुख्यानंदके विषे तत्पर हुया हुया उसीको भावनाको कर्ता है॥इसप्रकार मुख्यानंद ॥ पृथक् कथन कीता है ॥ अर दूसरे अध्यायविषे एह कथन कीया है ॥ मंदबुद्धिवाले जिज्ञासुनूं आत्मानंदकरके बोधन कर ऐसे आत्मानंदकरके कथन कीया है ॥ अर योगानंद जो पूर्वकथन कीया है॥इसप्रकारकरके योगानंद कोईक प्रतीत होता है ॥ अर एहभी आगे कथन करोगे ॥ ब्रह्मानंद है नाम जिसका ऐसा जो है ग्रंथ तिसविषे तिसरा अध्याय कथन कीया है॥ सो अद्वैतानंद है॥ इसवाक्यकरके अद्वैतानंद भिन्न प्रतीत होता है॥ इसकारणते एह जो तुसां कथन कीता है॥तिन्नप्रकारकरके आनंदसे विना जगत्विषे होर कोई आनंद नहि ॥ सो अयुक्त है।

उत्तर—विद्यानंद विषयानंदके अंतरगत है॥ जिसते विद्यानंद विषयानंदकी न्यांई अंतःकरणकी वृत्तिरूप है ॥ एह वार्ता विद्यानंदविषे कहेंगे ॥ अर निजानंद अर मुख्यानंद आत्मानंद योगानंद अद्वैतानंद एन्हा पंजाँआनंदाँको ब्रह्मानंदरूपता है ॥ सो श्रवण कर ॥ जितनीजितनी अहंकारदी विस्मृति भई है ॥ तितनीतितनी सूक्ष्मदृष्टिवाले पुरुषको निजानंददी प्रातिदा अनुमान करीता है ॥ इस श्लोकविषे जो निजानंद कथन कीया है ॥ तिस निजानंदका नाम योगानंद आगे धरिया है ॥ योगरूप साधनकरके जाननेते तिसका नाम योगानंद है ॥ ताते योगानंद अर निजानंदका भेद न होया ॥ अर तिस निजानंदकोहि ब्रह्म

नंद कहीता है ॥जिसते ऐसा आगे कहेंगे ॥ जिसअवस्थाविषे द्वै-
तकी प्रतीति है नहि ॥ अर निद्रा हैनहि ॥ तिस अवस्थाविषे जो
आनंद है ॥ सो ब्रह्मानंद है ॥ एह वार्ता अर्जुनके तांई भगवान
कही है ॥ तांते निजानंद ब्रह्मानंदसे भिन्न नहि ॥ ब्रह्मानंद रूप है
अर मुख्यानंदभी ब्रह्मानंदरूप है ॥ विषयानंददी अर वासनानं-
ददी उत्पति स्वयंप्रकाश ब्रह्मानंदते होती है ॥ इसश्लोकविषे
कार्यरूपताकरके अमुख्यानंदरूप जो है विषयानंद अर वा-
सनानंद ओन्हाक कारण कथन कीआयो है ब्रह्मानंद॥ तिस-
ब्रह्मानंदकोही समाधिविषे ब्रह्मानंददे अनुभववाला पुरुष ॥
तूर्णींकालविषेभी आनंददी वासनादी उपेक्षानूं करके मुख्या-
नंददी भावनानूं कर्ता है मुख्यानंदविषे तत्पर हूयाहूया॥इसश्लो-
ककरके ब्रह्मानंदकोही मुख्यानंदनामकरके कथन कीया है ॥
तांते मुख्यानंदभी ब्रह्मानंदते भिन्न नहि ॥ अर आत्मानंद अर
अद्वैतानंदभी ब्रह्मानंदते भिन्न नहि ॥ किंतु आनंदरूप हैं ॥ जि-
सते तीसरे अध्यायदे आदिविषे एह कथन करेंगे ॥ जो प्रथम
योगानंद कथन कीया है ॥ सो आत्मानंद है ॥ ऐसे तिसब्रह्मानं-
दका नाम योगानंद धऱ्या ॥ प्रथमअध्यायविषे कथन किया जो
योग तिसकरके ब्रह्मानंददा भया साक्षात्कार॥ तिसकरके ब्रह्मा-
नंदका योगानंदनाम धऱ्या ॥ अर तिसी ब्रह्मानंदरूप योगानं-
दका नाम आत्मानंद धऱ्या ॥ जिसते ब्रह्मानंददी आत्मादे वि-
वेककरके प्रकटता होती है ॥ तिसते तिसका नाम आत्मानंद है ॥
ऐसे कथन करके फेर एह शंका कीती ॥ आत्मानंद तौ सजातीय
विजातीय भेदवाला है ॥ तिसको ब्रह्मानंदरूपता नहि बनती ॥
जिसते ब्रह्मानंद सजातीय विजातीय भेदसे रहित है ॥ तिस शं-

कादा फर एह उत्तर कहिया ॥ आकाशसें लेकर शरीरपर्यंत तैत-
रीय श्रुतिविषे कथन किया जो जगत ॥ सो जगत् आनंदते भि-
न्न नहि ॥ इसते आत्मानंदको अद्वैत ब्रह्मानंदरूपता बनती है ॥
तांते आत्मानंद अर अद्वैतानंद एन्ना दोनोको ब्रह्मानंदरूपता है ॥
तिसकारणतें एह सिद्ध भया यो असाने कथन कीया है आनंद
तिन्नाप्रकारका है ॥ एक ब्रह्मानंद ॥ दुसरा वासनानंद ॥ तीसरा
प्रतिबिंबानंद ॥ इसते भिन्न होर कोई आनंद नहि ।

शंका—जेकर ब्रह्मानंद अर निजानंद एक हैं ॥ तो दूसरे
अध्यायविषे जो एह प्रश्न है ॥ इसप्रकार योगी वासनानंदते भि-
न्न अर ब्रह्मानंदते भिन्न निजानंददा अनुभवकरो ॥ योगसे र-
हित मूढजीवदा कल्याण किसप्रकार होवे ॥ इसश्लोकविषे ब्रह्मा-
नंद अर योगानंददा भेद कथन करणा न बनैगा ।

उत्तर—एकहि ब्रह्मानंदका जगत् कारणतारूप उपाधिस-
हितताकरके॥अर उपाधिरहितताकरके ॥ ब्रह्मानंद अर निजानं-
द दोनाम होते हैं ॥ तांते ब्रह्मानंद अर निजानंद दोनोका भेद
कथन करणा बन जाता है ॥ वास्तवसे ब्रह्मानंद अर निजानंद
एक है ॥ अर उपाधिकरके तिन्नाका भेद है ॥ जैसे एकपुरुषविषे
स्त्रीरूपउपाधिकरके गृहस्थीव्यवहार होता है ॥ अर स्त्रीउपाधि-
से विना ब्रह्मचारी व्यवहार होता है ॥ तो ब्रह्मचारीका गृहस्थी-
से भेद कहीता है ॥ सो भेद पुरुषदे स्वरूपविषे नहि ॥ किंतु
उपाधिकरके है ॥ ब्रह्मानंद अर निजानंदका जैसे उपाधिकरके
भेद है ॥ सो श्रवण कर ॥ ब्रह्मानंददे निरूपण प्रसंगविषे ब्रह्मा-
नंदको जगत्कारणता कथन कीती है ॥ आनंदतेंहि भूत उत्पन्न

होते हैं ॥ अर आनंदकरके स्थित होते हैं ॥ अर आनंदविषेहि तिनका लय होता है ॥ तांते ब्रह्म आनंदरूप है ॥ जिसते ब्रह्म-तालक्षण आनंदविषे आवता है ॥ तांते जगत्‌दा कारण ब्रह्मानंद मायारूप उपाधिवाला है एह जानीता है ॥ जिसते माया उपाधिते रहितको जगत्‌दो कारणता नहि बनती ॥ अर निजानंदंदे निरूपणके प्रसंगविषे एह कथन कीया है ॥ जितनीजितनी अभ्यासयोगते अहंकारदी विस्मृति होती है ॥ तितनीतितनी सूक्ष्मदृष्टिवाले पुरुषको निजानंददी प्राप्ति अनुमानकरके जानीती है ॥ इसश्लोककरके अज्ञानसहित अहंकारका अभाव प्रतिपादन कीया है॥तांते निजानंद मायासे रहित है ॥ तांते एह सिद्ध भया ॥ आनंद तिन्नप्रकारका है॥तिसविषे शंका कोई नहि बनती॥

शंका—इसअध्यायविषे ब्रह्मानंददे विवेकदी प्रतिज्ञा करी सी ॥ तिसते वासनानंद अर विषयानंद ॥ एन्ना दोनोका इसअध्यायविषे निरूपण करणा प्रसंगसे असंगत हैं।

उत्तर—विषयानंद अर वासनानंद एन्ना दोनोका निरूपण प्रसंगविषे असंगत नहि ॥ जिसते विषयानंद अर वासनानंद ब्रह्मानंदसें उत्पन्न होते हैं ॥ इसते ब्रह्मानंदको जनावनेवाले हैं ॥ जैसे पुत्र पिताको जनावनेवाला होता है ॥ तांते वासनानंद अर विषयानंदका निरूपण करणाभी बनता है ॥ इसप्रकार आनंदकी तिन्नप्रकारतादे होयांहोयां ॥ जो स्वप्रकाश आनंद विषयानंद अर वासनानंदनूं उत्पन्न कर्ता है ॥ सो ब्रह्मानंद है ॥ इसप्रकार श्रुतीयांकरके अर युक्तीयांकरके अर अनुभवकरके सुषुप्तिअवस्थाविषे स्वप्रकाश चैतन्यरूप ब्रह्मानंददे सिद्ध होयांहोयां ॥

और अवस्थाविषे ब्रह्मानंदके जानका उपाय कहिते हैं ॥ तिस-कोभी श्रवण कर ॥ जिन्हा श्रुतीयांकरके सुषुप्तिअवस्थाविषे ब्र-ह्मानंदकी सिद्धि होती है ॥ सो श्रुतीयां कैवल्यआदिक उपनिषदां-दीयां हैं ॥ अर पाछे तिनका अर्थ कहिया है ॥ अब फेरभी तिन-का अर्थ श्रवण कर ॥ एह तिनका अर्थ है ॥ सुषुप्तिकालविषे अ-हं अर इदं प्रतीतीके योग्य संपूर्णवस्तुके लय होयांहोयां अज्ञा-नकरके आवरिया होयाहोया जीव ॥ सुखरूप ब्रह्मनूं प्राप्त होता है ॥ अर जिन्हा युक्तियांकरके सुषुप्तिअवस्थाविषे सुखदी सि-द्धि होती है ॥ सो युक्तियां एह हैं ॥ एताकाल मैं सुखसें सोता भया ॥ एह जो सुतेउठे पुरुषका कथन है ॥ सो सुषुप्तिअवस्था-विषे सुखनूं जनावता है ॥ तांते अर्थापति प्रमाणकरके सुषुप्तिवि-षे सुखकी सिद्धि भई ॥ अर सुषुप्तिविषे सुख अनुभवकरकेस्व-प्रकाश ब्रह्मानंद सिद्ध है॥आगे जाग्रत्अवस्थाविषे जिस प्रकार ब्रह्मानंदका निश्चय होता है॥सो श्रवण कर ॥जो सुषुप्ति अवस्था विषे आनंदमय है॥अंतःकरणदी विलीनतारूप उपाधिवाला ॥ सो सुषुप्तिते जब उठता है ॥ तब विज्ञानमय रूपतानूं प्राप्त होता है ॥ सो विज्ञानमय जाग्रत् अथवा स्वप्न अवस्थानूं प्राप्त होता है कर्मांदे अनुसार ॥ जद नेत्रांविषे स्थित होता है ॥ तद जाग्रत्-अवस्थाको प्राप्त होता है ॥ अर जद कंठविषे स्थित होता है ॥ तद स्वप्न अवस्थानूं प्राप्त होता है ॥ अर जद हृदयकमलविषे स्थित होता है तद सुषुप्तिअवस्थानूं प्राप्त होता है ॥ जाग्रत् अव-स्थाविषे चरणासें लेकर मस्तकपर्यंत संपूर्ण देहविषे व्यापकर स्थित होता है जीव ॥ देहकेसाथ तदात्मतानूं प्राप्त होजाता है ॥ जैसे लोह तप्त हूयाहूया अग्निके साथ तदात्मतानूं प्राप्त होजाता

है ॥ जिसते मनुष्यादि शरीरकेसाथ तदात्मतानूं प्राप्त होजाता है ॥ तिसीकारणतें में मनुष्यहां ऐसे निश्चयकरके स्थित होता है ॥ अर शरीरकेसाथ तादात्म्याभिमानदी प्राप्तिसें अनंतर ॥ जीव निद्रा अवस्थानूं प्राप्त होता है ॥ एक उदासीनता अवस्था अर एक सुखरूप अवस्था ॥ अर एक दुखरूप अवस्था सुखदुःखरूप अवस्था कर्मकरके उत्पन्न होती हैं ॥ जितसे सुखदुखकर्मते उत्पन्न होते हैं ॥ अर उदासीनता अवस्था कर्मांते उत्पन्न नहि होती ॥ स्वभाव सिद्ध है ॥ सो सुखदुख दोप्रकारके हैं ॥ एकतां बाह्य विषयांदे भोगते ॥ अर एक मनोराजते ॥ सुखके निवृत्त होयांहोयां अर दुखकी न प्राप्ति होयांहोयां ॥ अर दुखदे अभाव होयांहोयां ॥ अर सुखदी न प्राप्ति होयांहोयां ॥ मध्यमें जो अवस्था है ॥ सो उदासीन अवस्था है ॥ तिस उदासीन अवस्थाविषे संपूर्ण लोक निजानंददे भाननूं कहेते हैं ॥ जिसते अज्ज मेरको कोईभी चिंता नहि ॥ मैं सुखसे स्थितहां ॥ ऐसे कथन कर्ते हैं ॥ इसते जाग्रत् अवस्थाविषेभी निजानंदका भान होता है।

शंका—उदासीनता अवस्थाविषे प्रतीत होता जो सुख है ॥ सो निजानंदरूप है ॥ अर निजानंद ब्रह्मानंदरूप है ॥ ऐसे तुसां ने अब कहिया ॥ अर पिछे तुसां कहिआसी ॥ जो उदासीन अवस्थाविषे सुख प्रतीत होता है ॥ सो वासनानंद है ॥ तांते पिछले वचनका अर अबके वचनका विरोध हूया।

उत्तर—उदासीनता अवस्थाविषे प्रतीत होता जो सुख है ॥ सो सुख निजानंद नहि ॥ जिसते मैंहां एह जो अहंकार सामान्य तिसकरके आवरिया होया है।

शंका—जेकर उदासीनता अवस्थाविषे प्रतीत होयेसुखकों मुख्य निजानंदता नहि ॥ तौ उसका क्या रूप है।

उत्तर—तिसको वासनानंदरूपता है।

शंका—मुख्यानंदसे भिन्न वासनानंदता कोई प्रसिद्ध नहि ॥

उत्तर—मुख्यानंदसे भिन्न वासनानंद अनुमानकरके जानीता है ॥ जैसे जलकरके पूर्ण होयाहोया जो घट तिसके बाहर जो सीतलता प्रतीत होती है ॥ सो सीतलता जल नहि ॥ जिसते जलका लक्षण द्रवता तिसविषे है नहि ॥ किंतु ओह सीतलता जलका गुण है ॥ जिसकारणते तिस सीतलताकरके जलदा अनुमान करीता है ॥ सो अनुमानदा स्वरूप एह है ॥ एह घट जलवाला है ॥जिसते सीतल है जिसघटविषे जल नहि होता तिसघटविषे सीतलताभी नहि होती ॥ जैसें तातकाल घुमियारदी आदीस निकसया जो घट है ॥ तिसविषे जल नहि होता तब सीतलताभी नहि होती ॥ अथवा ऐसे अनुमान करणा ॥ घटविषे प्रतीत होती जो सीतलता है ॥ सो जलते उत्पन्न होई है ॥ सीतलता होनेते ॥ जैसे जलविषे जो सीतलता है ॥ सो जलते उत्पन्न भई है जैसे घटविषे सीतलताकरके जल जानीता है ॥ तैसे उदासीनता अवस्थाविषे प्रतीत होता जो है वासनानंद॥तिसकरके निजानंद जानीता है कठवल्ली उपनिषदविषे जो कथन कीया है योग॥प्रथम जिज्ञासी आपनीयां इंद्रियांदीयां वृत्तीयांनूं मनविषे निरोध करे ॥ अर मनदीयां वृत्तीयांनूं विशेष अहंकार विषे निरोध करे॥ अर्थ एह कामक्रोधआदिरूप अनेकवृत्तीयांनूं त्यागकरके ॥ मैं देवदत-

हां मैं ब्राह्मणाहां ॥ ऐसे विशेष अहंकारमात्र रूपताकरके स्थित होवे ॥ अर तिसविशेषअहंकारनूं त्यागकरके मैंहां इस मान्याहंकार सहित स्थित होवे ॥ अर फेर सामान्याहंकारको त्याग करके शांतरूप आत्माविषे स्थित होवै ॥ इस श्रुतिकरके कथन कीया जो निर्विकल्प समाधिदा अभ्यासरूप योग ॥ तिसकरके जितनाजितना अहंकारकीयां वृतीयांदा लय होवे ॥ तितनीतितनी चितदी सूक्ष्मता होती है ॥ अर जितनीजितनी चितदी सूक्ष्मता होती है तितनीतितनी निजानंददी प्रकटता होती है ॥ ऐसा अनुमानसें जानीता है सो अनुमान इसप्रकर करणा ॥ अहंकारदो संकोचता रहित जो दूसरा क्षण है ॥ सो अहंकारदी संकोचतासहित प्रथम क्षणते अधिकनिजानंद दी प्रकटतावाला है ॥ अहंकारदी संकोचता अधिकवाला होनेते ॥ जैसे प्रथम अहंकारदी संकोचतावाला क्षणसी ॥ जितनाजितना अंहकारदा संकोच होता है ॥ तितनीतितनी बुद्धिदी सूक्ष्मता होती है ॥ जितनीजितनी बुद्धिदी सूक्ष्मता होति है ॥तितनीतितनी निजानंददी प्रकटता होती है ॥ बुद्धिदी सूक्ष्मतादी औधी कीथों तोरी है॥ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥सर्वथा अहंकारदा जेडा अभाव है॥सो बुद्धिदी सूक्ष्मतादी औधी है।

शंका—सर्वथा अहंकारका अभाव तां सुषुप्तिअवस्थाविषे होता है ॥ तांते बुद्धिदी परम सूक्ष्मता निद्रा भई।

उत्तर—एह जो बुद्धिदी सूक्ष्मता है सो निद्रा नहि ॥ जिसते अंतःकरणदीयां सर्ववृतीयांदे लय होयांहोयांभी अंतःकरणदे स्वरूपदा लय नहि होता ॥ अंतःकरणदी कारणरूपताकरके

निर्वानिकानाम सुषुप्ति है ॥ ऐसे आचार्यांने कथन कीया है ॥ तांते अहंकारदा सर्वथा संकोचरूप बुद्धिदी सूक्ष्मता निर्विकल्पसमाधिरूप है ॥ निद्रारूप नहि ॥ निर्विकल्पसमाधिविषे अंतःकरणदा स्वरूपसें लय नहि होता ॥ एह तुसी किसते जानतेहो ॥ ऐसा पुछनें नां श्रवण कर ॥ निर्विकल्प समाधिअवस्थाविषे शरीर गिडना नहि ॥ अर सुषुप्तिअवस्थाविषे अहंकारदे लय होयांहोयां शरीर गिडजाता है ॥ तांते शरीरदे न गिडनेंते जानीता है जो निर्विकल्प समाधिविषे अंतःकरणदे स्वरूपदा लय नहि भया ॥ अर सुषुप्तिअवस्थाविषे शरीरदे गिडजानेंते जानीता है ॥ जो अंतःकरणदा स्वरूपसें लय होगिया है ॥ इसविचारकरके एह सिद्ध भया जिसकालविषे द्वैतदी प्रतीति नहि अर निद्राभी नहि ॥ तिसकालविषे जो प्रतीत होता है सुख सो ब्रह्मानंद है ।

शंका—निद्रा अर द्वैतदी प्रतीतिदे न होयांहोयां ॥ प्रतीत होते सुखको ब्रह्मानंद रूपता तुम किसते जानते हो ।

उत्तर—तिसको ब्रह्मानंद रूपता हम भगवान्‌के वचनते जानते हैं ॥गीतादे छिवेंअध्यायविषे अर्जुनदे तांई भगवान्‌ने कथन कीता है ॥ द्वैतदी प्रतीति अर निद्रादे अभाव होयांहोयां ॥ जो प्रतीत होता है सुख सो ब्रह्मानंद है

शंका—गीतादे छिवेंअध्यायविषे किन्ना श्लोकांकरके भगवान् कथन कर्ता भया है ॥

उत्तर—जिन्ना श्लोकांकरके भगवान् कथन कर्ता भया है ॥ तिन्ना श्लोकांनूं श्रवणकर ॥ अर्थदे क्रमदी अनुसारताकरके ॥ ब्र-

आनंददी अभीलाषावाला जिज्ञासी धीर्यवाली बुद्धिकरके ॥ हौ-
लेहौले उपरामतानूं प्राप्त होवे उपरामतादी औधी कहांपर्यंत है॥
ऐसा पुछे तां श्रवण कर ॥ मनदी आत्माविषे सम्यक्स्थितिप-
र्यंत॥उपरामतादी औधी है ॥मनकी आत्माविषे सम्यक्स्थितदा
स्वरूप एह है ॥ संपूर्ण जगत् आत्मस्वरूप है ॥ आत्मासेंभिन्न
कुछ नहि ॥ ऐसी मनदी आत्माविषे स्थितिनूंकरके किसी अ-
नात्मवस्तुदा चिंतन न करे॥ एह योगदी परम औधी है ॥
तिस योगदी परम औधीदे संपादनविषे प्रवृत्त होयाहोया यो-
गी ॥ प्रथम किया करे॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ योगी प्रथम
जिसजिस विषेकेवासते जिसजिस इंद्रियद्वारा मन निकस जा-
ये॥ स्वभावदोषते चंचल आत्माविषे स्थिरताको न प्राप्त हू-
याहूया जिसजिस कालविषे ॥ तिसतिस कालविषे तिसतिस श-
ब्दादिक विषयांदी मिथ्यारूपताआदिक दोषानूं देखकरके॥ ओ
न्नाविषे शोभनबुद्धिदा त्यागकरके वैराग्यभावना सहित ॥ तिस-
तिस इंद्रियदे निरोधनूं करे॥ इंद्रियांदे निरोधनूं करके ॥ इसम-
ननूं आत्माविषे स्थापन करे ॥ इसप्रकार योगदे अभ्यास कर-
णेवाले योगीदा अभ्यासदे प्रभावते मन आत्माविषे अत्यंत शां-
तिकों प्राप्त होजाता है ॥ मनके शांत होयांहोयां क्या होता है ॥
ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ परम शांतमन भया है ॥ जिसयोगी-
दा संपूर्ण विक्षेपांते रहित होनेकरके ॥ अर क्षीण होगये हैं मो-
हादिक्लेश जिसके ॥ अर नष्ट होगये हैं संपूर्ण पाप जिसदे ॥ अर
छांदोग्योपनिषदविषे प्रतिपादन कीती जो ब्रह्मदृष्टि ॥ संपूर्ण-
निश्चयकरके एह जगत् ब्रह्मरूप है॥ जिसते ब्रह्मते उत्पन्न भ-
या है ॥ अर ब्रह्मविषे लयको प्राप्त होता है ॥ अर ब्रह्मकरके स्थि-

तिको प्राप्त होता है ॥ इसते आदिलैकरके वाक्यकरके संपूर्ण-
जगत् ब्रह्मरूप है ॥ इस निश्चयकरके युक्त जीवन्मुक्त जो योगी
है ॥ तिसनूं उत्तम सुख प्राप्त होता है ॥ जिस सुखदा नाश नहि
होता ॥ अर जिसते अधिक होर सुख कोई है नहि ॥ चित्त जिस-
कालविषे योग अभ्यासकरके संपूर्ण विषयांते निवारण कीता
होया उपरामतानूं प्राप्त होजाता है ॥ अर जिसकालविषे समा-
धिकरके शुद्ध होयेहोये अंतःकरणकरके ॥ देह इंद्रियांआदिकांते
परे चैतन्यज्योतिस्वरूप आत्मादे अनुभवनूं कर्ता होयाहोया ॥
आत्माविषेहि तुष्टिको प्राप्त होता है ॥ विषयांविषे तुष्टिको नहि
प्राप्त होता ॥ अर जिसकालविषे आत्माविषे स्थित होयाहोया
योगी अत्यंत सुखनूं अनुभव कर्ता है ॥ जो उत्पतिविनाशादि-
कांसे रहित है ॥ अर बुद्धिकरके ग्रहण करीता है ॥ इंद्रियांकरके
जिसका ग्रहण नहि होता ॥ तात्पर्य एह जो विषयांकरके उत्प-
न्न नहि होता ॥ ऐसे सुखको अनुभव कर्ता है ॥ अर जिसका-
लविषे आत्माविषे स्थितिको प्राप्त होयाहोया एह योगी ॥
आत्मस्वरूपते चलायमान नहि होता अर आत्मलाभनूं प्राप्त
होयकरके होर संपूर्ण ब्रह्मलोकादिकांदे लाभनूं आत्मलाभते
अधिक नहि मानता ॥ आत्मलाभते परे होर कोई लाभ न-
हि ॥ इसस्मृतिदे प्रमाणते ॥ अर जिसआत्मतत्वविषे स्थित
होयाहोया शस्त्रांकरके शरीरदा छेदनादि रूप वडे दुखकरके
भी प्रल्हादादिकांकी न्याई चलायमान नहि होता ॥ तिसनूं
जिज्ञासी योग जाने ॥ संपूर्ण दुखांदे संयोगदा वियोगरूप योग
है ॥ संयोग दृढनिश्चयकरके करणेके योग्य है ॥ योगाभ्यासवि-
षे वैराग्यते रहित चित्त करके ॥ तात्पर्य एहां छिमहीने मेरको यो-

न कऱ्यां होये है ॥ अर ब्रह्मानंददी प्राप्ति अज्जपर्यंतभी नहि भई॥ तांते मैं की लवना हे योगसें ॥ एह जो वैराग्य तिसते रहित जो चित तिसकरके योग करणा॥योगाभ्यासकरके नष्ट होगये हैं पाप जिसके ॥ अर योगविषे जो विघ्न हैं लय विक्षेप कषायरसास्वाद तिन्नाते रहित हूयाहूया योगी सदा आत्मानूं ब्रह्मरूप चिंतन कर्ता हूयाहूया॥ब्रह्मरूप सुखनूं प्राप्त होता है ॥ सो ब्रह्मस्वरूप सुख विनाशते रहित है ॥ अर तिससुखते अधिक होर कोई सुख है नहि ॥ योगाभ्यासविषे वैराग्यसें रहित होयकरके ॥ कीता होयाहोया योगाभ्यास मोक्षरूप फलदे देनेवाला होता है ॥ इसअर्थनूं दृष्टांत सहित गौडपादाचार्यजीनेभी कथन कीया है ॥ योगाभ्यासविषे लगाहोया योगी टटीरेदी न्याई दृढचित होयकरके लगे सो टटीरेके दृष्टांतनूं श्रवण कर ॥ एक टटीरा टटीरीसहित समुद्रके कन्नारे वास कर्ता भया ॥ तिसकी टटीरी गर्भवाली होती भई तिसने आपने स्वामी टटीरेकों कहा॥ मैंने अंडेदेनेहैं किसी और स्थानविषे चल वास करीये ॥ मतहमारयाँअंडयांको समुद्र लहरांकरके लय जाये ॥ तब टटीरे कहा समुद्रदी की समर्थ है हमारयां अंडयांनूं लय जानेदी ॥ तूं स्त्रीस्वभावकरके डरती हैं ॥ तब टटीरी कहती भई ॥ मैं स्त्रीस्वभावकरके तां नहि डरती ॥ समुद्र वडा है असी छोटे जेहे जीवहां ॥ ऐसा सुनकरके टटीरा बहुत हसया ॥ अर कहिया देखो मूर्ख स्त्री मेरे प्रतापको नहि जानती ॥ जेकर मेरियां अंडियांको समुद्र रुडाय लेजाये ॥ तौ मैं समुद्रको सुकाय देवां ॥ तूं समुद्रदे भयसे रहित होयकरके विशक्य अंडियांको देह ॥ एह वार्ता टटीरी अर टटीरेदीयां समुद्र सुनतासी ॥ समुद्र कहिया आपने मनविषे इसपक्षीके अंडे रुडायकरके

इसपक्षीका पुरुषार्थ देखया चाहीये इसने उपरंत दोचारदिन पिछे टटीरीने अंडेदिने टटीरी टटीरेदे चोगको चुगनेगिया होया ॥ समुद्रने अंडे रोडलीते ॥ टटीरी चोगचुगके जब आई ॥ तब देख्या समुद्र अंडेरोडकरके लयगिया है ॥ तब टटीरी बहुत शोकको प्राप्त भई ॥ अर टटीरेको बहुत दुर्वचन कहे ॥ तब टटीरा बोल्या तूं धीर्यकर मेरे पुरुषार्थको देख मैं समुद्रको सुकावताहां ॥ ऐसे कहकरके चुंजविच्च मृतिकोका ग्रहणकरके समुद्रविच्च मृतिका जासुटी ॥ अर समुद्रविच्चों जितनी जलदी बूंद कुशाके अग्रभागविषे स्थित होती है तितनी जलदी बूंदनूं समुद्रते चुंजविषे लपकर बाहर सुटदिती ॥ इसप्रकार समुद्रदे सुकावनेदा आरंभ कर्ता भया ॥ तब तिस टटीरेको होर पक्षी निवारण कर्ते भये ॥ पर टटीरा समुद्रदे सुकावनेते निवृत न भया ॥ अर पक्षीआंको कहा तुसी आपोआपने स्थानोंविषे विश्राम करो ॥ मैं तुसाडे आश्रय समुद्रदे सुकावनेदा आरंभ नहि कीया ॥ अर जेकर तुसाडी मेरे नाल मित्रता है तो तुसीभी ससुद्रदे सुकावनेविषे उद्यम करो ॥ तब सबनापक्षीयांने कहिया इसदी प्रसन्नतादेवासते सभी एही कम करीये ॥ इसप्रकार लक्षांकरोडां पक्षी अकठे होयकरके समुद्रको सुकावने लगे ॥ तब तिसस्थानविषे विचरतेविचरते नारदमुनीश्वर आन प्राप्त भये ॥ अर पक्षीयांका तमासा देख्या ॥ अर पुछिया हेपक्षी ओ! तुसी की कर्ते हो ॥ तब टटीरे कहिया असी समुद्रनूं सुकावतेहां ॥ समुद्रने असाडे अंडे रोड लये हैं ॥ तब नारदने तिस टटीरेको बहुत निवारण कीया ॥ पर टटीरा निवृत न भया ॥ अर कहा जद सुकेगा तद सुकाय छुडांगा ॥ तब नारद तिसदा दृढनिश्चय देखकर बहुत प्रसन्न भया॥

अर टटीरीको नारदने वर दिता॥तेरी मनोकामना सिद्ध होवेगी॥ अर्थ एह जो तेरे अंडे समुद्रसें तैनूं प्राप्त होवेंगे॥ एह कहके नारद उहांसे चलिया आनकरके गरुडको कहा॥ तूं पक्षीराज हैं॥ अर पक्षीयांका समुद्रकेसाथ विरोध है॥ एकटटीरीदे अंडे समुद्रने रोड लीते हैं॥ इसते पक्षी समुद्रदे सुकावनेविषे यत्न कर्ते हैं॥ अर समुद्र बडा गंभीर है॥ अर पक्षी वडे दुखको प्राप्त होयेहोये हैं॥ तांते तेरेको पक्षीयांदी सहायता कीती चाहीती है॥ ऐसे सुनकरके नारददा वचन गरुड बहुत क्रोधवान् होकरके आवता भया॥ समुद्रको एक परमारिआ तिसकरके समुद्र योजनभर सुक गिया॥ अर समुद्र भयभीत होकरके गरुडनूं कहिता भया॥ मेरा की अपराध है जो आपने मेरे उपर क्रोध कीया॥ तब गरुड कहा॥ हमारी प्रजाको तूं दुख देता हैं॥ जिसते टटीरेदी अंडे तैंने रोडलिते है तब समुद्रबोलिया टटीरेके अंडे मेरेसें लेवो अर मेरेपर कृपा करो॥ जैसे टटीरेने खेदसें रहित होकरके यत्न कीआ तिसकरके समुद्रको जितलीया॥ तैसे जिज्ञासीभी खेदसें रहित होकरके मनके जितनेका यत्न करे॥ तौ मनको जितलेता है जैसे टटीरेकी नारद अर गरुडने सहायता कीती है॥ समुद्रके जितनेविषे॥ तैसे जिज्ञासीदीभी गुरु अर परमेश्वर सहायता कर्ते हैं मनके जितनेविषे॥ केवल गीताविषे हि एह अर्थ कथन नहि किया॥ किंतु मैत्रायणीनाम यजुर्वेददी शाखाविषेभी एह अर्थ कथन कीया है॥ तिसशाखाविषे एह कथन कीता है॥ शाकायननाम एक ऋषिदा बृहद्रथनाम राजाशिष्य होता भया॥ सो तिसमुनी शरणको प्राप्त होता भया॥ तिस बृहद्रथराज ऋषिको समाधिदे उपदेश सहित

ब्रह्मसुखनूं कथन कर्ता भया ॥ सो जिसप्रकारकरके कथन कर्ता भया है सो श्रवण कर ॥ जैसे दग्ध कर दिना है काष्ठादिईंधन जिसने ॥ ऐसी जो अग्नी है सो आपने कारण तेजमात्रविषे उपशमको प्राप्त होजाती है ॥ अर्थ एह ज्वालांआदिरूप विशेषाकारनूं त्यागकरके तेजोमात्ररूप होकरके स्थित होती है अग्नि ॥ तैसे चितभी निर्विकल्प समाधिदे अभ्यासकरके राजस तामस संपूर्ण वृत्तीयांदे नाश होनेते ॥ आपने कारण सतामात्रविषे उपशमको प्राप्त होजाता है ॥ अर्थ एह सतामात्रशेष रहजाता है ॥ सतामात्रशेष रहणेते क्या होता है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ सत्यरूप आत्मादी है कामना जिसको अर आपने कारण सतामात्रविषे जो उपशमको प्राप्त होया है ॥ अर श्रोत्रादिक इंद्रियांकरके ग्रहण करणे योग्य शब्दादीक विषयांदे ज्ञानसे जो रहित है मन ॥ तिसमनको कर्मजन्य सुखदुखादिक स्त्रीपुत्रधनादिकांकरके सहित मिथ्या प्रतीत होते हैं ॥ जिसते तिन्नाको मायाकरके रचेहोये जानता है ।

शंका—चित्तदे आपने कारणविषे उपशमको प्राप्त होयांहोयां जगत् मिथ्यारूप होजाता है ॥ एह कहिना अयोग्य है॥जिसते जगतदा चित्त उपादान नहि ।

उत्तर—यद्यपि स्वरूपकरके जगतदा उपादान चित्त नहि ॥ तौभी जगतको भोगने योग्यतादा कारण चित्त है ॥ एह वार्ता सर्वलोकांदे अनुभव सिद्ध है ॥ जिसते सुषुप्तिआदिकांविषे चित्तदे लय होयांहोयां भोग कोई नहि देखीता ॥ तांते संपूर्ण भोगचित्तदे कल्पेहोये हैं ॥ इसते चित्त उपशम होनेते जगत् मिथ्या

होजाता है॥जिसकारणते चित्तरूप संसार है॥इसते अभ्यास वैराग्यरूप यत्नकरके चितनूं शोधन कीता चाहीदा है॥ अर्थ एह रजोतमोवृत्तीयांनूं निवारणकरके चितनूं एकाग्र कीता चाहीता है ।

शंका—आत्मादे मोक्षवासते आत्मादा शोधन कीता चाहीता है ॥ चितका शोधना व्यर्थ है ।

उत्तर—जीवदा जिसविषे चित होता है ॥ तिसका रूप जीव होजाता है॥ जिसते धनपुत्रादिकांदी नूंनता करके आपनी नूंनता मानता है ॥ अर अधिकताकरके आपनो अधिकता मानता है ॥ एह जो वार्ता है सो सनातन चली आवती है ॥ अर एह वार्ता गुप्त है ॥ इतनेकरके एह कथन कीया ॥ स्वभावते आत्मा शुद्ध है॥तिसको चितदे संबंधते रागद्वेष जन्ममरणादिक प्राप्त होते हैं ॥ इसीअर्थनूं बृहदारण्यक उपनिषदविषेभी कथन कीया है ॥ चितदे ध्यान कर्यांहोयां आत्माध्यानकर्तेकी न्यांई होजाता है ॥ अर चितदे चंचल होयां आत्मा चंचलकी न्यांई होजाता है ॥ वासतवसें आत्मा शुद्ध है॥ इसते चितके शोधनेकरके आत्माविषे रागद्वेप जन्ममरणादि रूप संसारदा अभाव होजाता है॥ तांते चितदा शोधना व्यर्थ नहि ।

शंका—अनादिजन्मांदे प्रवाहविषे संचित कीते होये जो हैं सुखदुखदे देनेवाले पुण्यपापरूप कर्म तिन्नादे विद्यमान होयांहोयां ॥ चितदे शोधनकरके आत्माविषे संसारदी निवृति कैसे होवेगी ।

उत्तर—चितदे शोधनकरके भई जो चितदी निर्मलता ॥ ति-

सकरके चितविषे ब्रह्मविचार उदय होता है॥तिस ब्रह्मविचारकर-
के ब्रह्मज्ञान उदय होता है ॥ ब्रह्मज्ञानकरके सकलकर्मांदा नाश
होजाता है ॥ तांते चितदे शोधनेकरके संसारदा अभाव होजाता
है ॥ इस अर्थविषे श्रुतिस्मृतिभी प्रमाण है ॥ तांते प्रथम श्रुतिका
अर्थ श्रवण कर ॥ जैसे अतिप्रचंड अग्निविषे रखयाहोया तीलो-
कारूं दग्ध होजाता है ॥ तैसे शुद्धचितवाले पुरुषदे सर्व पाप दग्ध
होजाते हैं ॥ अब स्मृतिदे अर्थनूं श्रवण कर ॥ गोवधसें आदिलेक
रके संपूर्ण उपपातकांदे होयांहोयां ॥ अर ब्रह्महत्यासें आदिलेक-
रके संपूर्ण महापातकांदे होयांहोयां ॥ तिन्नादे दूरकरणेवासते प-
हररात्रि रहँदीउठकरके ब्रह्मध्यानकरे ॥ तांते चितदे शोधनेकरके
जन्मांदे देनेवाले पुण्यपापरूप कर्म नाश होजाते हैं॥पुण्यपापरू-
पकर्म नाश होगये तां क्या होयां ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥
चितदी निर्मलताकरके क्षीण होगये हैं पुण्यपापरूप कर्म जिसके
ऐसा जो पुरुष है ॥ सो आपने स्वरूप अद्वयानंद लक्षण ब्रह्मवि-
षे स्थित होयकरके॥मैं अद्वयानंदरूप ब्रह्महां॥इसनिश्चयकरके सं
पूर्ण दृश्यविषे सत्यता बुद्धिनूं त्यागकरके चैतन्यमात्ररूपताकरके
स्थित हूयाहूया अविनाशी ब्रह्मसुखनूं प्राप्त होता है॥जैसे जीवदा
चित विषयांविषे तत्पर होता है॥ तैसे जेकर ब्रह्मविषे चितआसक्त
होवे॥तद ऐसा कोन पुरुष है जो मोक्षको न प्राप्त होवे ॥ बंधनांते
रहित होयांहोया मन दोप्रकारका है ॥ एक शुद्ध है एक अशुद्ध है॥
कामक्रोधादिकांकरके संयुक्त अशुद्ध है॥अर कामक्रोधादिकांते र-
हित शुद्ध है शुद्धचित मोक्षदा कारण है अर अशुद्धचित जन्ममर-
णादिकांदा कारण है ॥ मनहि मनुष्यानूं बंधमोक्षदा कारण है॥
विषयासक्त चित बंधदा कारण है ॥ अर विषयांते विरक्त चित मो-

श्रद्धा कारण है ॥ सच्चिदानंदरूप आत्माविषे स्थापन कीता जो चित्त है अर निर्विकल्प समाधिकरके धोतीयां गईयां है ॥ रजोतमोरूप मैलां जिसदीयां ॥ ऐसा जो चित है ॥ तिसको समाधिविषे जो सुख प्राप्त होता है सो सुख वाणीकरके कथन नहि कीता जादां ॥ जिसते समाधिदा सुख संसारीलोकांके अनुभव सिद्ध नहि ॥ किंतु समाधिकालदा जो सुख है ॥ सो आपही अंतःकरणकरके जानीता है ।

शंका—एह समाधि तौ दुर्लभ है ॥ तिसते इसकरके ब्रह्मानंददा निश्चय नहि वनता ।

उत्तर—बहुतकालपर्यंत समाधि यद्यपि दुर्लभ है तौभी क्षण दोक्षणपर्यंत तौ होय सक्ती है ॥ तिसकरके ब्रह्मानंददा निश्चय वनजाता है ।

शंका—कोईक पुरुष आत्मादे साक्षात्कारवासते ॥ श्रवणमनन निदिध्यासनमैं प्रवृत्त होयेहोयेभी आनंददे निश्चयते रहित होयेहोये वाहरमुख प्रवृत्त होयेहोये नजर आवते हैं ।

उत्तर—श्रद्धाआदिकांसें रहितांको वाहर मुख प्रवृत्त होयांहोयांभी॥पर जेहडे श्रद्धाआदिकांकरके संयुक्त हैं तिन्नाको आनंद का निश्चय होता है ॥ जिसपुरुषनूं समाधिविषे श्रद्धा है अर व्यसन है ॥अर्थ एह जिसप्रकार समाधि सिद्ध होवे तिसीप्रकार समाधिनूं सिद्ध करांगा ॥ ऐसा जो दृढनिश्चय है तिसका नाम व्यसन है सो पुरुष समाधिविषे ब्रह्मानंदनूं अवश्य निश्चय कर्ता है॥ क्षणमात्रदी समाधिकरके समाधिविषे ब्रह्मानंददा निश्चय होयां-

होयां ॥ एकवारी ब्रह्मानंददे निश्चयवाला जो पुरुष है ॥ सो समाधिमें विना होरकालविषेभी ब्रह्मानंद है ऐसे निश्चय कर्ता है ॥ श्रद्धाआदिकोंकरके सहित एकवारी क्षणिक समाधिविषे ब्रह्मानंददे निश्चयनूं प्राप्त भया जो पुरुष है ॥ सो तूष्णींअवस्थाविषेभी प्रतीत होती जो है ब्रह्मानंददी वासना तिसदी उपेक्षानूं करके निजानंद विषे निश्चयवाला निजानंददी भावनानूं कर्ता है ॥ इसीप्रकार व्यवहारकालविषेभी निजानंददी भावनानूं कर्ता है सो पुरुष ॥ जिसपुरुषने क्षणिकसमाधिविषे निजानंदद्दा अनुभव कीया है ॥ इसविषे दृष्टांत श्रवण कर ॥ जैसे दुराचारणी स्त्री घरदे कर्मानूं कर्ती होईभी परपुरुषदे संगसुखदी भावना कर्ती है ॥ तैसे सर्वते परे शुद्ध निर्विकल्प निजानंदविषे विश्रांतिको प्राप्त भया जो धीर्यवान् पुरुष सो व्यवहारकालविषेभी निजानंददे स्वादको लेता रहिता है ॥ धीर्यवान्का अर्थ एह है ॥ इंद्रियांको विषयांदे सन्मुख होयकरके पुरुषको आपनी निष्ठाते चलायमान करणेदा समर्थ है ॥ ऐसीयां जेडीयां इंद्रियां तिन्नानूं जितकरके निजानंददे अनुभवदी इच्छाकरके ॥ निजानंददे चिंतनविषेहि जो वर्तता है ॥ सो धीर्यवान् कहीता है ॥ अर्थ एह इंद्रियांदे अर विषयांदे संबंध होयांहोयां जो इंद्रियांके अधीन नहि होता ॥ सगों इंद्रियांको आपने अधीन करलेता है ॥ सो पुरुष धीर्यवान् कहीता है ॥ अब विश्रांतिदा अर्थ श्रवण कर ॥ जैसे भारदे उठावनेवाला पांडोदुखदा कारण जो है शिरदे उते पड तिसनूं सुटकरके सुखको प्राप्त होता है ॥ तैसे संसारदे व्यवहारांनूं त्याग कीत्यां होयां मैं सुखनूं प्राप्त होवांगा ॥ ऐसी उत्पन्न होई जो बुद्धि सो विश्रांति कहीती है ॥ अब इसदे तात्प-

येनूं सुण ॥ परम विश्रांतिनूं प्राप्त भया जो पुरुष ॥ अर्थ एह संसारके व्यवहारानूं त्यागियां होयां मैं सुखको प्राप्त होवांगा ॥ इस दृढनिश्चयवाला जो पुरुष सो जैसे तूष्णींअवस्थाविषे ॥ वासनानंदनूं त्यागकरके निजानंददे स्वादनूं लेता है ॥ तैसे सुखदुःखदे प्राप्त होयांहोयांभी ॥ सुखदुःखदी चिंतानूं त्यागकरके ॥ निजानंददे स्वादविषेहि प्रीतिवाला होता है ।

शंका—दुख प्रतिकूल होता है ॥ तिसकरके तिसदे चिंतनदी इछा न होवे ॥ पर विषेसुख तां अनुकूल होता है ॥ तिसकरके सभीपुरुषविषे सुखदी इछा कर्ते हैं ॥ इसतेविषे सुखदे चिंतनदी इछा किउं न होवे विवेकीको ।

उत्तर—विवेकीको विषे सुखदी इछा नहि होती ॥ जिसते विवेकी एह विवेक कर्ता है ॥ विषेसुखदी इछा विषयांदे संपादनविषे प्रवृत्त करवावती है ॥ विषेसंपादनविषे प्रवृत्त होयांहोयां ॥ चितदी बहुत बाहरमुखता होती है ॥ तिसकरके निजानंदका चिंतन नहि होता ॥तांते निजानंददा चिंतन त्यागके विषेसुखदा चिंतन करणा तौ ऐसा है ॥जैसे कोई मूढपुरुष चिंतामणिको त्यागकरके कोलियांनूं ग्रहण करलेवे ॥ इसविवेककरके विवेकीको विषयांदे चिंतनदी इछा नहि होती ॥ किंतु संपूर्णविषयांविषे विरसबुद्धि होजाती है ॥ जैसे सतीको सीघ्रशरीरदे त्यागदी अत्यंत दृढइछादे होयांहोयां ॥ शरीरदे त्यागविषे विलंबदे करवावनेवाला जो है भूषण वस्त्रादिकांदा पहिनना ॥ तिसविषे सतीको विरसता बुद्धि होजाती है ॥ अर्थ एह सतीकी भूषणवस्त्रांदे पहरणेविषे प्रीती नहि होती ॥ जैसे कैसे पहर लयती है ॥ तैसे

वैराग्यादिसाधनावाले विवेकी पुरुषको ब्रह्मानंददे स्वाददा वि-रोधी विषयांदे सुखविषे प्रीति नहि रहिंदी ॥ प्रारब्धकर्मकरके विषेसुखदे अनुभव कर्यां होवांभी ।

शंका—ब्रह्मानंददे स्वाददा विरोधीविषे सुखदी इछा मत होवे ॥पर थोडे यत्नकरके प्राप्त होता जो विषे चित्तदी बाहीरमुख-तांदे न करवावणेवाला ॥ तिसविषे विवेकीदी इछा कीउं न होवे ।

उत्तर—ब्रह्मानंददे चिंतनदे अवरोधीविषे सुखविषे ॥ अर निजानंदविषे विवेकीदी बुद्धि सीघ्र जाती है अर हट आवती है ॥ जैसे काकदी दृष्टि खँवेसँजे नेत्रविषे सीघ्र जाती है अर हट आव-ती है ॥ ज्ञानवान् जो पुरुषहै ॥ तिसदी बुद्धि विषयानंदनूंभी भोक्ती है अरब्रह्मानंदनूंभी भोक्तीहै ॥ जैसे दोनोदेशोंकी बोली जाननेवाला पुरुष दोनोबोलीयांको बोलता है ॥ तैसे ज्ञानवान् दुहांआनंदांनूं अनुभव कर्ता है॥जो उपनिषदवाक्याकरके जानि-या है ब्रह्मानंद तिसको अनुभव कर्ता है ॥ अर प्रारब्धकरके प्रा-प्त होये अन्नवस्त्रादिकांके सुखकोभी अनुभव कर्ता है ।

शंका—एह जो तुसां कहासी दुख प्राप्ति समेविषेभी विवे-की निजानंदनूं अनुभव कर्ता है ॥ सो तुसाडा कहिना अयुक्त है॥ जिसते दुखदी प्राप्तिसमेविषे बुद्धिमें उद्वेग होजाता है ॥ इसते उद्वेगको प्राप्त होई बुद्धिविषे ब्रह्मानंददा अनुभव नहि बनता ।

उत्तर—जैसे अज्ञानिको दुःखदी प्राप्तिविषे उद्वेग होता है ॥ तैसे ज्ञानीको दुःखदीप्राप्तिविषे उद्वेग नहि होता ॥ जि-सते ज्ञानी ब्रह्मानंदनूं आपना स्वरूप जानता है ॥ अर दुःखको

प्रारब्धकर्मका फल जानता है ॥ इसते ज्ञानवान्‌को दुःखदे अनुभव समेविषेभी ॥ ब्रह्मानंददा अनुभव होता है ॥ जैसे लँकलँकपर्यंत गंगाजीदे प्रवाहविच्च स्थित होया जो पुरुष है जेठके महीने विषे तिसको शीतलतादा सुख अर तप्तदा दुःख दुहांदा अकठा अनुभव होता है ॥ तैसे विवेकीको दुखप्राप्तिसमेविषेभी ब्रह्मानंद दा अनुभव होता है ॥ इतने करके एह सिद्ध भया ॥ ज्ञानवान्‌को जाग्रत् अवस्थाविषे सुखानुभवकालविषे अर दुःखानुभवकालविषे अर तूष्णींदशाविषे ॥ सदाही ब्रह्मानंद भासता है ॥ जैसे जाग्रत्‌अवस्थाविषे ज्ञानीको ब्रह्मानंद भासता है ॥ तैसे जाग्रतके संस्कारांते उत्पन्न भया जो स्वप्ना तिसविषेभी ज्ञानीको ब्रह्मानंद भासता है।

शंका—ज्ञानवान्‌दे स्वप्नको ब्रह्मानंददे अनुभवदी वासनाकरके उत्पन्न हूयाहूया ॥ जेकर मानोगे ॥ तौ ज्ञानवान्‌को स्वप्नेविषे ब्रह्मानंददीओ प्रतीति होई चाहिये ॥ अर विषेसुखदी अर दुःखदी प्रतीति न होई चाहिये ।

उत्तर—केवल ब्रह्मानंददे अनुभवदी वासनाकरके स्वप्ना नहि होता ॥ किंतु अविद्यादीयां वासनाकरकेभी होता है ॥ जिसते जितनाकाल अंतःकरण है ॥ तितनाकाल अविद्यादीयां वासनारहितीयां हैं ॥ इसते अविद्यादीयां वासनाकरके स्वप्नेको उत्पन्न होनेते॥अज्ञानीकी न्यांई ज्ञानवान् स्वप्नेविषे विषेसुख अर दुःखनूं अनुभव कर्ता है॥अर अज्ञानीका स्वप्ना केवल अविद्यादीयां वासनाकरके उत्पन्न होता है ॥ अर ब्रह्मानंददीयां वासनाकरके उत्पन्न नहि होता ॥ इसते अज्ञानीको स्वप्नेविषे ब्रह्मानंद

नहि भासता॥इतने ग्रंथकरके कथन कीया जो अर्थ तिसनूं थोडे-करके श्रवण करो॥एह जो पंचअध्यायरूप ब्रह्मानंदनाम ग्रंथ है॥ सो ब्रह्मानंददी प्रकटतादे करवावणेवाला है तिसदे प्रथमाध्याय विषे एह कथन कीया ॥ सुषुप्ति अवस्थाविषेभी ब्रह्मानंद प्रतीत होता है॥अर सुषुप्तिते उठियांहोयां तूर्ष्णीं अवस्थाविषेभी ब्रह्मानंद प्रतीत होता है अर समाधिअवस्थाविषेभी ब्रह्मानंद प्रतीत होता है ॥अर शरीरस्थितिदा कारण जो अन्नजलवस्त्रादिक तिनके अनुभवकालविषेभी ब्रह्मानंददा अनुभव होता है॥ अर दुखप्राप्तिकालविषेभी ब्रह्मानंदका अनुभव होता है॥ अर स्वप्नेविषेभी ब्रह्मानंददा अनुभव होता है॥ इसविषे अंतरमुख योगी ज्ञानवान्का अनुभवरूप प्रत्यक्ष प्रमाण कथन कीया ॥ जो स्वप्रकाश चैतन्यरूप ब्रह्मानंददे ग्रहण करणेवाला है अर श्रुतीयांभी प्रमाण कथन कीतीयां॥ अर स्मृतीयांभी प्रमाण कथन कीतीयां अर अनुमान प्रमाणाभी कथन कीता अर अर्थापत्तिभी प्रमाण कथन कीती॥

इति श्रीब्रह्मानंदे योगानंदः समाप्तः ॥११॥

श्रीः

पञ्चदशी भाषा

ब्रह्मानंदे आत्मानंद प्रकरणम्

॥ श्रीसद्गुरुप्रसाद ॥ ॥ अथ आत्मानंदनाम दूसरेआनंदका आरंभ कर्ते हैं ॥ सो आदिसें पंचदशीका बारवां ग्रंथ है ॥ प्रथमाध्यायविषे विवेकीको योगकरके निजानंददे अनुभवका प्रकार वर्णन कीया ॥ मूढजिज्ञासीको आत्मानंद है नाम जिसका ॥ ऐसा जो त्वंपदार्थका विवेक ॥ तिसद्वारा ब्रह्मानंददे अनुभवदे प्रकारके दिखलावणेवासते ॥ प्रथम शिष्यके प्रश्नको दिखलावते हैं ॥

प्रश्न—पिछे कथन कीया जो प्रकार तिसकरके ॥ योगी वासनानंदते भिन्न ॥ अर ब्रह्मानंदते भिन्न निजानंदका अनुभव करो ॥ पर मूर्खयोगविषे समर्थते रहित निजानंददे अनुभवनूं कैसे प्राप्त होवे ॥ एह कृपाकरके कहो ।

उत्तर—अतिमूर्खको ब्रह्मविद्याका अधिकार नहि ॥ अर्थ एह अतिमूर्खको निजानंदका अनुभव नहि होता॥तांते अतिमूर्ख अनादि संसारविषे अनंत पिछलियां जन्माविषे कीते जो हैं पुण्यपापरूप कर्म ॥ तिन्नादे प्रभावकरके अनेकप्रकारदे शरीरांनूं धारकरके॥ वारंवार जन्मो अर मरो ॥ उसदी कुछ गति कहिने वासते असाडा क्या प्रयोजन है।

प्रश्न—आप जैसे आचार्यांकी संपूर्ण जीवांउपर कृपा होती है ॥ तांते आपने अतिमूर्खकीभी कोईइक गति कही चाहीये ॥

तांते आपदी कृपाहि मूर्खदी गति कहिनेविषे प्रयोजन है॥ जिस-ते आप शरणको प्राप्त होवे शिष्यांके उद्धारकरणेकी इछाके संयु-क्त हो तांते शिष्यकाउद्धारकरणाही आपदा प्रयोजन है।

उत्तर—जेकर अतिमूर्खदी गति कहिनी असानूं चाहिते है॥ तो विषयांविषे रागवाले मूडदी गति पुछदा है॥ के विषयांते विर-क्त जिज्ञासी मूडदी गति पुछदा हैं॥ दोनोकी गति पुछदाहां जे-कर ऐसा कहे तो श्रवण कर॥ विषयांविषे रागी मूडनूं पुछना ते-रा राग किसविषे विषे है॥ ब्रह्मलोकादिकांविषे है॥ के स्वर्गादि-कांविषे है॥ जेकर मूड कँहे मेरा राग ब्रह्मलोकादिकांविषे है॥ तो तिसनूं ब्रह्मलोकदी प्राप्तिदा कारण उपासनादा उपदेश कर-णा॥अर्थ एह ब्रह्मलोकदो कामनावाला उपासनानूं करे उपास-नाकरके तिसको ब्रह्मलोकदी प्राप्ति होवेगी॥ अर जेकर उसदा स्वर्गादिकांविषे राग होवे॥ तो उसको आपने वर्णाश्रमदे कर्म करणेयोग्य हैं॥ अर जेकर मूड आत्मजिज्ञासीवाला होवे॥ तो तिसको गुरु आत्मानंददे विवेकदा उपदेश करे॥ इसप्रकार कि-सने किसमूढबुद्धिवाले जिज्ञासीनूं आत्मानंददा उपदेश कीता है॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ याज्ञवल्क्यनाम मुनीश्वरने मैत्रे-यीनाम आपनी स्त्रीनूं आत्मानंददे विवेकदा उपदेश कीता है॥ अरे मैत्रेयी! भर्तादेवासते स्त्रीके भर्ता पियारा नहि होता॥ किंतु आपनेवासते स्त्रीको भर्ता पियारा होता है॥ इसते आदिलेकर-के वचनानूं कथन कर्ता हूयाहूया याज्ञवल्क्य मैत्रेयीको उपदेश-कर्ता है॥ भर्ता १ स्त्री २ पुत्र ३ धन ४ पशु ५ ब्राह्मण ६ क्षत्री ७ लोक ८ देवता ९ वेद १० भूत ११ सर्व १२ एह आत्मादेवासते पियारे हैं॥ अर स्वरूपकरके पियारे नहि॥ अब एन्नांदे तात्पर्य-

नं श्रवण कर ॥ भिन्न भिन्नकरके जिसकालविषे स्त्रीदी भर्ता वि-षे इच्छा होती है तब स्त्री भर्ताविषे प्रेम कर्ती है॥अर यद तिस स्त्री-दा भर्ता क्षुधादिकांकरके युक्त होता है ॥ तब स्त्री भर्ताविषे प्रेम-नहि कर्ती ॥ तांते स्त्रीदा प्रेम भर्ताकेसाथ आपनेवासते भया ॥ भर्तावासते न भया ॥ जेकर भर्तावासते स्त्रीदा प्रेमहुंदा भर्तावि-षे तां क्षुधाआदिकांकरके युक्त भर्ताविषेभी प्रेम हुंदा ॥ तांते स्त्री-दा भर्ताविषे प्रेम आपने वासते है ॥ भर्तावासते नहि ॥ अर भ-र्ता जो स्त्रीविषे प्रेम कर्ता है ॥ सो स्त्रीदेवासते नहि कर्ता किंतु आ पनेवास्ते कर्ता है।

शंका—जिसकालमैं स्त्रीदी इछाकरके प्रवृत्ति होती है ॥ अ-थवा जिसकालमैं पुरुषदी इछा करके प्रवृति होती है ॥ तिसप्रवृ-त्तिविषे आपनेवासते प्रीति होवो ॥ पर जिथे अकठी दुहांदी इ-च्छाकरके प्रवृति होई है ॥ तिस प्रवृतिविषे प्रीतिको आत्मा-र्थता नहि ॥ अर्थ एह तिससमे स्त्रीदी प्रीति भर्ताविषे भर्तादेवा-सते है अर भर्तादी स्त्रीविषे प्रीति स्त्रीदेवासते है॥ तांते तुसी कै-से कहिते हो भर्ताविषे स्त्रीदी प्रीति भर्तादेवासते नहि आपनेवा-सते भर्ताविषे प्रीति है अर भर्तादी स्त्रीविषे प्रीति स्त्रीदे वासते नहि ॥ आपने वासते है।

उत्तर—जद अकठी दुहांदी इच्छाकरके प्रवृत्ति होती है ॥ तिसविषेभी आपोआपनी कामनादी पूर्णतादी इच्छाकरकेही होती है ॥ तांते आपो आपनेवासते दुहांदी प्रवृत्ति है ॥ भर्तादे वासते स्त्रीदी प्रवृत्ति नहि॥अर स्त्रीदेवासते भर्तादी प्रवृत्ति नहि॥ अर पुत्रविषे पितादी जो प्रीति है ॥ सो पुत्रदे वासते नहि ॥ आ-

पनेवासतें हैं जिसतें पिता पुत्रदे मुखनूं जद चुंमन लगता है ॥ तब दाढीदे वालांदे चुंमनेकरके बालक रोंदा है ॥ अर तिसदा पिता वारंवार तिसदा मुख चुंमदा है सो बालकदी प्रसन्नतादे वासतें नहि ॥ जिसतें बालक तो दुखको प्राप्त होया रुदन कर्ता है ॥ किंतु आपनी प्रसन्नतादेवासतें कर्ता हैं ॥ तांतें पिताकी प्रीति पुत्रांविषे पुत्रवासतें न भई ॥ आपनेवासतें है ॥ भर्ता स्त्रीपुत्र रूप चेतनांविषे करीदी जो है प्रीति ॥ तिसदेविषे परदे अर्थ एह प्रीति हैं के आपने अर्थ एह प्रीति है ॥ इस संशयदे होयांहोयांभी ॥ परधन आदिकांविषे जो प्रीति है ॥ सो प्रीति धनकेवासते नहि बनती ॥ जिसतें धनआदिक अचेतन हैं ॥ तिनको एह इच्छा नहि जो हमारेसाथ कोई प्रीति करे ॥ तांतें धनविषे प्रीति आपनेवासतें है ॥ हीरेमोतीआदिरूप धनको ॥ एह इच्छा नहि जो हमारेको सांभके रखे ॥ अचेतन होनेतें ॥पर बडे यत्नकरके पुरुष तिसको सांभसांभ रखता है॥सो हीरेमोतीआदिकांविषे सांभना रूप प्रीति हीरेमोतीदे वासतें है ॥ एह तो शंकाही नहि बनती ॥ तांतें तिनविषे प्रीति आपनेवासतें है ॥ अर खेतीकरणेवाल्यां जिमींदारांदी बलदांविच्च जो प्रीति होती है ॥ सो बलदआदीकांदेवासते नहि ॥ आपनेवासतें है जिसतें बलददी हलवावनेविषे प्रीति नहिभी होती ॥ जोराजोरी तिसको हलके आगे जोड देते हैं तांतें हलवावनेवालेकी प्रीति बलदविषे बलददे वासते नहि ॥ आपनेवासतें है ॥ अर मैं ब्राह्मणहां इसतें मैं पूजाके लायकहां ॥ इस अभिमानवाला ॥ ब्राह्मणता निमितकरके प्राप्त भई जो पूजा ॥ तिसकरके प्रसन्नतानूं प्राप्त होता है ॥ ब्राह्मणता जाती नहि प्रसन्नताको प्राप्त होती ॥ जिसतें जाती जड है ॥तांतें ब्रा-

ह्मणता जातीविषे पुरुषदीप्रीति आपनेवासते है॥जातीवासते न-हि॥मैं क्षत्रीहां तिसकरके राजनूं कर्ताहां॥एह जो राजकरके प्रस-न्नता है॥सो पुरुषको होती है॥क्षत्रीजातीको नहि होती॥तांते क्ष-त्रीजातिविषे पुरुषकी प्रीति आपने वासते है॥जातीवासते नहि॥ अर स्वर्गलोक अर ब्रह्मलोक मेरेको प्राप्त होवे॥ ऐसी जो स्व-र्गलोक ब्रह्मलोकविषे प्रीति है॥ सो स्वर्गलोक ब्रह्मलोकदे उपर उपकारदेवासते नहि॥ आपने सुखदेवासते है शिवविष्णुसें आ-दिलेकरके देवतयांदा पूजन रूप जो प्रीति है॥ सो शिवविष्णुके उपर उपकारदे वासतेनहि॥ आपने पापांदे दूरकरणेवासते है॥ शिवविष्णुआदिक देवतयांदे पाप दूरकरणेवासते नहि॥ जिसते ओह स्वभावते पापरहित हैं॥ तांते शिवविष्णुआदिक देवतयां-विषे प्रीति आपनेवासते है॥ तिन्नादे वासते नहि॥ अर ऋगवेद यजुर्वेद सामवेद अथर्वणवेद॥ एन्नाको जो पुरुष पडते हैं॥ सो एन्नावासते नहि पडते॥ किंतु आपनी दुर्ब्राह्मणतादे निवारण-वासते पडते हैं॥ जेकर असी वेदांनूं न पडांगे॥ तां सानूं दुर्ब्रा-ह्मणता प्राप्त होजायेगी॥ सो दुर्ब्राह्मणतादी प्राप्ति वेदांविषे न-हि होती॥ मनुषांविषे होती है॥ इसते मनुष दुर्ब्राह्मणतादे नि-वारणवासते॥ वेदांनूं पडते हैं॥ तांते वेदांविषे जो पुरुषांदी प्री-ति है सो आपनेवासते है वेदांदेवासते नहि॥अर पृथिवीआदिक पंजांभूतांविषे जो जीवांदी प्रीति होती है॥ सो पृथिवीआदिक पंजांभूतांदेवासते नहि॥ आपनेवासते है॥ पृथिवीविषे प्रीति हो-ती है जो पृथिवी स्थान देती है॥ अर जलविषे जो प्रीति होती है सो तृषा निवारण अर स्नानादिकांवासते होती है॥ अर अग्निवि-षे प्रीति भोजनकरणेवासते होती है॥ अर पवनविषे प्रीति वस्त्रदे

सुकावनेआदिकांवासते होती है अर आकाश अवकाशको देता है तिसवासते आकाश में प्रीति होती है ॥ तांते पृथिवीआदिक पंचांभूतांविषे जो प्रीति है ॥ सो आपनेवासते है ॥ पृथिवीआदिक पंचांभूतांवासते नहि अर नौकरसें आदिलेकर संपूर्णलोक स्वामीआदिकांविषे जो प्रीति कर्ते हैं ॥ सो आपनेवासते कर्ते हैं ॥ स्वामीआदिकांदे वासते नहि कर्ते ॥ इसीप्रकार स्वामीआदिक नौकर आदिकांविषे जो प्रीति कर्ते हैं सो आपनेवासते कर्ते हैं नौकर आदिकांवासते नहिकर्ते ॥ स्वामीने जो नौकरको वकसकरके धन दिता है ॥ सो नौकरवासते नहि दिता ॥ आपनी हछीसेवावासते दिता है ॥ अर नौकरने जो प्रीतनालसेवा कीति है ॥ सो स्वामीवासते नहि कीती ॥ आपनेवासते कीती है।

शंका—श्रुतिविषे इसप्रकार बहुते दृष्टांत किसवासते कथन कीते हैं।

उत्तर—भोजनआदि आपनीइच्छाकरके जो करीते हैं व्यवहार ॥ तिन्ना संपूर्णांविषे प्रीति आपने वासते होती है ॥ भोजनआदिकांवासते नहि होती ॥ इसीप्रकार जिसजिसविषे जीवकी प्रीति होती है ॥ सो आपनेवासते होती है ॥ ऐसे सर्व व्यवहारांदे विषे चिंतन करणेदेवासते बहुतेदृष्टांत कथन कीये हैं ॥तिन्ना संपूर्णांदा तात्पर्य एह है ॥ सर्वपदार्थांको स्त्रीपुत्रांदिकांको आपनी शेषता जानकरके ॥ आपने आपको अतिशयकरके पियारा जानकरके॥आपनेविषे बुद्धिकोलगावे॥पुत्रादिकांविषे बुद्धिको न लगावे॥अर्थ एह पुत्रादिक सजनांविषे प्रीतिनूं त्यागकरके आपने आपविषे प्रीतिनूं करे ॥ जो आपनाआप परमपियाराहै।

शंका—आत्मादी शेषताकरके ॥ सर्वको पियारा होनेते आत्मा परम पियारा है एह जो तुसां कथन कीया है सो नहि बनता ॥ जिसते विकल्पकरके निर्णयकरणे लगिया प्रीतिदा स्वरूप निर्णय नहि होयसक्ता ॥ सो जैसे नहिहोय सक्ता तिसनूं श्रवणकर ॥ हम पुछते हैं ॥ जो आत्माविषे प्रीति है ॥ तिसका स्वरूप क्या है ॥ राग है अथवा श्रद्धा है अथवा भक्ति है अथवा इछा है ॥ एन्हा चवांपक्षांविषे प्रीति सर्वविषे नहि बनती ॥ जेकर कहें प्रीति राग है ॥ तौ स्त्रीआदिकांविषे प्रीति बनेगी ॥ यज्ञादिकर्मांविषे प्रीति न बनेगी ॥ अर जेकर कहें प्रीति श्रद्धा है ॥ तौ यज्ञादिकर्मांविषे प्रीति बनेगी ॥ स्त्रीआदिकांविषे प्रीति न बनेगी ॥ जिसते स्त्रीआदिकांविषे श्रद्धा नहि किसीकी होती ॥ अर जेकर भक्तिनूं प्रीति कहेंगा ॥ तौ गुरुदेवतादिकांविषे प्रीति बनेगी ॥ स्त्रीआदिकांविषे प्रीति न बनेगी ॥ जिसते स्त्रीआदिकांविषे भक्ति किसीकी नहि होती ॥ अर जेकर इछानूं प्रीति कहेंगा ॥ तौ अप्राप्तवस्तुविषे प्रीति बनेगी ॥ होर किसीपदार्थविषे प्रीति न बनेगी ॥ जिसते इछा अप्राप्तवस्तुविषेहि होती है ॥ प्राप्त वस्तुविषे इछा नहि होती ॥ इसते प्रीतिकानिर्णय कुछ न भया ॥ तांते एह जेडा कहिता है ॥ होरणाबिच्चों प्रीतिनूं त्यागकरके आत्माविषे प्रीतिनूं करो ॥ सो अयुक्त है ।

उत्तर—प्रीतिविषे तेरेकरके कथन कीये जो चार प्रकार ॥ सो जेकर नहि बनते तौ सुखमात्रनूं विषेकरणेवाली जो सात्विकी वृत्ति है ॥ तिसनूं प्रीति जान ॥ सो सात्विकी वृत्ति इछारूप नहि ॥ जिसते इछा अप्राप्तसुखादिकांविषे होती है ॥ अर प्रीति

तौ प्राप्तवस्तुविषेभी होती है ॥ अर जिसवस्तुका नाश होगिया है तिसवस्तुविषेभी होती है ॥ तांते इच्छाते भिन्न है ।

शंका—जैसे सुखदा साधन होनेते अन्नवस्त्रादिकांविषे प्रीति है ॥ ऐसे आत्माविषेभी प्रीति देखीती है ॥ तांते आत्माभी सुखदा साधन होवो ॥ इसअर्थविषे एह अनुमान है ॥ आत्मा सुखदा साधन है ॥ पियारा होनेते अन्नजलकी न्यांई ।

उत्तर—अन्नजलादिकांदी न्यांई आत्मा सुखदा साधन नहि ॥ जिसते अन्नजलादिक भोगने योग्य हैं ॥ अर आत्मा भोगने योग्य नहि ॥ किंतु भोक्ता है ॥ जेकर आत्माभी अन्नजलकी न्यांई सुखदा साधन होवे ॥ तौ जैसे अन्नजलदा भोक्ता आत्मा है ॥ तैसे आत्मादा भोक्ता कोई और चाहीये ॥ जिसके सुखका साधन आत्मा होवे ।

शंका—आत्मा ही आत्मादा भोक्ता होवे ।

उत्तर—एकको एककालविषे भोग्यरूपता अर भोक्तारूपता नहि बनती ॥ तांते आत्मा आत्मादा भोक्ता नहि ।

शंका—जेकर आत्मा अन्नवस्त्रादिकांकी न्यांई सुखदा साधन नहि ॥ तौ सुखदी न्यांई भोक्तादा शेष होवो ।

उत्तर—आत्मा भोक्तादा शेष नहि बनता ॥ जिसते भोक्तादे शेष सुखविषे प्रीतिमात्र होती है ॥ पर परमप्रीति नहि होती ॥ आत्माविषे तौ परमप्रीति है ॥ इसते आत्मा सुखदी न्यांई भोक्तादा शेष नहि ॥ तिसविषे युक्तिनूं श्रवण कर ॥ विषयांते उत्पन्न भया जो सुख है ॥ तिसविषे प्रीति कदी उत्पन्न होती है कदी

दूर होजाती है॥एकविषे सुखविषे प्रीतिनियमकरके सदा नहि रहिती ॥ जिसते पुरुष एकविषे सुखको त्यागकरके होर दूसरेविषे सुखविषे प्रीति कर्ता है ॥ अर आत्माविषे जो विद्यमान प्रीति है॥ सो आत्मानूं त्यागकरके होर किसीविषे नहि जाती ॥ इसते आत्माविषे परम प्रीति है ॥ विषेसुख ग्रहणकरणेके योग्यभी है अर त्यागकरणेके योग्यभी है ॥ इसते विषेसुखविषे प्रीति एकरस नहि रहिती ॥ इसते विषयांविषे परमप्रीति नहि ॥ अर आत्मा-तां न ग्रहण करणे योग्य है ॥ न त्यागकरणे योग्य है॥अपरिछिन्न होनेते ॥ जो परिछिन्नपदार्थ होता है ॥ सोई ग्रहणकरणे योग्य होता है ॥ अर त्यागकरणे योग्य होता है तांते आत्माविषे प्रीति-सदा एकरस है ॥ अर्थ एह आत्माविषे प्रीति कदी दूर नहि होती ॥ इसते आत्माविषे परम प्रीति है ।

शंका—जेकर आत्मा ग्रहण त्यागके योग्य नहि ॥ तौ गलीयांके तृणांकी न्यांई उपेक्षा योग्य होवेगा ।

उत्तर—जैसे आत्माको ग्रहण त्याग योग्यता नहि ॥ तैसे आत्माको उपेक्षा योग्यताभी नहि ॥ जिसते ग्रहण त्याग उपेक्षा योग्य आपनेते भिन्न अनात्मपदार्थ होता है ॥ अर आत्मा तौ आपना आप है ॥ तिसविषे ग्रहण त्यागकी न्यांई उपेक्षाभी नहि बनती ॥ उपेक्षा करणेवालेदा स्वरूप होनेते ।

शंका—एह जो तुसा कहिया आत्मा त्यागने योग्य नहि ॥ सो तुसाडा कहिना अयुक्त है॥जिसते रोग अर क्रोधादिकांकरके युक्त पुरुषांको मरणेदी इछाद्वेषते देखीती है ॥ तांते आत्माविषे द्वेषदे देखनेते आत्मा त्यागने योग्य है ॥ सर्प अठूहें आदिकांकी न्यांई ।

उत्तर—रोगक्रोधादिकांकरके युक्तपुरुषांका देहविषे द्वेष होना है॥तांते देहदा त्याग करदेते हैं॥सो त्यागने योग्य देह आत्मा नहि ॥ देहदे त्यागनेवाला जो है सो आत्मा है देहसें भिन्न ॥ तांते जो द्वेष है सो देहदे त्यागकरणेवालेविषे नहि ॥ त्यागनेलायक अनात्मवस्तु देहविषे द्वेषके होयांहोयांभी मेरे सिद्धांतदी हानि होती ॥ अर्थ एह आत्माका त्याग नहि होता ॥ एह मेरा कथन अयुक्त नहि ॥ किंतु यथार्थ है ॥ इसप्रकार इतनेग्रंथविषे मैत्रेयीयाज्ञवल्क्यका संवाद रूप श्रुतिदे विचारकरके आत्माविषे परम प्रेम है एह वर्णन कीया ॥ अब युक्तिकरकेभी आत्माविषे परम प्रेम वर्णन करते हैं॥ तिसनूं श्रवण कर ॥ सुख अर सुखदे साधन संपूर्ण स्त्रीपुत्रादिक ॥ आत्मादे वासते पियारे हैं ॥ तांते जिसदेवासते एह संपूर्ण पियारे हैं सो आत्मा परम पियारा है ॥ जैसे किसी पुरुषको पुत्रकेवासते पुत्रका मित्र पियारा होता है॥ तिसकी पुत्रविषे परमप्रीति होती है ॥ अर पुत्रद्वारा पुत्रदे मित्रविषे थोडी प्रीति होती है ॥ तैसे आत्माके वासते स्त्रीपुत्रादिकांविषे जो प्रीति है॥ सो थोडी प्रीति है॥ अर आत्माविषे परम प्रीति है॥ इसप्रकार श्रुतियांकरके अर युक्तीयांकरके कथनकीती जो है॥ आत्माविषे परमप्रीति ॥ सो सर्व लोकांके अनुभव सिद्ध है॥ जिसते सर्वलोक कहिते हैं॥ मेरा अभाव कदी न होवे ॥ सर्वदा में होवां ॥ इसप्रकारदी प्रार्थना सर्वना प्राणीयांदी देखीती है॥ इसते आत्माविषे परमप्रीति सर्वनालोकांदे अनुभवकरके प्रत्यक्ष सिद्ध है ॥ इसप्रकार प्रत्यक्ष अनुभव अर युक्त अर श्रुति एन्हा तिन्नाप्रमाणाकरके आत्माविषे परम प्रेमदे सिद्ध होयांहोयांभी कोईएक जो मूर्ख हैं श्रुत्यादिकांदे तात्पर्यनूं न जाननेवाले॥

तिन्नाने आत्माको पुत्रस्त्रीआदिकांदा शेप कथन कीया है ॥ सो तिन्नादे कथननूं श्रवण कर।

शंका—श्रुति एह कथन कर्ती है ॥ आत्मा ही पुत्रनामकरके होता भया ॥ तांते पुत्रको मुख्य आत्मता है ॥ सो पुत्रदी मुख्य-आत्मता ऐतरेय उपनिषद आदिकांविषे प्रकट कथन करी है ॥ किसवाक्यकरके ऐतरेय उपनिषदविषे पुत्रको मुख्य आत्मा कथन कीया है ॥ ऐसा पुछें ता श्रवण कर ॥ पितादा एक पुत्ररूप आत्मा है ॥ एक पितारूप आत्मा है जब पितारूप आत्मा मृत्युको प्राप्त होजाता है ॥ तव पुण्यकर्मांदे करणेवासते पिताके स्थानविषे पुत्ररूप आत्मा स्थित होता है ॥ तांते पुत्रको मुख्य आत्मता सिद्ध भई ॥ जिसते पुत्रको मुख्य आत्मता इसीते श्रुति एह कहिती है॥पुत्रसें रहितका लोक है नहि॥आपने स्थित होयां-होयांभी ॥ पुत्रदे अभावकरके स्वर्गदे अभावनूं पुराणादिकां विषे कथन कीया है ॥ इसीते बुद्धिमान् शास्त्रदे अर्थदे जानने-वाले पुत्रनूं परलोकदा साधन कहिते हैं ॥ जो पुत्र एन्ना तिन्नामंत्रांकरके शिक्षाको प्राप्त होया है पिताकरके ॥ सो तिन्न मंत्र एह है ॥ तूं ब्रह्म हैं १ तूं यज्ञ हैं २ तूं लोक हैं ३ अर जितना संसारदा सुख है ॥ तिसदा कारण पुत्र है ॥ ऐसा बृहदारण्यक उपनिषदविषे कथन कीया है ॥ तिसका अर्थ एह है ॥ सो एह मनुपलोक पुत्रकरकेही जितयाजाता है ॥ होर किसी-कर्मकरके जितया नहि जाता ॥ तात्पर्य एह मनुषलोकदा सुख पुत्रकरके प्राप्त होता है यज्ञ दान व्रत जप तपकरके मनुषलोक-दा सुख नहि प्राप्त होता ॥ पुत्रसें रहित पुरुषको सुखदे साधन धनादिकभी दुखदा कारण होजाते हैं ॥ जिसते धनादिकांको

देखकरके पढाहोउके देंदा है ॥ इसधननूं अब कौन सांभेगा मेरे मोयांहोयां ॥ एह जो कथन कोता सो तिन्नामंत्रांकरके शिक्षाको प्राप्त होयाहोयां जो पुत्र है पिताकरके ॥ सो पितादे परलोकदा साधन होता है ॥ तिसविषे एह प्रश्न है ॥ किस समे पितापुत्रनूं मंत्रांदा उपदेश करे ॥ तिसका उत्तर श्रवण कर ॥ मरणे समे पितापुत्रनूं उपदेश करे ॥ तूं ब्रह्म हैं ॥ इसदा तात्पर्य एह है॥ हेपुत्र! मैं अब मरणे लगाहां॥पिछे घरविच्च वडा तूं हैं तांते कुटंबपालनादिरूप वडआईयांदे कंम तैंने करणे ॥ आपने शरीरमात्रदे पालनपोषणविषे तत्पर नहि होता ॥ अर तूं यज्ञ हैं ॥ इसदा तात्पर्य एह है ॥ जैसे यज्ञादिककर्म मैं कर्तासो ॥ तैसेही यज्ञादिकर्म तैंने करणे मेरीगदीते बैठकरके ॥ यज्ञादिकर्मांदा त्याग नहि करणा ॥ अर तूं लोक हैं ॥ इसदा तात्पर्य एह है ॥ मेरेको स्वर्गविषे सुखदेवासते तूं गयाजायकरके पिंड करवावणे ॥ अर श्राद्धादिककरणे ॥ इसते आदिलेकरके श्रुतीयांआत्मानूं स्त्रीपुत्रादिकांदा शेष कथन कर्तीयां हैं ॥ अर्थ एह पुत्रस्त्रीआदिक मुख्य हैं आत्मा तिन्नादेवासते हैं ॥ एह अर्थ केवल श्रुतीयांकरकेही सिद्ध नहि ॥ किंतु सर्वलोकांदे अनुभवकरकेभी सिद्ध है ॥ सभीलोक पुत्रनूं प्रधान मानते हैं ॥ जिसते आपने मोयांहोयांभी जिसतरां पुत्रादिक धनादिकांकरके सुखीजीवें तैसेही यत्न कर्ते हैं ॥ तिसते पुत्रादि मुख्य हैं इसप्रकार श्रुतीयांकरके पर लोकांदे अनुभवकरके वादीने दिखलाई जो है ॥ पुत्रादिकांदी मुख्यता तिसको सिद्धांती अंगीकारकरके उत्तर कहिता है ।

उत्तर—जो तैंने कहिया है सो यथार्थ है ।

शंका—जेकर मेरा कहिना यथार्थ है॥ तौ तुसी आत्मादी मुख्यता किउँ कहिते है।

उत्तर—किसीइकयगा पुत्रदी मुख्यता करके आत्मा किसीदा शेष नहि होजाता॥ जिसते आत्मा तिन्नप्रकारका है॥ गौणात्मा १ मिथ्यात्मा २ मुख्यात्मा ३ तांते जिसजिस व्यवहारविषे जिसआत्माकी मुख्यता है तिसतिस व्यवहारविषे तिसीदी मुख्यता है॥ होरणां दुहांदी मुख्यता नहि॥ किंतु बाकीदे दुहांको तिसदा शेपता है॥ तिन्नप्रकारदे आत्माविच्चों पुत्रादिकांको गौणात्मता है तिसविषे दृष्टांत श्रवण कर॥जैसे किसीने कहा देवदत्त शेर है॥इसस्थानविषे जो देवदत्त अर शेरदी एकता है॥सो गौण है जिसते शेर अर देवदत्तका भेद प्रत्यक्ष नजर आवता है॥तैसे पुत्रादिकांकीभी जो आत्मता है॥सो गौण है॥ जिसते पुत्रादिकांदा अर आपना भेद प्रत्यक्ष है॥ अर पंचकोशरूप शरीर तिन्न मिथ्यात्मा है॥ तिसविषे दृष्टांत श्रवण कर॥ जैसे कोईपुरुष भ्रमकरके स्थाणुनूं चोर कहिता है सो स्थाणुको चोररूपता मिथ्या है॥ तैसे पंचकोशरूप तिन्ना शरीरांको अज्ञानी भ्रमकरके आत्मा जानता है॥ मैं मनुषहां॥ मैं काणा हौं॥ मैं विक्षेपनूं प्राप्त भया हौं॥ मैं समाधिविषे स्थितहां॥ इसप्रकारकरके॥ सो तिन्नाशरीरांको आत्मता मिथ्या है॥ जिसते तिन्ना शरीरांदा अर साक्षीरूप आत्मादा भेद है॥ पर प्रातीत नहि होता॥ इसते तिन्नाशरीरांको मिथ्यात्मता है जैसे चोर अर स्थाणुदा भेद है पर प्रतीत नहि होता॥ इसते स्थाणुको चोररूपता मिथ्या है॥ अर मुख्यात्मा साक्षी है जिसते साक्षीदा आत्माते भेद नहि प्रतीत

होता है ॥ जैसे पुत्रादिकांदा आपनेसें भेद प्रतीत होताभी ॥ अर साक्षीदा आत्माते भेद हैभी नहि वास्तव जैसे साक्षीदा देहआदिकांते भेद है ॥ जिसते साक्षी किसीदा प्रतियोगी नहि ॥ जैसे पुत्रादिकांदा अर शरीरादिकांदा पुरुष प्रतियोगी होता है ॥ अर साक्षीदा वास्तव प्रतियोगी कोई नहि ॥ जिसते देहादि संपूर्ण कल्पित हैं

शंका—साक्षीदे भेदके अभाव होनेते ॥ साक्षीको गौणात्मता अर मिथ्यात्मता मत होवे ॥ पर मुख्यात्मता साक्षीको किसते है।

उत्तर—साक्षीको देहपुत्रादिक संपूर्णांते अंतर प्रतीत होनेते साक्षीदी मुख्यात्मता है ॥ इस अर्थविषे एह अनुमान है ॥ साक्षी मुख्यात्मा है ॥ सर्वदे अंतर होनेते ॥ यो मुख्यात्मा नहि होता ॥ सो सर्वदे अंतरभी नहि होता ॥ जैसे अहंकारादिक मुख्यात्मा नहि ॥ सर्वके अंतरभी नहि।

शंका—होवे आत्मा तिन्नप्रकारका ॥ पर मैंने जो कथन कीतीसी पुत्रादिकांदी प्रधानता ॥ तिसदा क्या निर्णय भया।

उत्तर—आत्मादे तिन्न प्रकार होयांहोयां ॥ जिसव्यवहारविषे जिसको आत्मरूपता बनती है ॥ तिसव्यवहारविषे तिस आत्माको प्रधानता है ॥ तांते जिसव्यवहारविषे पुत्रको आत्मता है ॥ तिसव्यवहारविषे पुत्रको प्रधानता है॥अर जिसव्यवहारविषे पुत्रको आत्मता नहि ॥ तिसव्यवहारविषे पुत्रको प्रधानताभी नहि ॥ अर जिसव्यवहारविषे स्थूलशरीरादिकांदी आत्मता

वनती है ॥ तिसव्यवहारविषे स्थूलशरीरादिकांदी प्रधानता है ॥ सर्वव्यवहारांविषे स्थूलशरीरदी प्रधानता नहि ॥ अर जिसव्यवहारविषे साक्षीको आत्मता है ॥ तिसव्यवहारविषे साक्षीकी प्रधानता है ॥ अर पुत्रादिकांको शेषता है ॥ किसव्यवहारविषे पुत्र दी प्रधानता है ॥ अर किसव्यवहारविषे देहादिकांदी मुख्यता है ॥ अर किसव्यवहारविषे साक्षीदी मुख्यता है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ मरणेलगे मातापिताआदिकांदे घरविषे जो पदार्थ हैं ॥ तिन्नादी चोरांआदिकांते रक्षाकरणेरूप व्यवहारविषे गौणात्मा पुत्रादिप्रधान है ॥ जिसते तिन्नदे मोयांपिछे जीवनेदी इछावालाहै पुत्रादिक अमुख्यात्मा साक्षी प्रधान नहि ॥ घरदे पदार्थांदी रक्षाकरणे रूप व्यवहारविषे ॥ तिसको निर्विकार होनेते ॥ अर मिथ्यात्मा शरीरादिकभी मरणेवाले पुरुषदे घरदे पदार्थांदी रक्षाकरणेविषे समर्थ नहि ॥ जिसते शरीर मरणेके सन्मुख हूयाहूया है ॥ तांते मातापितादे पदार्थांदो रक्षाकरणेविषे पुत्रदी प्रधानता है ॥ विद्यमान होयांहोयांभी साक्षीके आत्मा साक्षीरूप अंगीकार नहि करणा ॥ घरदे पदार्थांदी रक्षारूप व्यवहारविषे गौणात्मा पुत्रादिकांदाही ग्रहण करणा आत्माकरके ॥ इसविषे दृष्टांत श्रवणकर ॥ जैसे किसीने एह कथन कीया ॥ एह वेदपडनेवाला वालक अग्नि है ॥ इसवाक्यविषे अग्निशब्दका अर्थ रूपताकरके चुलेविषे विद्यमान जो मुखाग्नि है ॥ सो ग्रहण नहि करीती ॥ जिसते मुखाग्निको वेदपडनेका समर्थ नहि ॥ किंतु वेदपडनेविषे समर्थवालक ग्रहण करीता है ॥ अग्निशब्ददा अर्थ रूपताकरके इतनेकरके जिसव्यवहारविषे गौणात्मा पुत्रादिकांदी प्रधानता है ॥ सो कथन करों अव मिथ्यात्मा स्थूलशरीरादिकांदी ॥ जिस

व्यवहार विषे प्रधानता है तिसनूं श्रवण कर॥मैं कृश होगीयांहां॥इ-
सतें अन्नदुग्धघृतादिकांनूं भोजनकरके मोटा होवांगा॥इसतें आ-
दिलेकरके जो लोक प्रसिद्धजीवांदा व्यवहार है ॥ तिसविषे अन्न-
भक्षणविषे समर्थशरीरको आत्मरूपताकरके ग्रहण करीता है तांते
इसशरीरदी पुष्टीकरणे व्यवहारविषे पुत्रकी प्रधानता नहि ॥ जि-
सतें आपने मोटेहोनेवासते पुत्रको दुग्ध नहि पिलावता ॥ अर
पुष्टीदाकारण औषदीयां पुत्रको नहि खुलावता अर जब एह व्य-
वहार पुरुष कर्ता है ॥ अब तपनूं करके ॥ मैं स्वर्गनूं प्राप्त होवां-
गा ॥ तिसव्यवहारविषे कर्ता जो है विज्ञानमय बुद्धि उपाधिवा-
ला जीव ॥ तिसीको आत्मरूपता है ॥ शरीरको अर पुत्रादिकां-
को आत्मता नहि ॥ जिसतें देहदे भोगांनूं त्यागकरके अर पुत्रा-
दिकांकेसाथ मोहको त्यागकरके ॥ कर्ता जो है जीव तिसको
स्वर्गप्राप्तिदा साधन कृच्छ्रचांद्रायणादि रूप तपनूं गंगाजीके कना-
रे बैठके कर्ता है ॥ इसव्यवहारविषे विज्ञानमय कोशरूपबुद्धिदी
प्रधानता है ॥ पुत्र शरीरादिकांदी प्रधानता नहि ॥ अर जिसव्य-
वहारविषे साक्षीरूप आत्मादी प्रधानता है॥ सो श्रवण कर॥
जद पुरुष एह निश्चय कर्ता है॥ शमदमादिक साधनानूं सिद्धकर-
के ॥ अर श्रवण मनन निदिध्यासननूं करके ॥ मोक्षनूं प्राप्त हो-
वांगा ॥ तद गुरुने उपदेश कीता जो महावाक्य ॥ तिसदे अर्थ
विचारकरके ॥ उत्पन्न भया जो अपरोक्षज्ञान तिसकरके एह
निश्चयकर्ता है ॥ मैं कर्ता भोक्ता नहि ॥ सच्चिदानंद ब्रह्म मैंहां
इसप्रकार चैतन्यरूप साक्षी आत्मनूं जानता है॥इसव्यवहार वि-
षे आत्माकरके साक्षी चैतन्यरूप आत्मादा ग्रहण करणा बनता है
अर गौणात्मा पुत्रादिकांदा अर मिथ्यात्मा शरीरादिकांका आ-

त्नशब्दकरके ग्रहण नहि बनता॥तांते इसव्यवहारविषे पुत्रादिकां- दी मुख्यता नहि ॥ तिन्नप्रकारका यो आत्मा है तिन्नांविचों जिस- व्यवहारविषे जिसआत्मादी योग्यता है ॥ तिसीदा ग्रहण करीता है दूसरेदा ग्रहण नहि होता ॥ जैसे ब्राह्मण बृहस्पतिसवनाम य- ज्ञनूं करे ॥इसशास्त्रकरके कथन कीते होये बृहस्पतिसवयज्ञविषे ब्राह्मणदाही अधिकार है ॥ क्षत्री अर वैश्यदा अधिकार नहि ॥ अर राजसूययज्ञविषे क्षत्रीदाही अधिकार है ॥ ब्राह्मण अर वै- श्यदा अधिकार नहि ॥ अर वैश्यस्तोमयज्ञविषे वैश्यदा अधि- कार है ॥ ब्राह्मण अर क्षत्रीदा अधिकार नहि ॥ तैसे गौण मिथ्या मुख्यभेदकरके तिन्न जो आत्मा हैं एन्नादा जैसा जिसदा ग्रहण करणा बनदा है ॥ आपने लायिक व्यवहारविषे ॥ तिसव्यवहा- रविषे तिसीदी प्रधानता है ॥ तांतेइतने करके जो सिद्धभया ॥ सो श्रवण कर ॥ जिसजिस व्यवहारविषे जोजो आत्मा ग्रहण- करणे योग्य है ॥ तिसतिस व्यवहारविषे तिसतिसव्यवहारदी कारणताके योग्य प्रधानात्माविषे परम प्रीति होती है ॥ अर तिसआत्मादा शेषरूपआत्माते भिन्नजो अनात्मवस्तु है ॥ ति- सविषे परमप्रीति नहि होती ॥ प्रीति होती है ॥ अर जो वस्तुनतां आत्मा है ॥ न आत्मादा शेष है ॥ तिसवस्तुविषे न प्रीति होती है ॥ न परमप्रीति होती है ॥ आत्मा अर आत्मादे शेषते भिन्नव- स्तु दोप्रकारकी होती है ॥ एक उपेक्षाके योग्य ॥ जैसे रसते- विषे पडेहोये तृणादिक॥ अर दूसरी द्वेषके योग्य होती है ॥ जै- से सिंहसर्पादि ॥ ऐसे होयांहोयां वस्तु चारप्रकारकी सिद्ध भई ॥ आत्मा १ आत्मादाशेष २ उपेक्ष्य ३ अर द्वेष्य ४ एन्ना चवां- विषे आकारदा नियम नहि ॥ जैसाजैसा जिसदा कार्य देखना

जैसाजैसा तिसको जानना ॥ जो उपकारकरणेवाला होवे सो प्रेय होता है ॥ अर ओह प्रेय होता है ॥ अर जो विरोधकरणेवाला है सो द्वेष्य होता है॥अर ओह अप्रेय होता है अर जो न उपकारकरणेवाला होवे न विरोधकरणेवाला होवे सो उपेक्ष्य होता है ॥ अर एह नियम नहि अमुका द्वेष्य है ॥ अमुका उपेक्ष्य है ॥ अर अमुका शेर है जिसते प्रसिद्ध द्वेष्य शेरविषेभी द्वेषदा अभाव देखीता है ॥ सिंहविषे कद द्वेष होता है ॥ अर कद द्वेषदा अभाव होता है ॥ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥जद वनविषे शेर आपने खानेदेवासते सन्मुख आवता है ॥ तद शेर द्वेष्य होता है ॥ अर्थ एह जो पुरुषचांहदा है मैं इसशेरको मारदेवां ॥ अर जद ओही शेरपासेंसे लंघजाता है ॥ तब शेर उपेक्ष्य होता है ॥ अर्थ एह पुरुष कहिता है ॥ शेर जांदा है तां जाये ॥ साडा इसदे मारणेविषे की प्रयोजन है ॥ अर जब ओही शेर पिंजरेविषे पायकर इसको ल्यायदेवे कोई ॥ तद इसदा खडावना होयाहोया इसको प्रेय होता है ।

शंका—एकपदार्थको शेष द्वेष्य उपेक्ष्य तिन्नास्वभावावाला अंगीकार कील्यांहोयां ॥ व्यवहारदी व्यवस्था न सिद्ध होवेगी ।

उत्तर—आकारांविषे प्रेय द्वेष्य उपेक्ष्य नियमदे अभाव होयांहोयांभी जिसविषे द्वेष्यदा लक्षण आवे सो द्वेष्य है ॥ अर जिसविषे उपेक्ष्यदा लक्षण आवे सो उपेक्ष्य है ॥ अर जिसविषे प्रेयदा लक्षण आवे सो प्रेय है ॥ सो लक्षण एह है ॥ जो सुखदेनेवाला होवे सो प्रेय है ॥ अर जो दुखदेनेवाला होवे सो द्वेष्य है॥अर जो सुखदुःखदोनोंदेनेवाला न होवे सो उपेक्ष है॥ताते एह

सिद्ध भया ॥ आत्मा अतिशयकरके पियारा है ॥ अर जो आत्मादे सुख देनेवाला है ॥ तिसकानाम शेष है सो पियारा है ॥ अर जो दुःखदेनेवाला है ॥ सो द्वेष्य है ॥ अर जो सुखदुःखदे नहि देनेवाला ॥ सो उपेक्ष है ॥ इसतरां चारप्रकारके पदार्थनूं निश्चयकरके एह है संपूर्णलोक ॥ और पंजवांपदार्थ जगतविषे कोई नहि ॥ एह याज्ञवल्क्यका मत है ॥ एह अर्थ याज्ञवल्क्य अर मैत्रेयीके संवादविषेही नहि कथन कीया ॥ किंतु बृहदारण्यक उपनिषदके पुरुषविध ब्राह्मणविषेभी कथन कीया है ॥ सो श्रवण कर ॥ सो एह आपना आप पुत्रतेंभी पियारा है ॥ अर धनतेंभी पियारा है ॥ अर होर संपूर्णशरीर इंद्रियांप्राणादिकांतेंभी पियारा है ॥ जिसते संपूर्णते अत्यंत अंतर है आत्मा ॥ इहांवो इसप्रकारके श्रुतिविषे कथन ॥ प्रसंग मैं क्यासिद्ध भया ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ श्रुतीयांदे अर्थदे विचारते उत्पन्न भई जो तत्ववेताकी दृष्टि है ॥ उसकरके साक्षी मुख्यआत्मा है ॥ पुत्रादिक अर शरीरादिक मुख्यआत्मा नहि ॥ जिसविचार दृष्टिकरके साक्षीकों मुख्यात्मता है ॥ तिसविचारका स्वरूप क्याहै ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ अन्नमयआदि पंचांकोशांनूं तैतरीय उपनिषदविषे कथन कीता जो प्रकार ॥ तिसकरके आत्माते भिन्नकरके ॥ पंजांकोशांदे अंतर स्थित आत्माका जो अनुभव सोविचार है ॥ पंजांकोशांते अंतर स्थित आत्माके अनुभवदा प्रकार श्रवण कर ॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ति एन्ना तिन्नाके उत्पत्तिविनाशको जो प्रकाशता है ॥ सो स्वप्रकाश चैतन्यरूप आत्मा साक्षी है ॥ अर आत्मासें भिन्न प्राणांसें लेकरके धनपर्यंत संपूर्णपदार्थ क्रमकरके आत्मादे निकटवर्ती होते हैं ॥ इसीकारणते तिन्ना सं-

पणांविषे प्रीति अधिकअधिक होती है ॥ अर्थ एह जोजोपदार्थ जितनाजितना आत्माके नेडे है ॥ तितनीतितनी तिसविषे प्रीति अधिक होती है ॥ अर जितनाजितना जोजोपदार्थ आत्मातें दूर है ॥ तितनीतितनी तिसविषे प्रीति थोडी होती है ॥ सो जेसे है तैसे श्रवणकर ॥ धनतें पुत्र पियारा होता है ॥ जिसते पुत्रके दुख दूरकरणेवासते धननं देदेता है ॥ अर आपने शरीरदी रक्षावासते पुत्रादिकांनूंभी देदेते है ॥ अर जद कोई राजा इसदे अपराधकरके एह कहे ॥ भांवें तां इसको सोटियांदी मार करो ॥ अर भांवें इसदे नेत्रनिकास लेवो ॥ तव पुरुष नेत्रांदी रक्षावासते शरीरदे दुःखनूं सहार लेता है॥अर जद कोईराजा ऐसा कहे भावें इसकेनेत्र निकासलेवो भांवें इसको फासी देवो॥तव प्राणांदी रक्षावासते नेत्र निकासदेनेको सहार लेता है अर आपने सुखदेवासते अतिरोगी जीव प्राणांकोभी त्यागदेता है तांते धनसें लेकरके अगलेअगलेविषे प्रीतिदी अधिकता सर्वलोकांदे अनुभव सिद्ध है अर आत्माविषे परमप्रीति ज्ञानवानांदे अनुभव सिद्ध है॥ इसप्रकार आत्माविषे परमप्रेमको प्रमाण सिद्ध होयांहोयांभी ज्ञानीअज्ञानीदा विवाद दूरकरणेवासते॥ज्ञानी अर अज्ञानीदा विवाद श्रुतिने दिखलाया है सो श्रवण कर॥ज्ञानी अर अज्ञानीदा बहुत विवाद होया किसीसमे ॥ ज्ञानी कहे संपूर्णदृश्यते परमपियारा साक्षीरूप आत्मा है ॥ अर अज्ञानीकहे परम पियारे पुत्रादिक हैं तिन्नादे भोगनेवाला साक्षीरूप आत्मा है ॥ इसविवादको करतेहुये दोवें श्रुतिकेपास गये निर्णयवासते ॥ तव श्रुतिने एह निर्णय कीया ॥ साक्षीरूप आत्मा परम पियारा है ॥ श्रुतिकरके झूठा होया जो अज्ञानी है ॥ आत्मातें भिन्न पुत्रआदिकांनूं पियारा कहने

वाक्य सो दोप्रकारदा है ॥ एक शिष्य है एक प्रतिवादी हैं शिष्यको जो ज्ञानवान्ने उत्तर कहया सो तौ शिष्यको बोधदा कारण होता भया अर प्रतिवादीको शापरूप होता भया ॥ सो ओह कौनवचन है ॥ जेडा प्रतिवादीको शापरूप होता भया अर शिष्यको बोधदा कारण होता भया ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ ज्ञानवान्ने एह वचन कहिया ॥ हे प्रतिवादी हे शिष्य नूं जो कहिता हैं साक्षीते भिन्न पुत्रादिकांनूं परम पियारा ॥ सो पुत्रआदिक नाशनूं प्राप्त होके तेनूं रुवावेंगे ।

शंका—एह एकवचनही प्रतिवादी अर शिष्य दोनोकों सरापरूप अर बोधदा कारणकैसे होता भया।

उत्तर—शिष्यको बोधरूप इसकरके होता भया ॥ जिसते शिष्यने पुत्रआदिकांको अनेकदोषांवाला जानयां विवेककरके ॥ इसते पुत्रआदिक परम पियारे हैं ॥ एह भ्रम तिसका नाश होगिया है सो जिसप्रकार शिष्यने पुत्रको दोषांवाला विचारकरके जानिया है॥सो विचार श्रवण कर॥विचार शिष्यदा॥जिसदे घरपुत्र नहि जन्मता तिसको वडा दुखहोता है॥स्त्रीकोंभी ॥अर पुरुषको भी॥अर पुत्रदी उमेद होयांहोयां जे पंजांचौं महीनयांदा गर्भ गिडजाये॥तौभी बहुत दुःख होता है ॥ अर पुत्रके जन्मकालविषे माताकों वडा दुःख होता है॥ कै स्त्रीयां पुत्रजन्मने कालविषे मृत्यु होजातीयां हैं ॥ स्त्रीके वच रहियांहोयांभी ॥ जद जोतिसीते पुछिया इसवालकदे कैसे ग्रह हैं ॥ तौ जेकर ज्योतिसी कहिया वालकदे ग्रह क्रूर हैं ॥ तद तिसवचननूं सुनकरके मातापिताको वडा दुःख होता है ॥ अर वालकदे शरीरविषे रोगांकरके

मातापिताको बहुत दुःख होता है अर बालकदी मूर्खताकरके माता पिताको बहुत दुःख होता है ॥ अर यज्ञोपवीतसें अनंतर जेकर बालक विद्या नहि पडता ॥ तद मातापिताको बहुत दुःख होता है अर विद्या पडियांहोयांभी जेकर तिसदा विवाह होवे तौ माता पिताको बहुत दुःख होता है ॥ अर विवाह होयांभी जुवानी अवस्थाविषे तिसदी परस्त्रीयांसाथ जेकर प्रीति होवे ॥ तद मातापितानूं बहुत दुःखहोता है ॥ अर आपनी स्त्रीसाथप्रीतिदे होयांहोयां जेकर कुटुंबीपुरुष निर्धन होवे ॥ तद मातापितानूं बहुत दुःख होता है अर धनी होयांहोयांभी जेकर आज्ञा अनुसारी न होवे तद मातापितानूं बहुत दुःख होता है ॥ अर आज्ञाअनुसार होयांहोयांभी जेकर जुवान मरजाये ॥ तद मातापिताको बहुत दुःख होताहै इसप्रकार पुत्रसें जो दुःख होतेहैं तिनका अंत नहि आवता ॥ जैसे पुत्रविषे दुःख है तैसे धनस्त्री आदिकांविषेभी जानने ॥ इसप्रकार विचारकरके पुत्रआदिकांविषे भिन्नभिन्न दोषांनूं जानकरके ॥ पुत्रआदिकांविषे प्रीतिनूं त्यागकरके साक्षीरूप आत्मानूं परम पियारा निश्चयकरके साक्षीरूप आत्मानूंही दिनरात्र चिंतन कर्ता है ॥ इसप्रकार आत्माते भिन्न पियारा जो तूं जानता हैं सो तैनूं रुवावेगा आपने नाशकरके ॥ एह जो ज्ञानवानदा वचन है ॥ सो शिष्यनूं विचारकरके बोधदा कारण होता भया अर एहीवचन जिसप्रकार प्रतिवादीको सापरूप होता भया ॥ सो प्रकार श्रवण कर ॥ प्रतिवादीने कहिया ॥ ज्ञानवान जो कहिता है साक्षीरूप आत्मा परम पियारा है ॥ तिसको मैं खंडन करांगा ॥ ऐसा जो ज्ञानवानकेसाथ द्वेष ॥ तिसतें अथवा मैं जो कथन कर्ताहां पुत्रआदिक परमपियारे हैं इस आ-

पनें वचनकों कदी न त्यागांगा ईसहठते पुत्रआदिक परमपिआरे हे इसपक्षको जो नहि त्यागता ॥ तिसप्रतिवादीको अनेकजन्मांविषे पियारे पुत्रस्त्रीआदिकांदा वियोग होता है ॥ अर्थ एह जो जिसजिस जन्मनूं प्राप्त होता है ॥ तिसतिसजन्मविषे पियारे पुत्रआदिकांदे मरणेकरके रोता रहिता है ॥ एह दोष पियारा तैनूं रुवावेगा ॥ इसवाक्यदे कहिणेवाले ज्ञानीने प्रतिवादीके तांई कथन कीया है सो श्राप ज्ञानवान्दा दिता होया ॥ अज्ञानीयांनूं अज्ञतोरी कदी नहि दूर होता ॥ इसीते ब्रह्मवेताके साथ द्वेषकरणेवाले अज्ञानी अज्ञतोरी पुत्रआदिकांदे मरणेकरके रोतेरहिते हैं ॥ आत्माते भिन्न पुत्रादिकांनूं परमपियारा जानने रूप पापकरके अज्ञानीयांको नरकदी प्राप्ति होती है ।

शंका—ज्ञानवान्ने कथन कीया जो एकवचन पियारा तैनूं रुवावेगा तिसवचनको शिष्यके तांई उपदेश रूपता ॥ अर प्रतिवादीके तांई श्रापरूपता ॥ कैसे होगई ॥ विरुधरूपता ।

उत्तर—ज्ञानवान् ईश्वररूप है ॥ तिसते ज्ञानवान्दे तात्पर्यदे अनुसार वचनकों विरूद्धरूपता होगई ॥ जैसे बिल्लीदे दंद चूहेदी मौतदा कारण होजाते हैं ॥ अर बिल्लीदे पुत्रांदी पालनादा कारण होजाते हैं ॥ जिसते ब्रह्मवेताने आपनी ब्रह्मरूपतादा अनुभव कीया है॥ तिसदे ब्रह्मवेता ईश्वररूप है इसकारणते ईश्वररूप ब्रह्मवेताने ॥ शिष्यकेतांई जो वचन कथन कीया है ॥ ज्ञानदी प्रातिवासते ॥ सो वचन शिष्यको ज्ञानदी प्राप्तिदा कारण होता है ॥ अर ओईवचन प्रतिवादीके तांई जो कथन कीता है ॥ श्रापदे अभिप्रायकरके सोवचन प्रतिवादीको दुखांदा कारण श्रापरूप-

होजाता भया ॥ तातें साक्षी आत्मानूं परमपियारा जानकरके तिसीविषे चितदी एकाग्रतानूं करे ॥ जो पुरुष आत्मानूं पियारा जानकरके तिसीविषे चितदी एकाग्रतानूं कर्ता है ॥ तिसदा पियारा कदी नाश नहि होता अनात्मा पुत्रादिकांदी प्रेतादे जानेवाला जो प्रतिवादी है ॥ तिसतें भिन्न जो ज्ञानवान्दा शिष्य आत्मानूं परमपियारा ॥ अर्थ एह निरतिशय सुखरूप चिंतन कर्ता है ॥ तिसज्ञानवान्दे शिष्यदा परमपियारा जो आत्मा है ॥ सो कदाचितभी नाशको नहि प्राप्त होता ॥ सदा आनंदरूप हूयाहूया प्रकाशता है ॥ अर अज्ञानीने परमपियारा जो मान्या है पुत्रआदिक ॥ सो नाशको प्राप्त होजाता है ॥ इतनेकरके आत्माविषे परमप्रेम सिद्ध भया ॥ तिसकरके आत्मानूं परमानंद रूप जानना ॥ इस अर्थविषे एह अनुमान है आत्मा परमानंदरूप है परम प्रेमदाविषे होनेतें ॥ जो परमानंदरूप नहि ॥ सो परम प्रेमदाविषेभी नहि जैसे घटआदिक ॥ परमानंदरूप नहि तौ परम प्रेमदाविषेभी नहि ।

शंका—आत्माविषे परमप्रेम होवो ॥ पर तिसकरके आत्मादी परमानंदरूपता नहि बनती ।

उत्तर—जितनीजितनी जिसविषे प्रीति अधिक होती है तितनातितना तिसविषे सुख अधिक होता है ॥ जिसकारणतें चक्रवर्तीराजासें लेकरके हिरण्यगर्भपर्यंत पदांविषे ॥ जिसजिस पदविषे प्रीति अधिक है ॥ तिसतिसपद विषे सुखभी अधिक है ॥ एह तैतरीय उपनिषद अर बृहदारण्य उपनिषदविषे कथन कीया है ॥ इसकारणतें आत्माविषे प्रीतिदी निरतिशयतादे होयांहोयां॥

आत्माविषे आनंदभी निरतिशय है ॥ ऐसा जानीता है ॥ निरतिशयदा अर्थ तोलमापसें रहिता ।

शंका—आत्मादी परमानंदरूपता नहि वनदी ॥ जेकर आत्मा परमानंदरूप होवे ॥ तौ संपूर्ण अंतःकरणदीयां वृतीयांविषे आनंददी प्रतीति होवे ॥ जैसे आत्मादे स्वरूप चैतन्यदी प्रतीति होती है ।

उत्तर—चैतन्य अर आनंद दोवें आत्माका स्वरूप है ॥ पर चैतन्यकी संपूर्ण अंतःकरणदीयां वृतीयांविषे प्रतीति होती है ॥ आनंदकी नहि होती ॥ इसविषे दृष्टांत श्रवण कर ॥ जैसे दीपक उष्ण अर प्रकाशरूप है ॥ पर घरविषे प्रकाश पसरजाता है ॥ उष्णता नहि पसरती ॥ तैसे आत्मादी चेतनता सर्ववृतीविषे प्रतीत होती है ॥ आनंद नहि प्रतीत होता ।

शंका—चैतन्य अर आनंददे अभेद होयांहोयां चैतन्यदी प्रकटतादा कारण अंतःकारण वृतिविषे आनंददीवी प्रकटता होई चाहीये ।

उत्तर—चैतन्य अर आनंददे अभेद होयांहोयांभी ॥ चैतन्यदी प्रकटताकरके आनंददी प्रकटता नहि होती ॥ जैसे एकपुष्पविषे स्थित जो हैं ॥ गंध रूप रस स्पर्श तिनका अभेद है॥पर एकघ्राणादिक इंद्रियकरके गंधादि एकगुणही ग्रहण करीता है ॥ घ्राणइंद्रियकरके रूपरसआदिकांका ग्रहण नहि होता ॥ तैसे चैतन्य अर आनंददे अभेद होयांहोयांभी ॥ संपूर्ण चितवृतीयां विषे चैतन्यदी प्रतीति होती है ॥ आनंददी नहि होती ।

शंका—चैतन्यदा अर आनंददा भेद नहि ॥ गंधरूप रस-रूपशंदा भेद है ॥ तांते दृष्टांत दार्ष्टांतदी तुल्यता नहि ।

उत्तर—चैतन्य अर आनंदका जो अभेद है ॥ सो साक्षी-रूप आत्माविषे है ॥ अथवा आत्मादी उपाधिरूप वृतीयांविषे है जेकर कँहें साक्षीरूप आत्माविषे चैतन्य अर आनंदका अभेद है ॥ तो दृष्टांत दार्ष्टांतदी तुल्यता है ॥ गंधादिक चैतन्य अर आनंदकी न्यांई एक पुष्पविषे स्थित हूयेहूये भेदसे रहित हैं ॥ जिसते रूपादिकांनूं त्यागके गंध नहि ल्याय सकीदी ॥ अर गंधादिकांनूं त्यागके रूपनूं नहि लिया सकीदा ॥ अर जेकर कँहें आत्मादी उपाधिरूप वृतीयांविषे चैतन्य अर आनंदका अभेद है ॥ सो तो नहि ॥ जैसे गंधादिकांदे ग्रहणकरणेवालीयां घ्राणादिक इंद्रियांदे भेदकरके ॥ गंधादिकांदा भेद है ॥ तैसे चैतन्य अर आनंददे ग्रहणकरणेवालीयां ॥ राजसी सात्विकी वृतीयांदे भेदते चैतन्य अर आनंददाभी भेद है ॥ अर्थ एह सात्विकी वृतिकरके आनंददी प्रतीति होती है ॥ अर राजसी तामसी वृतिकरके आनंददी प्रतीति नहि होती ॥ चैतन्यदी प्रतीति होती है ॥ जैसे घ्राणकरके गंधदी प्रतीति होती है रूपदी प्रतीति नहि होती ॥ तांते उपाधिरूप वृतियांकरके चैतन्य अर आनंदका भेद है ॥ जैसे घ्राणादिकांदे भेदकरके गंधादिकांदा भेद है ।

शंका—जेकर वृतीयांविषे चैतन्य अर आनंदका भेद है ॥ तो अभेद किसविषे है ।

उत्तर—पुण्यरूप कर्मांते उदय होई जो सात्विकी वृत्ति॥तिस

विषे चैतन्य अर आनंदकी एकता प्रतीत होती है॥ जिसते सात्विकी वृत्ति निर्मल है।

शंका—जेकर सात्विकीवृत्तिविषे चैतन्य अर आनंदका अभेद है॥तो भेद किसविषे है।

उत्तर—राजसी वृत्तिविषे चैतन्य अर आनंदका भेद है॥ राजसी वृत्तिको मल न होनेते॥राजसी वृत्तिविषे विद्यमानभी सुख नहि प्रतीत होता॥ रजोगुणकरके सुख आछादिया जाता है जैसे अमलीविषे विद्यमान खटियाईलू न करके आछादी जाती है अर थोडीसी खटियाई प्रतीत होती है ॥ तैसे राजसी वृत्तिविषे आनंद आछादिया जाता है।

शंका—गूढतात्पर्यवालेदी॥ कथन कीया जो प्रकार तिसकरके आत्मादी परमानंदरूपता होवो ॥ परमप्रेमदाविषे होनेते आत्माको॥ अर मिथ्याआत्म गौणात्मरूप जो है प्रेयउपेक्ष्यद्वेष्य एन्नाते भिन्नकरके जाने विवेकी आत्माकों॥ तौभी एह विवेक मोक्षदा साधन नहि ॥ अपरोक्षज्ञानद्वारा मोक्षदाकारण जो है योग तिसदा न कथन करणेते।

उत्तर—मुख्यतात्पर्यसे॥जो योगकरके होता है॥ सोई विवेककरके होता है॥ जैसे योग अपरोक्षज्ञानद्वारा मोक्षदा कारण है॥ तैसे विवेकभी अपरोक्षज्ञानद्वारा मोक्षदा कारण है।

शंका—प्रकट अभिप्रायसें ॥ ज्ञानसिद्धिदेवासते योग कहिया है ।

उत्तर—प्रकट अभिप्रायसें॥ विवेककरकेभी ज्ञानदी सिद्धि-

होती है ॥ जैसे अपरोक्षज्ञानदा साधन रूपताकरके योगकथन कीता है प्रथम अध्यायविषे॥तैसे इस अध्यायविषे कथन कीते गो-णात्मा मिथ्या आत्मादे विवेकद्वारा ॥ पंजांकोशादि विवेककरके ॥ ज्ञानदी उत्पति होती है।

शंका—योगकरके अर विवेककरके ज्ञानदी उत्पति होती है इसविषे की प्रमाण है।

उत्तर—गीतावचन इसविषे प्रमाण है ॥ तिसदा अर्थ एह है आत्मा अनात्मादे विवेककरणेवालीयांनि जिस मोक्षरूपस्थाननूं प्राप्त होवीता है तिसी मोक्षरूपस्थाननूं योगवालीयांने प्राप्त हो-वीता है ॥ इसवचनकरके भगवान्ने योगीयांकों अर विवेकीयां-कों अपरोक्षज्ञानद्वारा मोक्षरूपफल एक कथन कीया है।

शंका—विवेकदा अर योगदा जेकर फल एक हैं ॥ तो शास्त्रां विषे एकताही कथन कीया चाहीदासी ॥ दोनोका कथन नहीसी चाहीता।

उत्तर—मोक्षदे अधिकारी अनेकप्रकारके हैं ॥ किसीसें योग नहि होसक्ता ॥ अर विवेक होय सक्ता है॥अर किसीसें विवेक न-हि होय सक्ता योग होयसक्ता है ॥ ऐसे विचारकरके परमेश्वरने शास्त्रविषे योग अर विवेक दोनो कथन कीते है।

शंका—योग बहुतयत्नते सिद्ध होता है ॥ अर विवेक सुखा-ला सिद्ध होता है॥ इसते विवेकनालो योगदी कुछ अधिकता कही चाहीये।

उत्तर—योगदी विवेकसे कुछ अधिकता तां है नहि ॥ जिस-

ने अपरोक्षज्ञानदी उत्पति दोनोकरके होती है ॥ अर रागद्वेषदी निवृत्तिभी दोनोको एक जैसी होती है ॥ योगी अर विवेकीको ॥ जिसविवेकीने आत्माको अतिशयकरके पियारा जाता है ॥ तिसदा विषयांविषे राग नहि होता ॥ जिसते विषयांविषे रागदाकारण विषयांविषे अनुकूलता बुद्धि विवेकीको नहि रहिती ॥ तांते विवेकीका विषयांविषे राग नहि होता ॥ अरविवेकीका किसीविषे द्वेषभी नहि होता ॥ जिसते द्वेषदा कारण प्रतिकूलता बुद्धि किसीविषे नहि रहि विवेकीदी ॥

शंका—विवेकीदा व्यवहारकालविषे देहदे उपद्रव करणेवालियांविषे द्वेष देखीता है ॥

उत्तर—व्यवहारदशाविषे देहदे उपद्रव करणेवालियांविषे योगीदाभी द्वेष देखीता है ॥ तांते विवेकीकी अर योगीकी तुल्यता है ॥ योगीकीविवेकीनालो कुछ अधिकता नहि।

शंका—उपद्रवदे करणेवाले सर्पअठूंये आदिकांविषें द्वेषदे करणेवालेको द्वेषकालविषे हम योगी नहि मानते।

उत्तर—तौ देहदे उपद्रव करणेवाले सर्पअठूंये आदिकांविषे द्वेषदे करणेवालेकों द्वेषदे करणेकालविषे हम विवेकी नहि मानते।

शंका—विवेकीकों द्वैतदी प्रतीति होती है ॥ अर योगीकों नहि होति ॥ तांते योगीकीविवेकीते अधिकता है।

उत्तर—व्यवहारकालविषे द्वैतदी प्रतीति योगीकोंभी होती है ॥ तांतें योगीदी विवेकीसे अधिकता कुछ नहि।

शंका—समाधिकालविषे योगीको द्वैतप्रतीति नहि होती ॥ इसतें योगीदी विवेकीतें अधिकता है ।

उत्तर—जैसे योगीको समाधिकालविषे द्वैतदीप्रतीति नहि होती॥तैसे विवेकीकोंभी श्रुतीयां युक्तीयांकरके जगतदीमिथ्यारूपता अर आत्मादी ॥ असंगनिर्विकार ब्रह्मरूपतादे विवेककालविषे द्वैतदी प्रतीति नहि होती ॥ इसवार्तानूं अद्वैतानंदनाम तीसरेअध्यायविषे हम कहेंगे ॥ इसते योगीदीविवेकीतें अधिकता नहि ॥ सर्वप्रकारांकरके योगी अर विवेकीदीतुल्यता है ॥

शंका—जो पुरुष सदा निजानंददा अनुभव कर्ता है॥ अर द्वैतदी प्रतीतितें रहित है ॥ तिसकानाम तौ योगी है ॥ तुसी तिसकानाम विवेकी कैसेकहिते हो ।

उत्तर—ऐसेपुरुषकानाम जे योगी रखके तूं प्रसन्नहोता है तौ योगीही सही ॥ ब्रह्मानंदनाम ग्रंथदे इस दूसरेअध्यायविषे आत्मानंददाविवेक कीता है॥ थोडी बुद्धिवाले जिज्ञासीको आत्मसाक्षात्कारवासते ।

॥ इति श्रीआत्मानंदनामग्रंथ समाप्त ॥

श्रीः

पञ्चदशी भाषा

ब्रह्मानंदे अद्वैतानंद प्रकरणम्

॥ श्रीसद्गुरुप्रसाद ॥   ॥ अथ अद्वैतानंदनाम ग्रंथदा आरंभ करें हैं सो ब्रह्मानंददा तीसरा अध्याय है आदिसें पंचदशीदा तेरवां ग्रंथ है ।

शंका—प्रथमअध्यायविषे तुसां कहिआसी आनंद तिन्नप्रकारका है ॥ ब्रह्मानंद १ अर विद्यानंद २ अर विषयानंद ३ द्वितीयाध्यायविषे आत्मानंददा निरूपण कीता है ॥ तांते तिन्नप्रकारका आनंद न सिद्धभया आत्मानंदको तिन्ना आनंदांते भिन्न होनेते ।

उत्तर—आत्मानंद ब्रह्मानंदरूप है ॥ जैसे ब्रह्मानंददा योगानंद नाम है ॥ योगकरके तिसका अनुभवकरणेते अर निरुपाधि होयेकरके ब्रह्मानंदका नाम निजानंद है ॥ तैसे गौणआत्मा मिथ्याआत्मादे विवेककरके ब्रह्मानंददे अनुभवकरणेते ब्रह्मानंदका नाम आत्मानंद है तांते प्रथमाध्यायविषे योगानंद कथन कीआ है सो आत्मानंद जानना ।

शंका—आत्मानंदको योगानंदरूपता नहि बनती जिसते योगानंद अद्वितीय है अर आत्मानंद सद्वितीय है कैसे आत्मानंद सद्वितीय है ऐसा पुछें ता श्रवणकर ॥ आत्मानंददे सजातीय गौणात्मा पुत्रस्त्रीआदिक हैं ॥ अर मिथ्याआत्मा देहआदिक हैं ॥

अर आत्मानंदते विजातीय अनात्मरूप आकाशादिक हैं ॥ तांते अद्वितीयात्मानंदको अद्वितीय योगानंदरूपता नहि बनती ।

उत्तर—आत्मानंद अद्वितीय ब्रह्मरूप है ॥ जिसते सजातीय गौणात्मा पुत्रादिक अर मिथ्याआत्मा देहादिक अर विजातीय अनात्मरूपाकाशादिक आत्मानंदते भिन्न सत्य नहि ॥ ऐसे तैतरीय उपनिषदकी श्रुति कथन करती है तिसके अर्थकों श्रवण कर ॥ जो ब्रह्मवेतिआंकरके प्राप्त होने योग्य है ॥ सच्चिदानंद रूप आत्मा तिसते आकाश उत्पन्न होता भया आकाशते पवन उत्पन्न होता भया पवनते तेज उत्पन्न होता भया तेजते जल उत्पन्न होता भया जलते पृथिवी उत्पन्न होती भई पृथिवीते औषधीआं उत्पन्न होतीआं भईआं औषधीआंते अन्न उत्पन्न होता भया अन्नते शरीर उत्पन्न होता भया ॥ इसप्रकार कथन कीआ जो है जगत् सो आपने कारण आत्मानंदते भिन्न नहि ॥ इसते आत्मानंदको अद्वितीय ब्रह्मरूपता है ।

शंका—तैतरीयोपनीषदकी श्रुतिविषे आत्माकों जगत्कारणता कहि है ॥ अर आनंदकों जगत्कारणता नहि कहि ।

उत्तर—होरस्थानविषे तैतरीय उपनिषदविषे आनंदकों जगत्कारणता कथन करी है ॥ आनंदते जगत उत्पन्न होता है अर आनंदकरकेही जीवता है अर आनंदविषेहि लय होजाता है तांते जगत्आत्मानंदते भिन्न नहि इसअर्थविषे एह अनुमान है जगत् आत्मानंदते भिन्न नहि आनंदका कार्य होनेते ॥ जोजिसदा कार्य है सो तिसते भिन्न नहि जैसे मृत्तिकाका कार्य घटादिक मृत्तिकाते भिन्न नहि ।

शंका—जो जिसते उत्पन्न भया है सो तिसते भिन्न नहि एह नियम नहि बनता जिसते घुमिआरते उत्पन्न होआहोया घट घुमियारते भिन्न है।

उत्तर—कारण दोप्रकारका होता है॥ एक निमित्तकारण दूसरा उपादान कारण जैसे घटदा घुमियार निमित्तकारण है॥अर मृत्तिका उपादान कारण है निमित्तकारणते कार्य्यदा भेद होता है उपादानकारणते कार्य्यदा भेद नहि होता॥ आत्मानंद जगत्दा उपादान कारण है॥ तांते आत्मानंदते जगत् भिन्न नहि जैसे घटमृतिकासें भिन्न नहि अर निमित्तकारणते कार्यदा भेद होवो जैसे घुमियारते घटदा भेद होता है अर आनंदरूप आत्माते जगत्दा भेद नहि जिसते आनंदरूप आत्मा जगत्दा निमित्तकारण नहि ।

शंका—दृष्टांतविषे कुलाल घटदा उपादान कारण किउँ नहि

उत्तर—कार्यदी स्थितिदा अर कार्यदे लयदा यो आधार होता है सोउपादान कारण कहीता है॥ घटदी स्थिति अर लय घुमिआर विषे नहि देखीते॥तांते घटदीस्थिति अर लयदा आधाररूपघटदी उपादानकारणता घुमिआर को नहि घटदी स्थिति लय मृतिकाविषे प्रत्यक्षकरके देखीते है॥ तांते घटदा उपादान कारण मृतिका है घुमिआर नहि।

शंका—होवो घटदा मृत्तिका उपादान कारण प्रसंगमैं किया आया।

उत्तर—प्रसंगविषे एह आया जैसे मृतिका घटदा उपादान

कारण है घटकीस्थितिलयदा आधार होनेते ॥ तैसे आत्मानंद जगतदा उपादान कारण है जगतदी स्थितिलयदा आधार होनेते ॥ ऐसे तैतरीय उपनिषदकी श्रुतिने कथन कीआ है ॥ आनंदकरके भूतस्थित होते हैं आनंदविषे लय होते है इसवाक्यकरके ॥ तांते आत्मानंद जगतदा उपादान कारण है उपादानकारण तिन्नप्रकारका होता है ॥ विवर्ती १ परिणामी २ आरंभक ३ तिन तिन्नाविच्चों परिणामी अर आरंभक इह दोवें साकारवस्तुविषे बनते है ॥ अर निराकारवस्तु परिणामी उपादान अर आरंभक उपादान नहि होती जिसते आरंभवादी ऐसा कथन कर्ते हें ॥ उपादानकारण भिन्न होता है कार्य्यते अर कार्य्य भिन्न होता है उपादानकारणाते जेसे वस्त्रते तंतु भिन्न है अर तंतुआंते वस्त्र भिन्न हे जेकर तंतूआंते वस्त्रदा भेद न होवे तौ तंतुआंते वस्त्रदी उत्पत्ति न होवे जैसे वस्त्रते वस्त्रदी उत्पत्ति नहि होती तांते तंतूआते वस्त्रदी उत्पत्ति होनेते तंतुवस्त्र भिन्नभिन्न है ॥ विरुद्धपरिमाणते तंतूआंका परिमाण होता है हजारां गजांदा अर वस्त्रदा परिमाण होता है पंजसतगजदा अर तंतु और कार्य्यकों कर्तीआं हें अर वस्त्र और कार्य्यको कर्ताहै ॥ तांते तंतु अर वस्त्र भिन्नभिन्न हें अब परिणामदे स्वरूपनूं श्रवण कर ॥ एकवस्तुको प्रथमअवस्थानूं त्यागकरके दूसरीअवस्थाकी प्राप्तिका नाम परिणाम हे जैसे दुग्ध दहीरूप होजाता हे अर जेसे मृतिका घटरूप होजाता है अर जैसे सुवर्ण कुंडलरूप होजाता है अब विवर्तका लक्षण श्रवण कर एकवस्तुको प्रथमावस्थानूं न त्यागकरके और अवस्थाकी प्रतीतिका नाम विवर्त है जैसे रसी आपनी रसीरूपतानूं न त्यागकरके सर्परूप होकरके प्रतीत होती है ।

शंका—विवर्तको प्राप्त होई जो रसी है सो सकार देखीती है ॥ तांते निराकारणदा विवर्त नहि बनता जैसे निराकारदा परिणाम अर आरंभ नहि बनता ।

उत्तर—निरवयवदा विवर्त तां बनता है जिसते निराकार आकाशविषे नीलरूप अर मूधे कटाहाकारतादा भ्रम देखीता है ॥ तांते जैसे निराकार आकाशविषे भ्रम देखीता है तैसे निराकार आनंदरूप आत्माविषे जगत्रूप विवर्त अंगीकार करणा॥ विवर्तदा अर्थ भ्रम ।

शंका—अद्वयानंदरूप आत्माविषे जगत् भ्रम नहि बनता जगत् भ्रमदी कल्पनाके कारणदे अभाव होनेते ।

उत्तर—अद्वयानंद आत्माविषे जगत् भ्रमदी कल्पनादा कारण मायाशक्ति है जैसे इंद्रजालदी रचनाकरणेवाले मदारीदी मणिमंत्रादि रूप मायाशक्ति गंधर्वनगरादिकांदी कल्पनादा कारण है ।

शंका—आनंदरूप आत्मासें भिन्न मायाशक्तिके अंगीकार कीतिआं होआं आत्मादी अद्वैतरूपता न रहेगी ।

उत्तर—माया मिथ्या है अनिर्वचनीय होनेते तांते मायाशक्तिकरके आत्माविषे द्वैतकी प्राप्ति नहि होती ॥ जैसे मृगतृष्णादी नदीकरके करल्लरी भूमिविषे चिंकड नहि होता ॥ जिसते मायाशक्ति परमात्मासें भिन्नकरके अर अभिन्नकरके नहि कही जाती इसते मायाशक्ति अनिर्वचनीय है जैसे अग्निआदिकांदी शक्ति अग्निआदिकांसे भिन्न अर अभिन्नकरके कही नहि जा-

ती ॥ अग्निविषे छालेआदिकांदे उत्पन्न करणेदी जो शक्ति है सो अग्निदे स्वरूपते भिन्न नहि ॥ जिसते अग्निदे स्वरूपते भिन्नकरके प्रतीत नहि होती अर अग्निदी शक्ति अग्निदे स्वरूपते अभिन्नभी नहि जिसते मणिमंत्रआदिकांकरके शक्तिदा कार्य्य छालेआदिकांदा प्रतिबंध देखीता है ॥ तांते अग्निदे स्वरूपते अग्निदी शक्ति भिन्न माननी ।

शंका—होवो प्रतिबंधदा देखना अर अग्निदी शक्तिदा अग्नि-ते भेद मत होवे ॥ भेदके अभाव माननेविषे दोष कोई नहि ।

उत्तर—अग्निदी शक्तिदा अग्निते भेद अवश्य मानना जिसते अग्निदा स्वरूप प्रत्यक्ष है ॥ अर अग्निदी शक्ति प्रत्यक्ष नहि अर अग्निका प्रतिबंध नहि अर अग्निदी शक्तिदा प्रतिबंध होता ॥ तांते अग्निदे स्वरूपते जेकर अग्निदी शक्तिनूं भिन्न न मानेंगा तो प्रतिबंध किसका होवेगा तेरे मतविषे ।

शंका—इंद्रियांकरके न प्रतीत होनेवाली शक्तिदा प्रतिबंध तुसी कैसे जानतेहो ।

उत्तर—इंद्रियांकरके न प्रतीत होनेवाली शक्ती कार्य्यकरके जानीती है ॥ जिसते कारणदे विद्यमान होयांहोयांभी कार्य्यदी न उत्पत्तिदे होयांहोयां प्रतिबंधदी कल्पना होती है जैसे अग्निदे जागदिआं होयांभी छालाआदिक कार्य्य न होवे तो शक्तिदा प्रतिबंध मंत्रआदिकांकरके कल्पीता है इसप्रकार लोकप्रसिद्ध अग्निआदिकांदी शक्तिदे स्वरूपनूं प्रमाणकरके कथन कीआ॥अब मायाशक्तिविषे प्रमाणानूं श्रवण कर॥श्वेताश्वतर उपनिषदविषे

एह कथन कीता है ॥ मुनीश्वरांदा जगत्‌कारणदे निर्णयविषे बहुत विवाद होता भया ॥ तब तिन्नाकों श्वेताश्वतर मुनीश्वर कहिता भया ॥ सर्भीमुनीश्वर तुसी ध्यानयोगविषे स्थित होकर जगत्‌दे कारणनूं देखो तब मुनीश्वर ध्यानयोगविषे स्थित होजाते भये तिसकरके स्वप्रकाश आत्मादी आपने गुणांकरके छपी होई शक्तिनूं देखते भये जगत्‌दा कारण ॥ कालस्वभावआदि कारणवादांविषे दोषके देखणेवाले जो मुनीश्वर हैं सो जगत्‌दे कारणदी जिज्ञासाकरके ध्यानयोगविषे स्थित होयहोय अधिकारी स्वप्रकाश चैतन्यरूप प्रत्यगात्माते अभिन्न ब्रह्मदी आपने कार्य स्थूलसूक्ष्म शरीरांकरके आछादी होईनूं जगत्‌दा कारण साक्षात् कर्ते भये एह वाक्य मायाशक्तिविषे प्रमाण है॥होरभी श्वेताश्वतर उपनिषददा वाक्य प्रमाण है शक्तिविषे तिसनूं श्रवण कर॥ब्रह्मदी सर्वशक्तिआंते श्रेष्ठशक्ति जगत्‌दा कारण रूप अनेकप्रकारदी श्रवण करीती है ॥ क्रियाशक्तिः ज्ञानशक्तिः इच्छाशक्तिः केवल मायाशक्तिः श्रुतिआंकरकेहि सिद्ध नहि किंतु स्मृतिकरकेभी सिद्ध है जैसे अनेक प्रकारदी मायाशक्तिनूं श्रुतिने कथन कीता है तैसे वसिष्ठजीनेभी उत्पतिप्रकरणविषे अनेकप्रकारदी मायाशक्तीनूं कथन कीता है सो शक्तिदे कथनकरणेवाले वसिष्ठजीके वाक्यांनूं श्रवण कर॥ हेरामजी! ब्रह्म सर्वशक्ति है अर नित्य है अर पूर्ण है अर सभते परे है अर अद्वितीय है तात्पर्य एह वास्तवते ब्रह्म नित्य है पूर्ण है अद्वितीय है अर कार्य प्रपंचरूप उपाधि दृष्टिकरके देखीये तौ ब्रह्म सर्वशक्ति है सो परब्रह्म जिसजिसकालविषे जिसजिसशक्तिकरके विवर्तकों प्राप्त होता है तिसतिसकालविषे सोसोशक्ति प्रकट होती है जैसे सिप्पी जद रुप्पेरूप

ताकरके विवर्तको प्राप्त होती है तब स्पंदकी प्रतीति होती है अर जब सिप्पी कल्लोलरूपताकरके विवर्तको प्राप्त होती है तब कल्लोकी प्रतीति होती है अर जब सिप्पी अबरकआदिक रूपताकरके विवर्तको प्राप्त होती है तब अबरकआदिक प्रतीत होते हैं ॥ हे-रामजी ! ब्रह्मदी चेतनताशक्ति देवता मनुष्य पशुआदिक शरीरांविषे प्रतीत होती है ॥ अर स्पंदशक्ति चलनेदा कारणरूप पवनविषे प्रतीत होती है ॥ अर दृढताशक्ति पथरांविषे प्रतीत होती है ॥ अर द्रवताशक्ति जलांविषे प्रतीत होती है ॥ अर दाहशक्ति अग्निविषे प्रतीत होती है अर शून्यशक्ति आकाशविषे प्रतीत होती है ॥ अर विनाशशक्ति विनाशीपदार्थांविषे है ॥ हेरामजी ! जैसे सूक्ष्मसर्पदे अंडेविषे वडासर्प रहिता है तैसे सूक्ष्मपरमात्माविषे स्थूलजगत् रहिता है ॥ अर जैसे एकरूप बीजविषे फल पत्र लता पुष्प शाखादा समूलवाला वृक्ष रहिता है किसीएकदेशविषे किसीएककालविषे कोईक शक्तिआं परमात्माते उदय होतीयां तिन्ना शक्तीआंदी एकवार प्रकटता नहि होती॥जैसे किसीदेशविषे किसीकालविषे पृथिवीते जो उत्पन्न होते है ॥ अर किसीदेशविषे किसीकालविषे पृथिवीते चावल उत्पन्न होते हैं ॥ किसी देशविषे किसीकालविषे केसरआदिक उत्पन्न होते है ॥ हेरामजी! जगत् कल्पनामात्ररूप है वास्तव नहि मनने जगत्कल्पिआ है ॥ ताते जगतदी कल्पनादे कारण मनदा स्वरूप श्रवण कर॥हे रामजी! आत्मा सर्वव्यापक है अर सदा एकरसताकरके प्रकाशमान है अर देशकालवस्तुदे परीछेदते रहित है सोआत्मा जिसकालविषे स्वपरदा ज्ञानरूप मननशक्तिनूं धारता है कैसीभी मननशक्ति है जो मायादा परीणामरूप हैं तिसकालविषे तिसकानाम

मन कहीता है हेरामजी आत्माविषे जगतदी! कल्पनादे प्रकारनूं श्रवण कर॥प्रथम आत्मा मननशक्तिरूप विवर्त करके मनरूप होता है मनकी कल्पनासें उपरंद बंध मोक्षदी कल्पना होती है तिसते अनंतर भुवन है नाम जिसका ऐसी प्रपंचदी कल्पना होती है ॥ एह पर्वत हैं एह नगर है एह नदीआं हैं एह समुद्र है एह बन हैं मनुष्य देवता पशुपक्षी आदिकां कल्पना होती है इसप्रकारकरके जगतदी स्थिति स्थिरतानूं प्राप्त होगई है ॥ अर्थ एह मिथ्याजगत् सत्यरूप होकरके प्रतीत होने लगागिआ है ॥ जैसे बालजनके तांई कथन कीती धात्रीने कथा तिसकथादा अर्थ मूर्खबालककों अविद्यमानभी विद्यमानहोकरके प्रतीत होता भया ॥ अर्थ एह मिथ्याभी सत्य होकरके प्रतीत होता भया सो जैसे धात्रीने कथा मूढबालके तांई कथन कीती है सो श्रवण कर॥ बालकका चित्त प्रचावने वासतेबालकतांई बालककी खिडावी जो धात्री है सो बालककों कहीती भई ॥ हे पुत्र एक बडी सुंदर शुभ कथा तूं श्रवण कर॥किसीएक देशविषे एक राजाकें तिन्नपुत्र होते भये सो बहुतसुंदर होते भये सो कैसे तिन्नपुत्र हैं॥हे महाबाहो! दो तों जन्मे नहि अर एक गर्भविषेभी स्थित नहि भयां ऐसे तिन्नें राजाके पुत्र धर्मकरके युक्त अत्यंत असत्य नगरविषे वसते भये सो तिन्नेराजाके पुत्र पापसें रहित अंतःकरणवाले आपने शून्यनगरसें निकसकरके शकार खेडनेवासते बनकों जाते भये॥जातेजाते रस्तेविषे फलांवाले तिन्नवृक्ष आकाशविषे देखदे॥भये हे पुत्र! आपने भविष्यतनगरविषे सो राजादे तिन्नेपुत्र अज्जपर्यंत स्थित हैं सकारनूं खेडदे होये॥हे रामजी! इसप्रकार बालकके तांई शुभकथा धात्रीने कथन कीती सो मूर्खबालक विचारसें रहित

बुद्धिकरके सत्यरूपताकरके निश्चय कर्ता भया ॥ हेरामजी! इसीप्रकार संसार रचनाभी विचारतें रहिता चित्त है जिन्नांका तिन्नांपुरुषांको बालककी कथाकी न्याई सत्यरूपताकरके स्थितीको प्राप्त होगई है इसतें आदिलेकरके अनेकां कथांकरके मायाशक्तिनूं विस्तारकरके वसिष्ठजी कथन कर्ते भये हैं सो शक्ति निरूपण कर्ते हैं एह मायाशक्ति आपना कार्य्य जो जगत् तिसते विपरीत स्वभाववाली है अर आपने अधिष्ठानब्रह्मतेभी विपरीत स्वभाववाली है जैसे अग्निकी शक्ति आपने कार्य्यते अर आपने आश्रयते विपरीत स्वभाववाली है॥ अग्निदी शक्तिदा कार्य्य छालेआदिक हैं अर शक्तिदा आश्रय अंगार हैं सो छाले अर अंगार दोवे प्रत्यक्ष है अर शक्ति प्रत्यक्ष नहि॥ छाले रूपकार्य्यद्वारा शक्तिदा अनुमान करीता है इसते शक्ति कार्य्यते अर आश्रयते विपरीतस्वभाववाली है जैसे अग्निदी शक्ति कार्य्यते अर आश्रयते विपरीत स्वभाववाली है तैसे मृतीकाकी शक्तिभी कार्य्यते अर आश्रयते विपरीत स्वभाववाली है मृतिकादी शक्तिदा कार्य्य घट है सो घट स्थूल है अर गोलाकार तिसदा मध्य है अर शब्द स्पर्श रूप रस गंधवाली मृतिकाशक्तिदा आश्रय है अर शक्तिविषे न स्थूलताआदिक कार्य्यदा धर्म है अर न शब्दआदिक आश्रयदा धर्म है तिसतें शक्ति कार्य्यते अर आश्रयते विपरीत स्वभाववाली है जिसते कार्य्यते अर आश्रयते विपरीत स्वभाववाली है शक्ति इसीते शक्ति अचिंत्य है।

शंका—जेकर शक्ति अचिंत्य है तो अचिन्त्यताहि शक्तिका स्वरूप सिद्ध भया।

उत्तर—शक्ति चिंतनकरणे योग्य नहि अधिष्ठानसें भेद कर-

केभी तिसका चिंतन नहि होसक्ता ॥अर अभेदकरकेभी तिसका चिंतन नहि होसक्ता अर अचिंत्यताकरकेभी तिसका चिंतन नहि होसक्ता ॥ तांते शक्ति अनिर्वचनीय है । अधिष्ठानसें भेदकरके इसते शक्तिदा चिंतन नहि होसक्ता जिसते अधिष्ठानते वखरी नहि प्रतीत होती अर अधिष्टानकेंसाथ अभेदकरके इसते नहि चिंतन होसक्ती जिसते अधिष्टान प्रत्यक्ष देखीता है अग्निआदिरूप शक्ति प्रत्यक्ष नहि देखीती अर अचिंत्या इसवासते नहि जिसते कार्य्यद्वारा तिसदा चिंतन करीता है ॥ तांते शक्ति अनिर्वचनीया है।

शंका—कारणदे स्वरूपते भिन्न जेकर शक्ति है तौ कारणदे स्वरूपदो निआई शक्ति किउँ नहि प्रतीत होती ।

उत्तर—मृतिकादी शक्ति घटादिरूपकार्य्यदी उत्पत्तिसें प्रथम छपी होई मृतिकाविषे रहिती है इसते घटकारण मृतिकादी निआंई प्रतीत नहि होती ।

शंका—जेकर शक्ति प्रथम छपीहोई रहिती है तौ पिछोंभी तिसदी प्रकटता न होई चाहिये ।

उत्तर—प्रथम दुग्धविषे अप्रकट घृतदी मंथनकरके प्रकटता जैसे होती है तैसे घूमिआरदे व्यापारकरके मृतिकादी शक्ति प्रकटतानूं प्राप्त होती है मृतिकादी शक्तिदी प्रकटता घटकरके होती है मृत्तिकादी शक्ति यद घटरूपतानूं प्राप्त होजाती है तद जानीता है इसमृत्तिकाविषे घटदे उत्पन्नकरणेदी शक्ति हैसी ।

शंका—कारणसें भिन्नशक्तिदा कार्य्य जेकर है तौ कार्य्य कारणदा भेद किउँ नहि प्रतीत होता ।

उत्तर—भेद प्रतीतिदे कारण विचारदे अभावते भेददी प्रतीति नहि होति जैसे गृहविषे पदार्थांदी प्रतीतिदे कारणदी एकदे अभावते गृहके पदार्थ प्रतीत नहि होते अविवेकी पुरुष स्थूल गोल आदिरूप कार्य्यनूं अर शब्दस्पर्शआदि गुणांवाली कारणरूप मृत्तिकानूं अविचारते अकठिआं करके घट एह कथन कर्ते हैं तांते घट एह व्यवहारअ विचारसें होता है जिसते कुलाल व्यापारसें पूर्व पिंडनाम मृतिका अघटरूप है तिसनूं घटरूपकरके जानते हैं इसते घट व्यवहारदा कारण अविचार है।

शंका—जेकर अघटरूप मृतिकाकों घटरूपता अविचारकरके है तौ घटरूपता किसकों है।

उत्तर—कुलालव्यापारते अनंतर होनेवाला जो स्थूल गोलाकार रूप है सो घट है जिसते स्थूल गोलाकारदी उत्पत्तिसें अनंतर घट एह व्यवहार होता है।

शंका—वास्तव घटकों अनिर्वचनीय शक्तिदी कार्य्यता नहि बनती।

उत्तर—घटभी वास्तव नहि किंतु अनिर्वचनीय है॥ जिसते घट जो है सो मृतिकाते भिन्नकरके नहि देखने में आवता तांते घटमृत्तिकासें भिन्न नहि अर मृत्तिकासें अभिन्नभी घट नहि॥ जिसते पिंडरूप मृत्तिकाविषे घटदी प्रतीति नहि होती इसते घट अनिर्वचनीय है जैसे शक्तिः अनिर्वचनीय है॥ तांते अनिर्वचनीय शक्तिदा कार्य्य अनिर्वचनीय घट बनता है।

शंका—घट अर शक्ति एनादुहांनूं अनिर्वचनीयतादे होआं-

होआं एह शक्ति है एह कार्य्य है ॥ ऐसा भेद व्यवहार किसकार-णते होता है।

उत्तर—जितनाकालपर्य्यंत स्थूल गोलाकाररूप प्रकट नहि भया तितनाकाल तिसका नाम शक्ति है अर यद स्थूल गोला-काररूप प्रकट होता है तव तिसका नाम घट कहीता है तांते एह सिद्ध भया शक्ति अर कार्य्य इसभेद व्यवहारदा कारण स्थूल गोलाकाररूपदी अप्रकटता अर प्रकटता है।

शंका—प्रथम अप्रकट मायाशक्ति पिछो प्रकट होती है ऐ-सा प्रसिद्ध मायादा रूप प्रतीत नहि होता

उत्तर—ऐसा प्रसिद्धमायादारूप प्रतीत होता है तिसविषे दृष्टांत श्रवण कर॥जैसे इंद्रजालदे रचनेवाले मदारीदी माया म-णिमंत्रआदिकांदे संवंधसें पहलां प्रकट नहि प्रतीत होती पिछों गंधर्वसेनादि रूपताकरके प्रकट प्रतीत होती है शक्तिकार्य्य घ-टादिकांदी मिथ्यारूपता अर शक्तिदा आश्रय मृतिकाआदिकां-दी सत्यरूपता छांदोग्यउपनिषददी श्रुतिनेभी कथन कीती है तिसश्रुतिदे अर्थनूं श्रवण कर॥मायादा कार्य्य होनेकरके घटा-दीक मिथ्या है अर घटादिकांदा अधिष्ठानरूप मृत्तिका सत्य है मृतिकादा कार्य्य घटादिक वाणीकरके उच्चारण करीता जो नाम है तितनामात्र हैं नामही घटादिक पदार्थ हैं घटादिकांदा नामसें भिन्नवास्तवरूप नहि किंतु घटादिकांदा आधार मृति-का सत्य है शक्ति अर शक्तिदा कार्य्य मिथ्या है अर तिन्ना दुहादां आधार मृतिका सत्य है इसविषे कारण श्रवण कर॥कार्य्य अर शक्ति अर तिन्नादा आधार मृतिका एन्ना तिन्नाविच्चों शक्ति अर

कार्य एन्न दुहांका कालभेदकरके पर्य्याय है अर्थ एह एकही वस्तु किसीकालविषे शक्तिनामकरके कथन करीतो हैं अर किसीकालविषे कार्य्यनामकरके कथन करीती है अर तीसरी मृत्तिकाशक्ति अर कार्य्य दुहांदा आधार है सो शक्तिकालविषेभी वि-द्यमान है अर कार्य्यकालविषेभी विद्यमान है तात्पर्य एह शक्तिकालविषे कार्य्य नहि होता अर कार्य्यकालविषे शक्ति नहि होती तिसते शक्ति अर कार्य्य दोवों मिथ्या हैं कदी इक होनेते कदीइक न होनेते अरमृतिकाशक्तिदा अर कार्य्यदा आधाररूप सत्य है तिन्नाकालांविषे विद्यमान होनेते व्यक्त है नाम जिसदा ऐसा जो घटादिकार्य्य सो स्वरूपकरके असत्य हूआ-हूआही प्रतीत होता है अर घटादिकार्य उत्पत्तिविनाशवाला प्रतीत होता है अर घटादिकार्य वाणीकरके उत्पन्नभये नाम मात्रकरके व्यवहारके योग्य होता है पुरुषांकरके कार्य घटादिकादे नाश होआंहोआंभी घटते अभिन्न जो नाम है सो मनुष्यादे मुखविषे रहिता है तिसते किआ भया ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ वाणीकरके व्यवहारके योग्य जो नाम तिसकरके व्यवहारके योग्य होनेते घटादिकार्यनामते भिन्न नहि तात्पर्य एह घटादिकार्य घटादिशब्दरूप है घटादिशब्दकरके व्यवहारके योग्य होनेते घटशब्दकी निआंई जैसे घटशब्द घटशब्दकरके व्यवहारके योग्य होता है सो घटशब्द घटशब्दरूप है अर्थ एह जैसे घटशब्द घटशब्दते भिन्न नहि तैसे घटभी घटशब्दते भिन्न नहि अर एह जो सिद्ध कीते हे तिन्न हेतु तिन्नाकरके तिन्नअनुमान कार्यदा मिथ्यारूपतादे जनावनेवाले सिद्ध होते हैं तिन्नानूं श्रवण कर॥ घटादिरूप कार्यदा जो स्थूलगोलाकाररूप है सो कुछभी सत्य नहि

वास्तव रूपते रहित होनेते जो सत्य होता है सो वास्तव रूपते रहित नहि होना जैसे मृत्तिका जो सत्य है सो वास्तव रूपते रहित नहि एह एक अनुमान भया दूसराअनुमान एह है घटादिरूप कार्य सत्य नहि मृत्तिकादे विद्यमान होआंहोआंभी नाशवाला होनेते जो सत्य होता है सो मृत्तिकादे विद्यमान होआंहोयां नाश नहि होता जैसे मृत्तिका मृत्तिकादे विद्यमान होयांहोयां नाश नहि होती एह दूसरा अनुमान है ॥ घटादि मिथ्या हैं नाममात्र होनेते जो मिथ्या नहि होता सो नाममात्रभी नहि होता जैसे मृतिका एह तीसरा अनुमान है इसप्रकार कार्यदी असत्यतानूं सिद्धकरके अब कार्यदे अधिष्ठानरूप मृतिकादी सत्यतानूं सिद्ध कर्ते हैं तिसनूं श्रवण कर॥कार्यदी स्थितिकालविषे अर कार्यदी उत्पत्तिते प्रथमकालविषे अर कार्यदे नाशतें उत्तरकालविषे एकाकार अर सत्यत्व अर्थ एह वास्तवरूपवाली अर कार्यदे नाश होयांहोयां न नाश होनेवाली ऐसी जो मृत्तिका वस्तु है सो सत्य है इसअर्थविषे एह अनुमान है मृत्तिका वस्तु सत्य है वास्तव होनेते आत्माकी न्यांई ॥ मृत्तिका सत्य है तिन्नाकालांविषे एक रूपताकरके विद्यमान होनेते आत्माकी न्यांई मृत्तिका सत्य है कार्यदे नाश होयांभी नाश रहित होनेते आत्माकी न्यांई।

शंका—घटादिरूप कार्यमात्रको असत्य होयांहोयां इसदी अधिष्ठान मृत्तिकादे ज्ञानते निवृत्ति होई चाहीये जैसे असत्यरूप्पेदी अधिष्ठान सिपीदे ज्ञानते निवृत्ती होती है व्यक्त घट विकारएन्ना नामाकरके कथन करी जो वस्तु तिसकों कारणसें भिन्नकरके असत्य मान्यां होयां मृत्तिकारूप कारणदे ज्ञानकरके तिसदी निवृत्ती किउँ नहि होती।

उत्तर—तिसदी निवृत्ती होती है जिसते तेरी घटादिकांविषे सत्यबुद्ध नहि रही ।

शंका—कल्पतरुप्पेदी स्वरूपते निवृत्ति होती है अधिष्ठान सिप्पीदे ज्ञानसें ऐसा तौ नहि होता जो तिसका स्वरूप नजर आवता रहे अर तिसकी सत्ता निवृत्त होजावे ।

उत्तर—भ्रम दोप्रकारका होता है एक निरुपाधिक दूसरा सोपाधिक जो निरुपाधिक भ्रम होता है तिसकी अधिष्ठान ज्ञानतें स्वरूपकरके निवृत्ति होजाती है जैसे सिपीविषे रुप्पेका भ्रम निरुपाधिक है तिसकी अधिष्ठान सिप्पीदे ज्ञानसें स्वरूपते निवृत्ति होजाती है अर जो सोपाधिक भ्रम होता है तिसकी अधिष्ठान ज्ञानते स्वरूपकरके निवृत्ति नहि होती तिसदी सत्तामात्र निवृत्त होती है जैसे बल्लौरकेसाथ लालकालेआदिक पदार्थांका संबंध होआंहोआं बल्लौर लालकाला प्रतीत होता है भ्रमकरके अर जब बल्लौरको चिटाजानिआ तब बल्लौरविच्चों लालकालेदी सता निवृत्त होजाती है पर लालकालेदी प्रतीति दूर नहि होती जितनाकाल लालकालेआदिक पदार्थांका संबंध है ॥ तांते जैसे बल्लौरविषे लालकाला भ्रम सोपाधिक है तैसे मृत्तिकाविषे घटभ्रमभी सोपाधिक है जिसते मृत्तिकादे ज्ञानते घटदे स्वरूपदी निवृत्ति नही होती घटदी निवृत्त सत्ताहोती है जलविषे उलटा होकरके प्रतीत होता जो पुरुष है सो वास्तवसे उलटा नहि जिसते किसीबी पुरुषको विवेकीकों अथवा अविवेकीकों उलटे होकरके जलविषे प्रतीत होते पुरुषविषे सत्यबुद्धि नहि होती जैसे जलके कनारे बैठे पुरुषविषे सत्यबुद्धि होती है अर जलविषे उलटा नजर आवना निवृत्त नहि होता ।

शंका—कल्पितपदार्थकी असत्यता ज्ञानमात्रते पुरुषार्थ सिद्ध नहि होता।

उत्तर—अद्वैतमतविषे आत्मानंदते भिन्न संपूर्णपदार्थांदी मिथ्यारूपतादे निश्चय होआंहोयां अद्वैतानंददी प्रकटतारूप पुरुषार्थदी सिद्धी होती है।

शंका—घट मृत्तिकादा विवर्त है इसवार्तादे निश्चय होयांहोयां मृत्तिकादे ज्ञानते घटविषे सत्यबुद्धि निवृत्त होवो पर घटकों मृतिकादी विवर्तरूपता अवपर्य्यंत निश्चय नहि भई।

उत्तर—घटमृत्तिकादा विवर्त है जिसते मृत्तिका मृत्तिकारूपनूं न त्यागके घटरूप होकरके प्रतीत होती है।

शंका—घटविषे मृतिकारूपदे त्याग न होयांहोयांभी घटमृत्तिकादा परिणाम किउँ न होवे।

उत्तर—घट जेकर मृत्तिकादा परिणाम होवे तद मृत्तिका आपने प्रथमरूपनूं त्यागकरके घटरूपनूं प्राप्त होवे जिसकारणते जिथें परिणाम होता है तिथे प्रथमरूपनूं त्यागकरके ओररूपदी प्राप्ति होती है जैसे दुग्ध आपनी दुग्धरूपतानूं त्यागकरके दहींरूपतानूं प्राप्त होता है अर मृतिका तां आपनी मृतिकारूपतानूं न त्यागकरके घटरूपनूं प्राप्त होती है तांते घट मृतिकादा परिणाम नही किंतु विवर्त है।

शंका—विवर्तविषे प्रथमरूपदे त्यागदा अभाव कहां देखिआ है।

उत्तर—मृत्तिकादा विवर्त जो घट अर स्वर्णदा विवर्त जो कुंडल तिन्नाविषे कारणरूपमृत्तिका अर स्वर्णकी निवृत्ति नहि होती।

शंका—घट मृत्तिकादा विवर्त नहि बनता जिसते घटदे नाश होयांहोयां फेर मृत्तिका नहि देखीसी किंतु कपाल देखीते हैं।

उत्तर—कपालांदे नाश होयांहोयां फेर मृत्तिका देखीती है अर स्ववर्णविषे तां एह शंकाहि नहि बनती जिसते कुंडलदे भजयां होयांहोयां सुवर्ण अतिप्रकट प्रतीत होता है।

शंका—परिणामविषे दुग्ध मृत्तिका सुवर्ण तिन्न दृष्टांत तुसां कथन कीतेसे तिन्नाविच्चों मृत्तिका अर सुवर्ण एन्ना दुहांकों विवर्तविषे दृष्टांत मानोंगे तौ तिसीप्रकार दुग्धकोभी विवर्तविषे दृष्टांत मानिआ चाहीये।

उत्तर—दुग्धआदिक परिणामविषे दृष्टांत हैं विवर्तविषे दृष्टांत नहि जिसते दुग्धआदिक दहीं आदिकांदे रूपनूं प्राप्त होये-होये फेर दुग्धआदिकांदे रूपनूं नहि प्राप्त होते।

शंका—जेकर दुग्ध विवर्तविषे दृष्टांत नहि बनता तौ तिसी प्रकार प्रथमावस्थाते होर अवस्थानूं प्राप्त होयेहोये मृत्तिका अर सुवर्ण विवर्तविषे दृष्टांत न होये चाहिये।

उत्तर—दुग्धआदिकांकों परिणामवाला होनेकरके मृत्तिका अर सुवर्णादिकांकों विवर्तविषे दृष्टांतता निवृत्त नहि होती तात्पर्य एह दुग्ध पूर्वावस्थानूं त्यागकरके होरअवस्थानूं प्राप्त होता है इसते दुग्धदा परिणाम है विवर्त नहि मृत्तिका अर सुवर्ण पूर्वा-

वस्थानूं त्याग नहि कर्ते अर होर अवस्थानूं प्राप्त होते हैं इसक रके तिन्ना दुहांको विवर्तविषे दृष्टांतता बनती है अर परिणामविषेभी दृष्टांतता बनती है ।

शंका—जैसे मृतिका अर सुवर्णका परिणाम अर विवर्त मानतेहो तैसे मृतिका अर सुवर्णकों आरंभकता किउँ नहि मानते ।

उत्तर—मृतिका अर सुवर्णकों आरंभकता इसवासते नहि मानते जिसते आरंभवादविषे कार्य्यरूपघट कुंडलादिकांविषे तोलदी द्विगुणता प्राप्त होती है कार्य्यांकारताकरके अर कारणाकारताकरके अर्थ एहतोलेसुवर्णदा दोतोलेकुंडल होया चाहीये अर सेरमृतिकादा घटदोसेर होआ चाहिये जिसकारणते आरंभवादीआंने कार्य्यदे रूपरसआदिक गुण भिन्नमाने हैं अर कारणदे भिन्न माने हैं तोलभी एक गुण है॥तांते एककार्य्यका तोल एककारणका तोल इसप्रकार तोलसुवर्णदा दोतोले कुंडल चाहिये अर सेरमृतिकादा दोसेर घटचाहीये ऐसे तो जगत्‌विषे नहि देखीता तांते मृत्तिका अर सुवर्णदा आरंभविषे दृष्टांत नहि बनता मृतिका अर सुवर्ण अर लोहा एन्ना तिन्ना दृष्टांतां नूं विवर्तविषे अरुणदा पुत्र उद्दालकमुनि छांदोग्योपनिषदविषे कथन कर्ता भया है इसते संपूर्णकार्य्यांनूं मिथ्या जानना जिसकारणते मृतिका आदिक बहुते पदार्थांविषे कार्य्यनूं मिथ्या देख्या है इसते भूतभौतिक रूप संपूर्णपदार्थांविषे कार्यदी मिथ्यारूपतानूं निश्चयकरे जिज्ञासी ।

शंका कार्य्यदी मिथ्यारूपतादा निश्चय करणा किसवासते कथन कीआ है

उत्तर—कारणज्ञानतें कार्य्य ज्ञानदी सिद्धिदेवासतें कार्य्यं दी मिथ्यारूपतादा निश्चय करणा कहीता भया है उद्दालकमुनि कारण मृतिकाआदिकांदे ज्ञानतें कार्य्य घटादिकांदा ज्ञान उद्दालकमुनि कहिता भया है सौम्य! हेपुत्र! जैसे एकमृतिकादे पिंडदे जानने करके संपूर्णमृत्तिकादे कार्य जानेजाते हैं इसतें आदिलेकरके वाक्यकरके।

शंका—मृतिका सुवर्णरूप कारणदे ज्ञानते कारणते भिन्नमिथ्यारूप घट कुंडलआदिकांदा ज्ञान नहि बनता।

उत्तर—कार्यविषे सत्यअंशभी है अर मिथ्याअंशभी है॥ कारणदे ज्ञानते कार्यविषे जो सत्य अंश है तिसदा ज्ञान होता है॥ लोकांदी दृष्टिकरके मृतिका सहित जो स्थूल गोलाकाररूप है॥ तिसको कार्यता है॥ तिसविषे मृतिका अधिष्ठान है सो सत्य है॥ अर स्थूलगोलाकारता मिथ्या है।

शंका—होवो ऐसेही॥ पर इतनेकरके कारण ज्ञानते कार्यज्ञान नहि होता॥ इस शंकादा उतर तां कुछ न भया।

उत्तर—कारण ज्ञानते कार्यविषे जो मिथ्या अंश है॥ तिसदे ज्ञानदे अभाव होयांहोयांभी कार्यविषे जो सत्य अंश है॥ मृतिकारूप तिसदा ज्ञान होता है।

शंका—कार्यविषे जो सत्य अंश है तिसदी न्यांई॥ कार्यविषे जो मिथ्याअंश है सोभी जानने योग्य है।

उत्तर—कार्यविषे जो मिथ्या अंश है सो जानने योग्य नहि॥

निमित्तकारणते मिथ्याअंशदे जाननेते प्रयोजन कोई नहि सिद्ध होता ॥ कार्यविषे जो सत्य अंश है ॥ तिसदे जाननेते जाननेवाले पुरुषदा प्रयोजन सिद्ध होता है ॥ अर मिथ्याभूत अंशदे ज्ञानते प्रयोजन नहि सिद्ध होता ॥ तांते मिथ्या अंश जानने योग्य नहि कार्यविषे ।

शंका—कारणज्ञानते कार्यज्ञान होता है ॥ एह कथन श्रोतार्की बुद्धिविषे चमत्कारदा कारण होवेगा ॥ इसतात्पर्यकरके तुसां कहिया है सो तौ नहि बनता॥ जिसते कारण मृतिकाआदिकांदे ज्ञानते कार्यविषे मृतिकाआदिरूप सत्यअंशदा ज्ञान होता है ॥ ऐसे कथन कीत्यां होयां ॥ मृतिकादे ज्ञानतें मृतिकादा ज्ञान होता है ॥ एह कथन भया ॥ ऐसे होयांहोयां शब्दते चमत्कार भया ॥ अर्थते चमत्कार न भया ।

उत्तर—कार्य विषेजो सत्यअंश है ॥ सो कारणरूप है ॥ इसविवेकवालीयांकों विसमयदे न होयांहोयांभी ॥ इस विवेकते रहित पुरुषांकों विसमय होता है॥ घटादिरूप कार्यांविषे विद्यमान वासतव अंश कारण स्वरूप है ॥ कारणस्वरूपते भिन्न स्थूलगोलाकारता घटदा रूप मिथ्या है ॥ ऐसे जेडपुरुष जानते हैं ॥ तिन्नाकों आश्चर्य मतहोवो ॥ पर इसज्ञानते रहित जो पुरुष हैं ॥ तिन्नाकों उत्पन्न भया जो विसमय सो किसीने दूर नहि करसकीता॥विसमय अर चमतकार एन्ना दुहांशब्दादा अर्थ आश्चर्य है आरंभीया है आरंभदे कथनकरणेवाला सो आश्चर्यकों प्राप्त होता है आरंभदा अर्थ एह है ॥ समवायिकारण॥अर असमवायिकारण अर निमित्तकारण एन्नाते भिन्न कार्यदी उत्पति ॥ समवा-

विकारण नाम उपादान कारणदा है ॥ जैसे वस्त्रका तंतु उपादा-
नकारण हैं ॥ अर समवायिकारणांदा जो परस्पर संयोग है जैसे
तंतुवांदा ताणापोटारूपकरके सो असमवायिकारण है ॥ अर जु-
लाहातुरीवेमाआदिक निमित कारण हैं वस्त्रदे ॥ वेमानाम तिस-
का है जिसविषे सूत्रदी नली रखके विगारादी है अर परिणामि
जो है ॥ परिणामदे कथन करणेवाला सोभी कारणज्ञानते कार्य-
ज्ञानकों श्रवणकरके विसमयको प्राप्त होता है ॥ परिणामदा
अर्थ एह है ॥ प्रथमरूपको त्यागकरके होररूपकी प्राप्ति ॥ जैसे
दुग्धविषे मधुररूपनूं त्यागकरके किंचित् तुरशावरूपदी प्राप्ति
अर इसआरंभ परिणामरूप प्रक्रिया दुहांदे न जाननेवाले हल-
वावनेवाले अर हटीयांवाले राजदी नौकरीकरणेवाले अर खो-
यांवालकआदिक संपूर्ण जीव एककारणदे ज्ञानते अनेकांकार्यांदे
ज्ञाननूं सुणकरके आश्चर्यनूं प्राप्त होते हैं ।

शंका—छांदोग्यउपनिषददी श्रुतिदा यथाश्रुति अर्थनूं त्या-
गकरके ॥ इसप्रकारदी व्याख्याकरणेविषे की कारण है ।

उत्तर—श्रुतिदा यथाश्रुत अर्थविषे तात्पर्यदा अभाव ॥ इस-
प्रकारदे व्याख्यानकरणेविषे कारण है ॥ सो श्रवण कर ॥ यथा-
श्रुत श्रुतिदा अर्थ एह है ॥ एककारणदे ज्ञानदे अनेक कार्यांदा
ज्ञान होता है ॥ तिसविषे श्रुतिदा तात्पर्य नहि ॥ जिसते श्रुति अ-
द्वैतज्ञानविषे शिष्यदी बुद्धि स्थिरकरणेवासते प्रवृत्त भई ॥ अर
कार्यांदी अनेकतादे जनावनेवासते श्रुति प्रवृत्त नहि भई ॥ तांते
श्रुतिदा एह तात्पर्य है ॥ अनेककार्यांविषे एककारण अंश सत्य है
अर कार्यअंश मिथ्या है ॥ जैसे घटरूपकार्यविषे कारणरूप मृ-

निकाअंश सत्य है ॥अर कार्यरूप स्थूलगोलाकारताअंश मिथ्या है ॥ इसउपदेशते शिष्यदी अद्वैतविषे बुद्धि स्थिरतानूं प्राप्त होजाती है ॥ एकवस्तुदे ज्ञानकरके सर्वदा ज्ञानहोता है ॥ इसअर्थविषे दृष्टांतनूं दिखलावनेवाली छांदोग्यश्रुतिदें वचनदे अर्थनूं श्रवण कर॥दृष्टांत श्रुतिदा एह अर्थ है हे सौम्य!हेपुत्र!जैसे एकमृतिकादे पिंडदे जाननेकरके संपूर्णमृतिकादे कार्य जानेजाते हैं अब दृष्टांतदे दार्ष्टांत दिखलावनेवाले श्रुतिवचनदे अर्थनूं श्रवण कर॥श्रुतिवचनदा अर्थ एह है॥उद्दालकदापुत्र श्वेतकेतु गुरुदेपासौं विद्यापडके जब आपने घरमैं आया तब पिताकों थोडा पडया होया जानकरके पिताके चरणाउपर शिर धरकरके नमस्कार न कर्ता भया अर वाणीकरकेभी नमस्कार न कर्ता भया ॥ तब तिस की पिता ब्रह्मवेता उदालकमुनि पुत्रको मूर्ख जानकरके तिसका अनादर न कर्ता भया ॥ किंतु तिसके आगे एह प्रश्न कर्ता भया॥ हे पुत्र!जिसएकदे सुणनेकरके जो नहि सुणियां सो भी सुणियां जातां है ॥अर जिसएकदे मनन कीतयां जो नहि मननकीता सोभी सभ मननकीता जाता है ॥ अर जिसएकदे जाननेकरके जो नहि जानीयां सोभी सभ जानियां जाता है ॥ ऐसाभी उपदेशतैं आपने गुरुते पुछदा भया हैं के नहि ॥ जैसे घटशरावआदिकांदा उपादान एक मृतिकादे पिंडदे जाननेते संपूर्ण मृतिकादे कार्य घटादिक जान लईते हैं॥ तैसे सर्वजगत्दे उपादान कारण एकब्रह्मदे जाननेते ब्रह्मदा कार्य संपूर्ण जगत् जानियां जाता है ॥ एह निश्चयकर ।

शंका—ब्रह्म अर जगत्दे स्वरूपदे नजानियां होयोहोयां ब्र-

अज्ञानते जगतदा ज्ञान होता है॥ एह नहि जानसकोता ॥ तांते ब्रह्म अर जगतदा स्वरूप कथन करो।

उत्तर—सच्चिदानंद ब्रह्म है नामरूप जगत् है।

शंका—ब्रह्म सच्चिदानंद है॥ इसविषे की प्रमाण है।

नरसिंहतापनी उपनिषदते आदिलेकरके उपनिषदांदीयां श्रुतीयां इसविषे प्रमाण हैं॥ अथर्वणवेदवेतियां पुरुषांने नरसिंहतापनी उपनिषदके उत्तरखंडविषे एह संपूर्ण जगत् ब्रह्मरूप है॥ अर ब्रह्म सच्चिदानंद मात्र है ॥ इसते आदिलेकरके वाक्यांविषे ब्रह्मदी सच्चिदानंदरूपता कथन करी है अर सामवेददी छांदोग्य-उनिषदविषे अरुणमुनीश्वरदे पुत्र उदालिकमुनीश्वरने ब्रह्मदी सत्यरूपता कथन करी है एह जगत् उत्पतिसें पूर्वसत्यरूप होता भया हेसौम्य! इस वचनकरके अर ऋगवेद वेतियांपुरुषांने ऐतरेय उपनिषदविषे ब्रह्मचैतन्यरूप कथन कीया है ॥ चैतन्य जगतदा आधार है ॥ चैतन्यरूप ब्रह्म है॥ छांदोग्यउपनिषदविषे सनतकुमार नारददा गुरु नारददे तांई भूमानामकरके कथन कीया जो ब्रह्म॥ तिसकी आनंद रूपतानूं कथन कर्ता भया है ॥ हेनारद! भूमा जानने योग्य है परिछिन्न वस्तु जानने योग्य नहि॥ ऐसा आरंभकारके जो भूमा है सो सुखरूप है॥ अर परिछन्नवस्तुविषे सुख नहि ॥ इसते आदिलेकरके वाक्यांकरके ॥ अर तैतिरीय उपनिषदविषे आनंद ब्रह्म है॥ ऐसा जान॥ इसते आदिलेकरके वाक्यांकरके ॥ ब्रह्मदी आनंदरूपता कथन करी है॥ जैसे ब्रह्मदी सच्चिदानंदरूपताविषे श्रुतीयां प्रमाण हैं॥ तैसे जगत्नामरूप है ॥ इसविषेभी श्रुतीयां प्रमाण है परमा-

त्मा संपूर्णरूपांनूं चिंतनकरके अर तिनादे नामकरके उच्चार्ण कर्ता होयाहोया परमात्मा स्थित है ॥ एह जो जीव है मेरा आत्मा ॥ इसकरके संघातविषे प्रवेशकरके नामरूपनूं प्रकट करांगा ॥ एन्ना दुहांवचनाकरके रचनेयोग्य जगत् विषेनामरूप श्रुतिने दिखलाये हैं॥बृहदारण्यकश्रुतिविषेभी जगतूदी उत्पतिसें प्रथम एह जगत् अव्याकृत होता भया ॥ तिसनूं नामरूपकरके प्रकट कर्ता भया ॥ अमुकेदा एह नाम है ॥ एह रूप है इसवाक्यकरके उत्पन्न कीयेहोये जगत्को नामरूपस्वरूप कथन कीता है॥ जगतूदी उत्पतिसें प्रथम एह जगत् अप्रकट नामरूपवाला होता भया ॥ सृष्टिसमेविषे तिसनूं परमेश्वर नामरूपकरके प्रकट कर्ता भया अव्याकृतदा अर्थ ब्रह्मविषे स्थित अचिंत्यशक्ति माया है ॥ निर्विकारब्रह्मविषे स्थित जो माया है॥सो अनेक प्रकारके विकारकों प्राप्त होती है ब्रह्मविषे माया रहिती है ॥ इसविषे की प्रमाण है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ श्वेताश्वतर उपनिषददी श्रुति प्रमाण है ॥ तिसदा अर्थ एह हैं ॥ माया जगतूदा उपादान जान ॥ अर तिसमायादा आश्रयहोनेकरके मायावाले परमात्मानूं मायादा प्रेरक महेश्वर जान ॥ माया अर महेश्वर परस्पर विलक्षण स्वभाववाले हैं ॥ अर्थ एह मायाविकारी है अर मिथ्या है परमात्मादी निर्विकार है अर सत्य है ॥ माया उपहित ब्रह्मदा प्रथम कार्य आकाश है ॥ आकाशविषे परमात्मादी सता चेतनता आनंद प्राप्त होता है अर आकाशदा अवकाश आपनारूप है ॥ सो मिथ्या है ॥ अर आकाशविषे जो सताचेतनता आनंद है सो वास्तव है अकाशदा रूप जो आवकाश है सो मिथ्या किउँ है ॥ ऐसा पूछें तां श्रवण कर ॥ आकाशदी उत्पातिसें प्रथम

अवकाश न होता भया ॥ अर आकाशदे नाशते पाछेभी अवका-
श न होवेगा ॥ जो आदिअंतविषे नहि होता सो मध्यभी नहि
होता इसअर्थविषे गीतादा वचनभी प्रमाण है ॥ दूसरेअध्यायवि-
षे भगवान्ने कथन कीया है ॥ हेअर्जुन! एन्ना भूतांदा आदिविषे-
भी आकार कुछ नहि ॥ अर अंतविषेभी आकार कुछ नहि ॥ म-
ध्य विषे आकारवाले नजर आवते हैं॥तांते मिथ्या हैं इनकी चिं-
ता नहि कीता चाहीती ।

शंका—आकाशविषे सत्ताचेतनता आनंद है ॥ इसविषे की
प्रमाण है ।

उत्तर—इसविषे अनुभव प्रमाण है ॥ जैसे घटादिकांविषे
मृतिका सदा स्थित है ॥ तैसे आकाशविषे सत्ताचेतनता आनंद
सदा स्थित हैं ।

शंका—आकाशनूं छोडकरके सताचेतनता आनंद जेकर
कहूं स्थित प्रतीत होवें ॥ तद एह जानिया जाये जो परमात्मादी
सत्ताचेतनता आनंद आकाशविषे स्थित हैं ॥ सो तौ सत्ताचेतन-
ता आनंदआकाश आदिकांते विना नहि प्रतीत होते ।

उत्तर—आकाशआदिकांसें विना आपने स्वरूपविषे सत्ता-
चेतनता आनंदका अनुभव होता है ॥ अवकाशरूप आकाशदी
विस्मृतिदे होयांहोयां ॥ तैंनूं की प्रतीत होता है जो प्रतीत होता
है सो कहु ।

शंका—शून्यप्रतीत होता है ।

उत्तर—तिसकानाम तूं शून्यही धर ॥ पर आकाशभा-

त्मा संपूर्णरूपांनूं चिंतनकरके अर तिनादे नामकरके उच्चार्ण कर्ता होयाहोया परमात्मा स्थित है ॥ एह जो जीव है मेरा आत्मा ॥ इसकरके संघातविषे प्रवेशकरके नामरूपनूं प्रकट करांगा ॥ एन्हा दुहांवचनाकरके रचनेयोग्य जगत् विषेनामरूप श्रुतिने दिखलाये हैं॥वृहदारण्यकश्रुतिविषेभी जगत्‌दी उत्पतिसें प्रथम एह जगत् अव्याकृत होता भया ॥ तिसनूं नामरूपकरके प्रकट कर्ता भया ॥ अमुकेदा एह नाम है ॥ एह रूप है इसवाक्यकरके उत्पन्न कीयेहोये जगत्‌को नामरूपस्वरूप कथन कीता है॥ जगत्‌दी उत्पतिसें प्रथम एह जगत् अप्रकट नामरूपवाला होता भया ॥ सृष्टिसमेविषे तिसनूं परमेश्वर नामरूपकरके प्रकट कर्ता भया अव्याकृतदा अर्थ ब्रह्मविषे स्थित अचिंत्यशक्ति माया है ॥ निर्विकारब्रह्मविषे स्थित जो माया है॥सो अनेक प्रकारके विकारकों प्राप्त होती है ब्रह्मविषे माया रहिती है ॥ इसविषे की प्रमाण है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ श्वेताश्वतर उपनिषददी श्रुति प्रमाण है ॥ तिसदा अर्थ एह हैं ॥ माया जगत्‌दा उपादान जान ॥ अर तिसमायादा आश्रयहोनेकरके मायावाले परमात्मानूं मायादा प्रेरक महेश्वर जान ॥ माया अर महेश्वर परस्पर विलक्षण स्वभाववाले हैं ॥ अर्थ एह मायाविकारी है अर मिथ्या है परमात्मादी निर्विकार है अर सत्य है ॥ माया उपहित ब्रह्मदा प्रथम कार्य आकाश है ॥ आकाशविषे परमात्मादी सता चेतनता आनंद प्राप्त होता है अर आकाशदा अवकाश आपनारूप है ॥ सो मिथ्या है ॥ अर आकाशविषे जो सताचेतनता आनंद है सो वास्तव है अकाशदा रूप जो आवकाश है सो मिथ्या किउँ है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ आकाशदी उत्पतिसें प्रथम

अवकाश न होता भया ॥ अर आकाशदे नाशते पाछेभी अवका-श न होवेगा ॥ जो आदिअंतविषे नहि होता सो मध्यभी नहि होता इसअर्थविषे गीतादा वचनभी प्रमाण है ॥ दूसरेअध्यायवि-षे भगवानने कथन कीया है ॥ हेअर्जुन! एन्ना भूतांदा आदिविषे-भी आकार कुछ नहि ॥ अर अंतविषेभी आकार कुछ नहि ॥ म-ध्य विषे आकारवाले नजर आवते हैं॥तांते मिथ्या हैं इनकी चिं-ता नहि कीता चाहीती।

शंका—आकाशविषे सत्ताचेतनता आनंद है ॥ इसविषे की प्रमाण है।

उत्तर—इसविषे अनुभव प्रमाण है ॥ जैसे घटादिकांविषे मृतिका सदा स्थित है ॥ तैसे आकाशविषे सत्ताचेतनता आनंद सदा स्थित हैं।

शंका—आकाशनूं छोडकरके सताचेतनता आनंद जेकर कहूं स्थित प्रतीत होवें ॥ तद एह जानिया जाये जो परमात्मादी सत्ताचेतनता आनंद आकाशविषे स्थित हैं ॥ सो तो सत्ताचेतन-ता आनंदआकाश आदिकांते विना नहि प्रतीत होते।

उत्तर—आकाशआदिकांसें विना आपने स्वरूपविषे सत्ता-चेतनता आनंदका अनुभव होता है ॥ अवकाशरूप आकाशदी विस्मृतिदे होयांहोयां ॥ तेंनूं की प्रतीत होता है जो प्रतीत होता है सो कहु।

शंका—शून्यप्रतीत होता है।

उत्तर—तिसकानाम तूं शून्यही धर ॥ पर आकाशभा-

वदा आश्रय रूपताकरके कुछक प्रतीत होता है ॥ एह तैने अवश्य अंगीकार कीया चाहीये ।

शंका—होवो ऐसेही पर प्रसंगविषे क्या आया ।

उत्तर—आकाशाभावदा अधिष्ठानरूप जो प्रतीत भया है ॥ सो सत्य है ॥ एह तैने अंगीकार कीया चाहीये ॥ जिसते अभावका अधिष्ठान सत्य होता है ॥ एह वार्ता सभीलोकांमें प्रसिद्ध है ॥ तांते अवकाशदा अभाव है जिस आत्माविषे ॥ सो आत्मा तेरा स्वरूप सत्य है एह निश्चय भया ॥ अर उदासीन होनेते सुखरूप है ।

शंका—उदासीननाम अनुकूलता अर प्रतिकूलताते रहितका है ॥ तांते तिसको सुखरूपता नहि बनती जिसते अनुकूलतावालेकों सुख कहीता है ।

उत्तर—अनुकूलता अर प्रतिकूलतातें रहित जो सुख है सो निजसुख है ॥ अनुकूलतावाली अनात्मवस्तुविषे हर्षबुद्धि होती है ॥ अर प्रतिकूलतावाली अनात्मवस्तुविषे दुखबुद्धि होती है ॥ अर अनुकूलता अर प्रतिकूलताते रहित वस्तुविषे निजानंद होता है ॥ आत्मवस्तु न अनुकूल है न प्रतिकूल है ॥ तांते आत्माविषे जो आनंद है सो निजानंद कहीता है ।

शंका—जैसे निजानंद है तैसे निजदुखभी किउँ न होवे ।

उत्तर—दुःखविषे निजरूपतादी सिद्धि नहि होती ॥ जिसते निजनाम आपनेआपका है ॥ अर आपने आपविषे सभनादी परमप्रीति है ॥ तांते निजदुःख नहि बनता ।

शंका—निजानंदकों सदा आनंदरूप होनेते सदा हर्षही होया चाहीये शोक न होया चाहीये।

उत्तर—निजानंददी नित्यता होयांहोयांभी ॥ निजानंददे ग्रहणकरणेवाले मनकों क्षणिक होनेकरके ॥ मनकी वृतिरूप हर्षशोककोंभी क्षणिकता है ॥ निजानंददी एकरस स्थिरतादे होयांहोयांभी हर्षशोकदा क्षणक्षणविषे उत्पति विनाश होता है ॥ मनकों क्षणिक होनेते ॥ मनकी वृतिरूप हर्षशोक क्षणिक है ॥ इसप्रकार निजआत्माविषे आनंददी सिद्धि भई ॥ सो आत्मादा आनंद आकाशविषे प्राप्त होता है ॥ सता अर भावना आकाशविषे तूंभी मानता हैं ॥ इसते उसविषे युक्ति कहिनेदा कुछ प्रयोजन नहि ॥ जैसे आकाशविषे सत्ताचेतनता आनंद है ॥ तैसे पवनसें आदिलेकरके शरीरपर्यंत संपूर्णपदार्थांविषे सत्ताचेतनता आनंद है ॥ सो सत्ताचेतनता आनंद आत्मादा है ॥ पवनादिकांविषे ॥ अव पवनादिकांदे धर्मांनूं श्रवण कर ॥ चलना अर स्पर्श पवनदा रूप है ॥ दाह अर प्रकाश अग्निदा रूप है ॥ द्रवता जलदा रूप है ॥ कठनता पृथिवीदा रूप है ॥ औषदीयां अर अन्न अर शरीर एन्नाविषेभी आपोआपनारूप जैसा योग्य है तैसा मनकरके जान लयता अनेक प्रकारकरके पदार्थांविषे नामरूपदे भेद होयांहोयांभी सच्चिदानंद सर्व पदार्थांविषे एकरस स्थित है ॥ इसविषे किसीका विवाद नहि ॥ जिसते जैसी घटकी सता है तैसी होरनां पदार्थांदी सता है ॥ अर जैसे घटदा भान है तैसे होरनां पदार्थांदा भान है ॥ अर जैसा घटविषे आनंद है तैसा होरनां पदार्थांविषे आनंद है।

शंका—जेकर पदार्थांविषे नामरूप भिन्नभिन्न हैं॥तौ प्रतीत होते जो नामरूप हैं॥ एन्नाकी किया गति है ।

उत्तर—नामरूप कल्पित हैं ॥ एही एन्नाकी गति है जिसते जन्मनाशवाले हैं ॥ तांते वुद्धिकरके नाम रूपनूं ऐसे देखा ॥ जैसे समुद्रविषे वुदवुदे आदिक होते हैं ॥ इस सच्चिदानंदरूप पूर्णब्रह्मदे अनुभव कीतियां होयां ॥ आपपुरुष नामरूपदे अनादरनूं हौलीहौली करदेताहै ॥ ब्रह्मज्ञानकी दृढता द्वैतके अनादरसें उत्पन्न होती है ॥ तांते श्रवणादिकांकी न्यांई द्वैतका अनादरभी जिज्ञासीकों कीता चाहीता है ॥ जितनाजितना द्वैतदा अनादर होता है॥ तितनातितना ब्रह्मदा अनुभव होता है अर जितनाजितना ब्रह्मदा अनुभव होता है तितनातितना नामरूपदा त्याग होताहै॥नामरूपदे त्यागदे अभ्यासकरके अर ब्रह्मअनुभवदे अभ्यासकरके॥ ब्रह्मविद्यादी दृढतादे होयांहोयां पुरुष जीवन्मुक्त होता है जिवन्मुक्तको शरीरविषे अभिमान नहि होता॥ जैसे प्रारव्ध है तैसे शरीर हो ॥ अव ब्रह्मअभ्यासनूं श्रवण कर॥ ब्रह्मदा चिंतन करणा अर ब्रह्मदा कथन करणा अर परस्पर ब्रह्मदा बोध न करणा ॥ इसका नाम एकपरता है तिसकों ज्ञानवान् ब्रह्मअभ्यास कहिते हैं ॥ तिसकरके द्वैतकी निवृत्ति होजाती है ।

शंका—अनादिकालते लेकरके प्रतीत होता जो द्वैत है ॥ तिसदी कदाचित होनेवाला जो ब्रह्मअभ्यास तिसकरके निवृत्ति कैसे होवेगी ।

उत्तर—वहुतकाल अर निरंतर अर सत्कार एना तिन्नाकरके

सेवन कीया जो ब्रह्माभ्यास ॥ तिसकरके अनेककालकीभी द्वैत-वासना निवृत्त होजाती है।

शंका—एकरूप ब्रह्मको अनेकप्रकारके जगत्की कारणता नहि बनती।

उत्तर—मायासहित ब्रह्मकों अनेकप्रकारके जगत्की कारणता बनजाती है ॥ जैसे मृतिकादी शक्ति मिथ्यारूप घटादिक अनेकपदार्थांकों उत्पन्न करदेती है ॥ तैसे ब्रह्मदी मायाशक्ति मिथ्यारूप अनेकप्रकारके जगत्कों रचती है।

शंका—मृतिकादी शक्ति सत्य है ॥ इसते ओह अनेक घट-आदिकांदा कारण है ॥ अर ब्रह्मकी शक्ति माया तां मिथ्या है ॥ तांते दृष्टांत दार्ष्टांतते विषम है।

उत्तर—जेकर एह दृष्टांत विषम है तां होरदृष्टांतकों श्रवण कर॥जैसे जीवदी निद्रा मिथ्यारूप अनेकप्रकारके स्वप्न जगत्कों रचलेती है ॥ जैसे जीवविषे निद्रा शक्ति जो पदार्थ नहि बनसक्का तिसनूंभी स्वप्नेविषे बनाय देती है॥ तैसे ब्रह्मविषे जो एह मायाशक्ति है ॥ सो जगत्दी उत्पतिस्थितिनाशदा कारण है ॥ निद्राशक्ति जो बात न बनसेके तिसकों कैसे बनावति है ॥ असा पुछे तां श्रवण कर ॥ स्वप्नेविषे पुरुष आकाशविषे आपनाउडना देखता है ॥ अर आपने शिरनूं कटिया होया देखता है ॥ दोय-डीयांविषे अनेकवर्सांनूं देखता है॥ अर मोयेहोये पुत्रआदिकांनूं देखता है ॥ एह युक्त है एह नहि युक्त ॥ एह व्यवस्था स्वप्न-विषे नहि होती ॥ जिसजिस वस्तुनूं जैसेजैसे देखता है तैसेतैसे

सोसो वस्तु युक्त है ॥ ऐसी महिमा जेकर निद्राशक्तिदी देखीती है जो न बने तिसकोंभी बनाय देना ॥ तौ मायाशक्तिदी महिमा मनकरके चिंतन करी नहि जाती॥तांते मायाशक्ति जो न बने तिसकों बनाय देती है ॥ इसविषे तेरेकों आश्चर्य किया है ॥ यत्नसें रहित निर्विकार ब्रह्मविषे माया अनेकप्रकारके विकारांकों कल्पती है ॥ जैसे निर्विकार सोयाहोया जो पुरुष है प्रयत्नसे रहित है ॥ तिसविषे निद्रा अनेकप्रकारदे स्वप्न प्रपंचकों रचदेती हैं ॥ मायाने ब्रह्मविषे रचे जो पदार्थ हैं ॥ तिन्नाको श्रवण कर ॥ आकाश पवन अग्नि जल पृथिवी ॥ ब्रह्मांड चौदां लोक प्रणी ॥ शिलासें आदिलेकरके विकारब्रह्मविषे मायाने रचे हैं ।

शंका—जेकर संपूर्ण मायादेही विकार है ॥ तौ किसीकों चेतनरूपता किसीकों जडरूपता किसकारणते है ।

उत्तर—जिसविषे चैतन्यदा प्रतिबिंब पडता है सो चेतनरूप कहीता है अर जिसविषे चैतन्यका प्रतिबिंब नहि पडता सो जड कहीता है ॥ किसविषे चैतन्यका प्रतिबिंब पडता है ॥ ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ प्राणीयांदे अंतःकारणविषे चैतन्यका प्रतिबिंब पडता है ।

शंका—चेतन जड एह भेद चैतन्यरूप ब्रह्मकरके कीता होया किउँ न होवे ।

उत्तर—ब्रह्मकों सभनादा उपादान कारण होनेकरके सभनां पदार्थांविषे एक जैसा विद्यमान होनेते ॥ ब्रह्मकरके कीता होया जडचेतन भेद नहि ॥ जिसते सच्चिदानंद लक्षण ब्रह्मजडांविषे

अर चेतनांविषे समान है ॥ अर नामरूप भिन्न भिन्न हैं ॥ ब्रह्म-विषे नामरूप कल्पित हैं ॥ जैसे वस्त्रविषे हाथीघोडा आदिकांदी-यां मूर्तां कल्पित होतीयां है॥ब्रह्मसर्वकल्पनादा अधिष्टान होनेते सर्वगत है ॥ सो ब्रह्म कैसे जानीता है ॥ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ कल्पितनाम रूपदे त्याग कीतयां होयां॥ नामरूपदी कल्पनादा अधिष्टान सच्चिदानंद ब्रह्म जानीता है प्रतीत होनेते जो नामरूप हैं सो सत्य नहि ॥ जैसे जलविषे उलटे आपने शरीरदे देखीयां-होयांभी ॥ तिसदी वुद्धिमानाने उपेक्षा करीती है ॥ अर जलके कनारे स्थित जो आपना देह है ॥ तिसविषेही सत्यवुद्धि करीती है ॥ अर जैसे हजारां प्रकारके मनोराजदे होयांहोयांभी ॥ तिस-दी वुद्धिमानांनि उपेक्षा करीती है ॥ अर्थ एह तिसविषे सत्यवुद्धि नहि करीती तैसे जिज्ञासीने नामरूपदी उपेक्षा कीती चाहीये ॥ जैसे क्षणक्षणविषे मनोराज होरहोर होते है ॥ तैसे जगत्‌दे पदा-र्थांदा व्यवहारभी होरहोर पडा होता है॥जोजो वीतगीया है सो फेर नहि आवता॥जुआनीअवस्थाविषे बाल्यअवस्था नहि नजर-आवती अर जुवानी वुढेपेविषे नहि नजर आवती॥अर मोयाहो-या पिता फेर नहि जीवता ॥ अर वीतगोया जेडा दिन है फेर क-दी नहि आवता॥तांते जैसे मनोराज है॥तैसा जगत् है॥जैसे क्षण क्षणविषे मनोराज नाशकों प्राप्त होता है तैसे क्षणक्षणविषे सर्व-पदार्थ नाशकों प्राप्त होते है ॥ तांते मनोराजदा अर जगत्‌दा भेद नहि ॥ इसते जगत्‌दे भासमान होयांहोयांभी जिज्ञासी जगत्-विषे सत्यवुद्धिदा त्यागकरे ।

शंका—नामरूपदे त्याग कीतयां होयां की लाभ होता है ।

उत्तर—नामरूपदे त्याग कीतियां होयां ब्रह्मविषे वुद्धि स्थि-

रताकों प्राप्त होती है ॥ ब्रह्मदी आत्मरूपतादे चिंतनाविषे विघ्न-कोई नहि रहिता ।

शंका—नामरूपदे त्याग कीतियां होयां ज्ञानवान्दा व्यवहार कैसे होवेगा ।

उत्तर—जैसे नट कृतमआस्थाकों करके संपूर्ण व्यवहार कर्ता है॥अर्थ एह नट राजका स्वांग धारता है॥तिसको हृदेविषे एह दृढनिश्चय होता है मैं राजा नहि ॥ पर वाणीकरके राजियांके लायिक व्यवहार कर्ता है ॥ इसको फासी दे देवो एह खूनी है ॥ इसको अमुके मुलखका हमने शिरोपाय दिता है ॥ इसते आदि-लेकरके ॥ तैसे ज्ञानवान्भी नामरूपनूं हृदेविषे मिथ्याजानकर-के व्यवहारको पडा कर्ता है ।

शंका—ज्ञानीदा व्यवहार जेकर मानोंगे तौ रागद्वेषरूप विकारदी प्राप्ति ज्ञानीकों होवेगो ।

उत्तर—बुद्धिदे व्यवहारकर्तियां होयांभी बुद्धिदा साक्षी आत्मा निर्विकार है ॥ सो मेरा स्वरूप है ॥ एह ज्ञानवान्दा निश्चय होता है तांते ज्ञानवान्कों रागद्वेषरूप विकारकी प्राप्ति नहि होती ॥ जैसे वडेवेगकरके वेगदी जो नदी है ॥ तिसके नीचे स्थित जो वडी भारीशिला है ॥ सो चलायमान नहि होती ॥ तैसे नाम-रूपदे अन्यथा भावनूं प्राप्त होयांभी कूटस्थ ब्रह्म अन्यन्य भाव-नूं नहि प्राप्त होता ।

शंका—अखंडब्रह्मविषे ब्रह्मसें भिन्नस्वभाववाले जगत्दी प्रतीति कैसे होती है ।

उत्तर—जैसे छिद्रसें रहित दर्पणविषे बडेपुलाडसहित जगत् प्रतीत होता है॥ तैसे सत्य चैतन्य घनरूप ब्रह्मविषे अनेकप्रकारके विस्तारांसहित आकाशरूप पुलाडवाला एह जगत् प्रतीत होता है।

शंका—अदृश्यब्रह्मविषे कैसे जगत्दी प्रतीति होती है।

उत्तर—सच्चिदानंददी पहलां प्रतीति होती है॥ पाछे जगतदी प्रतीति होती है॥ जैसे दर्पणको देखनेसे विना दर्पणविषे प्रतिविंब नहि प्रतीत होता॥ तैसे सच्चिदानंददे ज्ञानसे विना नामरूपदा ज्ञान नहि होता।

शंका—नामरूपकोभी भासमान होनेते निर्विषे ब्रह्मदी प्रतीति कैसे होती है।

उत्तर—सच्चिदानंदरूप ब्रह्मविषे नामरूप कल्पित है॥तिसविषे सच्चिदानंद मात्रनूं प्रथम ग्रहणकरके ॥ तितने मात्रकरकेही बुद्धिनूं रोकलये॥अर नामरूपविषे बुद्धिको न लगावे॥ऐसे कीतयां होयांहोयां जगत्सें रहित् सच्चिदानंद लक्षण ब्रह्मदी प्रतीति होती है॥ इस अद्वैतानंदविषे जनचिरपर्यंत विश्रामकों करे ॥ ब्रह्मानंदनाम ग्रंथविषे तीसरा अध्याय कथन कीया ॥ तिसका नाम अद्वैतानंद है ॥ जिसकारणते इसविषे जगत्दी मिथ्यारूपतादे विचारकरके अद्वैतब्रह्म जानीता है।

इति ब्रह्मानन्दे अद्वैताननंदनाम त्रयोदशः ग्रंथःसमाप्तः

श्रीः

पञ्चदशी भाषा

ब्रह्मानन्दे विद्यानन्द प्रकरणम्

॥ ओंसतगुरुप्रसाद ॥ अथ विद्यानंदनाम चौथेआनंददा आरंभ कर्ते हैं ॥ सो आदिसें पंचदशोदा चौदवां ग्रंथ है ॥ योगकरके अर आत्मविवेककरके अर द्वैतदी मिथ्यारूपतादे विचारकरके ब्रह्मानंददे अनुभवकरणेवाले पुरुषकों प्राप्त होता जो विद्यानंद है तिसका अव निरुपण कर्ते हैं विद्यानंद बुद्धिकी वृत्ति रूप है विपयानंदकी निआंई ॥ सो विद्यानंद चारप्रकारका है दुःखाभाव १ सर्वकामावाप्ति २ कृतकृत्योहं ३ प्राप्तप्राप्योहं ४ इसतरां चारप्रकारदा कथन कीता है दुःखाभाव दोप्रकारदा है दुःखकों दोप्रकारका होनेते एक इसलोकविषे होनेवाला दुःख दूसरा परलोकविपे होनेवाला दुःख लोकके दुःखदे अभावनूं बृहदारण्यक उपनिपददी श्रुति कथन कर्ती भई है तिसदे अर्थनूं श्रवण कर ॥ जेकर अनेकजन्मांकि पुण्यके प्रभावकरके एह जीव आत्मानूं असंगकूटस्थ मैंहां ऐसे जाने तौ किसदी इछाकरदा होआहोआ अर किसदी कामनादेवासते शरीरदे तापांकरके तापकों प्राप्त होवे ॥ अर्थ एह जो तापकों फेर नही प्राप्त होता आत्मा दोप्रकारदा है॥जीवात्मा अर परमात्मा जीवात्माका स्वरूप अव श्रवण कर ॥ स्थूलसूक्ष्मकारण एन्ना तिन्नाशरीरांकेसाथ तादात्म्य भ्रमदे होआंहोआं चैतन्य भोक्ता होता है ॥ सो भोक्ता जीव कथन करीता है अव परमात्मादे स्वरूपनूं श्रवण कर ॥ परमात्मा सच्चि-

दानंदरूप है सो नामरूपदी कल्पनादा अधिष्ठान होनेकरके ना-
मरूपकेसाथ तादात्म्यनूं प्राप्त होकरके भोग्यरूप होजाता है
अर यद तिन्ना शरीरांते चैतन्यदा विवेक करीता है तद चैतन्य
विच्चों भोक्तारूपता दूर होजाती है अर यद चैतन्यदा नामरूपते
विवेक करीता है तद चैतन्यविच्चों भोग्यरूपता दूर होजाती है
जितनाकालपर्यंत विवेक नहि उत्पन्न होता तितनाकालपर्य्यंत
भोक्ता अर भोग्य एन्ना दुहांनूं सत्यमानकरके भोक्तादेवासते
भोगांदी इच्छा कर्ता होआहोआ शरीरांदे तापांकरके तापांनूं प्राप्त
होता है वास्तवते आत्माविषे ताप कोई नहि शरीरांतिन्नाविषे
ताप हैं किसशरीरविषे कौनताप है ऐसा पुछें तां प्रथम स्थूल श-
रीरविषे तापांनूं श्रवण कर ॥ कफवातपित्त एन्ना तिन्नाधातूआं-
के वद्ध घट्ट होआंहोआं उत्पन्न होते जो अनेकप्रकारके रोग हैं
सो स्थूलशरीरदे ताप हैं ॥ अब सूक्ष्मशरीरदे तापानूं श्रवण कर॥
कामक्रोधादिक सूक्ष्मशरीरके ताप हैं सूक्ष्मशरीरदे तापांदा
अरस्थूलशरीरदे तापांदा बीजकारण शरीरविषे ताप है ॥ अद्वै-
तानंद नाम तीसरेअध्यायविषे कथन कीआ जो प्रकार तिसकर-
के मायादे कार्य्यनाम रूपते भिन्न सच्चिदानंदरूप परमात्मादे
जानिआंहोआं संपूर्ण प्रपंच मिथ्या होजाता है ॥ ऐसे जानने-
वाला विवेकी किसभोगदी इच्छा करे अर आत्मानंदनाम दूसरे-
अध्यायविषे कथन कीआ जो प्रकार तिसकरके जीव आत्मादे
स्वरूपनूं असंग कूटस्थ चैतन्यरूपदे निश्चय कीतिआंहोआं
कामनाकरणेवाले भोक्तादा अभाव निश्चय होता है॥तांते तापांदा
अभाव होजाता है ॥ अब परलोकविषे होनेवाले तापांनूं श्रवण
कर ॥ पुण्यपाप एन्ना दुहांदी चिंता परलोकदा दुःख है सो ज्ञान-

वानको नहि तपावती एह वार्ता प्रथमाध्यायविषे कहआये है।

शंका—ज्ञानवान्को आपने प्रारब्धकर्मदी चिंता मत होवे पर आगामिकर्मकी चिंता तां होती है।

उत्तर—जैसे कमलपत्रविषे जलका स्पर्श नहिहोता तैसे ज्ञानदी प्राप्तिसें अनंतर ज्ञानवान्विषे आगामि कर्मांदा स्पर्श नहि होता तांते ज्ञानवान्को आगामिकर्मांदी चिंता नहि होती अर ज्ञानवान्कों संचितकर्मांदीभी चिंता नहि होती जिसते श्रुति ऐसे कथन कर्ती है जैसे तीलीदारूं अग्निविषे रखिआ होआ दग्ध होजाता है तैसे ज्ञानवान्दे संचितकर्म संपूर्ण क्षणमात्रसें दग्ध होजाते है इस अर्थविषे गीतावचनभी प्रमाण है॥ जैसे प्रचंडअग्नि लकडीआंको भस्म करदेती है तैसे हे अर्जुन! ज्ञानरूपअग्नि संपूर्णकर्मांनूं भस्म करदेती है जिसपुरुषदा आत्मा अहंकारकेसाथ तादात्म्याध्यासकों नहि प्राप्त होआ अर जिसदी बुद्धि संशयविपर्य्ययकों नहि प्राप्त होती सो पुरुष एन्हा संपर्णलोकानूं मारदेवे तौभी पापकों नहि प्राप्त होता जिसते तिसकों एह निश्चय होता है मैं किसीको नहि मारिआ इसी अर्थविषे कौसीतिकी उपनिषद की श्रुति प्रमाण है तिसका एह अर्थ है ज्ञानवान्को मातादे मारणेकरके पितादे मारणेकरके स्वर्णदे चुरावणेकरके वेदवेत्ता ब्राह्मणदे मारणेकरके अथवा गर्भहत्यादे करणेकरके पाप प्राप्त नहि होता जिसते ज्ञानवान्कों शरीरादिको विषे अहंबुद्धि नहि होती शरीरादिकोंविषे ज्ञानवानको अहंबुद्धि होती नहि इह कैसे जानिया ऐसा पुछें तां श्रवण कर॥ जिसते पापकरणेदी इछावाले ज्ञानवान्दा मुख कुमलावता नहि कोईबी पाप ज्ञानवान्दे मो-

क्षनूं नहि नाशकर्ता इतनेकरके दुःखाभावरूप विद्यानंदकथन कीआ अब सर्वकामाप्तिरूप विद्यानंदनूं श्रवण कर॥जैसे ज्ञानवान्कों दुःखाभाव होता है तैसे ज्ञानवान्कों सर्वकामाप्ति होती है ऐसा श्रुतिने कथन कीआ है॥ ज्ञानवान्कों सर्वकामाप्तिविषे एतरेय श्रुति प्रमाण है तिसकें अर्थकों श्रवण कर ॥ ज्ञानवान् संपूर्ण कामनानूं प्राप्त होकरके जन्ममरणसें रहित होता भया अर छांदोग्य उपनिषददी श्रुतिविषे एह कथन कीआ है ज्ञानवान् हस्ताहोआ भोजन कर्ताहोआ अर जातके संबंधिदेसाथ क्रीडा कर्ताहोआ अर स्त्रीआंकेसाथ रमण कर्ता होआ अर हाथीघोडे पीनसादिकांदीआं असवारीआंकरके रमण कर्ताहोआ जनाके समीपवर्ति शरीरनूं अहंरूपकरक स्मरण नहि कर्ता अर प्रारब्ध कर्मकरके प्राण इसकों जीवावता है तैतिरीयउपनिषत्की श्रुतिभी इसविषे प्रमाण है ज्ञानवान् संपूर्णकामनांनूं एकठाहि प्राप्त होजाता है।

शंका—ज्ञानवान्कों कर्मांदे फलदा भोग अंगीकार कीतिआंहोआं ज्ञानवान्कों जन्मभी होवेगा ।

उत्तर—ज्ञानवान्कों कर्मांकरके जन्मदी प्राप्ति नहि होती जिसते ज्ञानकरके संचितकर्मांदा नाश होगिआ है तिसते ज्ञानवान् अज्ञानीकी निआंई जन्मकों नहि प्राप्त होता तांते ज्ञानवान् अकठाहि संपूर्णभोगांनूं प्राप्त होता है चक्रवर्तीसें लेकरके हिरण्यगर्भपर्य्यंत संपूर्णभोगांनूं ज्ञानवान् एकठा प्राप्त होता है एह वार्ता तैतिरीय उपनिषदविषे अर बृहदारण्यकोपनिषदविषे कथन करी है सो श्रवण कर॥यौवन अवस्थावाला अर सुंदररूप-

वाला अर संपूर्ण विद्यावाला अर संपूर्ण रोगांते रहित दृढ चित्त-वाला हाथी घोडा रथपिआदा इस चारप्रकारदी सेनावाला धन-करके अर अन्नकरकेपूर्ण संपूर्ण पृथिवीदा राजा संपूर्णमनुष्यांदे भोगांकरके संयुक्त तृप्तिकों प्राप्त हूआहूआ चक्रवर्तीराजा जिस आनंदनूं प्राप्त होता है तिसआनंदनूं ब्रह्मवेत्ता भोक्ता है ॥ चक्र-वर्तीराजासें आदिलेकरके हिरण्यगर्भपर्यंत जीवांविषे स्थित जो आनंद हे तिसकों ज्ञानवान् कैसे भोक्ता है ऐसा पुछेंतां श्रवण क-रा॥ज्ञानवान्‌ने जानिआ जो है आत्मरूपताकरके ब्रह्म तिसब्रह्म-का संपूर्ण आनंदांकों लेश होनेते ज्ञानवान्‌कों संपूर्ण आनंदांकी प्राप्ति बनती है ।

शंका—चक्रवर्ती अर ब्रह्मवेता एन्ना दोन्नाकों विषेप्राप्ति स-म नहि ॥ इसते चक्रवर्ती अर ज्ञानवान् एन्नां दुहांका आनंदसम कैसे कहितेहो ।

उत्तर—ज्ञानवान् अर चक्रवर्तीकों मनुष्योंके भोगोंविषे इ-छा नहि होती ॥ इस समताते आनंदकी समता है दोनोंकों परं-तु एताभेद है चक्रवर्तीराजाकों भोगांदी प्राप्तिते भोगांदी इछा नहि होती अर ज्ञानवान्‌कों विवेकते भोगांदी इछा नहि होती ज्ञानवान् वेदवेता होता है तिसकरके वेदांकरके अर शास्त्रांकरके भोगांदे दोषांनूं देखता है राजा बृहद्रथ मैत्रायिनी उपनिषद्विषे विषयांदे दोषांनूं कथा वाधकरके कथन कर्ता भया है ॥ अनेक-प्रकारके देहके दोषांनूं कथन कर्ता भया अनेकप्रकारदे चित्तके दोषांनूं कथन कर्ता भया अर अनेकप्रकारदे भोगांदे दोषांनूं क-थन कर्ता भया तिन्नादोषांदे विवेकवाले पुरुषनूं भोगांदी काम-

ना नहि होती जैसे वेदवेत्ता ब्राह्मणकों कुतेकरके वमन कीतीहो-ई क्षीरविषे कामना नहि होती तैसे विवेकीकों भोगांदी कामना नहि होती चक्रवर्तीराजा अर ज्ञानवान् एन्ना दोनोको मनुष्यांदे भोगांविषे कामना नहि होती ॥ इसवार्तादे सम होआंहोआंभी ज्ञानवान्दी चक्रवर्ति राजाते कुछइक अधिकता है सो श्रवण कर ॥ चक्रवर्तिराजाकों अनेकप्रकार कीआं राजसामग्रीआं संचनेविषे दुःख है ॥ अर भावी तिसकेनाशते अतिभय होता है ॥ एह दोदोष चक्रवर्तिराजादे सुखविषे होते हैं ॥ अर ज्ञान-वान्दे सुखविषे नहि होते ॥ तांते ज्ञानवान्दा सुख जो है सो चक्रवर्ति राजादे सुखते अधिक है और एक चक्रवर्तिराजाते ज्ञानवान्दी अधिकता है ॥ तिसनूंभी श्रवण कर ॥ चक्रवर्तिरा-जाकों गंधर्वानंदकी इछा होती है अर ज्ञानवान्कों गंधर्वानंदकी इछा नहि होती ॥ तांते ज्ञानवान्दा आनंद चक्रवर्तिराजादे आ-नंदते अधिक है ॥ गंधर्वानंद दोप्रकारका है ॥ जिसते गंधर्व दो-प्रकारके हैं ॥ एक मनुष्यगंधर्व हैं ॥ दूसरे देवगंधर्व हैं ॥ मनुष्य-गंधर्व किसनूं कहीता है ॥ अर देवगधर्व किसनूं कहीता है ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ इसकल्पविषे प्रथम जो मनुष्य होवे ॥ पिछें पुराणादे फलवशते गंधर्वरूपतानूं प्राप्त होवे सो मनुष्य गंधर्व है अर जो पूर्वकल्पाविषे कीते जो पुण्य अेन्नादे प्रभावतें कल्पदे आ दिविषेहि गंधर्वरूपतानूं प्राप्त होवे सो देवगंधर्व है अग्निरधाततें आदिलेकरके लोकविषे पितर है सो पितरलोकाविषे चिरकालप-र्यंत वासकर्ते हैं अर देवतिआंदा आनंद तीन प्रकारदा है जिस-ते देवता तीनप्रकारके है एक आजानदेवता है दूसरे कर्मदेवता हैं तीसरे देवते हैं कल्पदे आदिविषे जो देवता भये हैं सो आजान-

देवता है अर इसकल्पविषे अश्वमेधआदि यज्ञरूपकर्मोंनूं करके महत्पदनूं प्राप्त होकरके आजानदेवतिआंकरके जो पूजने योग्य हैं सो कर्मदेव है अर यम अर अग्निसें आदिलैकरके देवता हैं इंद्र अर बृहस्पति प्रसिद्ध है अर श्रुतिविषे जो प्रजापति शब्द है तिसका अर्थ विराट है अर ब्रह्माशब्दका अर्थ हिरण्यगर्भ ॥ चक्रवर्ति १ मनुष्यगंधर्वः २ देवगंधर्वः ३ पितरः ४ आजातदेवता ५ कर्मदेवता ६ देवता ७ इंद्रः ८ बृहस्पतिः ९ प्रजापतिः १० ब्रह्मा ११ एन्ना ग्यारांदे आनंदते ब्रह्मवेतादा आनंद अधिक है जिसते एन्ना ग्यारांकों अगलेअगले आनंदकी कामना होती है प्रथमप्रथमके आनंदसें अगलेअगलेदा आनंद सौसौ गुणाअधिक है अर ब्रह्मवेताका जो आनंद है सो मनवाणीते परे है तांते चक्रवर्तिते आदिलैकरके हिरण्यगर्भ पर्य्यंतांके आनंदते आत्मानंद परे है चक्रवार्तिते आदिलैकरके हिरण्यगर्भपर्य्यंतांके जो आनंद है सो संपूर्ण ज्ञानवान्‌विषे वर्तते है जिसते ज्ञानवान्‌कों तिन्ना आनंदाविषे इच्छा है नहि इसकानाम सर्वकामाप्ति है अथवा जैसे आपने शरीरविषे आनंदाका बुधिदी वृत्तिदा साक्षी चैतन्यरूपताकररके भोगांनूं मैं अनुभव कर्ताहां तैसे सर्वशरीरांविषे आनंददाका खुधिदी वृत्तिदा साक्षी चैतन्यरूपताकरके मैं भोगांदा अनुभव कर्ताहां एह निश्चय ज्ञानवान्‌का होता है इसकरके ज्ञानवान्‌कों सर्वकामाप्ति होती है ।

शंका—कथनकीआ जेडाप्रकार तिसकरके अज्ञानीकोंभी सर्वआनंदांदी प्राप्ति है जिसते अज्ञानीभी साक्षी चैतन्यरूपताकरके सर्वदेहांविषे आनंददे अनुभवनूं कर्ता है।

उत्तर—अज्ञानीकों सर्वआनंद प्राप्त नहि होते जिसते सर्व-

शरीरांविषे सर्वबुधीआंदा साक्षी मैंहां एह ज्ञान अज्ञानीको नहि होता इसीकारणते तैत्तिरीय उपनिषद्विषे इह कथन कीआ है यो पुरुष इह जानता है सर्वशरीरांविषे सर्व बुद्धिआंदा साक्षी चिदात्मा मैंहां सो संपूर्णकामनानूं प्राप्त होता है अथवा ज्ञानवान् आपनी सर्वात्मतानूं सदा सामकरके गायन कर्ता है ॥ तिस सामका अर्थ एह है मैंहि अन्नहां अर मैंहि सर्वशरीराविषे स्थित होकरके अन्ननूं भोक्ताहां इसकानाम सर्वका प्राप्ति है इतने ग्रंथकरके दुःखाभाव अर सर्वकामाप्ति एह दोप्रकारका विद्यानंद निरूपण कीता तीसरा कृतकृत्यता रूप विद्यानंद है अर चौथा प्राप्तप्राप्यतारूप विद्यानंद है सो दोवें तृप्तिदीपविषे भलीप्रकारकरके असांने कथन कीते हैं तांते तृप्तिदीपके जेडे श्लोक है सोई ईहां विचार लैता ब्रह्मनंददे अनुभवके फलदे मननवासते तांते ओन्हा श्लोकानूं श्रवण कर॥इस लोकदे सुखांदे समूहदी सिद्धिदेवासते अर परलोकदे सुखांदे समूहदी सिद्धिदेवासते अर मोक्षदी सिद्धीदेवासते अनेकप्रकारके कार्यकरणे योग्य खेती वणजयज्ञ दान व्रत श्रवण मनन निदिध्यासनरूप अज्ञानकालविषे होतेभये सो संपूर्ण अब ज्ञानदी प्राप्ती होआं कीतेगये ॥ अर्थ एह इसलोकदे अर परलोकदे सुखांदेवासते कर्तव्य तितनाकालसी जितनाकाल तिन्नादी कामना सी अब ज्ञानदे प्राप्त होआं होआं कामना सर्व नष्ट होगईआं हैं जिसते जगद्विषे सत्यबुद्धि नहि रही अर मोक्षदेवासते श्रवणआदिकांदी कर्तव्यता तितनाकालसी जितनाकाल आपकों बंधनांवाला जानीता सी अब ज्ञानदे प्राप्त भया बंधन नहि प्रतीत होता तांते मोक्षवासतेज्ञो कर्तव्य है नहि ज्ञानवानकों तिस इस कृतकृत्यतानूं प्रतियोगिआंदे

चिंतनसहित चिंतन कर्ता हूआ ज्ञानवान् इसप्रकारकरके सदा तृप्तिकों प्राप्त होता है अज्ञानी जो दुःखी हैं सो पुत्रादिकांदी इछाकरके जन्ममरणकों प्राप्त होवे परमानंद जो पूर्ण मैंहां सो किसदो इछाकरके जन्ममरणको प्राप्त होंवां अर परलोकदे जानेदी इछावाला यज्ञादिकर्मांनूंकरके सर्वलोकांदा आत्मा जो मैंहां सो किसकारणते किसप्रकार किसकर्मनूं करां अर जो आपनेंकों क्रियवाला मानता है सो वेदां अर शास्त्रांदे उपदेशनूं करो अर पडावो अर मेरा तो उपदेश करणेंमें अर पडावनेंमे अधिकार नहि जिसते मैं क्रियाते रहितहां सौंना अर भोजनकरणां स्नान अर शौचएन्ना दीन मैं इछा कर्ताहां अरहां एन्नानूं कर्ताहां सौनेआदिकांनूं शरीरविषे देखनेवाले जीव जेकर सौनेआदिकांनूं मेरेविषे कल्पते है तो ओन्नादी कल्पनाकरके मेरेकों हानलाभ कछु नहि जैसे रतीआंदे समुहविषे वांदराने अग्निकल्पलीती तो तिसकल्पीहोई अग्निकरके रतीआं दग्ध नहि होजातीआं तैसे होरणां जीवांकरके मेरेविषे कल्पेहोये जो संसारके धर्म हैं तिन्नाकरके मैं संसारी नहि होजाता ॥ अर जेडे तत्वके नहिजानेवाले सो श्रवणनूं करे ॥ पर तत्वकेजाननेवाला मैं श्रवणनूं किसकारणते करां ॥ संशययुक्त पुरुष मनननूं करें अर संशयांते रहित मैं मनननूं किसवासते करां ॥ अर विपर्य्ययनूं प्राप्त होआहोआ है जो सो निदिध्यासनकों करे ॥ अर विपर्य्ययदे अभाव होआंहोआं फेर ध्यानकरणे योग्य नहि देहविषे आत्मबुद्धिरूप विपर्य्ययनूं मै कदाचित्भी नहि प्राप्त होता ॥ मैं मनुष्यहां इसते आदिलेकरके व्यवहारविपर्य्ययते विना अनादिकालदी अभ्यासकों प्राप्त होईहोई जो वासना है तिसकरके बन जाता है ॥ तिसव्यवहारका

प्रारब्धके नाश होआंहोआं नाश होता है ॥ जितनाकालपर्य्यंत प्रारब्धका नाश नहि होता तितनाकालपर्य्यंत में मनुष्यहां ॥ इसतें आदिलेकरके व्यवहारदा नाश नहि होता ॥ हजारां ध्यानां करकेभी एकध्यानकी किआ कहिनी है ॥ व्यवहारकी विरक्तता जिसकों वांछित है सो तूं ध्याननूं कर ॥ अर में तां व्यवहारनूं विरोधी नहि देखता ॥ तांते मैं ध्यान किसकारणते करां ॥ अर मेरेकों जिसकारणते विक्षेप हैनहि तिसकारणते मेरेकों समाधिभी है नहि ॥ विक्षेप अथवा समाधि विकारीमनविषे होती है नित्यानुभवरूप जो मैहां उस मुझते अनुभव भिन्न नहि जो करणेयोग्य सी सो मैं करलीता ॥ अर जो प्राप्त होने योग्य सी सो मैं नूं प्राप्त होगिआ एह निश्चय है ॥ अकर्ता अलेप जो मैंहां उसका प्रारब्धकर्मकरके व्यवहार भावें लोकांके अनुसार होवे भावें शास्त्रके अनुसार होवें भावें लोकशास्त्रतें विरुद्ध होवे अथवा कृतकृत्य जो मैं हां सो लोकांदे कल्याणदी कामनाकरके शास्त्रकथित मार्गकरके वर्तो तिसविषे मेरी की हान है ॥ देवतिआंदा पूजन स्नान शौच भोजनआदिकांविषे शरीर वर्तो अर वाणी जो है सो ओंकारदा जप करो भावें उपनिषदांनूं पडे अर बुद्धि विष्णुदा ध्यानकरो भावें ब्रह्मानंदविषे लीन होवो मैं साक्षीरूपहां न कुछ कर्ताहां न करवावताहां कृतकृत्यताकरके तृप्त होआहोआ अर प्राप्त प्राप्यताकरके तृप्त होआहोआ ज्ञानवान् आपनेमनकरके सदाऐसे मानता है॥धन्योहंधन्योहं नित्यहि में अपनेस्वरूपनूं यत्नसें विना अनुभव कर्ताहां ॥ धन्यहां में जिसते ब्रह्मानंद मेरेकों स्पष्ट भासता है ॥ धन्यहां मैं धन्यहां मैं जिसते संसारदुःखनूं मैं अज्ञ नहि देखता धन्यहां मैं धन्यहा मैं जिसते मेरा अ-

ज्ञानकहां भागगिआ है ॥ धन्यहां मैं धन्यहां मैं जिसते मेरकों करणेयोग्य कुछ नहि रिहा धन्यहां मैं धन्यहां मैं जिसते प्राप्तहोने योग्य सभ कुछ मैंनूं प्राप्त होगिआ है ॥ धन्यहां मैं धन्यहां मैं जिसते मेरी तृप्तिदा कोई जगत्‌विषे दृष्टांत है नहि धन्यहां मैं धन्यहां मैं धन्यहां धन्यहां वारंवार धन्यहां मैं वडे पुण्य हैं वडे पुण्य हैं जो फल प्राप्त होतासी सो हछीतरा प्राप्त भआ है मैंनूं इसपुण्यदी प्राप्तिते हमभी आश्चर्य्यरूप हैं हमभी आश्चर्य्यरूप हैं शास्त्र आश्चर्य्यरूप है शास्त्र आश्चर्य्यरूप है गुरु आश्चर्य्यरूप हैं गुरु आश्चर्य्यरूप हैं ज्ञान आश्चर्य्यरूप है ज्ञान आश्चर्य्यरूप है॥ ज्ञानते प्राप्तभआ जो सुख सो आश्चर्य्यरूप है आश्चर्य्यरूप है ब्रह्मानंदनाम ग्रंथविषे चतुर्थाध्याय कथन कीआ तिसकानाम विद्यानंद है ॥ विद्यानंददो उत्पत्तिपर्य्यंत अभ्यास करणा ।

इति श्रीब्रह्मानंदेविद्यानंदःसमाप्तः

श्रीः

पञ्चदशी भाषा।

ब्रह्मानन्दे विषयानन्द प्रकरणम्

॥ ॐसतगुरुप्रसाद ॥ ॥ अथ ब्रह्मानंदविषे विषयानंदनाम पंचमाग्रंथ निरूपण कर्ते हैं सो पंचदशीका आदिसेंलेकरके पंचदशमां ग्रंथ है विषयानंद ब्रह्मानंदका अंश है।

शंका—विषयानंद निरूपणकरणा मोक्षशास्त्रविषे अयुक्त ॥ जिसतें विषयानंद सर्वलोकांविषे प्रसिद्ध है ।

उत्तर—विषयानंदकों लोक प्रसिद्ध होआहोआभी ब्रह्मानंदका एकअंश होनेकरके ब्रह्मानंद ज्ञानविषे सहायक है तांते मोक्षशास्त्रविषे विषयानंदका निरूपण करणा चाहोता है ब्रह्मानंददी प्राप्तिविषे विषयानंद द्वारा है जैसे राजाके मिलापविषे मंत्रीकामिलाप द्वारा है।

शंका—विषयानंद ब्रह्मानंददा एक देश है इसविषे की प्रमाण है।

उत्तर—विषवानंद ब्रह्मानंददा एक देश है इस विषे तैतिरीयोपनिषददी श्रुति प्रमाण है ॥ तांते तिसके अर्थनूं श्रवण कर ॥ आत्मादा स्वरूप जो परमानंद है अखंड एकरसरूप तिसदी लेशनूं ग्रहणकरके हीर ब्रह्मासें आदिलेकरके संपूर्ण भूतजी वर्ते हैं॥ विषयानंद ब्रह्मानंददा लेश है इसअर्थदे दिखलावनेंवासते विषयानंददा उपाधिरूप जो अंतःकरणदीआ वृत्तीआं है तिन्नादे भे-

दनूं गुरुशिष्यके तांई कथन कर्ते हैं ॥ मनदीआं वृतीआं तिन्नप्र-कारदीआं हैं शांत १ घोर २ मूढ ३ शांतवृतीआं सत्वगुणदा कार्य्य हैं ॥ अर घोरवृतीआं रजोगुणदा कार्य्य हैं ॥ अर मूढवृती-आं तमोगुणदा कार्य्य हैं ॥ वैराग्य क्षमा उदारता इसते आदिले-करके शांतवृतीआं हैं ॥ तृष्णा स्नेह राग लोभ इसतेआदिलेकर-के घोरवृत्तीआं हैं ॥ मोहभय इसतेआदिलैकरके मूढवृत्तीआं है॥ एन्ना तिन्नाप्रकारांदीआं वृतीआंविषे ब्रह्मदी चैतन्य स्वभावता प्रतिबिंबकों प्राप्त होती है ॥अर शांतवृत्तीआंविषे ब्रह्मदी सत्ताचे-तनता आनंद तिन्ने प्रतिबिंबभावकों प्राप्त होते है ॥ इसविषे श्रु-ति प्रमाण है जैसाजैसा वृतिदारूप होता है तैसेतैसे ब्रह्मप्रतिबिं-बभावकों प्राप्तहोता है ॥ अर्थ एह राजसी तामसी वृत्तीआंविषे ब्रह्मका चैतन्यस्वभाव प्रतिबिंबभावकों प्राप्त होता है ॥ अर शां-तवृतीआंविषे आनंदभी प्रतिबिंबभावकों प्राप्त होता है ॥ अर व्यासजीभी सूत्रविषे एह कथन कीआ है ॥ आत्माकों सुर्य्यादि-कोंकी उपमा है ॥ अर्थ एह जैसे जलदे कंपनेकरके सूर्य्यकंपता प्रतीत होता है ॥ अर जलको स्थिरहोनेते सूर्य्य स्थिर प्रतीत हो ता है ॥ तैसे वृतीआंदे सात्विक होनेकरके आत्मा सात्विक प्रती त होता है ॥ अर वृतीआंकी मलनताते आत्मा मलन प्रतीत हो ता है ॥ एकहि संपूर्णभूतांदा आत्मा एकरूपकरके भूतभूतविषे स्थित होआ होआ बहुतरूपांकरके प्रतीत होता है जैसे जलवि-षे चंद्रमा तात्पर्य्य एह ॥ शुद्धजलविषे प्रतिबिंबकों प्राप्तहूआ चं-द्रमा स्पष्ट प्रतीत होता है ॥ अर मलनजलविषे प्रतिबिंबकों प्रा-प्त हूआहूआ चंद्रमास्पष्ट नहि प्रतीत होता ॥ तैसे सात्विकवृती आंविषे प्रतिबिंबभावकों प्राप्त हूआहूआ ब्रह्म स्पष्ट प्रतीत होता

है ॥ अर रजोतमोरूप मलनवृत्तीआंविषे प्रतिबिंबभावकों प्राप्त हूआहूआ ब्रह्म स्पष्ट नहि प्रतीत होता ॥ घोरमूढवृत्तीआंदी मलनताते घोरमूढवृत्तीआंविषे ब्रह्मदी आनंदरूपता नहि प्रतीत होती अर घोरमूढवृत्तीआंविषे काष्टपाषाण आदिकांदी अपेक्षाकरके कुछइक निर्मलता है ॥ तिसते घोरमूढवृत्तीआंविषे ब्रह्मदी चैतन्यरूपता प्रतीबिंबभावकों प्राप्त होती है ।

शंका—चंद्रमादे प्रतिबिंबदी उपाधि जो जल है तिसकों दोप्रकारदा होनेते अंशदी प्रतीति बनजाती है॥ अर ब्रह्मदे प्रतिबिंबदी उपाधि जो अंतःकरण है तिसकों एकरूप होनेते तिसविषे ब्रह्मदे एकअंशका भान एह वार्ता अयुक्त है ।

उत्तर—जेकर इस दृष्टांतविषे तेरामन नहि तोषको प्राप्त होता तां होरदृष्टांत श्रवण कर॥जैसे निर्मलजलविषे अग्निकी उष्णता प्राप्त होती है अर प्रकाश नहि प्राप्त होता तैसे घोरमूढवृत्तिआंविषे ब्रह्मदी चैतन्यता प्रतीत होती है अर आनंद नहि प्रतीत होता अर शांतवृत्तिआंविषे ब्रह्मदी चैतन्यरूपता अरआनंद दोनो प्रतीत होते हैं इसविषे दृष्टांत श्रवण कर॥जैसे काष्टविषे अग्निदी उष्णता अर प्रकाश दोवें प्रकट होते हैं तैसे शांतवृत्तीआंविषे सुख अर चैतन्य दोवें प्रकट होते हैं।

शंका—घोरमूढ वृतिआंविषे चैतन्यदी प्रकटता होती है अर शांतवृतीआंविषे सुख अर चैतन्य दोनोंदी प्रकटता होती है ॥ एह व्यवस्था तुसां किसतां कीती है ।

उत्तर—वस्तुदे स्वभावनूं आश्रयकरके असां एह व्यवस्था

कीती है सो व्यवस्था अग्निदी उष्णता अर प्रकाशविषे अर ब्रह्म-दी चेतनता अर सुखविषे समान है ॥अर्थ एह अग्निदी उष्णतादा स्वभाव एही है जो जलविषे प्राप्त होता अर प्रकाशविषे एह स्व-भाव है जो जलविषे न प्राप्त होता अर जलविषे एह स्वभाव है जो अग्निदी उष्णतानूं ग्रहणकरणा अर प्रकाशनूं न ग्रहकणरणा अर काष्ठदा एही स्वभाव है जो अग्निदी उष्णता अर प्रकाश दो-नोंकों ग्रहणकरणा तैसे घोरमूढवृतीआंदा एही स्वभाव है जो ब्र-ह्मदी चेतनतानूं ग्रहणकरणा अर आनंदनूं न ग्रहणकरणा अर शांतवृतीआंदा एही स्वभाव है ॥ जो ब्रह्मदी चेतनता अर आनं-द दोनोंकों ग्रहणकरणा इसवार्तादे निश्चयदा कारण अनुभव है॥ अर्थ एह अनुभवकरके जलविषे अग्निदी उष्णताही प्रतीत होती है प्रकाश नही प्रतीत होता अर काष्ठविषे अनुभवकरके अग्निदी उष्णता अर प्रकाश दोनों प्रतीत होते हैं तैसे घोरवृतिआं अर मू-ढवृतीआंविषे ब्रह्मदी चैतन्यरूपतादा अनुभव होता है अर आनंददा अनुभव नहि होता अर शांतवृतीआंविषे ब्रह्मदी चैतन्यरूपता अर सुख दोनोंदा अनुभव होता है शांतवृतोआंवि च्चोंभी किसेइक वृतिविषे सुख अधिक देखीता है अर रजोगुणदा कार्य्य गृहक्षेत्रआदिरूपविषयांविषे कामनारूप वृत्ति यद होती है तद तिसवृत्तिविषे सुख नहि होता जिसते कामना घोररूप हैं कामनादे होआंहोआं सुख विरोधि दुःख होता है ॥ अर सुखनूं कामनारूप वृत्तिविषे अनुभव नहि कर्ता अर काम-नारूप वृत्तिविषे सुख रहिताभी नहि अर दुःख तिसविषे रहिता-है अर सुखदी नसिद्धिदे होआंहोआं दुःख वधजाता है अर सु-खदे प्रतिवद्ध होआंहोआं क्रोध होता है अथवा द्वेषसुखदा प्रति-

बंधक है अर उस प्रतिबंधदे दूर करणेविषे जेकर समर्थ न होवे तद मनविषे चिंता होती है तब सुख नहि होता चिंताकों तमोगुणदा कार्य्य होनेते क्रोधरूपचिंता एन्नाके होआंहोआं वडा दुःख होता है सुखदी शंकाभी नहि होती अर जिसपदार्थदी पुरुषनूं कामना होती है तिसपदार्थदे लाभ होआंहोआं हर्षरूप वृत्ति उदय होती है ॥ सो हर्षरूपवृत्ति शांतवृत्ति है ॥ तिसविषे महत्सुख होता है अर तिसपदार्थके भोग्यनेते महत्सें महत्सुख होता है ॥ अर जिसपदार्थदी कामना है तिसदी उमेदवारीविषे थोडा सुख होता है अर तिसपदार्थविषे चितकों वैराग्य होआंहोआं अत्यंत महत्सुख होता है सो विद्यानंदविषे कथन कीआ है ॥ इसप्रकार कामनादी निवृत्तिदे भेदकरके चारप्रकारका सुख होता है अर क्षमारूप शांतवृत्तिविषे सुख है क्रोधदे निवारणते अर लोभदे निवारणते उदारता रूपशांतवृत्तिविषे सुख है तांते जोजो सुख होता है कामनिवारणते क्रोधनिवारणते लोभनिवारणते सोसो सुख ब्रह्मरूप है जिसते वृत्तीआंविषे ब्रह्मदा प्रतिबिंब पडता है प्रतिबिंबरूप होता है तांते वृत्तीआंविषे ब्रह्मका प्रतिबिंबरूप जो सुख है सो ब्रह्मरूप है अंतर्मुखवृत्तीआंविषे ब्रह्मसुखदा प्रतिबिंब होता है इसमैं विघ्न कोई नहि अब सभनां पदार्थांविषे ब्रह्मस्वरूपदे अनुभव करावनेवासते गुरुशिष्यको ब्रह्मस्वरूप याद करावते हैं सत्ता चैतन्य सुख एह तिन्न ब्रह्मदे स्वभाव हैं मृत्तिका शिलादिकांविषे ब्रह्मदी सत्ता प्रतीत होती है चैतन्य अर आनंद एह दोवें नहि प्रतीत होते अर घोर मूढ अंतःकरणादीआं वृत्तिआं विषे सत्ताचैतन्य एह दोवें प्रतीतहोतेहैं अर शांतरूप अंतःकरणादीआं वृत्तीआंविषे सत्ताचेतनता आनंद एह तिन्ने प्रती-

त होते हैं इसप्रकारकरके प्रपंचसहित ब्रह्मदा कथन भया अर प्रपंचसे रहित ब्रह्मज्ञानकरके अर योगकरके जानीता है सो ज्ञान योगपिछे कथन कीये हैं ब्रह्मानंददे प्रथमअध्यायविषे योगकथन कीआ है अर दुसरे अर तीसरेअध्यायविषे ज्ञान कथन कीआहै।

शंका—ब्रह्म जेकर सच्चिदानंदरूपहै तौ मायाका कीआरूपहै।

उत्तर—असत्ता जडता दुःख एह तिन्ने मायादारूप हैं मायादी असत्ता नरश्रृंगआदिकांविषे रहिती है अर मायादी जडता काष्ठशिलादिकांविषे रहिती है अर मायादी दुःखरूपता घोरमूढवृत्तीआंविषे प्रतीत होती है॥ इसप्रकार सभनां पदार्थांविषे माया विस्तारको प्राप्त होई रही है शांतआदिरूप वृत्तीआंविषे ब्रह्मसहित प्रपंचदे प्रतीत होता है इसविषे किआकारण है ऐसा पुछें तां श्रवण कर ॥ शांतआदिरूप वृत्तीआंविषे जडबुद्धिकेसाथ एकतानूं प्राप्त होनेते ब्रह्म प्रपंचसहित कथन करीता है ॥ तांते वृत्तीआंविषे ब्रह्मदी प्रपंचसहिततादा कारण बुद्धिकेसाथ एकता है।

शं० एह प्रपंचसहित ब्रह्मदा कथन किसवासते कथन कीता है।

उत्तर—ब्रह्मके ध्यानवासते प्रपंचसहित ब्रह्मकों कथन कीता है ऐसे सिद्धांतदे होआंहोआं पुरुष तिन्नप्रकारके ब्रह्मदे ध्यान करणेकी इच्छाकरे नरश्रृंगआदिकांदी उपेक्ष्यानूं करके बाकीदे पदार्थांनूं यथायोग्य ध्यान करे शिलाआदिकांविषे नाम अर रूप दुहानूं त्यागकरके सत्तामात्रब्रह्मदा चिंतन करे अर घोरमूढ वृत्तीआंविषे दुःखनूं त्यागकरके सच्चिद्रूपब्रह्मदा चिंतन करे अर शांतवृत्तीआंविषे सच्चिदानंद तिन्नादाही चिंतन करे सो इस तिन्नप्रकारदे ध्यानविच्चों सत्तामात्रका जो काष्ठशिलाआदिकोंविषे

ध्यान है सो कनिष्ठध्यान है अर घोरमूढ वृत्तीआंविषे जो सत्ता-चेतन दुहांदा ध्यान है सो मध्यम ध्यान है अर शांतवृत्तीआंविषे जो सच्चिदानंद तिन्नादा ध्यान है सो उत्तम ध्यान है इस प्रकार तिन्नध्यान कथन कीये जिसपुरुषदी निर्गुणब्रह्मदे ध्यानविषे समर्थ नहि तिसकों आपने अधिकारके अनुसार शिलाआदिकांके-साथ मिलेहोये सत्यरूपआदिक ब्रह्मदे ध्यानदा अधिकार है मंदबुद्धिवाला जो पुरुष है तिसकों व्यवहारविषे शिलाआदिकां युक्त ब्रह्मदा ध्यान उत्तम है इसअर्थदे कहिवासते इसग्रंथविषे विषयानंददा कथन कीआ है इसप्रकार वृत्तिसहित तिन्नप्रकारदा ब्रह्मध्यान कथन कीआ अब वृत्तिसे रहित ब्रह्मध्याननूं श्रवण कर ॥ उदासीन अवस्थाविषे बुद्धिदीआं वृत्तीआंदी शिथलता होनेते वासनानंददा जो चिंतन है सो उत्तमते उत्तम ध्यान है इसप्रकारकरके चारप्रकारका ध्यान कथनकीआ बुद्धिदीआं वृत्तीआंदी शिथलतादे होआंहोआं वासनानंददा जो चिंतन है सो वास्तवसें ध्यान नहि किंतु सो ज्ञान अर योगकरके उत्पन्न भयी ब्रह्मविद्या है।

प्रश्न—एह ब्रह्मविद्या किसप्रकार उत्पन्न होती है सो कहे।

उत्तर—ध्यानकरके एकाग्रतानूं प्राप्त होये चित्तविषे विद्या उत्पन्न होती है अर उत्पन्न होइ स्थिरताको प्राप्त होती है विद्याविषे सच्चिदानंद एह तिन्ने अखंड एकरसरूपतानूं प्राप्त होकरके प्रतीत होते हैं ॥ भिन्नभिन्न होकरके नहि प्रतीत होते भेदप्रतीतिदा कारण उपाधीआंदे अभाव होनेते कौणउपाधीआं हैं भेद प्रतीतिका कारण ऐसा पुछेंतां श्रवणकर ॥ शांत वृत्तीआं अर घोरवृत्तीआं अर मूढवृत्तीआं अर शिलाआदिक एह भेदका कारण उपाधीआं हैं।

शंका—एन्ना उपाधीआंका अभाव किससाधनकरके होताहै।

उत्तर—योगकरके अर विवेककरके भेददा कारण उपाधीआंदा अभाव होता है उपाधीआंदे अभाव होआंहोआं उपाधीआंसे रहित स्वयंप्रकाश ब्रह्मतत्व भासता है तिसस्वयंप्रकाश अद्वैतब्रह्मविषे त्रिपुटी है नहि इसते तिसनूं भूमानंद कहीता है॥ ब्रह्मानंदनाम ग्रंथविषे पंजवांअध्याय कथन कीता तिसकानाम विषयानंद है॥ इसविषयानंदद्वारा अंतर शुद्ध ब्रह्मानंदविषे प्रवेश करणा ॥ अर्थ एह जो शुद्धपरमानंदरूप ब्रह्मकों जानना एह जो पंचदशीदा ब्रह्मानंदनाम ग्रंथ है तिसकरके विष्णुभगवान् अर शिवजी सदाही प्रसन्न होवे अर प्रसन्न हूयेहूये आपनेविषे स्थित जो संपूर्ण प्राणो हैं शुद्धचित्तवाले तिन्नाकाजन्ममरणसे रहितकरें।

दोहा॥ नमोनमोपरमात्मा, अद्वयरूपअपार ॥ यासज्ञानते जानीऐ, सकलो जगत् असार॥ १ ॥ श्रीमद्गंगारामगुरु, पादपद्मप्रताप॥ ग्रंथसकलपूर्णभयो, मिटेविघ्नकरपाप॥ २ ॥ पंचदशीभाषाभई, फतेचंद्रकेहेत॥ तिहँविचारकरजानीये, वेदकहितयँहनेत॥ ३ ॥ फतेचंद्रकीप्रार्थना, पंचदशीअतिसार॥ वृद्धअवस्थाआ[illegible], किउँकरकरोविचार॥ ४ ॥ भाषाद्वयतांकोप्रकट, तांकाकरोविचार॥ जोतांमैंसंशयरहै, पुछकरदिओनिवार॥ ५ ॥ फतेचंद्र तवक[illegible]लिआ, भाषाद्वयअतिगूढ॥ वार्तापंचदशीकरो पंडितहोइपडमूढ॥ ६ ॥ श्रीमद्गंगारामके, शिष्यआत्मस्वरूप॥ तानेभाषायहकरी, पंचदशीअनूप ॥ ७ ॥ वार्तापंचदशीभई, गुरुआज्ञाअनुसार॥ ब्रह्मबोधतिसवरमिले, पडैजोकरविचार॥ ८ ॥ इति श्रीविद्यारण्य मुनीश्वर विरचिता पंचदशी समाप्ता इति श्रीउदासी गंगारामजी केशिष्य उदासी आत्मस्वरूपविरचिता वार्तापंचदशीसमाप्ता १५